॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥श्रीदुर्गासप्तशती॥

पदच्छेद, अन्वितपदार्थ एवं अन्वितार्थसहिता

डॉ. प्रकाश पाण्डेय

एम.ए. (वेद), आचार्य (योगतन्त्र),

विद्यावारिधि (तन्त्र)

प्रस्तुति

अखिल भारतवर्षीय संस्कारसमिति

विन्ध्यवासिनीधाम

विन्ध्याचल, मीरजापुर

उत्तरप्रदेश

॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

॥ श्रीदुर्गासप्तशती ॥

पदच्छेद, अन्वितपदार्थ एवं अन्वितार्थसहिता

परममित्र पं० रमाकान्त शुक्लजी

को सादर समुपहृत

23/10/04

डॉ. प्रकाश पाण्डेय

एम.ए.(वेद), आचार्य (योगतन्त्र),

विद्यावारिधि (तन्त्र)

प्रस्तुति

अखिल भारतवर्षीय संस्कारसमिति

विन्ध्यवासिनीधाम

विन्ध्याचल, मीरजापुर

उत्तरप्रदेश

पुस्तकप्राप्तिस्थानः :
पण्डित आनन्दनिधि पाण्डेय
(विन्ध्यवासिनी मन्दिर से 30 कदम उत्तर)
मन्दिरपक्काघाटमार्ग, विन्ध्याचल,
पं. विनोद पाण्डेय
प्रबन्ध-कर्मकाण्डी
अखिलभारतवर्षीयसंस्कारसमिति
शक्तिपथ, विन्ध्याचल,
मीरजापुर 231307

©सर्वाधिकार सुरक्षित

दानसंस्करण(प्रथम) : 2007

मूल्य : सादर अध्ययन

प्रमुखप्राप्तिस्थानः
अखिलभारतवर्षीयसंस्कारसमितिमुख्यालय,
विन्ध्याचल, मीरजापुर
फोन : 05442-242555
05442-242589

मुद्रक
अमरप्रिंटर्स
8/25 विजयनगर, दिल्ली-110 009

प्रास्ताविक

सत्तर्काश्मनिशातधारसुमहावाक्यत्रिशूलायुधा,
घातक्षुण्णमदीयमोहमहिषप्राणप्रहाणोद्यता।
आनन्दामृतवाहिनी प्रणदिनी श्रीब्रह्मविद्यामयी,
वेदान्तप्रतिबोधिता विजयते विन्ध्याचलाधीश्वरी।।

वेदान्तसाम्राज्यमेधा का मङ्गलाचरण

भारत एवं विश्व के अनेक स्थानों में श्रीदुर्गासप्तशती का पारायण अहर्निश होता है। मैंने स्वयम् 1984-88 में सर्वेक्षण किया और यह पाया कि मात्र विंध्याचल शक्तिपीठ में प्रतिवर्ष 9 लाख से अधिक श्रीसप्तशती की आवृत्ति होती है। सनातन स्मार्त परम्परा अर्थात् शिव, विष्णु, सूर्य, गणपति एवं शक्ति रूप में पञ्चायतन पूजन की परम्परा में भी शाक्तसम्प्रदाय के लिए श्रीदुर्गासप्तशती अनिवार्य ग्रन्थ है। भारत में किसी भी महोत्सव को सफल बनाने के किसी भी कामना की पूर्ति के लिए श्रीसप्तशती के विविध अनुष्ठान होते हैं। कोई भी ऐसा स्मार्त-तन्त्र नहीं दिखा जिसमें श्रीसप्तशती के विशेषविधान को श्रेष्ठ तान्त्रिकविधान के रूप में न दर्शाया गया हो। अब तो अमेरिका एवं जापान में इस ग्रन्थ को लेकर शोध हो रहे हैं।

महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री को 10वीं शती में प्रतिलिपि किया हुआ श्रीसप्तशती का हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुआ था। उसे उन्होंने नेपाल दरबार पुस्तकालय में सुरक्षित किया। उस ग्रन्थ का स्वरूप एवं आकार ठीक वैसा ही है जैसा आज पाठ के लिए उपलब्ध ग्रन्थ का स्वरूप है। इस हस्तलेख के मिलने से मार्कण्डेयपुराण का लेखनतिथि जानने का प्रयास करने वाले श्री राजेन्द्रलाल मित्र आदि भारतीय एवं पार्जिटर आदि पाश्चात्य विद्वानों को सहायता एवं दिशा मिली।

इस प्रकार आध्यात्मिक दार्शनिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व का एवं समस्त हिन्दू समाज द्वारा अज्ञात प्राचीन काल से आदृत, अर्थ, धर्म, काम

एवं मोक्ष चारों प्रकार पुरुषार्थों को प्रदान करने की क्षमता रखने वाला यह महाग्रन्थ सद्यः फलदायी है।

मेरुतन्त्र में परमेश्वरी इसकी गूढ़ता का स्वयं ही विवरण देतीं हैं–

सप्तशत्यास्तु सकलं तत्त्वं वेद्म्यहमेव हि।
पादोनं तु हरिर्वेत्ति वेत्त्यर्धं तु प्रजापतिः॥
व्यासस्तुर्यांशकं वेत्ति कोट्यंशमितरे जनाः॥

"सप्तशती का सम्पूर्ण तत्त्व केवल मैं जानती हूँ॥ 3/4 भाग श्रीहरि को ज्ञात है, 1/2 भाग ब्रह्मा को विदित है, वेदव्यास 1/4 भाग जानते हैं। अन्य उपासक करोड़वाँ भाग ही जान पाते हैं॥"

इस प्रकार की मोक्षप्रदात्री गुह्यातिगुह्यसाधना के मार्गों की प्रकाशिका श्रीसप्तशती अपने परम उदात्त भावों, सुललित पदविन्यास से भी अलङ्कृता है। अब तक इसकी 35 प्रौढ़ टीकाएँ संस्कृत भाषा में विरचित हो चुकी हैं। इनमें श्री भास्करराय विरचित **गुप्तवती**, श्रीचतुर्धरमिश्र विरचित **देवीमाहात्म्यतात्पर्यटीका**, शान्तनुचक्रवर्ती विरचित **शान्तनवी**, महावैयाकरण श्रीनागोजी भट्ट विरचित **सप्तशतीव्याख्यानम्**, श्री भगीरथविरचित **जगच्चन्द्रिका**, श्री राजाराम विरचित **सप्तशतीदंशोद्धार**, श्री सरयूप्रसाद विरचित **सप्तशतीसर्वस्वम्** टीकाएँ साधकों, विद्वानों तथा जिज्ञासुओं में परमप्रतिष्ठित हैं।

किन्तु, क्योंकि संस्कृतभाषा में निबद्ध ज्ञान सामग्री, फिर वह कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, आधुनिक भारत में एक अपरिचित द्वीप की भाँति अलग किया जा चुकी है। व्यक्तिशः अथवा अपनी परम्परा से जुड़े रहने के लिए कहीं-कहीं शास्त्रों से कुछ-कुछ लिया जाता है। यह स्थिति मङ्गलमयी संस्कृत भाषा की लोक से दूरी के कारण उत्पन्न हुई है। संस्कृत शब्दों के उच्चारण को ठीक रीति से करने में भी कठिनाई का अनुभव सामान्यतः अब किया जाने लगा है।

श्रीसप्तशती के विषय में कठिनाई अपेक्षाकृत अधिक् हो जाती

है। क्योंकि इस प्रकार के सिद्धमन्त्रमाला का शुद्ध उच्चारण तथा शब्दार्थ का बोध दोनों ही इच्छित फलप्राप्ति के लिए अनिवार्य होतें हैं। ऐसे ग्रन्थ जिन्हें, जैसी उनकी रचना है वैसा ही उच्चारण करना अनिवार्य है उनके लिए वेदाङ्गशिक्षा या वेद आदि शास्त्रों के उच्चारणविधि के उपदेशक ग्रन्थों में आदिकाल से ही यह कहा जाता रहा है कि–

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥

"गाते हुए, बहुत तेजी से, झूमते हुए, अपने हाथों से लिखकर, बिना ठीक तरह अर्थ जाने, पूरी तरह याद किए बिना पाठ करने वाले विद्यार्थी अच्छे नहीं होते।"

इसमें **अल्पकण्ठः** विशेषतः वैदिक संहिताओं का अभ्यास करने वालों के लिए कहा गया है। यद्यपि यह भी विधान है कि कोई सिद्धस्तोत्र यदि १००० मन्त्रों से कम हो तो उसका कण्ठस्थ पाठ हो सकता है। किन्तु उससे अधिक होने पर बिना पुस्तक के पाठ न करने का आदेश है। अन्य बातें सभी स्तोत्रों के लिए समान हैं। किन्तु श्रीसप्तशती का पाठ पुस्तक को पूजित आधार पर स्थापित करके होता है। अतः पुस्तक से पाठ करना ही उचित है।

यदि साधक एकाग्रमन से, अर्थ समझते हुए, शुद्ध उच्चारण पूर्वक पाठ करता है तो निश्चित ही वही फल प्राप्त होगा जो श्रीसप्तशती के एकादश, द्वादश एवं त्रयोदश अध्यायों में बताया गया है। इस दृष्टि से भक्तों की यह अपेक्षा थी कि श्रीचण्डी का एक ऐसा संस्करण तैयार हो जिससे श्रद्धालुजन दो प्रकार का लाभ तुरन्त पा सकें एवं पाठ का शास्त्रोक्त फल प्राप्त करने में समर्थ बन सकें–

1. श्रीसप्तशती का पदच्छेद इस प्रकार से उपलब्ध हो जिससे उच्चारण की कठिनाई दूर हो सके।

2. प्रत्येक शब्द के साक्षात् अभिधेय अर्थ का ज्ञान उपलब्ध हो जाए। जिससे अनर्थज्ञ न रहें एवं ठीक अर्थ सीधे श्रीसप्तशती के शब्दों से जान पाएँ।

इन्हीं दो दृष्टियों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत संस्करण पाठकों के कर कमलों में शर्वरी संवत्सर के वासन्तिक नवरात्र के इस महापर्व पर पराम्बा भगवती श्रीसप्तशती की आत्मभूता भगवती श्रीविन्ध्यवासिनी के प्रीत्यर्थ समर्पित है। इस संस्करण में पाठक्रम की मर्यादा सुरक्षित रखते हुए अन्वितपदार्थ एवं अन्वितार्थ भी प्रदान किए गए हैं। सभी मन्त्रों और श्लोकों के आनुपूर्वी का यथासम्भव उच्चारण की सुविधा तथा अर्थज्ञान के लिए विच्छेद किया गया है। समासों की संधियाँ सामासिक चिह्नों द्वारा अलग दिखाई गई हैं। अन्वय इस रीति से उपस्थापित किया गया है कि प्रत्येक पद के सामने लिखे अर्थ के माध्यम से ठीक अर्थ समझने में सरलता हो तथा सभी अन्वितपदार्थों को एक करके पढ़ने से समुदित वाक्य बन सके तथापि पाठक की सुविधा के लिए अन्वितार्थ अलग से भी लिखा गया है। जिन पदों के अर्थबोध में प्राचीन टीकाकारों में विशेष मतभेद दिखाई दिया वहाँ नागोजीभट्ट द्वारा दिया गया अर्थ प्रधानतया ग्रहण किया है। कहीं-कहीं सभी टीकाकारों से हट कर साक्षात् श्रीसप्तशती जिस अर्थ को प्रकट करती हैं। उसे ही प्रस्तुत किया गया है।

कलियुग के दुर्दान्त मायावी प्रभाव का दर्शन जीवन के प्रत्येक पक्ष में दिखाई दे रहा है। मोह के तेजाब में मानव मूल्य, नीति तथा विवेक विभिन्न धातुओं के समान विलीन होकर अदृश्य हो रहे हैं। श्रीसप्तशती का अवतरण कठिनतम मोह को ध्वस्त करने के लिए ही हुआ था। सुरथ एवं समाधि को जो मोह था वह आज पूरे विश्व में व्याप्त है। केवल श्री जगदम्बा का शरण ही उस मोह का निवारक है तथा स्थिर सम्पत्ति एवं अमरता को प्रदान करता है। अतः सभी श्रद्धालु, भक्त, विवेकवान्, विद्यार्थी एवं विद्वान् श्रीसप्तशती प्रत्येक शब्द को समझते हुए पाठ करें तथा वास्तविक फल प्राप्त करें यही भगवती के

चरणों में निवदिन करता हूँ।

ग्रन्थ के मूल उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विस्तृत पाठविधि नहीं दी गई है। मात्र संकेत ही किया गया है। साधकगण अपने गुरु परम्परा के आधार पर विधिपूर्वक नित्य स्नान, संध्या आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्त हो कर, पूर्वाभिमुख पवित्र आसन पर बैठ कर श्रद्धा पूर्वक श्रीसप्तशती का नित्यपाठ बिना किसी अन्य पुस्तक का सहारा लिए कर सकते हैं।

संस्करण को तैयार करने में मेरे पुत्रगण श्री संतोषपाण्डेय, प्रतीक्षापाण्डेय एवं अविनाशपाण्डेय की सहायता अविस्मरणीय है। अतः मैं उन्हें आशीर्वाद एव साधुवाद देता हूँ। अमरप्रिन्टर्स के संचालक श्रीहीरा लाल को माता के प्रति भक्तिभाव से सुन्दर मुद्रण के लिए धन्यवाद देता हूँ।

इस ग्रन्थ के सभी गुण मेरे गुरुजनों की महिमा का फल है तथा सभी दोष मेरी मूर्खता के परिचायक हैं।

इस महान् ग्रन्थ के आध्यात्मिक एवं भौतिक लाभ के विषय में गुप्तवती टीकाकार श्रीभास्करराय का वचन उद्धृत करते हुए लेखनी विरमित होती है—

अस्मिन् गन्धरसास्वादे सामर्थ्यो विदुषां यदि।
किमिति प्रार्थनीयास्ते नो चेत् प्रार्थनया हि किम्॥

"इस सुगन्ध एवं रस का स्वाद लेने का सामर्थ्य यदि विद्वानों में है तो उन्हें आमन्त्रित करने की आवश्यकता नहीं है किन्तु यदि वे स्वाद लेने का सामर्थ्य नहीं रखते हैं तो आमन्त्रण देने से भी क्या लाभ?"

शर्वरीसंवत्सर
2064 वैक्रम
वासन्तिकनवरात्रप्रतिपत्

श्रीविन्ध्यवासिनी की शरण का आकांक्षी
—प्रकाश पाण्डेय

॥ अथ चण्डीकवच ॥

विनियोगः

अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे श्रीसप्तशती पाठाङ्गत्वेन पाठे विनियोगः॥

मन्त्र

मार्कण्डेय उवाच—

यद् गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह॥१॥

पदच्छेद

मार्कण्डेय उवाच— यद् गुह्यम् परमम् लोके सर्वरक्षाकरम् नृणाम्। यत् न कस्यचिद् आख्यातम् तत् मे ब्रूहि पितामह॥१॥

अन्वितपदार्थ

हे पितामह!=हे ब्रह्मन्!, लोके=संसार में, यत्=जो, परमम्=उत्कृष्ट, यत्=जिसे आपने, कस्यचित्=किसी को भी, न आख्यातम्=नहीं बताया है ऐसा, गुह्यम्=रहस्य, सर्वरक्षाकरम्=जिससे सभी की रक्षा होती है, तत्=उसे, मे=मुझे, ब्रूहि=बताइए॥१॥

अन्वितार्थ

हे ब्रह्मन्! संसार में जो उत्कृष्ट है, जिसे आपने किसी को भी नहीं बताया है ऐसा रहस्य, जिससे सभी की रक्षा होती है उसे मुझे बताइए॥१॥

मन्त्र

ब्रह्मोवाच—

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने॥२॥

पदच्छेद

ब्रह्मा उवाच– अस्ति गुह्यतमम् विप्र सर्वभूत-उपकारकम् देव्याः तु कवचम् पुण्यम् तत् शृणुष्व महामुने।।२।।

अन्वितपदार्थ

ब्रह्मा उवाच=ब्रह्मा जी बोले, विप्र=हे विप्र मार्कण्डेय!, तु गुह्यतमम्=अतिगोपनीय, सर्वभूतोपकारकम्=सभी प्राणियों का उपकारक, देव्याः=भगवती का, पुण्यम्=पुण्यरूप, कवचम्=रक्षाकवच, अस्ति=है, महामुने=हे महामुनि! तत् शृणुष्व=उसे सुनें।।२।।

अन्वितार्थ

ब्रह्मा जी बोले– हे विप्र मार्कण्डेय! अतिगोपनीय, सभी प्राणियों का उपकारक, भगवती का पुण्यस्वरूप रक्षाकवच है। हे महामुनि! उसे सुनें।।२।।

मन्त्र

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।३।।

पदच्छेद

प्रथमम् शैलपुत्री च द्वितीयम् ब्रह्मचारिणी तृतीयम् चन्द्रघण्टा इति कूष्माण्डा इति चतुर्थकम्।।३।।

अन्वितपदार्थ

प्रथमम् शैलपुत्री=प्रथम नाम शैलपुत्री, द्वितीयम् च ब्रह्मचारिणी=और द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीयम् चन्द्रघण्टा इति=तृतीय चन्द्रघण्टा, चतुर्थकम् कूष्माण्डा इति=चतुर्थ कूष्माण्डा।।३।।

अन्वितार्थ

प्रथम नाम शैलपुत्री और द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीय चन्द्रघण्टा, चतुर्थ कूष्माण्डा।।३।।

मन्त्र

पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।४।।

पदच्छेद

पञ्चमम् स्कन्दमाता इति षष्ठम् कात्यायनी इति च सप्तमम् कालरात्रि इति महागौरी इति च अष्टमम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

पञ्चमं स्कन्दमाता इति=पञ्चम स्कन्दमाता, षष्ठं कात्यायनी इति च=षष्ठ कात्यायनी, सप्तमं कालरात्रि इति=सप्तम कालरात्रि, अष्टमं महागौरी इति च=अष्टम महागौरी।।४।।

अन्वितार्थ

पञ्चम स्कन्दमाता, षष्ठ कात्यायनी, सप्तम कालरात्रि, अष्टम महागौरी।।४।।

मन्त्र

नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्त्तिताः।।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।।५।।

पदच्छेद

नवमम् सिंद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्त्तिताः उक्तानि एतानि नामानि ब्रह्मणा एव महात्मना।।५।।

अन्वितपदार्थ

नवमम् सिद्धिदात्री च=और नवम सिद्धिदात्री, नव दुर्गाः=नव दुर्गा नाम से, प्रकीर्त्तिताः=विख्यात हैं, महात्मना ब्रह्मणा=महात्मा ब्रह्मा द्वारा, एतानि एव=इतने ही, नामानि=नाम, उक्तानि=बताए गए हैं।।५।।

अन्वितार्थ

और नवम सिद्धिदात्री नवदुर्गा नाम से विख्यात हैं। महात्मा ब्रह्मा द्वारा (दुर्गा के) इतने ही नाम बताए गए हैं।।५।।

मन्त्र

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्त्ताः शरणं गताः॥६॥

पदच्छेद

अग्निना दह्य-मानः तु शत्रुमध्ये गतः रणे विषमे दुर्गमे च एव भय-आर्त्ताः शरणम् गताः॥६॥

अन्वितपदार्थ

अग्निना=अग्नि द्वारा, दह्य-मानः तु=जलता हुआ, रणे=युद्ध में, शत्रुमध्ये=शत्रु के बीच, विषमे=विषम परिस्थिति में, दुर्गमे च एव=और अगम्य दशा में, गतः=पड़ा हुआ, शरणं गताः=माता के शरण में आए हुए, भय-आर्त्ताः=किसी भी भय से भयग्रस्त॥६॥

अन्वितार्थ

अग्नि द्वारा जलता हुआ, युद्ध में शत्रु के बीच, विषम परिस्थिति में और अगम्य दशा में पड़ा हुआ भक्त, माता के शरण में आए हुए, किसी भी भय से भयग्रस्त हों॥६॥

मन्त्र

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥७॥

पदच्छेद

न तेषाम् जायते किञ्चिद् अशुभम् रणसंकटे न आपदम् तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयम् न हि॥७॥

अन्वितपदार्थ

रणसंकटे=युद्ध का संकट होने पर, तेषाम्=उन लोगों का, किञ्चित् अशुभम्=कुछ भी अमंगल, न जायते=नहीं होता, तस्य आपदम्=उसको किसी प्रकार की आपत्ति में पड़ते, न पश्यामि=नहीं देखता हूँ। न हि शोकदुःखभयम्=न ही उसे शोक, दुःख एवं भय होता है॥७॥

अन्वितार्थ

युद्ध का संकट होने पर उन लोगों का कुछ भी अमंगल नहीं होता। उसको किसी प्रकार की आपत्ति में पड़ते नहीं देखता हूँ। न ही उसे शोक, दुःख एवं भय होता है।।७।।

मन्त्र

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां सिद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः।।८।।

पदच्छेद

यैः तु भक्त्या स्मृता नूनम् तेषाम् सिद्धिः प्रजायते ये त्वाम् स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान् न संशयः।।८।।

अन्वितपदार्थ

यैः तु=जिनके द्वारा आप, भक्त्या=भक्तिपूर्वक, स्मृता=स्मरण की जाती हैं, तेषाम्=उनको, नूनम्=अवश्य ही, सिद्धिः=वाँछित सिद्धि, प्रजायते=प्राप्त होती है, देवेशि=हे देवों की स्वामिनि, ये त्वाम्=जो आपका, स्मरन्ति=स्मरण करते हैं, तान् रक्षसे=आप उनकी रक्षा करती हैं, न संशयः=इसमें संदेह नहीं है।।८।।

अन्वितार्थ

जिनके द्वारा आप भक्तिपूर्वक स्मरण की जाती हैं, उनको अवश्य ही वाँछित सिद्धि प्राप्त होती है। हे देवों की स्वामिनि! जो आपका स्मरण करते हैं आप उनकी रक्षा करती हैं, इसमें संदेह नहीं है।।८।।

मन्त्र

प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना।।९।।
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया।।१०।।
श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता।।११।।

पदच्छेद

प्रेत-संस्था तु चामुण्डा वाराही महिष-आसना ऐन्द्री गज-समारूढा वैष्णवी गरुड-आसना माहेश्वरी वृष-आरूढा कौमारी शिखि-वाहना लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृष-वाहना ब्राह्मी हंस-समारूढा सर्व-आभरण-भूषिता।।९-११।।

अन्वितपदार्थ

सर्वाभरण-भूषिताः=शास्त्रोक्त आभूषणों से अलंकृत हो कर, चामुण्डा तु प्रेतसंस्था=चामुण्डा प्रेत पर विराजमान, वाराही महिषासना=वाराही महिषवाहना, ऐन्द्री गजसमारूढा=ऐन्द्री गज पर विराजमान, वैष्णवी गरुडासना=वैष्णवी गरुडवाहना, माहेश्वरी वृषारूढा=माहेश्वरी वृषभ पर विराजमान, कौमारी शिखिवाहना=कौमारी मयूर पर विराजमान, पद्महस्ता हरिप्रिया देवी लक्ष्मीः पद्मासना=श्रीहरि की वल्लभा हाथो में कमल धारण करने वाली देवी लक्ष्मी पद्म पर विराजमान, श्वेतरूप धरा देवी ईश्वरी वृषवाहना=धवलरूप धारणी देवी ईश्वरी वृषभ पर विराजमान, ब्राह्मी हंस-समारूढा=ब्राह्मी हंस पर आरूढ़।।९-११।।

अन्वितार्थ

शास्त्रोक्त आभूषणों से अलंकृत हो कर चामुण्डा प्रेत पर विराजमान, वाराही महिषवाहना, ऐन्द्री गज पर विराजमान, वैष्णवी गरुडवाहना, माहेश्वरी वृषभ पर विराजमान, कौमारी मयूर पर विराजमान, श्रीहरि की वल्लभा हाथों में कमल धारण करने वाली देवी लक्ष्मी पद्म पर विराजमान, धवलरूपधारणी देवी ईश्वरी वृषभ पर विराजमान, ब्राह्मी हंस पर आरूढ़।।९-११।।

मन्त्र

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः।।१२।।
दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्।।१३।।

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्॥१४॥

पदच्छेद

इति एताः मातरः सर्वाः सर्वयोग-समन्विताः नाना-आभरण-शोभा-आढ्याः नाना-रत्नोप-शोभिताः दृश्यन्ते रथम् आरूढा देव्यः क्रोध-समाकुलाः शङ्खम् चक्रम् गदाम् शक्तिम् हलम् च मुसल-आयुधम् खेटकम् तोमरम् च एव परशुम् पाशम् एव च कुन्तायुधम् त्रिशूलम् च शार्ङ्गम् आयुधमुत्तमम्॥१२-१४॥

अन्वितपदार्थ

इति एताः सर्वाः=ये सभी, सर्वयोग-समन्विताः=सम्पूर्ण योगविभूतियों से संवलित, रथम् आरूढा=अपने अपने रथों पर विराजमान, मातरः देव्यः=मातृ देवियाँ, नानाभरण-शोभाढ्याः=अनेक प्रकार के अलंकारों से सुशोभित, नानारत्नोप-शोभिताः=अनेक प्रकार के रत्नों से अलंकृत, क्रोध-समाकुलाः=क्रोधित अवस्था में, दृश्यन्ते=दिखाई दे रहीं हैं। शङ्खम्=शङ्ख, चक्रम्=चक्र, गदाम्=गदा, शक्तिम्=कटार, हलम् च=और हल, मुसल-आयुधम्=मुसलशस्त्र, खेटकम्=खेटक, तोमरम् च एव=तोमर, परशुम्=परशु, पाशम् एव च=पाश, कुन्त-आयुधम्=भाला, त्रिशूलम् च=और त्रिशूल, शार्ङ्गम्=शार्ङ्ग धनुष उत्तमम्=नामक उत्तम, आयुधम्= अस्त्र-शस्त्र॥१२-१४॥

अन्वितार्थ

ये सभी सम्पूर्ण योगविभूतियों से संवलित, अपने अपने रथों पर विराजमान, मातृ देवियाँ, अनेक प्रकार के अलंकारों से सुशोभित, अनेक प्रकार के रत्नों से अलंकृत, क्रोधित अवस्था में, दिखाई दे रहीं हैं। शङ्ख, चक्र, गदा, कटार और हल, मुसलशस्त्र, खेटक, तोमर, परशु, पाश, भाला और त्रिशूल, शार्ङ्गधनुष नामक उत्तम अस्त्र-शस्त्र॥१२-१४॥

मन्त्र

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै॥१५॥

पदच्छेद

दैत्यानाम् देहनाशाय भक्तानाम् अभयाय च धारयन्ति आयुधानि इत्थम् देवानाम् च हिताय वै॥१५॥

अन्वितपदार्थ

इत्थम्=इस प्रकार, दैत्यानाम्=दैत्यों के, देहनाशाय=शरीर के विनाश के लिए, भक्तानां च=और भक्तों को, अभयाय=निर्भीक बनाने के लिए, देवानाम् च=तथा देवताओं के, हिताय वै=कल्याण के लिए, आयुधानि=शस्त्रों को, धारयन्ति=धारण करती हैं॥१५॥

अन्वितार्थ

इस प्रकार दैत्यों के शरीर के विनाश के लिए और भक्तों को निर्भीक बनाने के लिए तथा देवताओं के कल्याण के लिए शस्त्रों को धारण करती हैं॥१५॥

मन्त्र

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि॥१६॥

पदच्छेद

नमस्ते अस्तु महारौद्रे महाघोर-पराक्रमे महाबले महा-उत्साहे महाभय-विनाशिनि॥१६॥

अन्वितपदार्थ

महारौद्रे=हे अत्यन्त विकट, महाघोर-पराक्रमे=परम पराक्रमशील, महाबले=महाबलशालिनि, महोत्साहे=परमउत्साह सम्पन्न, महाभय-विनाशिनि=कठिनतम भय का नाश करने वाली भगवती, नमस्ते अस्तु=आपको प्रणाम है॥१६॥

अन्वितार्थ

हे! अत्यन्त विकट, परम पराक्रमशील, महाबलशालिनि, परम उत्साहसम्पन्न, कठिनतम भय का नाश करने वाली भगवती आपको प्रणाम है॥१६॥

मन्त्र

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता॥१७॥

पदच्छेद

त्राहि माम् देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणाम् भयवर्धिनि प्राच्याम् रक्षतु माम् ऐन्द्री आग्नेय्याम् अग्निदेवता॥१७॥

अन्वितपदार्थ

दुष्प्रेक्ष्ये=हे कठिनाई से दिखाई देने वाली, शत्रूणाम् भयवर्धिनि=शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली, देवि=देदीप्यमान भगवती, त्राहि माम्=मेरी रक्षा करें, प्राच्याम् ऐन्द्री=पूर्वदिशा में ऐन्द्री, आग्नेय्याम् अग्निदेवता=आग्येय (पूर्व-दक्षिण का कोना) दिशा में अग्निदेवता, माम् रक्षतु=मेरी रक्षा करें॥१७॥

अन्वितार्थ

हे कठिनाई से दिखाई देने वाली, शत्रुओं का भय बढ़ाने वाली, देदीप्यमान भगवती मेरी रक्षा करें पूर्वदिशा में ऐन्द्री, आग्नेय(पूर्व-दक्षिण का कोना) दिशा में अग्निदेवता मेरी रक्षा करें॥१७॥

मन्त्र

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी॥१८॥

पदच्छेद

दक्षिणे अवतु वाराही नैर्ऋत्याम् खड्गधारिणी प्रतीच्याम् वारुणी रक्षेद् वायव्याम् मृगवाहिनी॥१८॥

अन्वितपदार्थ

दक्षिणे वाराही=दक्षिण दिशा में वाराही, नैर्ऋत्याम् खड्गधारिणी=नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम के कोने) में खड्गधारिणी, अवतु=रक्षा करें, प्रतीच्याम् वारुणी=पश्चिम में वारुणी, वायव्याम् मृगवाहिनी=वायव्य (पश्चिम-उत्तर के कोने) में मृगवाहिनी, रक्षेद्=रक्षा करें॥१८॥

अन्वितार्थ

दक्षिण दिशा में वाराही, नैर्ऋत्य(दक्षिण-पश्चिम के कोने) में खड्गधारिणी रक्षा करें, पश्चिम में वारुणी, वायव्य(पश्चिम-उत्तर के कोने) में मृगवाहिनी रक्षा करें।।१८।।

मन्त्र

उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा।।१९।।

पदच्छेद

उदीच्याम् पातु कौमारी ऐशान्याम् शूलधारिणी ऊर्ध्वम् ब्रह्माणी मे रक्षेद् अधस्ताद् वैष्णवी तथा।।१९।।

अन्वितपदार्थ

उदीच्यां कौमारी=उत्तरदिशा में कौमारी, ऐशान्यां शूलधारिणी पातु=ईशान(उत्तर-पूर्व के कोने) में शूलधारिणी रक्षा करें, मे ऊर्ध्वं ब्रह्माणी=मेरे ऊपर ब्रह्माणी, तथा अधस्ताद् वैष्णवी रक्षेद्=तथा नीचे वैष्णवी रक्षा करें।।१९।।

अन्वितार्थ

उत्तरदिशा में कौमारी, ईशान(उत्तर-पूर्व के कोने) में शूलधारिणी रक्षा करें, मेरे ऊपर ब्रह्माणी, तथा नीचे वैष्णवी रक्षा करें।।१९।।

मन्त्र

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।।२०।।

पदच्छेद

एवम् दश दिशः रक्षेत् चामुण्डा शववाहना जया मे च अग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः।।२०।।

अन्वितपदार्थ

एवम्=इस प्रकार, शववाहना चामुण्डा=शववाहना चामुण्डा, दश दिशः=दसो दिशाओं की, रक्षेत्=रक्षा करें, मे अग्रतः च=और मेरे आगे, जया पातु=जया रक्षा करें, पृष्ठतः=पीछे से, विजया पातु=विजया रक्षा करें।।२०।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार शववाहना चामुण्डा दसों दिशाओं की रक्षा करें और मेरे आगे जया रक्षा करें, पीछे से विजया रक्षा करें।।२०।।

मन्त्र

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।२१।।

पदच्छेद

अजिता वाम-पार्श्वे तु दक्षिणे च अपराजिता शिखाम् उद्योतिनी रक्षेद् उमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।२१।।

अन्वितपदार्थ

वाम-पार्श्वे तु=मेरे बाँई ओर, अजिता=अजिता, दक्षिणे च=तथा दाहिनी ओर, अपराजिता=अपराजिता, शिखाम् उद्योतिनी=शिखा का उद्योतिनी, रक्षेद्=रक्षा करें, उमा मूर्ध्नि=उमा मूर्धा में, व्यवस्थिता=रक्षा के लिए विराज मान हैं।।२१।।

अन्वितार्थ

मेरे बाँई ओर अजिता तथा दाहिनी ओर अपराजिता, शिखा का उद्योतिनी रक्षा करें, उमा मूर्धा में रक्षा के लिए विराजमान हैं।।२१।।

मन्त्र

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके।।२२।।

पदच्छेद

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी त्रिनेत्रा च भ्रुवोः मध्ये यमघण्टा च नासिके।।२२।।

अन्वितपदार्थ

मालाधरी=मालाधरी, ललाटे च=ललाट में, भ्रुवौ यशस्विनी=दोनों भौहों में यशस्विनी, रक्षेद्=रक्षा करें, भ्रुवोः मध्ये=भ्रूमध्य में, त्रिनेत्रा च=त्रिनेत्रा, नासिके च यमघण्टा=और दोनों नासापुटों में यमघण्टा रक्षा करें।।२२।।

अन्वितार्थ

मालाधरी ललाट में, दोनों भौहों में यशस्विनी रक्षा करें, भ्रूमध्य में त्रिनेत्रा और दोनों नासापुटों में यमघण्टा रक्षा करें॥२२॥

मन्त्र

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी॥२३॥

पदच्छेद

शङ्खिनी चक्षुषोः मध्ये श्रोत्रयोः द्वारवासिनी कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी॥२३॥

अन्वितपदार्थ

चक्षुषोः मध्ये शङ्खिनी=दोनों आँखों के बीच शङ्खिनी, श्रोत्रयोः द्वारवासिनी=दोनों कानों में द्वारवासिनी, कपोलौ कालिका=दोनों गालों में कालिका, कर्णमूले तु शाङ्करी=कान के मूल में शाङ्करी, रक्षेत्=रक्षा करें॥२३॥

अन्वितार्थ

दोनों आँखों के बीच शङ्खिनी, दोनों कानों में द्वारवासिनी, दोनों गालों में कालिका, कान के मूल में शाङ्करी, रक्षा करें॥२३॥

मन्त्र

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती॥२४॥

पदच्छेद

नासिकायाम् सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका अधरे च अमृतकला जिह्वायाम् च सरस्वती॥२४॥

अन्वितपदार्थ

नासिकायाम् सुगन्धा च=और नासिका में सुगन्धा, उत्तरोष्ठे च चर्चिका=ऊपरी ओठ में चर्चिका, अधरे च अमृतकला=अधर या नीचे के ओठ में अमृतकला, जिह्वायाम् च सरस्वती=और जिह्वा में सरस्वती॥२४॥

अन्वितार्थ

और नासिका में सुगन्धा, ऊपरी ओठ में चर्चिका, अधर या नीचे के ओठ में अमृतकला और जिह्वा में सरस्वती।।२४।।

मन्त्र

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे च चण्डिका।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।।२५।।

पदच्छेद

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे च चण्डिका घण्टिकाम् चित्रघण्टा च महामाया च तालुके।।२५।।

अन्वितपदार्थ

कौमारी दन्तान्=कौमारी दाँतों का, कण्ठदेशे च चण्डिका=कण्ठ में चण्डिका, घण्टिकाम् चित्रघण्टा च=और गलघण्ट में चित्रघण्टा, महामाया च तालुके=तालु में महामाया, रक्षतु=रक्षा करें।।२५।।

अन्वितार्थ

कौमारी दाँतों का, कण्ठ में चण्डिका और गलघण्ट में चित्रघण्टा, तालु में महामाया रक्षा करें।।२५।।

मन्त्र

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमङ्गला।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।।२६।।

पदच्छेद

कामाक्षी चिबुकम् रक्षेद् वाचम् मे सर्वमङ्गला ग्रीवायाम् भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी।।२६।।

अन्वितपदार्थ

मे=मेरे, कामाक्षी चिबुकम्=ठुड्डी का कामाक्षी, वाचम् सर्वमङ्गला=वाणी का सर्वमङ्गला, ग्रीवायाम् भद्रकाली च=और गले में भद्रकाली, पृष्ठवंशे धनुर्धरी=रीढ़ में धनुर्धरी, रक्षेद्=रक्षा करें।।२६।।

अन्वितार्थ

मेरे ठुड्डी का कामाक्षी, वाणी का सर्वमङ्गला, और गले में भद्रकाली, रीढ़ में धनुर्धरी, रक्षा करें।।२६।।

मन्त्र

नीलग्रीवा बहिष्कण्ठे नलिकां नलकूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।।२७।।

पदच्छेद

नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकाम् नलकूबरी स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी।।२७।।

अन्वितपदार्थ

मे=मेरे, बहिः कण्ठे नीलग्रीवा=बाहरी गले में नीलग्रीवा, नलिकाम् नलकूबरी=गले की नली में नलकूबरी, स्कन्धयोः खड्गिनी=दोनों कन्धों में खड्गिनी, बाहू वज्रधारिणी=दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी, रक्षेद्=रक्षा करें।।२७।।

अन्वितार्थ

मेरे बाहरी गले में नीलग्रीवा, गले की नली में नलकूबरी, दोनों कन्धों में खड्गिनी, दोनों भुजाओं की वज्रधारिणी रक्षा करें।।२७।।

मन्त्र

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च।
नखान् शूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी।।२८।।

पदच्छेद

हस्तयोः दण्डिनी रक्षेद् अम्बिका च अङ्गुलीषु च नखान् शूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी।।२८।।

अन्वितपदार्थ

हस्तयोः दण्डिनी=दोनों हाथों में दण्डिनी, अम्बिका च अङ्गुलीषु=और अङ्गुलियों में अम्बिका, रक्षेद्=रक्षा करें, नखान् च शूलेश्वरी=नखों की शूलेश्वरी, रक्षेत्=रक्षा करें, कुक्षौ कुलेश्वरी=कोख में कुलेश्वरी, रक्षेत्=रक्षा करें।।२८।।

अन्वितार्थ

दोनों हाथों में दण्डिनी और अङ्गुलियों में अम्बिका रक्षा करें, नखों की शूलेश्वरी, रक्षा करें, कोख में कुलेश्वरी रक्षा करें।।२८।।

मन्त्र

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी।
हृदये ललितादेवी उदरे शूलधारिणी।।२९।।

पदच्छेद

स्तनौ रक्षेन् महादेवी मनः शोकविनाशिनी हृदये ललितादेवी उदरे शूलधारिणी।।२९।।

अन्वितपदार्थ

स्तनौ महादेवी=स्तनों में महादेवी, मनः शोकविनाशिनी=मन का शोकविनाशिनी, हृदये ललितादेवी=हृदय में ललितादेवी, उदरे शूलधारिणी= पेट में शूलधारिणी, रक्षेत्=रक्षा करें।।२९।।

अन्वितार्थ

स्तनों में महादेवी मन का शोकविनाशिनी, हृदय में ललितादेवी, पेट में शूलधारिणी रक्षा करें।।२९।।

मन्त्र

नाभिं च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी।।३०।।

पदच्छेद

नाभिम् च कामिनी रक्षेद् गुह्यम् गुह्येश्वरी तथा पूतना कामिका मेढ्रम् गुदे महिषवाहिनी।।३०।।

अन्वितपदार्थ

नाभिम् च कामिनी=नाभि का कामिनी, गुह्यम् गुह्येश्वरी=गुदा एवं लिंग के बीच स्थित गुह्यदेश का गुह्येश्वरी, पूतना तथा कामिका=पूतना तथा कामिका, मेढ्रम्=लिंग का, गुदे महिषवाहिनी=मलद्वार का महिषवाहिनी, रक्षेद्=रक्षा करें।।३०।।

अन्वितार्थ

नाभि का कामिनी, गुदा एवं लिंग के बीच स्थित गुह्यदेश का गुह्येश्वरी, पूतना तथा कामिका लिंग का, मलद्वार का महिषवाहिनी रक्षा करें।।३०।।

मन्त्र

कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी।
जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्वकामप्रदायिनी।।३१।।

पदच्छेद

कट्याम् भगवती रक्षेत् जानुनी विन्ध्यवासिनी जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्वकाम-प्रदायिनी।।३१।।

अन्वितपदार्थ

कट्याम् भगवती=कमर में भगवती, जानुनी सर्वकाम-प्रदायिनी विन्ध्यवासिनी=घुटनों में सर्वकाम-प्रदायिनी विन्ध्यवासिनी, रक्षेत्=रक्षा करें, जङ्घे महाबला रक्षेत्=महाबला दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें।।३१।।

अन्वितार्थ

कमर में भगवती, घुटनों में सर्वकाम-प्रदायिनी विन्ध्यवासिनी रक्षा करें, महाबला दोनों पिण्डलियों की रक्षा करें।।३१।।

मन्त्र

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाधस्तलवासिनी।।३२।।

पदच्छेद

गुल्फयोः नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी पादाङ्गुलीषु श्रीः रक्षेत् पादाधः तलवासिनी।।३२।।

अन्वितपदार्थ

गुल्फयोः नारसिंही च=दोनों गुल्फों में नारसिंही, पादपृष्ठे तु तैजसी=पैर के पीछे तैजसी, पादाङ्गुलीषु श्रीः=पैर की अंगुलियों में श्री, पादाधः तलवासिनी=पैरों के नीचे तलवासिनी, रक्षेत्=रक्षा करें।।३२।।

अन्वितार्थ

दोनों गुल्फों में नारसिंही, पैर के पीछे तैजसी, पैर की अंगुलियों में श्री, पैरों के नीचे तलवासिनी रक्षा करें।।३२।।

मन्त्र

नखान् दंष्ट्राकराली च केशाँश्चैवोर्ध्वकेशिनी।
रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा।।३३।।

पदच्छेद

नखान् दंष्ट्राकराली च केशान् च एव ऊर्ध्वकेशिनी रोमकूपेषु कौबेरी त्वचम् वागीश्वरी तथा।।३३।।

अन्वितपदार्थ

नखान् दंष्ट्राकराली च=पैर के नखों की दंष्ट्राकराली, केशान् च एव ऊर्ध्वकेशिनी=और बालों की ऊर्ध्वकेशिनी, रोमकूपेषु कौबेरी=रोम कूपों में कौबेरी, त्वचम् वागीश्वरी तथा=इसी प्रकार चमड़े की रक्षा वागीश्वरी करें।।३३।।

अन्वितार्थ

पैर के नखों की दंष्ट्राकराली और बालों की ऊर्ध्वकेशिनी, रोम कूपों में कौबेरी इसी प्रकार चमड़े की रक्षा वागीश्वरी करें।।३३।।

मन्त्र

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी।।३४।।

पदच्छेद

रक्त-मज्जा-वसा-मांसानि अस्थि-मेदांसि पार्वती अन्त्राणि कालरात्रिः च पित्तम् च मुकुटेश्वरी।।३४।।

अन्वितपदार्थ

रक्त-मज्जा-वसा-मांसानि=रक्त-मज्जा-वसा-मांस का, अस्थि- मेदांसि= हड्डी एवं मेद का, पार्वती=पार्वती, अन्त्राणि कालरात्रिः च=और आँतो की कालरात्रि, पित्तम् च मुकुटेश्वरी=तथा पित्त का मुकुटेश्वरी रक्षा करें।।३४।।

अन्वितार्थ

रक्त-मज्जा-वसा-मांस, हड्डी एवं मेद का पार्वती और आँतो की कालरात्रि तथा पित्त का मुकुटेश्वरी रक्षा करें॥३४॥

मन्त्र

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु॥३५॥

पदच्छेद

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिः तथा ज्वालामुखी नखज्वालाम् अभेद्या सर्वसंधिषु॥३५॥

अन्वितपदार्थ

पद्मकोशे=मूलाधार से सहस्रार तक सभी चक्रों में, पद्मावती=पद्मावती, कफे चूडामणिः=कफ में चूडामणि, ज्वालामुखी नखज्वालाम्=नखों की कान्ति में ज्वालामुखी, तथा अभेद्या सर्वसंधिषु=तथा अभेद्या सभी जोड़ो में रक्षा करें॥३५॥

अन्वितार्थ

मूलाधार से सहस्रार तक सभी चक्रों में पद्मावती, कफ में चूडामणि, नखों की कान्ति में ज्वालामुखी तथा अभेद्या सभी जोड़ों में रक्षा करें॥३५॥

मन्त्र

शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मचारिणी॥३६॥

पदच्छेद

शुक्रम् ब्रह्माणि मे रक्षेत् छायाम् छत्रेश्वरी तथा अहंकारम् मनः बुद्धिम् रक्षेन् मे धर्मचारिणी॥३६॥

अन्वितपदार्थ

ब्रह्माणि=हे ब्रह्माणि आप, मे शुक्रम्=मेरे वीर्य की, तथा छायाम् छत्रेश्वरी=इसी प्रकार प्रतिबिम्ब की छत्रेश्वरी, रक्षेत्=रक्षा करें, मे अहंकारम् मनः

बुद्धिम्=मेरे अहंकार, मन एवं बुद्धि का, धर्मचारिणी रक्षेत्=धर्मचारिणी रक्षा करें।।३६।।

अन्वितार्थ

हे ब्रह्माणि आप मेरे वीर्य की, इसी प्रकार प्रतिबिम्ब की छत्रेश्वरी रक्षा करें, मेरे अहंकार, मन एवं बुद्धि का धर्मचारिणी रक्षा करें।।३६।।

मन्त्र

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणं कल्याणशोभना।।३७।।

पदच्छेद

प्राणापानौ तथा व्यानम् उदानम् च समानकम् वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणम् कल्याणशोभना।।३७।।

अन्वितपदार्थ

मे प्राणापानौ=मेरे प्राण एवं अपान वायुओं, तथा व्यानम् उदानम् समानकम् च=तथा व्यान, उदान, समान वायुओं का, वज्रहस्ता=वज्रहस्ता, प्राणम् च कल्याणशोभना=और सम्पूर्ण प्राणों का कल्याणशोभना, रक्षेत्=रक्षा करें।।३७।।

अन्वितार्थ

मेरे प्राण एवं अपान वायुओं तथा व्यान, उदान, समान वायुओं का वज्रहस्ता और सम्पूर्ण प्राणों का कल्याणशोभना रक्षा करें।।३७।।

मन्त्र

रसे रूपे च गन्धे शब्दे स्पर्शे च वैष्णवी।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा।।३८।।

पदच्छेद

रसे रूपे च गन्धे शब्दे स्पर्शे च वैष्णवी सत्त्वम् रजः तमः च एव रक्षेत् नारायणी सदा।।३८।।

अन्वितपदार्थ

रसे रूपे च गन्धे शब्दे स्पर्शे च=रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श विषयों में, वैष्णवी=वैष्णवी, सत्त्वम् रजः तमः च एव=सत्त्व, रजः, तमः गुणों में,

नारायणी सदा रक्षेत्=नारायणी सदा रक्षा करें।।३८।।

अन्वितार्थ

रस, रूप, गन्ध, शब्द और स्पर्श विषयों में वैष्णवी, सत्त्व, रज:, तम: गुणों में नारायणी सदा रक्षा करें।।३८।।

मन्त्र

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी।।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च सदा रक्षतु चक्रिणी।।३९।।

पदच्छेद

आयू रक्षतु वाराही धर्मम् रक्षतु वैष्णवी यशः कीर्तिम् च लक्ष्मीम् च सदा रक्षतु चक्रिणी।।३९।।

अन्वितपदार्थ

आयू वाराही रक्षतु=आयु की रक्षा वाराही करें, धर्मम् वैष्णवी रक्षतु=धर्म की रक्षा वैष्णवी करें, यशः कीर्तिम् च लक्ष्मीम् च सदा चक्रिणी रक्षतु=यश, कीर्ति एवं लक्ष्मी की रक्षा सदा चक्रिणी करें।।३९।।

अन्वितार्थ

आयु की रक्षा वाराही करें, धर्म की रक्षा वैष्णवी करें, यश, कीर्ति एवं लक्ष्मी की रक्षा सदा चक्रिणी करें।।३९।।

मन्त्र

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी।।४०।।

पदच्छेद

गोत्रम् इन्द्राणि मे रक्षेत् पशून् मे रक्ष चण्डिके पुत्रान् रक्षेन् महालक्ष्मीः भार्याम् रक्षतु भैरवी।।४०।।

अन्वितपदार्थ

मे गोत्रम् इन्द्राणि रक्षेत्=मेरे कुल की रक्षा हे इन्द्राणि आप करें, मे पशून् चण्डिके रक्ष=हे चण्डिके आप मेरे पशुओं की रक्षा करें, पुत्रान् महालक्ष्मीः रक्षेत्=महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करें, भार्याम् भैरवी रक्षतु=पत्नी की रक्षा

भैरवी करें।।४०।।

अन्वितार्थ

मेरे कुल की रक्षा हे इन्द्राणि! आप करें, हे चण्डिके! आप मेरे पशुओं की रक्षा करें, महालक्ष्मी पुत्रों की रक्षा करें, पत्नी की रक्षा भैरवी करें।।४०।।

मन्त्र

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमंकरी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता।।४१।।

पदच्छेद

पन्थानम् सुपथा रक्षेन् मार्गम् क्षेमंकरी तथा राजद्वारे महालक्ष्मीः विजया सर्वतः स्थिता।।४१।।

अन्वितपदार्थ

पन्थानम् सुपथा=सुपथा यात्रा की, मार्गम् क्षेमंकरी तथा=इसी प्रकार रास्ते की क्षेमंकरी, रक्षेत्=रक्षा करें, राजद्वारे महालक्ष्मीः=राजा के द्वार पर महालक्ष्मी, विजया सर्वतः स्थिता=तथा विजया सभी स्थान पर रक्षा के लिए विराजमान रहें।।४१।।

अन्वितार्थ

सुपथा यात्रा की इसी प्रकार रास्ते की क्षेमंकरी रक्षा करें, राजा के द्वार पर महालक्ष्मी, तथा विजया सभी स्थान पर रक्षा के लिए विराजमान रहें।।४१।।

मन्त्र

रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।।४२।।

पदच्छेद

रक्षाहीनम् तु यत् स्थानम् वर्जितम् कवचेन तु तत् सर्वम् रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी।।४२।।

अन्वितपदार्थ

यत् स्थानम् तु=जो स्थान, कवचेन रक्षाहीनम्=इस कवच से सुरक्षित नहीं हैं, वर्जितम् तु=छूटे हैं, मे तत् सर्वम्=मेरे उन सब स्थानों की, देवि पापनाशिनी जयन्ती=हे देवि! पापनाशिनी जयन्ती, रक्ष=रक्षा करें।।४२।।

अन्वितार्थ

जो स्थान इस कवच से सुरक्षित नहीं हैं, छूटे हैं, मेरे उन सब स्थानों की रक्षा हे देवि! पापनाशिनी जयन्ती आप करें।।४२।।

मन्त्र

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति।।४३।।

पदच्छेद

पदमेकम् न गच्छेत् तु यदि इच्छेत् शुभम् आत्मनः कवचेन आवृतः नित्यम् यत्र यत्र एव गच्छति।।४३।।

अन्वितपदार्थ

यदि आत्मनः शुभम् इच्छेत् तु=यदि अपना कल्याण चाहें, एकम् पदम् न गच्छेत्=तो बिना कवच का पाठ किए एक पग भी नहीं चलना चाहिए, नित्यम् यत्र यत्र एव=सदा जहाँ-जहाँ, कवचेन आवृतः=कवच द्वारा रक्षित हो कर, गच्छति=भक्त जाता है।।४३।।

अन्वितार्थ

यदि अपना कल्याण चाहें तो बिना कवच का पाठ किए एक पग भी नहीं चलना चाहिए, सदा जहाँ-जहाँ कवच द्वारा रक्षित हो कर भक्त जाता है।।४३।।

मन्त्र

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्वकामिकः।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।४४।।
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः॥४५॥

पदच्छेद

तत्र तत्र अर्थलाभः च विजयः सर्वकामिकः यम् यम् चिन्तयते कामम् तम् तम् प्राप्नोति निश्चितम् परम-ऐश्वर्यम् अतुलम् प्राप्स्यते भूतले पुमान् निर्भयः जायते मर्त्यः संग्रामेषु अपराजितः॥४४-४५॥

अन्वितपदार्थ

तत्र तत्र अर्थलाभः=वहाँ-वहाँ इच्छित वस्तु का लाभ, सर्वकामिकः च विजयः=और सभी कामनाओं के विषय में विजय होती है, पुमान् भूतले=भक्तजन धरती पर, यम् यम् चिन्तयते कामम्=जिन-जिन कामनाओं के विषय में सोचता है, तम् तम् प्राप्नोति निश्चितम्=वह-वह निश्चित रूप से प्राप्त करता है, अतुलम् परमैश्वर्यम्=अतुलनीय, सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य, प्राप्स्यते=प्राप्त करता है, मर्त्यः=मनुष्य, संग्रामेषु अपराजितः=युद्धों में अपराजित रहता है, निर्भयः=भय विहीन, जायते=हो जाता है॥४४-४५॥

अन्वितार्थ

वहाँ-वहाँ इच्छित वस्तु का लाभ और सभी कामनाओं के विषय में विजय होती है, भक्तजन धरती पर जिन-जिन कामनाओं के विषय में सोचता है, वह-वह निश्चित रूप से प्राप्त करता है, अतुलनीय, सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य प्राप्त करता है। मनुष्य युद्धों में अपराजित रहता है, भय विहीन हो जाता है॥४४-४५॥

मन्त्र

त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान्।
इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्॥४६॥

पदच्छेद

त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेन आवृतः पुमान् इदम् तु देव्याः कवचम् देवानाम् अपि दुर्लभम्॥४६॥

अन्वितपदार्थ

कवचेन आवृतः पुमान्=कवच धारण करने वाला भक्त, त्रैलोक्ये तु पूज्यः

भवेत्=तीनों लोको में पूज्य होता है, इदम् तु=यह, देवानाम् अपि दुर्लभम्=देवताओं को भी दुर्लभ देव्याः कवचम्=भगवती का कवच है।।४६।।

अन्वितार्थ

कवच धारण करने वाला भक्त तीनों लोको में पूज्य होता है। यह देवताओं को भी दुर्लभ भगवती का कवच है।।४६।।

मन्त्र

यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः।
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।।४७।।

पदच्छेद

यः पठेत् प्रयतः नित्यम् त्रिसन्ध्यम् श्रद्धया-अन्वितः दैवी कला भवेत् तस्य त्रैलोक्येषु अपराजितः।।४७।।

अन्वितपदार्थ

यः प्रयतः=जो भक्त सावधान हो कर, श्रद्धयान्वितः=श्रद्धापूर्वक, त्रिसन्ध्यम् नित्यम्=सुबह, मध्याह्न एवं सायं तीनों सन्ध्याओं में, पठेत्=पढ़ता है, तस्य दैवी कला भवेत्=उसको देवताओं जैसी शक्ति प्राप्त होती है, त्रैलोक्येषु अपराजितः=वह तीनों लोकों में कभी नहीं हारता।।४७।।

अन्वितार्थ

जो भक्त सावधान हो कर श्रद्धापूर्वक, सुबह, मध्याह्न एवं सायं तीनों सन्ध्याओं में पढ़ता है उसको देवताओं जैसी शक्ति प्राप्त होती है। वह तीनों लोकों में कभी नहीं हारता।।४७।।

मन्त्र

जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।
नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः।।४८।।

पदच्छेद

जीवेद् वर्षशतम् साग्रम् अपमृत्यु-विवर्जितः नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोटक-आदयः।।४८।।

अन्वितपदार्थ

अपमृत्यु-विवर्जितः=वह अकालमृत्यु विहीन होकर, साग्रम् वर्षशतम्=सौ वर्षों से अधिक, जीवेद्=जीवित रहता है, लूताविस्फोटकादयः=लूता और चेचकआदि, सर्वे व्याधयः=सभी रोग, नश्यन्ति=नष्ट होजाते हैं।।४८।।

अन्वितार्थ

वह अकालमृत्यु विहीन होकर सौ वर्षों से अधिक जीवित रहता है। लूता और चेचक आदि सभी रोग नष्ट हो जाते हैं।।४८।।

मन्त्र

स्थावरं जङ्गमं चापि कृत्रिमं चापि यद्विषम्।
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।।४९।।

पदच्छेद

स्थावरम् जङ्गमम् च अपि कृत्रिमम् च अपि यद् विषम् अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले।।४९।।

अन्वितपदार्थ

अपि च यद्=तथा जो, स्थावरम् जङ्गमम्=वनस्पति खनिज आदि स्थावर सर्प आदि जंगम, अपि च कृत्रिमम्=तथा बनावटी, विषम्=विष भी नष्ट हो जाते हैं। भूतले=धरती पर, सर्वाणि अभिचाराणि=सब प्रकार के तान्त्रिक अभिचार, मन्त्रयन्त्राणि=मन्त्रयन्त्र आदि।।४९।।

अन्वितार्थ

तथा जो वनस्पति खनिज आदि स्थावर, सर्प आदि जंगम तथा बनावटी विष भी नष्ट हो जाते हैं। धरती पर सब प्रकार के तान्त्रिक अभिचार, मन्त्रयन्त्र आदि।।४९।।

मन्त्र

भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः।
सहजाः कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।।५०।।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः।
ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः।।५१।।

पदच्छेद

भूचराः खेचराः च एव जलजाः सहजाः कुलजाः माला डाकिनी शाकिनी तथा अन्तरिक्षचराः घोराः डाकिन्यः च महाबलाः ग्रह-भूत-पिशाचाः च यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः।।५०-५१।।

अन्वितपदार्थ

भूचराः=धरती पर चलने वाले, खेचराः च एव=और आकाश में चलने वाले, जलजाः=जल में उत्पन्न होने वाले दुष्ट सत्त्व, च उपदेशिकाः=और क्षुद्रदेवता, सहजाः=साथ उत्पन्न होने वाले, कुलजाः=कुल में उत्पन्न होने वाले, माला=तेज नष्ट करने वाले, डाकिनी=दुखदायी शक्तियाँ, शाकिनी तथा=तथा खेती के लिए हानि कारक शक्तियाँ, अन्तरिक्षचराः= अन्तरिक्ष निवासी, घोराः डाकिन्यः च=भीषण मन्त्रसिद्ध स्त्रियाँ, महाबलाः=महाबली ग्रहभूतपिशाचाः च=ग्रह, भूत, पिशाच, यक्षगन्धर्वराक्षसाः=यक्ष, गन्धर्व, राक्षसगण।।५०-५१।।

अन्वितार्थ

धरती पर चलने वाले और आकाश में चलने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले दुष्ट सत्त्व और क्षुद्रदेवता, साथ उत्पन्न होने वाले, कुल में उत्पन्न होने वाले, तेज नष्ट करने वाले, दुखदायी शक्तियाँ तथा खेती के लिए हानिकारक शक्तियाँ, अन्तरिक्ष निवासी, भीषण मन्त्रसिद्ध स्त्रियाँ, महाबली, ग्रह, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षसगण।।५०-५१।।

मन्त्र

ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः।
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।।५२।।

पदच्छेद

ब्रह्मराक्षस-वेतालाः कूष्माण्डाः भैरवादयः नश्यन्ति दर्शनात् तस्य कवचे हृदि संस्थिते।।५२।।

अन्वितपदार्थ

ब्रह्मराक्षस-वेतालाः=ब्रह्मराक्षस, वेताल, कूष्माण्डाः=कूष्माण्ड, भैरवादयः=

भयावहतत्त्व, कवचे हृदि संस्थिते=कवच के हृदय में विराजमान रहने पर, तस्य दर्शनात्=उस व्यक्ति के दर्शन से, नश्यन्ति=नष्ट होते हैं।।५२।।

अन्वितार्थ

ब्रह्मराक्षस, वेताल, कूष्माण्ड, भयावहतत्त्व, कवच के हृदय में विराजमान रहने पर उस व्यक्ति के दर्शन से नष्ट होते हैं।।५२।।

मन्त्र

मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम्।
यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्त्तिमण्डितभूतले।।५३।।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा।
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्।।५४।।

पदच्छेद

मानोन्नतिः भवेद् राज्ञः तेजोवृद्धिकरम् परम् यशसा वर्द्धते सः अपि कीर्त्तिमण्डित-भूतले जपेत् सप्तशतीम् चण्डीम् कृत्वा तु कवचम् पुरा यावद् भूमण्डलम् धत्ते सशैल-वन-काननम्।।५३-५४।।

अन्वितपदार्थ

राज्ञः मानोन्नतिः भवेद्=राजा से सम्मान और उन्नति मिलती है, परम् तेजोवृद्धिकरम्=तेज को अत्यन्त बढ़ाता है, अपि सः कीर्त्तिमण्डितभूतले=और वह अपनी कीर्ति से विभूषित होकर भूमण्डल में, यशसा वर्द्धते=यश के कारण विकसित होता है, कवचम् तु पुरा कृत्वा=पहले कवच करके, सप्तशतीम् चण्डीम् जपेत्=सप्तशती चण्डी का पाठ करना चाहिए, यावद् भूमण्डलम्=ऐसा करने पर जबतक शेषनाग इस धरती को सशैलवनकाननम्=पर्वत, वन, जंगल के साथ, धत्ते=धारण करते हैं।।५३-५४।।

अन्वितार्थ

राजा से सम्मान और उन्नति मिलती है, तेज को अत्यन्त बढ़ाता है और वह अपनी कीर्ति से विभूषित होकर भूमण्डल में यश के कारण विकसित होता है, पहले कवच करके सप्तशती चण्डी का पाठ करना चाहिए, ऐसा करने पर जब तक शेषनाग इस धरती को पर्वत, वन, जंगल के साथ धारण करते हैं।।५३-५४।।

मन्त्र

तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रकी।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।।५५।।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।।५६।।

पदच्छेद

तावत् तिष्ठति मेदिन्याम् संततिः पुत्रपौत्रकी देहान्ते परमम् स्थानम् यत् सुरैः अपि दुर्लभम् प्राप्नोति पुरुषः नित्यम् महामाया-प्रसादतः लभते परमम् रूपम् शिवेन सह मोदते।।५५-५६।।

अन्वितपदार्थ

तावत्=तब तक, मेदिन्याम्=धरती पर, पुत्रपौत्रकी संततिः=पुत्र, पौत्रयुक्त संततियाँ, तिष्ठति=रहती हैं, पुरुषः=ऐसा पुरुष, देहान्ते=मृत्यु के बाद, परमम् नित्यम् स्थानम्=सर्वोच्च एवं अविनाशी स्थान, यत् सुरैः अपि दुर्लभम्=जो देवताओं को भी दुर्लभ हैं, प्राप्नोति=प्राप्त करता है, महामाया-प्रसादतः=महामाया के प्रसाद से, परमम् रूपम्=सर्वोच्चस्वरूप, लभते=प्राप्त करता है, शिवेन सह मोदते=तथा शिव के सान्निध्य में आनन्द करता है।।५५-५६।।

अन्वितार्थ

तब तक धरती पर पुत्र, पौत्रयुक्त संततियाँ रहती हैं, ऐसा पुरुष मृत्यु के बाद सर्वोच्च एंवं अविनाशी स्थान, जो देवताओं को भी दुर्लभ है, प्राप्त करता है, महामाया के प्रसाद से सर्वोच्चस्वरूप प्राप्त करता है तथा शिव के सान्निध्य में आनन्द करता है।।५५-५६।।

।। इति चण्डीकवच ।।

प्राचीन परंपरा से प्राप्त आगे लिखे हुए श्लोकों में चण्डी कवच में उल्लिखित सभी देवियों का नाम संग्रहीत है। इन श्लोकों की सहायता से कवच की शक्तियों का नाम एवं संख्या को प्रमाणिक रूप से जाना जा सकता है–

दशदिक्पालदेव्यश्च चामुण्डा च ततः परम्।
जया च विजया चैवाप्यजिता चापराजिता ।।१।।
उद्योतिनी ततः श्चोमा मालाधारी यशस्विनी।
त्रिनेत्रा यमघण्टा च शङ्खिनी द्वारवासिनी।।२।।
कालिका शांकरी पश्चात्सुगन्धा चर्चिका तथा।
अमृतादिकला पश्चात्ततः स्यात्तु सरस्वती।।३।।
कौमारी चण्डिका चित्रघण्टा माया महादिका।
कामाक्ष्यनन्तरं सर्वङ्गला भद्रकालिका।।४।।
धनुर्धरी नीलग्रीवा ततः स्यान्नलकूबरी।
ख्नधारिणिका पूर्वं वज्रधारिण्यनन्तरम्।।५।।
दण्डिनी चाम्बिंका शूलेश्वरी स्यात्तु नलेश्वरी।
मनःशोकविनाशा स्याल्ललिता शूलधारिणी।।६।।
कामिनी गुह्यपूर्वा स्यादीश्वरी च ततः परम्।
भूतनाथा ततः स्यात्तु महामहिषवाहिनी।।७।।
भगवत्यपि विन्ध्यस्था महापूर्वा बला तथा।
विनायकी नारसिंही ततः पश्चान्मितौजसी।।८।।
श्रीधर्यन्ते च पातालवासिन्यन्ते करालिनी।
ऊर्ध्वकेशी च कौबेरी वागीशी पार्वती तथा।।९।।
कालरात्रिश्च मुकुटेशानी पद्मावती तथा।
चूडामणिस्तथा ज्वालामुख्यभेद्या ततः स्मृता।।१०।।
ब्रह्माणी छत्रपूर्वा स्यादीश्वरी धर्मचारिणी।
चक्रिणीन्द्रबधूचण्डी महालक्ष्मीश्च भैरवी।।११।।
क्षेमंकरी तथा प्रोक्ता विजया च जयन्तिका।
इत्येताः सम्यगाख्याताः **कवचस्थाश्चशक्तयः**।।१२।।

।।अथ अर्गलास्तुति ।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुः ऋषिः, अनष्टुप्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये श्रीसप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।।

मन्त्र

मार्कण्डेय उवाच–

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।१।।

पदच्छेद

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमः अस्तु ते।।१।।

अन्वितपदार्थ

जयन्ती=जयन्ती या सर्वोत्कृष्टा, मङ्गला=मङ्गला या मोक्षप्रदा, काली=काली प्रलय की अधिष्ठातृदेवी, भद्रकाली=भद्रकाली या सुखप्रदा, कपालिनी=प्रपञ्च-कपाल को हाथ में धारण करने वाली, दुर्गा=दुर्गा या उपासनारूपी क्लेश के द्वारा प्राप्य, क्षमा=क्षमा, भक्तों अपराध को क्षमा करने वाली, शिवा=चिद्रूपिणी, धात्री=पूरे प्रपञ्च को धारण करने वाली, स्वाहा=देवों का पोषण करने वाली स्वाहा, स्वधा=पितरों का पोषण करने वाली स्वधा, ते=आपको, नमः अस्तु=नमस्कार है।।१।।

अन्वितार्थ

जयन्ती या सर्वोत्कृष्टा, मङ्गला या मोक्षप्रदा, काली प्रलय की अधिष्ठातृदेवी, भद्रकाली या सुखप्रदा, प्रपञ्च-कपाल को हाथ में धारण करने वाली, दुर्गा या उपासनारूपी क्लेश के द्वारा प्राप्य, क्षमा-भक्तों अपराध को क्षमा करने वाली, चिद्रूपिणी, पूरे प्रपञ्च को धारण करने वाली, देवों का पोषण करने वाली स्वाहा, पितरों का पोषण करने वाली स्वधा, आपको नमस्कार है।।१।।

जय एवं देवि चामुण्डे......

मन्त्र

मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२।।

पदच्छेद

मधुकैटभ-विद्रावि-विधातृ-वरदे नमः रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।२।।

अन्वितपदार्थ

मधुकैटभ-विद्रावि-विधातृ-वरदे=हे मधुकैटभ की नाशिनी एवं विधाता को वर देने वाली माता, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।२।।

अन्वितार्थ

हे मधुकैटभ की नाशिनी एवं विधाता को वर देने वाली माता परमात्मज्ञान प्रदान करें। विशुद्ध विद्या प्रदान करें। तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें। काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।२।।

मन्त्र

महिषासुरनिर्णाशि विधात्रि वरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।३।।

पदच्छेद

महिषासुर-निर्णाशि विधात्रि वरदे नमः रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।३।।

अन्वितपदार्थ

महिषासुर-निर्णाशि=हे महिषासुर का समूलनाश करने वाली, विधात्रि=संसार की रचयिता, वरदे=हे इच्छित वर प्रदात्री माता, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।३।।

अन्वितार्थ

हे महिषासुर का समूलनाश करने वाली! संसार की रचयिता! हे इच्छित वर प्रदात्री माता! परमात्मज्ञान प्रदान करें विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।३।।

मन्त्र

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।४।।

पदच्छेद

वन्दित-अङ्घ्रियुगे देवि सर्व-सौभाग्य-दायिनि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।४।।

अन्वितपदार्थ

वन्दिताङ्घ्रियुगे=हे ब्रह्मविष्णुरुद्र आदि महादेवों द्वारा पूजित चरण युगल वाली परमेश्वरी, देवि=हे देदीप्यमान ईश्वरी, सर्वसौभाग्यदायिनि=सभी भक्तों को संपूर्ण प्रकार का सौभाग्य प्रदान करने वाली माता, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।४।।

अन्वितार्थ

हे ब्रह्म, विष्णु, रुद्र आदि महादेवों द्वारा पूजित चरण युगल वाली परमेश्वरी! हे देदीप्यमान ईश्वरी सभी भक्तों को संपूर्ण प्रकार का सौभाग्य प्रदान करने वाली माता! मुझे परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।४।।

मन्त्र

रक्तबीजबधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।५।।

पदच्छेद

रक्तबीजबधे देवि चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।५।।

अन्वितपदार्थ

रक्तबीजबधे=हे रक्तबीज संहारिणि! चण्डमुण्डविनाशिनि= चण्डमुण्ड का विनाश करने वाली माता! रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदानकरें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि= प्रदान करें। द्विषः=काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।५।।

अन्वितार्थ

हे रक्तबीज संहारिणि! चण्डमुण्ड का विनाश करने वाली माता! मुझे परमात्मज्ञान प्रदान करें। विशुद्ध विद्या प्रदान करें। तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें। काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।५।।

मन्त्र

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।६।।

पदच्छेद

अचिन्त्य-रूपचरिते सर्व-शत्रु-विनाशिनि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।६।।

अन्वितपदार्थ

अचिन्त्यरूपचरिते=जिसके रूप एवं क्रियाओं को नहीं जाना जा सकता ऐसी अज्ञेया! सर्व-शत्रु-विनाशिनि=अपने भक्तों के सब प्रकार के शत्रुओं का सर्वनाश करने वाली माता! रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।६।।

अन्वितार्थ

जिसके रूप एवं क्रियाओं को नहीं जाना जा सकता ऐसी अज्ञेया! अपने भक्तों के सब प्रकार के शत्रुओं का सर्वनाश करने वाली माता! मुझे परमात्मज्ञान प्रदान करें। विशुद्ध विद्या प्रदान करें। तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें। काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।६।।

मन्त्र

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।७।।

पदच्छेद

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके प्रणताय मे रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।७।।

अन्वितपदार्थ

हे चण्डिके=परब्रह्मरूपिणि, सर्वदा=सदा, भक्तया=भक्ति भाव से, नतेभ्यः=प्रणत रहने वाले, मे=मुझ को, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदानकरें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।७।।

अन्वितार्थ

हे परब्रह्मरूपिणि! सदा भक्ति भाव से प्रणत रहने वाले मुझको परमात्मज्ञान प्रदान करें विशुद्ध विद्या प्रदानकरें तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।७।।

मन्त्र

स्तुवद्भ्योभक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।८।।

पदच्छेद

स्तुवद्भ्यः भक्ति-पूर्वम् त्वाम् चण्डिके व्याधिनाशिनि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।८।।

अन्वितपदार्थ

व्याधिनाशिनि=हे भवरूपी व्याधि को विनष्ट करने वाली! चण्डिके=चण्डिके! त्वाम्!=आपकी, भक्तिपूर्वम्=भक्तिपूर्वक, स्तुवद्भ्यः=स्तुति करने वालों को, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदानकरें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।८।।

अन्वितार्थ

हे भवरूपी व्याधि को विनष्ट करने वाली! चण्डिके! आपकी भक्तिपूर्वक स्तुति करने वालों को परमात्मज्ञान प्रदान करें विशुद्ध विद्या प्रदान करें तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।८।।

मन्त्र

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।९।।

पदच्छेद

चण्डिके सततम् ये त्वाम् अर्चयन्ति इह भक्तितः रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।९।।

अन्वितपदार्थ

चण्डिके=हे चण्डिके! ये=जो भक्त, इह=इस मानव शरीर में, त्वाम्=आपकी, भक्तितः=भक्तिपूर्वक, सततम्=लगातार, अर्चयन्ति=आराधना करते हैं, उनको, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।९।।

अन्वितार्थ

हे चण्डिके! जो भक्त इस मानव शरीर में आपकी भक्तिपूर्वक लगातार आराधना करते हैं, उनको परमात्मज्ञान प्रदान करें विशुद्ध विद्या प्रदानकरें तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।९।।

मन्त्र

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥

पदच्छेद

देहि सौभाग्यम् आरोग्यम् देहि मे परमम् सुखम् रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि॥१०॥

अन्वितपदार्थ

मे=हे पराम्बा! मुझे, सौभाग्यम्=सुन्दर भाग्य, आरोग्यम्=रोग विहीनता, देहि=प्रदान करें, परमं सुखम्=सर्वोच्च सुख मोक्ष, देहि=प्रदान करें, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें॥१०॥

अन्वितार्थ

हे पराम्बा! मुझे सुन्दर भाग्य एवं रोग विहीनता प्रदान करें, सर्वोच्चसुख मोक्ष प्रदान करें, परमात्मज्ञान प्रदान करें विशुद्ध विद्या प्रदान करें तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें॥१०॥

मन्त्र

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥११॥

पदच्छेद

विधेहि द्विषताम् नाशम् विधेहि बलम् उच्चकैः रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि॥११॥

अन्वितपदार्थ

द्विषताम्=बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओं का, नाशम्=विनाश, विधेहि=करें, उच्चकैः बलम्=सर्वोच्च सामर्थ्य प्रदान करें, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें॥११॥

अन्वितार्थ

बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओं का विनाश करें सर्वोच्च सामर्थ्य प्रदान करें, परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें॥११॥

मन्त्र

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुलां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१२॥

पदच्छेद

विधेहि देवि कल्याणम् विधेहि विपुलाम् श्रियम् रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि॥१२॥

अन्वितपदार्थ

देवि=हे भगवति! कल्याणम् विधेहि=सर्वविध मङ्गल करें, विपुलाम् श्रियम् विधेहि=पर्याप्त सम्पत्ति प्रदान करें, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें॥१२॥

अन्वितार्थ

हे भगवति! सर्वविध मङ्गल करें, पर्याप्त सम्पत्ति प्रदान करें, परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें॥१२॥

मन्त्र

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१३॥

पदच्छेद

विद्यावन्तम् यशस्वन्तम् लक्ष्मीवन्तम् जनम् कुरु रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि॥१३॥

अन्वितपदार्थ

जनम्=मुझ भक्त को, विद्यावन्तम्=ज्ञानवान, यशस्वन्तम्=यशस्वी, लक्ष्मीवन्तम्=और समृद्ध, कुरु=बनाएँ, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यश:=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विष:=काम क्रोध लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।१३।।

अन्वितार्थ

मुझ भक्त को ज्ञानवान, यशस्वी और समृद्ध बनाएँ। परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।१३।।

मन्त्र

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।१४।।

पदच्छेद

प्रचण्ड-दैत्य-दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे रूपम् देहि जयम् देहि यश: देहि द्विष: जहि।।१४।।

अन्वितपदार्थ

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने=हे महापराक्रमी दैत्यों का घमण्ड नष्ट करने वाली, चण्डिके=चण्डिके, मे प्रणताय=मुझ विनीत को, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदानकरें, यश:=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विष:=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।१४।।

अन्वितार्थ

हे महापराक्रमी दैत्यों का घमण्ड नष्ट करने वाली चण्डिके! मुझ विनीत को परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।१४।।

मन्त्र

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१५॥

पदच्छेद

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र-संस्तुते परमेश्वरि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि॥१५॥

अन्वितपदार्थ

चतुर्भुजे=हे चार भुजाओं वाली, चतुर्वक्त्र-संस्तुते=चतुर्मुख ब्रह्मा द्वारा उपासित माता! परमेश्वरि=हे परमेश्वरि, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदानकरें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें॥१५॥

अन्वितार्थ

हे चार भुजाओं वाली, चतुर्मुख ब्रह्मा द्वारा उपासित माता! हे परमेश्वरि! परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें॥१५॥

मन्त्र

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१६॥

पदच्छेद

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्-भक्त्या सदा अम्बिके रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि॥१६॥

अन्वितपदार्थ

अम्बिके=हे अम्बिके, देवि=देवि, कृष्णेन=आप श्रीकृष्ण द्वारा, शश्वद्-भक्त्या=सनातन भक्तिपूर्वक, सदा=निरन्तर, संस्तुते=उपासित हैं, परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें॥१६॥

अन्वितार्थ

हे अम्बिके! देवि! आप श्रीकृष्ण द्वारा सनातन भक्तिपूर्वक निरन्तर उपासित हैं। परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।१६।।

मन्त्र

हिमाचलसुतानाथपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।१७।।

पदच्छेद

हिमाचल-सुता-नाथ-पूजिते परमेश्वरि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।१७।।

अन्वितपदार्थ

हिमाचल-सुता-नाथपूजिते=हे पार्वती-पति भगवान् शिव द्वारा उपासित, परमेश्वरि=परमेश्वरि! रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।१७।।

अन्वितार्थ

हे पार्वती-पति भगवान् शिव द्वारा उपासित! परमेश्वरि! परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदानकरें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।१७।।

मन्त्र

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।।१८।।

पदच्छेद

सुर-असुर-शिरोरत्न-निघृष्ट-चरणे! अम्बिके! रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।१८।।

अन्वितपदार्थ

सुर-असुर-शिरोरत्न-निघृष्ट-चरणे!=हे देवों एवं राक्षसों के मुकुटों में जटित रत्नों से घर्षित चरणों वाली, अम्बिके!=माता! रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।१८।।

अन्वितार्थ

हे देवों एवं राक्षसों के मुकुटों में जटित रत्नों से घर्षित चरणों वाली माता! परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।१८।।

मन्त्र

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।१९।।

पदच्छेद

इन्द्राणीपति-सद्भाव-पूजिते परमेश्वरि रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।१९।।

अन्वितपदार्थ

इन्द्राणीपति-सद्भाव-पूजिते=हे शची के पति इन्द्र द्वारा पूजित! परमेश्वरि=परमेश्वरि रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदानकरें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।१९।।

अन्वितार्थ

हे शची के पति इन्द्र द्वारा पूजित! परमेश्वरि! परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदानकरें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।१९।।

मन्त्र

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२०।।

पदच्छेद

देवि! प्रचण्ड-दोर्दण्ड-दैत्यदर्प-विनाशिनि! रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।२०।।

अन्वितपदार्थ

प्रचण्ड-दोर्दण्ड-दैत्यदर्प-विनाशिनि!=हे प्रचण्ड बाहुबली दैत्यों का घमण्ड समाप्त कर देने वाली, देवि!=देवि, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।२०।।

अन्वितार्थ

हे प्रचण्ड बाहुबली दैत्यों का घमण्ड समाप्त कर देने वाली! देवि! परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।२०।।

मन्त्र

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।२१।।

पदच्छेद

देवि भक्तजन-उद्दामदत्त-आनन्द-उदये अम्बिके रूपम् देहि जयम् देहि यशः देहि द्विषः जहि।।२१।।

अन्वितपदार्थ

भक्तजन-उद्दामदत्त-आनन्दोदये=हे अनन्यभक्तिमान भक्तों को मोक्ष देने वाली, देवि अम्बिके=माता अम्बिका, रूपम्=परमात्मज्ञान, देहि=प्रदान करें, जयम्=विशुद्ध विद्या, देहि=प्रदान करें, यशः=तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति, देहि=प्रदान करें, द्विषः=काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को, जहि=नष्ट करें।।२१।।

अन्वितार्थ

हे अनन्यभक्तिमान् भक्तों को मोक्ष देने वाली माता अम्बिका! परमात्मज्ञान प्रदान करें, विशुद्ध विद्या प्रदान करें, तत्त्वज्ञान से उत्पन्न कीर्ति प्रदान करें, काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं को नष्ट करें।।२१।।

मन्त्र

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।२२।।

पदच्छेद

पत्नीम् मनोरमाम् देहि मनोवृत्त-अनुसारिणीम् तारिणीम् दुर्गसंसार-सागरस्य कुल-उद्भवाम्।।२२।।

अन्वितपदार्थ

मनोरमाम्=मन को प्रसन्न करने वाली, मनोवृत्तानुसारिणीम्=मनोनुकूल आचरण करने वाली, दुर्गसंसारसागरस्य तारिणीम्=कठिन सांसारिक धर्म को पार लगाने वाली, कुलोद्भवाम्=प्रतिष्ठित परिवार में उत्पन्न, पत्नीम् देहि=जीवनसंगिनी प्रदान करें।।२२।।

अन्वितार्थ

हे माता! मन को प्रसन्न करने वाली, मनोनुकूल आचरण करने वाली, कठिन सांसारिक धर्म को पार लगाने वाली, प्रतिष्ठित परिवार में उत्पन्न जीवन संगिनी प्रदान करें।।२२।।

मन्त्र

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः।
स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति संपदः।।२३।।

पदच्छेद

इदम् स्तोत्रम् पठित्वा तु महास्तोत्रम् पठेत् नरः स तु सप्तशती-संख्या-वरम् आप्नोति संपदः।।२३।।

अन्वितपदार्थ

नरः=जो भक्त, इदम् स्तोत्रम् पठित्वा तु=इस स्तोत्र का पाठ करके, महास्तोत्रम् पठेत्=सप्तशती का पाठ करता है। स तु=वह, सप्तशती-संख्या-वरम्=सप्तशती के मन्त्रों की संख्या के बराबर श्रेष्ठ, संपदः=सम्पत्तियाँ, आप्नोति=प्राप्त करता है।।२३।।

अन्वितार्थ

जो भक्त इस स्तोत्र का पाठ करके सप्तशती का पाठ करता है, वह सप्तशती के मन्त्रों की संख्या के बराबर श्रेष्ठ सम्पत्तियाँ प्राप्त करता है।।२३।।

।। इति अर्गलास्तुतिः ।।

।। अथ कीलक ।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीकीलकस्तोत्रमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनष्टुप्छन्दः, श्रीमहासरस्वतीदेवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये श्रीसप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।।

मन्त्र

विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयः प्रािप्तनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे।।१।।

पदच्छेद

विशुद्ध-ज्ञान-देहाय त्रिवेदी-दिव्य-चक्षुषे श्रेयः-प्राप्ति-निमित्ताय. नमः सोमार्द्ध-धारिणे।।१।।

अन्वितपदार्थ

विशुद्ध-ज्ञान-देहाय=निर्मलज्ञान रूपी शरीर वाले, त्रिवेदी-दिव्य- चक्षुषे=ऋग्, यजुः, साम तीनों वेद जिनके दिव्य नेत्र हैं, सोमार्द्ध-धारिणे=भाल पर अर्धचन्द्र धारण करने वाले, श्रेयः-प्राप्ति-निमित्ताय=परमकल्याण प्राप्ति के एक मात्र कारण परमशिव को, नमः=प्रणाम।।१।।

अन्वितार्थ

निर्मलज्ञान रूपी शरीर वाले, ऋग्, यजुः, साम तीनों वेद जिनके दिव्य नेत्र हैं, भाल पर अर्धचन्द्र धारण करने वाले, परमकल्याण प्राप्ति के एक मात्र कारण परमशिव को प्रणाम।।१।।

मन्त्र

सर्वमेतद्विजानीयान् मन्त्राणामभिकीलकम्।
सोपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः।।२।।

पदच्छेद

सर्वम् एतद् विजानीयात् मन्त्राणाम् अभिकीलकम् सः अपि क्षेमम् अवाप्नोति सततम् जाप्यतत्परः॥२॥

अन्वितपदार्थ

एतत्=आगे बताए जाने वाले इन, सर्वम्=सभी श्लोकों को, मन्त्राणाम्=सब प्रकार के मन्त्रों के, अभिकीलकम्=सिद्धि प्रतिबन्धक शापरूपी कीलक के नाशक के रूप में, विजानीयात्=समझना चाहिए, अपि सततम् जाप्यतत्परः=तथा सदा इन मन्त्रों की साधना करने वाला, सः=साधक, क्षेमम्=मंगल, अवाप्नोति=प्राप्त करता है॥२॥

अन्वितार्थ

आगे बताए जाने वाले इन सभी श्लोकों को सब प्रकार के मन्त्रों के सिद्धि प्रतिबन्धक शापरूपी कीलक के नाशक के रूप में समझना चाहिए तथा सदा इन मन्त्रों की साधना करने वाला साधक मंगल प्राप्त करता है॥२॥

मन्त्र

सिध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिध्यति॥३॥

पदच्छेद

सिध्यन्ति उच्चाटन-आदीनि वस्तूनि सकलानि अपि एतेन स्तुवताम् देवी स्तोत्रमात्रेण सिध्यति॥३॥

अन्वितपदार्थ

एतेन=इससे, सकलानि अपि=सभी, उच्चाटनादीनि=उच्चाटन आदि, वस्तूनि=कर्म, सिध्यन्ति=सफल होते हैं। स्तोत्रमात्रेण=केवल स्तुति रूप में, स्तुवताम्=स्तवन करने वालों के प्रति, देवी=भगवती पराम्बा, सिध्यति=प्रसन्न होती हैं॥३॥

अन्वितार्थ

इससे सभी उच्चाटन आदि कर्म सफल होते हैं तथा केवल स्तुति रूप में स्तवन करने वालों के प्रति भगवती पराम्बा प्रसन्न होती हैं॥३॥

मन्त्र

न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम्।।४।।

पदच्छेद

न मन्त्रः न औषधम् तत्र न किञ्चिद् अपि विद्यते विना जाप्येन सिध्येत सर्वम् उच्चाटनादिकम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

तत्र=इस प्रकरण में, न मन्त्रः=न मन्त्र, न औषधम्=न औषध, न किञ्चिद् अपि=न कोई भी अन्य साधन, विद्यते=सफल होते हैं, सर्वम् उच्चाटनादिकम्=उच्चाटन आदि सारे कार्य, विना जाप्येन=विना मन्त्र जप के, सिध्येत=सिद्ध किए जा सकते हैं।।४।।

अन्वितार्थ

इस प्रकरण में न मन्त्र, न औषध, न कोई भी अन्य साधन सफल होते हैं। अपितु उच्चाटन आदि सारे कार्य बिना मन्त्र जप के सिद्ध किए जा सकते हैं।।४।।

मन्त्र

समग्राण्यपि सेत्स्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्।।५।।

पदच्छेद

समग्राणि अपि सेत्स्यन्ति लोकशङ्काम् इमाम् हरः कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वम् एवम् इदम् शुभम्।।५।।

अन्वितपदार्थ

समग्राणि अपि=अथवा मन्त्र, ओषधि आदि सभी, सेत्स्यन्ति=सिद्ध होंगे, इमाम् लोकशङ्काम्=लोक में व्याप्त इस विकल्प रूपी शंका को, हरः कृत्वा=भगवान् शिव को समर्पित करके, निमन्त्रयामास=निराकरण के लिए निमन्त्रित किया, इदम् एवम्=शिव की आज्ञा से यह सप्तशती ही, सर्वम् शुभम्=सभी प्रकार से शुभ है।।५।।

अन्वितार्थ

अथवा मन्त्र, ओषधि आदि सभी सिद्ध होंगे। लोक में व्याप्त इस विकल्प रूपी शंका को भगवान् शिव को समर्पित करके निराकरण के लिए निमन्त्रित किया। शिव की आज्ञा से यह सप्तशती ही सभी प्रकार से शुभ है। अन्य साधन नहीं।।५।।

मन्त्र

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुह्यं चकार सः।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम्।।६।।

पदच्छेद

स्तोत्रम् वै चण्डिकायाः तु तत् च गुह्यम् चकार सः। समाप्तिः न च पुण्यस्य यथावत् ताम् नियन्त्रणाम्।।६।।

अन्वितपदार्थ

चण्डिकायाः तु=चण्डिका की, स्तोत्रम् वै=स्तोत्र ही उत्तम है, तत् च=और उसे, सः=उन शिव ने, गुह्यम्=अतिरहस्य रूप, चकार=कर दिया है। पुण्यस्य च=इसके पाठ का पुण्य, न समाप्तिः=समाप्त नहीं होता। ताम् नियन्त्रणाम्=शिव का पूर्वोक्त अनुशासन, यथावत्=यथार्थ रहता है।।६।।

अन्वितार्थ

चण्डिका की स्तोत्र ही उत्तम है और उसे उन शिव ने अतिरहस्य रूप कर दिया है। इसके पाठ का पुण्य समाप्त नहीं होता। शिव का पूर्वोक्त अनुशासन यथार्थ रहता है।।६।।

मन्त्र

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः।।७।।

पदच्छेद

सः अपि क्षेमम् अवाप्नोति सर्वम् एव न संशयः कृष्णायाम् वा चतुर्दश्याम् अष्टम्याम् वा समाहितः।।७।।

अन्वितपदार्थ

सः अपि=सप्तशती का पाठ करने पर अन्य मन्त्रों का साधक भी, सर्वम् एव=सब प्रकार का, क्षेमम्=संरक्षण, अवाप्नोति=पाता है, न संशयः=इसमें कोई संदेह नहीं है, कृष्णायाम् वा=कृष्ण पक्ष की, चतुर्दश्याम्=चतुर्दशी, अष्टम्याम् वा=अथवा अमावास्या को, समाहितः=भगवती के प्रति एकाग्रचित्त होकर साधक।।७।।

अन्वितार्थ

सप्तशती का पाठ करने पर अन्य मन्त्रों का साधक भी सब प्रकार का संरक्षण पाता है इसमें कोई संदेह नहीं है। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी अथवा अमावास्या को भगवती के प्रति एकाग्रचित्त होकर साधक।।७।।

मन्त्र

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।।८।।

पदच्छेद

ददाति प्रतिगृह्णाति न अन्यथा एषा प्रसीदति इत्थम् रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।।८।।

अन्वितपदार्थ

ददाति प्रतिगृह्णाति=अपनी सारी संपत्ति भगवती को अर्पित करके पुनः जीवन निर्वाह के लिए ग्रहण करता है। एषा=यह सप्तशती, अन्यथा=इस विधि के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार से, न प्रसीदति=नहीं प्रसन्न होती, महादेवेन=महादेव शिव द्वारा, इत्थम् रूपेण=इसी रूप के, कीलेन=प्रतिबन्ध से, कीलितम्=सप्तशती प्रतिबन्धित है।।८।।

अन्वितार्थ

अपनी सारी संपत्ति भगवती को अर्पित करके पुनः जीवन निर्वाह के लिए ग्रहण करता है। यह सप्तशती इस विधि के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार से नहीं प्रसन्न होती। महादेव शिव द्वारा इसी रूप के प्रतिबन्ध से सप्तशती प्रतिबन्धित है।।८।।

मन्त्र

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायतेऽवने।।९।।

पदच्छेद

यः निष्कीलाम् विधाय एनाम् नित्यम् जपति संस्फुटम् स सिद्धः स गणः सः अपि गन्धर्वः जायते अवने।।९।।

अन्वितपदार्थ

यः=जो साधक, एनाम्=इस सप्तशती को, निष्कीलाम्=उक्त विधि से प्रतिबन्ध मुक्त, विधाय=करके, नित्यम्=प्रतिदिन, संस्फुटम्=सुस्पष्ट रूप से, जपति=जपता है, स सिद्धः=वह सिद्ध होजाता है, स गणः=वह भगवती का गण होजाता है, अपि सः=तथा वह ही, अवने=जगत् की रक्षा में समर्थ, गन्धर्वः=गन्धर्व, जायते= हो जाता है।।९।।

अन्वितार्थ

जो साधक इस सप्तशती को उक्त विधि से प्रतिबन्ध मुक्त करके प्रतिदिन सुस्पष्ट रूप से जपता है वह सिद्ध हो जाता है, वह भगवती का गण हो जाता है तथा वही जगत् की रक्षा में समर्थ गन्धर्व हो जाता है।।९।।

मन्त्र

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नाल्पमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात्।।१०।।

पदच्छेद

न च एव अपि अटतः तस्य भयम् क्व अपि इह जायते न अल्पमृत्युवशम् याति मृतः मोक्षम् अवाप्नुयात्।।१०।।

अन्वितपदार्थ

अपि न च एव=और न ही, तस्य इह अटतः=उसकी इस लोक की यात्राओं में, क्व अपि=कहीं भी, भयम्=भय, जायते= होता है, न अल्पमृत्युवशम्=न अकाल मृत्यु के वश में, याति=जाता है, मृतः मोक्षम्=मरने पर मोक्ष, अवाप्नुयात्=प्राप्त करता है।।१०।।

अन्वितार्थ

और न ही उसकी इस लोक की यात्राओं में कहीं भी भय होता है न अकाल मृत्यु के वश में जाता है। मरने पर मोक्ष प्राप्त करता है।।१०।।

मन्त्र

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव संपन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः।।११।।

पदच्छेद

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत हि अकुर्वाणः विनश्यति ततः ज्ञात्वा एव संपन्नम् इदम् प्रारभ्यते बुधैः।।११।।

अन्वितपदार्थ

ज्ञात्वा=यह कीलक विधि जान कर, प्रारभ्य=उसे करना आरम्भ करके, कुर्वीत हि=पाठ करना चाहिए, अकुर्वाणः=ऐसा न करने वाला, विनश्यति=विनष्ट हो जाता है, ततः ज्ञात्वा एव=इसलिए विधि जान कर ही, बुधैः=बुद्धिमानों द्वारा, संपन्नम्=पूर्णरूप में, इदम्=यह, प्रारभ्यते=पाठ आरम्भ किया जाता है।।११।।

अन्वितार्थ

यह कीलक विधि जान कर उसे करना आरम्भ करके पाठ करना चाहिए। ऐसा न करने वाला विनष्ट हो जाता है। इसलिए विधि जान कर ही बुद्धिमानों द्वारा पूर्णरूप में यह पाठ आरम्भ किया जाता है।।११।।

मन्त्र

सौभाग्यादि च यत्किंचिद् दृश्यते ललनाजने।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम्।।१२।।

पदच्छेद

सौभाग्य आदि च यत् किंचिद् दृश्यते ललनाजने तत् सर्वम् तत् प्रसादेन तेन जाप्यम् इदम् शुभम्।।१२।।

अन्वितपदार्थ

यत् किंचित् च=और जो कुछ भी, सौभाग्य आदि=सौभाग्य आदि,

ललनाजने=सुन्दरियों में, दृश्यते=दिखाई देता है, तत् सर्वम्=वह सब, तत् प्रसादेन=उस स्तोत्र के प्रभाव से प्राप्त होता है, तेन इदम् शुभम्=अतः यही शुभ, जाप्यम्=स्तव है।।१२।।

अन्वितार्थ

और जो कुछ भी सौभाग्य आदि सुन्दरियों में दिखाई देता है वह सब उस स्तोत्र के प्रभाव से प्राप्त होता है। अतः यही शुभ स्तव है।।१२।।

मन्त्र

शनैस्तु जाप्यमानेऽस्मिन्स्तोत्रे संपत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत्।।१३।।

पदच्छेद

शनैः तु जाप्यमाने अस्मिन् स्तोत्रे संपत्तिः उच्चकैः भवति एव समग्रा अपि ततः प्रारभ्यम् एव तत्।।१३।।

अन्वितपदार्थ

अस्मिन्=इस, स्तोत्रे=स्तोत्र के, शनैः=मन्द गति से, उच्चकैः तु=स्फुट उच्चारण पूर्वक, जाप्यमाने=पाठ किए जाने पर, समग्रा संपत्तिः=सम्पूर्ण सम्पत्तियाँ, भवति एव=होती ही हैं, ततः अपि=इस कारण भी, तत् प्रारभ्यम् एव=इस महास्तोत्र का पाठ करना ही चाहिए।।१३।।

अन्वितार्थ

इस स्तोत्र के मन्द गति से स्फुट उच्चारण पूर्वक पाठ किए जाने पर सम्पूर्ण सम्पत्तियाँ होती ही हैं। इस कारण भी इस महास्तोत्र का पाठ करना ही चाहिए।।१३।।

मन्त्र

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसंपदः।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः।।१४।।

पदच्छेद

ऐश्वर्यम् यत् प्रसादेन सौभाग्य-आरोग्यसंपदः शत्रु-हानिः परः मोक्षः स्तूयते सा न किम् जनैः।।१४।।

अन्वितपदार्थ

यत् प्रसादेन=जिसकी प्रसन्नता से, ऐश्वर्यम्=प्रभुता, सौभाग्यारोग्यसंपद:=सौभाग्य, रोगविहीनता, संपत्तियाँ, शत्रुहानि:=शत्रुओं का पराभव, परो मोक्ष:=परमा मुक्ति प्राप्त होती है, सा=वह सप्तशती, जनै:=भक्त लोगों द्वारा, किम् न स्तूयते=क्या नहीं पढ़ी जाती।।१४।।

अन्वितार्थ

जिसकी प्रसन्नता से प्रभुता, सौभाग्य, रोगविहीनता, संपत्तियाँ, शत्रुओं का पराभव, परमा मुक्ति प्राप्त होती है। वह सप्तशती भक्त लोगों द्वारा क्या नहीं पढ़ी जाती।।१४।।

।। इति कीलकम् ।।

॥ अथ रात्रिसूक्त ॥

विनियोगः

रात्रीत्यष्टर्चसूक्तस्य सोभरिपुत्रः कुशिकः ऋषिः। यद्वा। भारद्वाजसुता रात्र्याख्या ऋषिका गायत्री छन्दः रात्रीदेवता। दुःस्वप्नदर्शनफलशमनार्थे पायसहवने श्रीसप्तशतीपाठाङ्गत्वेन वा पाठे विनियोगः।

मन्त्र

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः।
विश्वा अधिश्रियोधित॥१॥

पदच्छेद

ॐ रात्री व्यख्यत् आयती पुरुत्रा देवी अक्षभिः विश्वा अधि श्रियः अधित॥१॥

अन्वितपदार्थ

आयती=आती हुई, देवी=अव्यक्त प्रकाशमयी, रात्री=महामाया रूपिणी रात्रि, पुरुत्रा=विशाल ब्रह्माण्ड में व्याप्त, अक्षभिः=अपने दिव्यनक्षत्र रूपी नेत्रों से, व्यख्यत्=देखतीं हैं। विश्वा=सम्पूर्ण, श्रियः=ऐश्वर्य को, अधि-अधित=अपने अधिकार में रखतीं हैं तथा यथोचित रीति से प्रदान करतीं हैं॥१॥

अन्वितार्थ

आती हुई महामाया रूपिणी अव्यक्त प्रकाशमयी रात्रि विशाल ब्रह्माण्ड में व्याप्त अपने दिव्यनक्षत्र रूपी नेत्रों से देखतीं हैं। सम्पूर्ण ऐश्वर्य को अपने अधिकार में रखतीं हैं तथा यथोचित रीति से प्रदान करतीं हैं॥१॥

मन्त्र

ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः।
ज्योतिषा बाधते तमः॥२॥

पदच्छेद

आ उरु अप्राः अमर्त्या निवतः देवी उद्वतः ज्योतिषा बाधते तमः।।२।।

अन्वितपदार्थ

अमर्त्या=सनातनी, देवी=द्योतनशील रात्रि, निवतः=नीचे, उद्वतः=ऊँचे सब प्राणियों को, उरु=विशाल अन्तरिक्ष को, आ-अप्राः=अपने स्वरूप में समाए हुए हैं, तमः=अन्धकार को, ज्योतिषा=प्रकाश के द्वारा, बाधते=रोक देतीं हैं।।२।।

अन्वितार्थ

सनातनी, द्योतनशील रात्रि नीचे-ऊँचे सब प्राणियों को तथा विशाल अन्तरिक्ष को अपने स्वरूप में समाए हुए हैं। अन्धकार को प्रकाश के द्वारा रोक देतीं हैं।।२।।

मन्त्र

निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती।
अपेदुहासते तमः।।३।।

पदच्छेद

निर् उ स्वसारम् अस्कृत उषसम् देवी आयती अप इद् उहासते तमः।।३।।

अन्वितपदार्थ

देवी=देदीप्यमान रात्रि, आयती=स्वयं प्रकट होती हुई, स्वसारम्=अपनी बहन, उषसम्=उषा को, निर्-अस्कृत=आविर्भूत करती हैं, तमः=उषा के आविर्भाव से अन्धकार, अप-इद्-उहासते=समाप्त ही होता है।।३।।

अन्वितार्थ

देदीप्यमान रात्रि स्वयं प्रकट होती हुई अपनी बहन उषा को आविर्भूत करती हैं। उषा के आविर्भाव से अन्धकार समाप्त ही होता है।।३।।

मन्त्र

सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि।
वृक्षे न वसतिं वयः।।४।।

पदच्छेद

सा नः अद्य यस्याः वयम् नि ते यामन् अ-विक्ष्महि। वृक्षे न वसतिं वयः।।४।।

अन्वितपदार्थ

अद्य=इस समय, सा=वह भगवती रात्रि, नः=हमारे लिए प्रसन्न हों। यस्याः=जिनके, ते यामन्=उस संहारक प्रभाव काल में, वयम्=हम सब, नि-अ-विक्ष्महि=उसी प्रकार निलीन रहते हैं। वृक्षे न=जिस प्रकार वृक्ष में, वयः=पक्षी गण, वसतिम्=वास करते हैं।।४।।

अन्वितार्थ

इस समय वह भगवती रात्रि हमारे लिए प्रसन्न हों। जिनके उस संहारक प्रभाव काल में हम सब उसी प्रकार निलीन रहते हैं। जिस प्रकार वृक्ष में पक्षीगण वास करते हैं।।४।।

मन्त्र

नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः।।५।।

पदच्छेद

नि ग्रामासः अविक्षत नि पद्-वन्तः नि पक्षिणः नि श्येनासः चिद् अर्थिनः।।५।।

अन्वितपदार्थ

ग्रामासः=सारे मनुष्यों का समूह, नि-अविक्षत=रात्रि में निलीन होता है। पद्-वन्तः नि=पैर वाले पशुगण निलीन होते है। पक्षिणः नि=पक्षियों का समूह निलीन होता है। अर्थिनः=तीव्रगामी, चिद् श्येनासः नि=बाज भी निलीन होता है।।५।।

अन्वितार्थ

सारे मनुष्यों का समूह रात्रि में निलीन होता है। पैर वाले पशुगण निलीन होते हैं। पक्षियों का समूह निलीन होता है। तीव्रगामी बाज भी निलीन होता है।।५।।

मन्त्र

यावया वृक्यं वृकं यवयस्तेनमूर्म्ये।
अथा नः सुतरा भव ॥६॥

पदच्छेद

यावया वृक्यम् वृकम् यवय स्तेनम् ऊर्म्ये अथा नः सुतरा भव॥६॥

अन्वितपदार्थ

ऊर्म्ये!=हे रात्रि, वृक्यम्=हिंसक वृत्ति एवं, वृकम्=हिंसक तत्त्व को, यावय=हमसे अलग करें, स्तेनम्=छल करने वाले तस्करों को, यवय=हमसे अलग करें, अथा नः=इसके पश्चात्, सुतरा=हमारे लिए कल्याण कारिणी, भव=बनें॥६॥

अन्वितार्थ

हे रात्रि! हिंसकवृत्ति एवं हिंसक तत्त्व को हमसे अलग करें, छल करने वाले तस्करों को अलग करें। इसके पश्चात् हमारे लिए कल्याण कारिणी बनें॥६॥

मन्त्र

उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित।
उष ऋणेव यातय॥७॥

पदच्छेद

उप मा पेपिशत् तमः कृष्णम् व्यक्तम् अस्थित। उषः ऋण इव यातय॥७॥

अन्वितपदार्थ

पेपिशत्=सभी के साथ चिपका हुआ, तमः=अन्धकार, कृष्णम्=काले रूप में, व्यक्तम्=अभिव्यक्त होकर, मा=मेरे, उप-अस्थित=समीप आ चुका है। उषः=हे उषा देवी, ऋण इव=इसे नकारात्मक वस्तु की भाँति, यातय=हटा दें॥७॥

अन्वितार्थ

सभी के साथ चिपका हुआ अन्धकार काले रूप में अभिव्यक्त होकर मेरे समीप आ चुका है। हे उषा देवी! इसे नकारात्मक वस्तु की भाँति हटा दें॥७॥

मन्त्र

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे॥८॥

पदच्छेद

उप ते गा इव आ-अकरम् वृणीष्व दुहितः दिवः रात्रि स्तोमम् न जिग्युषे॥८॥

अन्वितपदार्थ

रात्रि!=हे रात्रि! ते=आपके, उप=निकट आकर, गा इव=गाय के समान, आ-अकरम्=अपनी पूजा से अनुकूल बना रहा हूँ, दुहितः दिवः=हे प्रकाशलोक की पुत्रि, जिग्युषे=विजयशील के, स्तोमम् न=स्तुतियों की भाँति, वृणीष्व=हमारी स्तुति स्वीकार करें॥८॥

अन्वितार्थ

हे रात्रि! आपके निकट आकर आपको गाय के समान अपनी पूजा से अनुकूल बना रहा हूँ। हे प्रकाशलोक की पुत्रि! विजयशील के स्तुतियों की भाँति हमारी स्तुति स्वीकार करें॥८॥

॥ इति वैदिकरात्रिसूक्तम् ॥

साधकों के लिए विशेष :

प्रथम अध्याय का

'ब्रह्मोवाच, विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्॥७०॥'

से ले कर

'बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥८७॥'

तक पौराणिक रात्रिसूक्त कहा जाता है।

वैदिकरात्रिसूक्त का पाठ करने के पश्चात् पौराणिक रात्रि सूक्त का पाठ करना चाहिए। इसके बाद अपने गुरु द्वारा बताए विधि से नीचे लिखे ध्यान के साथ नवार्णमन्त्र का जप करके श्रीसप्तशती का पाठ करें।

॥ अथ ध्यानम् ॥

महाकाली

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्शूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्॥
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

महालक्ष्मी

अक्षस्त्रक्परशूगदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्
दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टा सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभाम्
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

महासरस्वती

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुशले चक्रं धनुः सायकान्
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

॥ अथप्रथमोध्याय: ॥

विनियोग: -

ॐ अस्य प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषि:, महाकालीदेवता, गायत्री छन्द:, नन्दा शक्ति:, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेद: स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथमचरित्रजपे विनियोग:॥

मार्कण्डेय उवाच॥१॥

सावर्णि: सूर्यतनयो यो मनु: कथ्यतेऽष्टम:।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम॥२॥

पदच्छेद

मार्कण्डेय: उवाच- सावर्णि: सूर्य-तनय: य: मनु: कथ्यते अष्टम: निशामय तद् उत्पत्तिम् विस्तराद् गदत: मम॥१-२॥

अन्वित-पदार्थ

मार्कण्डेय:=मार्कण्डेय मुनि, उवाच-=बोले-, सूर्यतनय:=सूर्य के पुत्र, सावर्णि:=सवर्ण गोत्र में उत्पन्न, य:=जिन्हें, अष्टम: मनु:=आठवाँ मनु, कथ्यते=कहा जाता है, तस्य उत्पत्तिम्=उनकी उत्पत्ति का वृत्तान्त मम=मुझसे, विस्तराद् गदत: निशामय=तुम विस्तार पूर्वक सुनो॥१-२॥

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय मुनि बोले- सूर्य के पुत्र सवर्ण गोत्र में उत्पन्न जिन्हें आठवाँ मनु कहा जाता है उनकी उत्पत्ति का वृत्तान्त मुझसे तुम विस्तार पूर्वक सुनों॥१-२॥

मन्त्र

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिप:।
स बभूव महाभाग: सावर्णिस्तनयो रवे:॥३॥

पदच्छेद

महामाया-अनु-भावेन यथा मनु-अन्तर-अधिप: स: बभूव महाभाग: सावर्णि: तनय: रवे:॥३॥

अन्वित-पदार्थ

रवेः=रवि के, तनयः=आत्मज, सः सावर्णिः=वे सावर्णि नामक, महाभागः=महानुभाव, महामाया-अनुभावेन=महामाया की कृपा कटाक्ष से, यथा=जिस प्रकार, मन्वन्तरस्य=मन्वन्तर के, अधिपः=स्वामी, बभूव=बने थे।।३।।

अन्वितार्थ

रवि के आत्मज वे सावर्णि नामक महानुभाव महामाया की कृपा कटाक्ष से जिस प्रकार मन्वन्तर के स्वामी बने थे।।३।।

मन्त्र

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले।।४।।

पदच्छेद

स्वारोचिषे अन्तरे पूर्वम् चैत्र-वंश-सम्-उद्भवः सुरथः नाम राजा अभूत् समस्ते क्षिति-मण्डले।।४।।

अन्वित-पदार्थ

पूर्वम्=प्राचीन काल में, स्वारोचिषे अन्तरे=स्वारोचिष मन्वन्तर में, समस्ते=सारी, क्षिति-मण्डले=धरती के भूभाग में, चैत्रवंशे=चैत्रवंश में, समुद्भवः=उत्पन्न, सुरथः=सुरथ, नाम=नामक, राजा=नरपति, अभूत्=हुए थे।।४।।

अन्वितार्थ

प्राचीन काल में स्वारोचिष मन्वन्तर में सारी धरती में चैत्रवंश में उत्पन्न सुरथ नामक राजा हुए थे।।४।।

मन्त्र

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा।।५।।

पदच्छेद

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रान् इव औरसान् बभूवुः शत्रवः भूपाः कोला-विध्वंसिनः तदा।।५।।

अन्वित-पदार्थ

तदा=उस समय, प्रजाः=प्रजा को, औरसान्=सगे, पुत्रान् इव=पुत्रों के समान, सम्यक्=भली प्रकार से, पालयतः=पालन करने वाले, तस्य=उस राजा का, कोलाविध्वंसिनः=कोलाविध्वंसी नामक, भूपाः=राजाओं का संघ, शत्रवः=शत्रु, बभूवुः=हो गया।।५।।

अन्वितार्थ

उस समय प्रजा को सगे पुत्रों के समान भली प्रकार से पालन करने वाले उस राजा का कोलाविध्वंसी नामक राजाओं के संघ से शत्रुता हो गई।।५।।

मन्त्र

तस्य तैरभवद्युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
अन्यैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः।।६।।

पदच्छेद

तस्य तैः अभवद् युद्धम् अति-प्रबल-दण्डिनः अन्यैः अपि सः तैः युद्धे कोला-विध्वंसिभिः जितः।।६।।

अन्वितपदार्थ

तस्य=उस, अति-प्रबल-दण्डिनः=अत्यन्त प्रबल राजनीतिक प्रभाव वाले राजा का, तैः=उन, कोला-विध्वंसिभिः=कोलाविध्वंसियों के साथ, युद्धम्=युद्ध, अभवत्=हुआ। सः=वह सुरथ राजा, युद्धे=युद्ध में, तैः=उन से, अन्यैः अपि=तथा उसी प्रकार के अन्य शत्रुओं द्वारा, जितः=जीत लिया गया।।६।।

अन्वितार्थ

उस अत्यन्त प्रबल राजनीतिक प्रभाव वाले राजा का उन कोलाविध्वंसी राजाओं के साथ युद्ध हुआ। किन्तु वह सुरथ राजा युद्ध में उन कोलाविध्वंसियों से तथा उसी प्रकार के अन्य शत्रुओं से हार गया।।६।।

मन्त्र

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः।।७।।

पदच्छेद

ततः स्व-पुरम् आयातः निज-देश-अधिपः अभवत् आक्रान्तः सः महाभागः तैः तदा प्रबल-अरिभिः॥७॥

अन्वित-पदार्थ

ततः=पराजय के बाद, स्वपुरम्=अपने किले में, आयातः=आकर, निजदेशाधिपः=अपनी राजधानी मात्र का स्वामी, अभवत्=बना। तदा=तब वहाँ भी, सः=वह, महाभागः=महानुभाव, तैः=उन, प्रबल-अरिभिः=प्रबल, शत्रुओं द्वारा, आक्रान्तः=घिर गया॥७॥

अन्वितार्थ

पराजय के बाद अपने किले में आकर मात्र अपनी राजधानी मात्र का स्वामी बना। तब वहाँ भी वह महानुभाव उन प्रबल शत्रुओं द्वारा घिर गया॥७॥

मन्त्र

अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः॥८॥

पदच्छेद

अमात्यैः बलिभिः दुष्टैः दुर्बलस्य दुरात्मभिः कोशः बलम् च अपहृतम् तत्र अपि स्व-पुरे ततः॥८॥

अन्वितपदार्थ

ततः=उसके बाद, तत्र=वहाँ, स्वपुरे=अपने किले में, अपि=भी, दुर्बलस्य=उस दुर्बल राजा का, दुष्टैः=दुष्ट, बलिभिः=शक्तिशाली, दुरात्मभिः=दुराचारी, अमात्यैः=मन्त्रियों द्वारा, कोशः=खजाना, बलं च=तथा सेना, अपहृतम्=छीन लिया गया॥८॥

अन्वितार्थ

उसके बाद वहाँ अपने किले में भी उस दुर्बल राजा का ख़जाना तथा सेना दुष्ट, बलवान् एवं दुरात्मा मन्त्रियों द्वारा छीन लिया गया॥८॥

मन्त्र

ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः।

एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्।।९।।

पदच्छेद

ततः मृगया-व्याजेन हृत-स्वाम्यः सः भूपतिः एकाकी हयम् आ-रुह्य जगाम गहनम् वनम्।।९।।

अन्वित-पदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, हृतस्वाम्यः=अपना सर्वस्व गवाँ चुका, सः भूपतिः=वह राजा सुरथ, एकाकी=अकेले, हयम्=घोड़े पर, आरुह्य=सवार हो कर, मृगयाव्याजेन=शिकार के बहाने से, गहनं वनम्=घने जङ्गल की ओर, जगाम=चला गया।।९।।

मन्त्र

इसके पश्चात् अपना सर्वस्व गवाँ चुका वह राजा सुरथ अकेले घोड़े पर सवार हो कर शिकार के बहाने से घने जङ्गल की ओर चला गया।।९।।

मन्त्र

स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम्।।१०।।

पदच्छेद

सः तत्र आश्रमम् अद्राक्षीद् द्विज-वर्यस्य मेधसः प्रशान्त-श्वापद- आकीर्णम् मुनि-शिष्य-उप-शोभितम्।।१०।।

अन्वित-पदार्थ

तत्र=वहाँ, सः=उस राजा ने, द्विजवर्यस्य=ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, मेधसः=सुमेधा के, प्रशान्त- श्वापद-आकीर्ण=स्वाभाविक रूप से शान्त जङ्गली पशुओं से घिरा हुआ, मुनि-शिष्य-उपशोभितम्=मुनि के शिष्यों रो शोभायमान, आश्रमम्=आश्रम को, अद्राक्षीत्=देखा।।१०।।

अन्वितार्थ

उस राजा ने वहाँ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ सुमेधा के, स्वभाविक रूप से शान्त जङ्गली पशुओं से घिरा हुआ मुनि के शिष्यों से शोभायमान, आश्रम को देखा।।१०।।

मन्त्र

तस्थौ कञ्चित्स कालञ्च मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश्चेतश्च विचरँस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे॥११॥

पदच्छेद

तस्थौ कञ्चित् सः कालम् च मुनिना तेन सत्कृतः इतः च-इतः च विचरन् तस्मिन् मुनिवर-आश्रमे॥११॥

अन्वित-पदार्थ

सः=वह राजा, तेन=उस, मुनिना=मुनि के द्वारा, सत्कृतः=सत्कार प्राप्त कर के, कञ्चित् कालम् च=तथा कुछ समय तक, इत श्च-इत श्च विचरन्=इधर-उधर घूमते हुए, मुनिवर-आश्रमे=मुनिवर के, तस्मिन्=उस आश्रम में, तस्थौ=रुक गया॥११।

अन्वितार्थ

वह राजा उस मुनि के द्वारा सत्कार प्राप्त कर के तथा कुछ समय तक इधर-उधर घूमते हुए मुनिवर के उस आश्रम में रुक गया॥११॥

मन्त्र

सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्॥१२॥

पदच्छेद

सः अचिन्तयत् तदा तत्र ममत्व-आकृष्ट-चेतनः मम पूर्वैः पालितम् पूर्वं मया हीनम् पुरम् हि तत्॥१२॥

अन्वित-पदार्थ

तदा=उस अवस्था में, तत्र=वहाँ आश्रम में, ममत्वेन=ममता के कारण, आकृष्टचेतनः=आकर्षित चित्त वाला, सः=वह राजा, अचिन्तयत्=सोचने लगा कि, "पूर्वम्=पहले मम=मेरे, पूर्वैः=पूर्वजों द्वारा, पालितम्=सुरक्षित, तत्=वह, पुरम्=दुर्ग, मया=आज मुझसे ही, हीनम् हि=विहीन है।"॥ १२॥

अन्वितार्थ

उस अवस्था में वहाँ आश्रम में ममता के कारण आकर्षित चित्त वाला

वह राजा सोचने लगा कि "पहले मेरे पूर्वजों द्वारा सुरक्षित वह दुर्ग आज मुझसे ही विहीन है"।।१२।।

मन्त्र

मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः।।१३।।

पदच्छेद

मद् भृत्यैः तैः असद्-वृत्तैः धर्मतः पाल्यते न वा न जाने सः प्रधानः मे शूर-हस्ती सदा-मदः।।१३।।

अन्वित-पदार्थ

तैः=वे, मम=मेरे, असद्वृत्तैः=दुश्चरित्र, भृत्यैः=सेवकों द्वारा, धर्मतः=मेरे दुर्ग की धर्मानुकूल, पाल्यते न वा=रक्षा होती होगी या नहीं, न जाने=मैं नहीं जानता कि, सः मे=वह मेरा, सदामदः=सदा मदमस्त रहने वाला, प्रधानः=प्रधान नामक शूरहस्ती=बलवान हाथी।।१३।।

अन्वितार्थ

मेरे दुश्चरित्र सेवकों द्वारा मेरे दुर्ग की धर्मानुकूल रक्षा होती होगी या नहीं! मैं नहीं जानता कि मेरा सदा मदमस्त रहने वाला प्रधान नामक बलवान् हाथी।।१३।।

मन्त्र

मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः।।१४।।

पदच्छेद

मम वैरि-वशम् यातः कान् भोगान् उप-लप्स्यते ये मम अनु-गताः नित्यम् प्रसाद-धन-भोजनैः।।१४।।

अन्वित-पदार्थ

मम=अब मेरे, वैरीणाम्=शत्रुओं के, वशं यातः=अधीनता में हो कर, कान् भोगान्=कैसी सुविधाएँ, उपलप्स्यते=पाता होगा। ये=जो सेवक, प्रसाद-धन-भोजनैः=सद्व्यवहार से, वेतन आदि के रूप में धनदान से, अन्नदान के कारण, नित्यम् मम=मेरे नित्य, अनुगताः=अनुवर्ती थे।।१४।।

अन्वितार्थ

अब मेरे शत्रुओं के अधीनता में हो कर किस प्रकार की सुविधाएँ पाता होगा। जो सेवक सद्व्यवहार, धनदान एवं अन्नदान के कारण मेरे नित्य अनुवर्ती थे।। १४।।

मन्त्र

अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्।।१५।।

पदच्छेद

अनु-वृत्तिम् ध्रुवम् ते अद्य कुर्वन्ति अन्येषाम् मही-भृताम् असम्यक् व्यय-शीलैः तैः कुर्वद्भिः सततम् व्ययम्।।१५।।

अन्वित-पदार्थ

अद्य=आज, ते=वे सभी, ध्रुवम्=निश्चय ही, अन्येषाम्=दूसरे, महीभृताम्=राजाओं की, अनुवृत्तिम्=नौकरी, कुर्वन्ति=करते होंगें। तैः=उन, असम्यक्=असन्तुलित, व्ययशीलैः=खर्च करनेवाले, अमात्य लोग, सततम्=लगातार, व्ययम्=खर्च कुर्वद्भिः=करते हुए।।१५।।

अन्वितार्थ

आज वे निश्चय ही अन्य राजाओं की नौकरी कर रहे होंगे। उन असन्तुलित खर्च करने वाले एवं अनवरत खर्च करने वाले मेरे अमात्यों द्वारा।।१५।।

मन्त्र

सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः।।१६।।

पदच्छेद

सञ्चितः सः अतिदुःखेन क्षयम् कोशः गमिष्यति। एतत् च अन्यत् च सततम् चिन्तयामास पार्थिवः।।१६।।

अन्वित-पदार्थ

अतिदुःखेन=अत्यन्त कष्ट सह कर, सञ्चितः=इकट्ठा किया हुआ,

सः=वह, कोशः=राजकोश, क्षयम्=नष्ट, गमिष्यति=हो जाएगा। पार्थिवः=राजा सुरथ, सततम्=लगातार, एतत् च अन्यत् च=इस प्रकार की तथा अन्य, चिन्तयामास=चिन्ताओं में डूबा रहा।।१६।।

अन्वितार्थ

अत्यन्त दु:ख सह कर सञ्चित वह राज कोश नष्ट हो जाएगा। राजा सुरथ लगातार इस प्रकार की तथा अन्य चिन्ताओं में डूबा रहा।।१६।।

मन्त्र

तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
सम्पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः।।१७।।

पदच्छेद

तत्र विप्रस्य आश्रम-अभ्याशे वैश्यम् एकम् ददर्श सः। सम्पृष्टः तेन कः त्वम् भोः हेतुः च आगमने अत्र कः।।१७।।

अन्वित-पदार्थ

तत्र=वहीं, विप्रस्य=ब्राह्मण सुमेधा के, आश्रम-अभ्याशे=आश्रम के निकट, सः=उसने, एकम् वैश्यम्=एक वैश्य को, ददर्श=देखा। तेन=उसके द्वारा, सम्पृष्टः=पूछे जाने पर कि, "भोः=हे महानुभाव! कः त्वम्=आप कौन हैं, अत्र च=और यहाँ, आगमने=आने का, कः=क्या, हेतुः=कारण है।"।।१७।।

अन्वितार्थ

वहीं पर ब्राह्मण सुमेधा के आश्रम के निकट उसने एक वैश्य को देखा। उसके द्वारा पूछे जाने पर कि "महोदय! आप कौन हैं तथा यहाँ आने का कारण क्या है?"।।१७।।

मन्त्र

सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्।।१८।।

पदच्छेद

सशोकः इव कस्मात् त्वम् दुर्मनाः इव लक्ष्यसे। इति आकर्ण्य वचः तस्य भूपतेः प्रणय-उदितम्।।१८।।

अन्वित-पदार्थ

त्वम्=तुम, कस्मात्=क्यों, सशोकः इव=शोकाकुल से, दुर्मनाः इव=खिन्न से, लक्ष्यसे=दिखाई दे रहे हो। इति=इस प्रकार, प्रणय-उदितम्=अपनेपन से कहे गए, तस्य=उस, भूपतेः=राजा के, वचः=कथन को, आकर्ण्य=सुनकर।।१८।।

अन्वितार्थ

तुम क्यों शोकाकुल से, खिन्न से लग रहे हो।" इस प्रकार अपनेपन से कहे गए उस राजा के वचनों को सुन कर।।१८।।

मन्त्र

प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ।।१९।।

वैश्य उवाच।।२०।।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।।२१।।

पदच्छेद

प्रति-उवाच सः तम् वैश्यः प्रश्रय-अवनतः नृपम्। वैश्यः उवाच। समाधिः नाम वैश्यः अहम् उत्पन्नः धनिनाम् कुले।।१९-२१।।

अन्वित-पदार्थ

प्रश्रयेण=आदर से, अवनतः=विनम्र हो कर, सः वैश्यः=वह वैश्य, तं नृपं प्रति=उस राजा से, उवाच=बोला। वैश्यः उवाच=वैश्य ने कहा, अहम्=मैं, धनिनाम्=धनिकों के, कुले खानदान में, उत्पन्नः=जन्म लेने वाला, समाधि : नाम=समाधि नामक, वैश्यः=व्यापारी हूँ।१९-२१।।

अन्वितार्थ

आदर से विनम्र हो कर वह वैश्य उस राजा से बोला। वैश्य ने कहा- मैं धनिकों के कुल में जन्म लेने वाला समाधि नामक व्यापारी हूँ।१९-२१।।

मन्त्र

पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।।२२।।

पदच्छेद

पुत्रैः दारैः निरस्तः च धन-लोभात् अ-साधुभिः विहीनः च धनैः दारैः पुत्रैः आदाय मे धनम्॥२२॥

अन्वित-पदार्थ

असाधुभिः=मेरे दुष्ट, पुत्रैः दारैः=पुत्रों तथा स्त्रियों द्वारा, धनलोभात्=धन लोलुपता के कारण, निरस्तः=अपमानित हूँ, पुत्रैः च=और पुत्रों द्वारा, मे=मेरी, धनम्=सम्पत्ति, आदाय=छीन कर, निरस्तः=निष्कासित कर दिया गया हूँ, धनैः=अब मैं धन, दारैः च=तथा पत्नियों से, विहीनः=विहीन हूँ॥२२॥

अन्वितार्थ

मेरे दुष्ट पुत्रों तथा स्त्रियों द्वारा धन लोलुपता के कारण अपमानित हूँ (तथा) पुत्रों द्वारा धन छीन कर निष्कासित कर दिया गया हूँ। अब मैं धन एवं पत्नी विहीन हूँ॥२२॥

मन्त्र

वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम्॥२३॥

पदच्छेद

वनम् अभि-आगतः दुःखी निरस्तः च आप्त-बन्धुभिः सः अहम् न वेद्मि पुत्राणाम् कुशल-अकुशल-आत्मिकाम्॥२३॥

अन्वित-पदार्थ

आप्तबन्धुभिः=इस प्रकार प्रामाणिक सम्बधियों से, निरस्तः=अपमानित हो कर, च दुःखी=तथा दुःखी हो कर, वनम्=जङ्गल में, अभ्यागतः=आ गया, सः अहम्=ऐसा मैं, पुत्राणाम्=अपने पुत्रों की, कुशलात्मिकाम्= कुशलता, अकुशलात्मिकाम्=अकुशलता, किसी प्रकार का समाचार, न वेद्मि=नहीं जान पा रहा हूँ॥२३॥

अन्वितार्थ

इस प्रकार प्रमाणिक सम्बन्धियों से अपमानित हो कर तथा दुःखी होकर वन में आ गया हूँ। यहाँ मैं अपने पुत्रों की कुशलता अथवा अकुशलता का समाचार नहीं जान पा रहा हूँ॥२३॥

मन्त्र

प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्।।२४।।

पदच्छेद

प्रवृत्तिम् स्व-जनानाम् च दाराणाम् च अत्र सम्-स्थितः किम् नु तेषाम् गृहे क्षेमम् अ-क्षेमम् किम् नु साम्प्रतम्।।२४।।

अन्वित-पदार्थ

अत्र=यहाँ वन में, संस्थितः=रहते हुए, स्वजनानाम्=अपने प्रियजनों का, च=तथा, दाराणाम् च=स्त्रियों का, प्रवृत्तिम्=समाचार कि, किम् नु साम्प्रतम्=इस समय, गृहे=घर में, तेषाम्=वे सब, क्षेमम्=ठीक प्रकार से हैं, किम् नु अक्षेमम्=अथवा उनकी दुर्दशा हो रही है मैं नहीं जानता।।२४।।

अन्वितार्थ

यहाँ वन में होने के कारण अपने प्रियजनों की तथा स्त्रियों का समाचार कि घर में वे सब ठीक हैं या उनकी दुर्दशा हो रही है मैं नहीं जानता हूँ।।२४।।

मन्त्र

कथं ते किन्नु सद्वृत्ताः दुर्वृत्ताः किन्नु मे सुताः।।२५।।

पदच्छेद

कथम् ते किम् नु सद्-वृत्ताः दुर्-वृत्ताः किम् नु मे सुताः।।२५।।

अन्वित-पदार्थ

ते=वे, मे=मेरे, सुताः=पुत्रगण, कथम्=अब कैसे हैं, किं नु सद्वृत्ताः=सदाचारी हैं, किं नु दुर्वृत्ताः=अथवा दुराचारी हो चुके हैं।।२५।।

अन्वितार्थ

मैं नहीं जानता कि वे मेरे पुत्रगण अब कैसे हैं। सदाचारी हैं अथवा दुराचारी हो चुके हैं।।२५।।

मन्त्र

राजोवाच।।२६।।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः।।२७।।

तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम्॥२८॥

पदच्छेद

राजा उवाच- यैः निर्-अस्तः भवान् लुब्धैः पुत्र-दारा-आदिभिः धनैः तेषु किम् भवतः स्नेहम् अनु-बध्नाति मानसम्॥२७-२८॥

अन्वित-पदार्थ

राजा उवाच=राजा ने कहा कि, यैः लुब्धैः=जिन लालची, पुत्रदारा-आदिभिः=पुत्रों स्त्रियों एवं अन्य बन्धुओं द्वारा, भवान्=आप, धनैः=धन के कारण, निरस्तः=(अपमानित हुए और घर से) निकाल दिए गए हैं, भवतः=आपका, मानस स्नेहम्=हार्दिक स्नेह, तेषु=उन्हीं में, किं अनुबध्नाति=क्यों हो रहा है॥२७-२८॥

अन्वितार्थ

राजा ने कहा कि जिन लालची पुत्रों स्त्रियों एवं अन्य बन्धुओं द्वारा आप धन के कारण अपमानित हुए और घर से निकाल दिए गए हैं। आपका हार्दिक स्नेह उन्हीं में क्यों हो रहा है॥२७-२८॥

मन्त्र

वैश्य उवाच॥२९।

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः॥३०॥

पदच्छेद

वैश्यः उवाच- एवम् एतद् यथा प्राह भवान् अस्मद् गतम् वचः॥२९-३०॥

अन्वित-पदार्थ

वैश्यः उवाच=वैश्य ने कहा-, भवान्=हे राजन्, अस्मद् गतम् वचः=मेरे कथन के विषय में, यथा प्राह=आपने जो कहा है, एवम् एतद्=वह तथ्य है॥२९-३०॥

अन्वितार्थ

वैश्य ने कहा - हे राजन्! आपने मेरे कथन के विषय में जो कहा है वह तथ्य है।॥२९-३०॥

मन्त्र

किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः।

यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः॥३१॥

पदच्छेद

किम् करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरताम् मनः यैः सन्त्यज्य पितृ-स्नेहम् धनेन लुब्धैः निराकृतः॥३१॥

अन्वित-पदार्थ

यैः धनलुब्धैः=धन के लोभी जिन लोगों ने, पितृस्नेहम्=पिता के प्रति स्नेह भाव को, सन्त्यज्य=त्याग कर उपेक्षा करते हुए, निराकृतः=मेरा अपमान किया, मम=मेरा, मनः=मन उन्हीं के प्रति, निष्ठुरताम्=क्रूरता, न बध्नाति=नहीं कर पा रहा है, किं करोमि=क्या करूँ॥३१॥

अन्वितार्थ

जिन धन के लोभी लोगों ने पिता के प्रति स्नेह भाव को त्याग कर मेरा अपमान किया उन्हीं के प्रति मेरा मन क्रूरता नहीं कर पा रहा है। क्या करूँ!॥३१॥

मन्त्र

पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते॥३२॥

पदच्छेद

पतौ हार्दम् स्व-जनेषु हार्दम् च परित्यज्य निराकृतः हार्दि तेषु एव इव मे मनः। किम् एतत् न अभि-जानामि जानन् अपि महा-मते॥३२॥

अन्वित-पदार्थ

महामते!=हे परम ज्ञानी!, पतौ हार्दं=पति के प्रति स्नेह, स्वजनेषु हार्दं च परित्यज्य=तथा अपने सगे के प्रति स्नेह को छोड़ कर, निराकृतः=मुझे घर से निकाल दिया, तेषु एव=उन्हीं के प्रति, मे मनः हार्दि इव=मेरा मन लगा सा है, किम् एतत्=यह मोह भाव क्या है? जानन् अपि=मैं जानते हुए भी, न अभिजानामि=नहीं समझ पा रहा हूँ॥३२॥

अन्वितार्थ

हे परम ज्ञानी! पति के प्रति प्रेम तथा अपने सगे संबन्धियों के प्रति स्नेह को छोडकर मुझे घर से निकाल दिया उन्हीं के प्रति मेरा मन लगा सा

है। यह मोहभाव क्या है! मैं जानते हुए भी नहीं समझ पा रहा हूँ।।३२।।

मन्त्र

यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते।।३३।।

पदच्छेद

यत् प्रेम-प्रवणम् चित्तम् विगुणेषु अपि बन्धुषु तेषाम् कृते मे निःश्वासः दौर्मनस्यम् च जायते।।३३।।

अन्वित-पदार्थ

यत् मे चित्तम्=जो मेरा चित्त, विगुणेषु अपि बन्धुषु=दुर्गुणी बन्धुओं के प्रति भी, प्रेमप्रवणम्=प्रेमभाव से अभिभूत है। तेषाम् कृते=उन्हीं के लिए, निःश्वासः=मेरी हाय निकल रही है, दौर्मनस्यं च जायते=तथा मन खिन्न भी हो रहा है।।३३।।

अन्वितार्थ

दुर्गुणी बन्धुओं के प्रति भी मेरा चित्त प्रेम से अभिभूत है उन्हीं के लिए मेरी हाय निकल रही है तथा मन खिन्न भी हो रहा है।।३३।।

मन्त्र

करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ।।३४।।

पदच्छेद

करोमि किम् यत् न मनः तेषु अप्रीतिषु निष्ठुरम्।।३४।

अन्वित-पदार्थ

यत् मनः=मेरा मन जो, तेषु अप्रीतिषु=उन्हीं क्रूरों के प्रति, न निष्ठुरम्=निष्ठुर नहीं हो रहा है, किं करोमि=क्या करूँ!।।३४।।

अन्वितार्थ

उन क्रूरों के प्रति जो मेरा मन निष्ठुर नहीं हो रहा है। क्या करूँ!।।३४।।

मन्त्र

मार्कण्डेय उवाच।।३५।।

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ।।३६।।

समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः।

पदच्छेद

मार्कण्डेयः उवाच- ततः तौ सहितौ विप्र तम् मुनिम् सम्-उपस्थितौ। समाधिः नाम वैश्यः असौ स च पार्थिव-सत्तमः।।३५-३६।।

अन्वित-पदार्थ

मार्कण्डेयः उवाच=मार्कण्डेय ऋषि बोले, विप्र!=हे ब्राह्मण!, ततः=इसके पश्चात्, तौ=वे दोनों , असौ समाधिः नाम=ये समाधि नामक, वैश्यः=व्यापारी, स च पार्थिवेषु सत्तमः=तथा वह राजाओं में श्रेष्ठ सुरथ, सहितौ=एक साथ, तं मुनिं समुपस्थितौ=उस सुमेधा मुनि के पास गए।।३५-३६।।

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय ऋषि बोले- हे ब्राह्मण! इसके पश्चात् वे दोनों ये समाधि नामक व्यापारी तथा वह राजाओं में श्रेष्ठ सुरथ एक साथ उस सुमेधा मुनि के पास गए।।३६-३७।।

मन्त्र

कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम्।।३७।।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।।३८।।

पदच्छेद

कृत्वा तु तौ यथा-न्यायम् यथा-अर्हम् तेन संविदम् उपविष्टौ कथाः काः चित् चक्रतुः वैश्यः च पार्थिवः।।३७-३८।।

अन्वित-पदार्थ

तौ=उन दोनों, वैश्यः च पार्थिवः च=वैश्य और राजा ने, तेन=मुनि के साथ, यथा-न्यायम्=समुचित, यथा-अर्हम्=एवं अवसर के अनुकूल, संविदम् कृत्वा=बातें करके, तु उपविष्टौ=वहीं बैठ कर, काः चित् कथाः=कुछ चर्चा, चक्रतुः=करने लगे।।३७-३८।।

अन्वितार्थ

उन दोनों वैश्य और राजा ने मुनि के साथ समुचित एवं अवसर के अनुकूल बातें करके। वहीं बैठ कर कुछ चर्चा करने लगे।।३७-३८।।

मन्त्र

राजोवाच॥३९॥

भगवँस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत्॥४०॥
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना।

पदच्छेद

राजा उवाच- भगवन् त्वाम् अहम् प्रष्टुम् इच्छामि एकम् वदस्व तत् दुःखाय यत् मे मनसः स्व-चित्त-आयत्तताम् विना॥३९-४०॥

अन्वित-पदार्थ

राजा उवाच=राजा बोले, भगवन्!=हे भगवन्!, अहम्=मैं, त्वाम्=आपसे, एकम्=एक बात, प्रष्टुम्=पूँछना, इच्छामि=चाहता हूँ, यत् मे मनसः=जो मेरे मन के, दुःखाय=दुःख का कारण बना हुआ है। स्वस्य=वह अपने, चित्तस्य=चित्त का, आयत्तताम् विना=सङ्कोच छोड़ कर, तत् वदस्व उस रहस्य को बताएँ॥३९-४०॥

अन्वितार्थ

राजा बोले- हे भगवन्! मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूँ। जो दुःख का कारण बना हुआ है, अपने चित्त का सङ्कोच छोड़ कर उस रहस्य को बताएँ॥३९-४०॥

मन्त्र

ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि॥४१॥
जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम।

पदच्छेद

ममत्वम् गतस्य राज्यस्य राज्य-अङ्गेषु अखिलेषु अपि जानतः अपि यथा अज्ञस्य किम् एतत् मुनिषु सत्-तम॥४१॥

अन्वित-पदार्थ

मुनिसत्तम!=हे मुनिश्रेष्ठ!, जानतः=यह जानते हुए भी कि, राज्यस्य=राज्य, अपि=तथा, अखिलेषु=सम्पूर्ण, राज्याङ्गेषु=कोश अमात्य आदि, राज्य के सारे अङ्ग, गतस्य=खो चुके हैं, अज्ञस्य यथा=फिर भी मूर्ख के समान,

ममत्वम्=उन्हीं में ममता, किम् एतत्=क्या है यह?।।४१।।

अन्वितार्थ

हे मुनिश्रेष्ठ! यह जानते हुए कि राज्य तथा कोश अमात्य आदि राज्य के सारे अङ्ग खो चुके हैं फिर भी मूर्खों के समान उन्हीं में यह ममता! क्या है?।।४१।।

मन्त्र

अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः।।४२।।
स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।

पदच्छेद

अयम् च निकृतः पुत्रैः दारैः भृत्यैः तथा उज्झितः स्व-जनेन च संत्यक्तः तेषु हार्दी तथा अपि अति।।४२।।

अन्वित-पदार्थ

अयं च=और यह वैश्य, पुत्रैः=पुत्रों, दारैः=पत्नियों भृत्यैः=नौकरों, स्वजनेन च=एवं बन्धुजनों द्वारा निकृतः=अपमानित, तथा उज्झितः= तिरस्कृत, संत्यक्तः=परित्यक्त है, तथापि=फिर भी, तेषु=उनसे, अति-हार्दी=अत्यन्त हार्दिक लगाव है।।४२।।

अन्वितार्थ

और यह वैश्य पुत्रों पत्नियों नौकरों एवं बन्धुजनों द्वारा अपमानित तथा परित्यक्त है फिर भी उनसे अत्यन्त हार्दिक लगाव है।।४२।।

मन्त्र

एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ।।४३।।

पदच्छेद

एवम् एषः तथा अहम् च द्वौ अपि अत्यन्त-दुःखितौ।।४३।।

अन्वित-पदार्थ

एवम्=इस प्रकार, एषः तथा=यह वैश्य तथा, अहम् च द्वौ अपि=हम दोनों ही, अत्यन्त-दुःखितौ=अत्यन्त दुखी हैं।।।४३।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार यह वैश्य तथा मैं दोनों ही अत्यन्त दुखी हैं।।४३।।

मन्त्र

दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि।।४४।।

पदच्छेद

दृष्ट-दोषे अपि विषये ममत्व-आकृष्ट-मानसौ तत् किम् एतत् महा-भाग यत् मोहः ज्ञानिनः अपि।।४४।।

अन्वित-पदार्थ

महाभाग!=हे महात्मन्!, दृष्ट-दोषे अपि विषये=जिन विषयों में स्पष्ट रूप से दोष दिखाई देता है उनमें, ज्ञानिनः अपि=ज्ञानी भी, ममत्वेन आकृष्ट-मानसौ=ममता के कारण मन आकृष्ट होता है, तत् एतत् किम्=तो यह क्या है, यत् मोहः=जो मोह कहा जाता है।।४४।।

अन्वितार्थ

हे महात्मन्! जिन विषयों में स्पष्ट रूप से दोष दिखाई देता है उनमें ज्ञानी भी ममता के कारण आकृष्ट होता है। तो यह क्या है जो मोह कहा जाता है?।।४४।।

मन्त्र

ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ।।४५।।

पदच्छेद

मम अस्य च भवति एषा विवेक-अन्धस्य मूढता।।४५।।

अन्वित-पदार्थ

विवेक-अन्धस्य=विवेक शून्य होने के कारण, मम=मेरा तथा, अस्य च=इस व्यापारी की, एषा=यह, मूढता=जडता, भवति=है।।४५।।

अन्वितार्थ

विवेक शून्यता के कारण मेरी तथा इस व्यापारी की यह जडता है।।४५।।

ऋषिरुवाच॥४६॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे॥४७॥
विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक् ।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- ज्ञानम् अस्ति समस्तस्य जन्तोः विषय-गोचरे विषयः च महाभाग! याति च एवम् पृथक्-पृथक्॥४६-४७॥

अन्वित-पदार्थ

ऋषिः उवाच=सुमेधा ऋषि बोले, महाभाग!=हे महानुभाव!, विषय-गोचरे ज्ञानम्=इन्द्रिय द्वारा ग्रहण होने वाले विषयों, शब्द-रूप-रस आदि ज्ञान, समस्तस्य जन्तोः=सभी जन्तुओं को, अस्ति=होता है। एवं च=इस सामान्यज्ञान के सामर्थ्यविशेष के कारंण, विषयः=विभिन्न जन्तु का विषय भी, पृथक्-पृथक्=भिन्न-भिन्न, याति च=हो जाता है॥४६-४७॥

अन्वितार्थ

सुमेधा ऋषि बोले - हे महानुभाव इन्द्रिय द्वारा ग्रहण होने वाले विषयों शब्द रूप रस आदि का ज्ञान सभी जन्तुओं को होता है। इस सामान्य ज्ञान के सामर्थ्यविशेष के कारण विभिन्न जन्तु का विषय भी भिन्न-भिन्न हो जाता है॥४६-४७॥

मन्त्र

दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे॥४८॥
केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः।

पदच्छेद

केचित् दिवा-अन्धाः प्राणिनः केचित् रात्रौ अन्धाः तथा अपरे केचित् दिवा तथा रात्रौ प्राणिनः तुल्य-दृष्टयः॥४८॥

अन्वित-पदार्थ

केचित् प्राणिनः=कुछ प्राणी, दिवान्धाः=दिन में नहीं देख पाते, तथा अपरे=इसी प्रकार दूसरे, रात्रौ अन्धाः=रात में अन्धे होते हैं, केचित् प्राणिनः=कुछ प्राणी, दिवा तथा रात्रौ=दिन तथा रात में, तुल्य-दृष्टयः=

समान रूप से देख पाते हैं।।४८।।

अन्वितार्थ

कुछ प्राणी दिन में नहीं देख पाते हैं, इसी प्रकार दूसरे रात में अन्धे होते हैं, कुछ प्राणी दिन तथा रात दोनों में समान रूप से देख पाते हैं।।४८।।

ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्तु ते न हि केवलम्।।४९।।

पदच्छेद

ज्ञानिनः मनुजाः सत्यम् किम् तु ते न हि केवलम्।।४९।।

अन्वित-पदार्थ

सत्यम्=यह सत्य है कि, मनुजाः ज्ञानिनः=मनुष्यगण उचित अनुचित के विषय में ज्ञानी होते है, किन्तु केवलम् ते हि न=किन्तु केवल वे मनुष्य ही ज्ञानी नहीं होते।।४९।।

अन्वितार्थ

यह सत्य है कि मनुष्यगण उचित अनुचित के विषय में ज्ञानी होते हैं। किन्तु केवल वे मनुष्य ही ज्ञानी नहीं होते।।४९।।

मन्त्र

यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्।।५०।।

पदच्छेद

यतः हि ज्ञानिनः सर्वे पशु-पक्षि-मृग-आदयः ज्ञानम् च तत् मनुष्याणाम् यत् तेषाम् मृगाणाम् पक्षिणाम्।।५०।।

अन्वित-पदार्थ

यतः हि=क्योंकि, सर्वे पशु-पक्षि-मृग-आदयः=सभी गाय आदि पशु पक्षी, मृग आदि जङ्गली जन्तु, ज्ञानिनः=रूप, रस आदि विषयों के संबन्ध में ज्ञानी होते है, यत् तेषाम्=उन, मृगपक्षिणां ज्ञानम्=मृग पक्षी आदि में जिस स्तर का ज्ञान होता है, तत् च मनुष्याणाम्=उसी स्तर का ज्ञान मनुष्यों में भी होता है।।५०।।

अन्वितार्थ

क्योंकि सभी गाय आदि पशु-पक्षी-मृग आदि जङ्गली जन्तु रूप, रस आदि विषयों के संबन्ध में ज्ञानी होते हैं। उन मृग, पक्षी आदि में जिस स्तर का ज्ञान होता है। उसी स्तर का ज्ञान मनुष्यों में भी होता है।।५०।।

मन्त्र

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु।।५१।।
कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा।

पदच्छेद

मनुष्याणाम् च यत् तेषाम् तुल्यम् अन्यत् तथा उभयोः ज्ञाने अपि सति पश्य एतान् पतङ्गान् शाव-चञ्चुषु कण-मोक्ष-आदृतान् मोहात् पीड्यमानान् अपि क्षुधा।।५१।।

अन्वित-पदार्थ

तथा=इसी प्रकार, उभयोः मनुष्याणाम्=दोनों मनुष्यों, तेषाम् च=और पशुओं में, अन्यत् यत् तुल्यम्=अन्य भी समानताएँ हैं, सति अपि ज्ञाने=ज्ञान होने पर भी, क्षुधा पीड्यमानान् अपि=स्वयं भूख से व्याकुल होने पर भी, मोहात्=मोह के कारण शावचञ्चुषु=अपने बच्चों के चञ्चुओं में, कण-मोक्ष-आदृतान्=चारा डाल कर स्वयं को सम्मानित या सन्तुष्ट अनुभव कर रहे, एतान् पतङ्गान् पश्य=इन पक्षियों को देखो।।५१।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार मनुष्यों और पशु दोनों में अन्य भी समानता है क्षुधा, तृषा आदि तथा उनके परिणाम का ज्ञान होने पर भी स्वयं भूख से व्याकुल होने पर भी मोह वशात् अपने बच्चों के चञ्चुओं में चारा डाल कर स्वयं को आदृत या संतुष्ट अनुभव कर रहे इन पक्षियों को देखो।।५१।।

मन्त्र

मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति।।५२।।
लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि।

पदच्छेद

मानुषाः मनुज-व्याघ्र! स-अभिलाषाः सुतान् प्रति लोभात् प्रति-उपकाराय ननु एतान् किम् न पश्यसि।।५२।।

अन्वित-पदार्थ

मनुजव्याघ्र!=हे नरसिंह राजन्!, किं न पश्यसि=क्या आप नहीं देखते कि, ननु प्रति-उपकाराय=पितृऋण से मुक्ति के लिए, मानुषाः लोभात्= लोभ से मनुष्य, एतान्=इन्हीं, सुतान् प्रति=पुत्रों के लिए, साभिलाषाः=इच्छा करते हैं।।५२।।

अन्वितार्थ

हे नरसिंह राजन्! क्या आप नहीं देखते कि पितृ-ऋण से मुक्ति के लिए मनुष्य लोभ वश इन्हीं पुत्रों की कामना करता हैं।।५२।।

मन्त्र

तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः।।५३।।
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।

पदच्छेद

तथा-अपि ममता-आवर्त्ते मोह-गर्ते निपातिताः महामाया-प्रभावेण संसार-स्थिति-कारिणा।।५३।।

अन्वित-पदार्थ

तथापि=फिर भी, संसार-स्थिति-कारिणा=संसार का पालन करने वाली शक्ति के, महामाया-प्रभावेण=महामाया के प्रभाव से, ममताया=ममता के, आवर्त्ते=बवण्डर में, मोह-गर्ते=मोह के गड्ढे में, निपातिताः=गिरा दिए जाते हैं।।५३।।

अन्वितार्थ

फिर भी महामाया भगवती के जगत् की स्थिति बनाए रखने वाली विशेष शक्ति से ममता के भँवर एवं मोह के गड्ढ़े में गिरा दिया जाते हैं।।५३।।

मन्त्र

तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः।।५४।।
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।

पदच्छेद

तत् न अत्र विस्मयः कार्यः योग-निद्रा जगत्-पतेः महामाया हरेः च एषा तया सम्मोह्यते जगत्।।५४।।

अन्वित-पदार्थ

तत्=अतः, अत्र=इस प्रकार का, विस्मयः=आश्चर्य न कार्यः=नहीं करना चाहिए, जगत्पतेः=क्योंकि भगवान्, हरेः च=श्री हरि की, एषा महामाया=यह महामाया, योगनिद्रा=योग निद्रा हैं, तया=उन्हीं के द्वारा, जगत्=संसार, सम्मोह्यते=सम्मोहित किया जाता है।।५४।।

अन्वितार्थ

अतः इस प्रकार का आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि ये भगवान् श्रीहरि की महामाया योगनिद्रा हैं। उन्हीं के द्वारा संसार सम्मोहित किया जाता है।।५४।।

मन्त्र

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।५५।।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।

पदच्छेद

ज्ञानिनाम् अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा बलात् आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।५५।।

अन्वित-पदार्थ

सा=वही, देवी=तेजो मयी, भगवती=भगवती, महामाया=महामाया, हि ज्ञानिनाम्=ज्ञानियों के, अपि चेतांसि=भी चित्त को, बलात्=बलपूर्वक, आकृष्य=खीच कर, मोहाय=मोहग्रस्त, प्रयच्छति=कर देतीं हैं।।५५।।

अन्वितार्थ

वही भगवती तजोमयी महामाया ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक खींच कर मोहग्रस्त कर देतीं हैं।।५५।।

मन्त्र

तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्।।५६।।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।

पदच्छेद

तया वि-सृज्यते विश्वम् जगद् एतत् चरा-चरम् सा एषा प्रसन्ना वरदा नृणाम् भवति मुक्तये।।५६।।

अन्वित-पदार्थ

तया=उन्हीं के द्वारा, एतत्=यह, विश्वम्=सम्पूर्ण चराचरम्=जड-चेतनमय, जगत्=संसार, विसृज्यते=नष्ट किया जाता है, सा एषा=वह, प्रसन्ना=यदि प्रसन्न हों तो, नृणाम्=मनुष्यों की, मुक्तये=मुक्ति के लिए, वरदा=वर देने वाली, भवति=होतीं हैं।।५६।।

अन्वितार्थ

वही इस संपूर्ण जड-चेतन रूप संसार को नष्ट करतीं हैं। वह यदि प्रसन्न हों तो मनुष्यों को मुक्ति का वर प्रदान करतीं हैं।।५६।।

मन्त्र

सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी।।५७।।

पदच्छेद

सा विद्या परमा मुक्तेः हेतु-भूता सनातनी।।५७।।

अन्वित-पदार्थ

सा=वह, सनातनी=तीनों कालों में वर्तमान, विद्या=पराशक्ति, मुक्तेः=मुक्ति, परमा=सर्वोच्च, हेतुभूता=कारण हैं।।५७।।

अन्वितार्थ

तीनों कालों में वर्तमान वह विद्या पराशक्ति मुक्ति की सर्वोच्च कारण हैं।।५७।।

मन्त्र

संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।५८।।

पदच्छेद

संसार-बन्ध-हेतुः च सा एव सर्व-ईश्वर-ईश्वरी।।५८।।

अन्वित-पदार्थ

सा एव च=वही, सर्व-ईश्वरस्य=सब के स्वामी भगवान् की, ईश्वरी=भी स्वामिनी, संसार-बन्ध-हेतुः=संसार में मोह आदि बन्धन का कारण हैं।।५८।।

अन्वितार्थ

वही सब के स्वामी भगवान् की भी स्वामिनी संसार में मोह आदि बन्धन का कारण हैं।।५८।।

मन्त्र

राजोवाच।।५९।।

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान्।।६०।।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज।

पदच्छेद

राजा उवाच- भगवन् का हि सा देवी महामाया इति याम् भवान् ब्रवीति कथम् उत्पन्ना सा कर्म अस्याः च किम् द्विज।।५९-६०।।

अन्वित-पदार्थ

राजा उवाच=राजा ने पूँछा-, भगवन्!=हे भगवन्!, यां भवान्=जिसे आप, महामाया इति=महामाया नाम से, ब्रवीति=संबोधित कर रहे हैं, सा देवी=वे देवी, का हि=कौन हैं, द्विज!=हे ब्राह्मण!, सा कथम् उत्पन्ना=कैसे उत्पन्न हुई? अस्याः कर्म च किम्=और उनके कार्य क्या हैं?।।५९-६०।।

अन्वितार्थ

राजा जिज्ञासा भाव से बोले- हे भगवन्! जिसे आप महामाया नाम से संबोधित कर रहे हैं। वे देवी कौन हैं। हे ब्राह्मण! उनकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई? और उनके कार्य क्या हैं?।।५९-६०।।

मन्त्र

यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा।।६१।।
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर।।६२।।

पदच्छेद

यत् प्रभावा च सा देवी यत् स्वरूपा यत् उद्-भवा तत् सर्वम् श्रोतुम् इच्छामि त्वत्-तः ब्रह्म-विदाम्-वर!।।६१-६२।।

अन्वित-पदार्थ

ब्रह्मविदांवर!=हें ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ मुनिवर!, सा देवी=वह देवी, यत्

प्रभावा=जैसे प्रभाव वाली, यत् स्वरूपा=जिस स्वरूप वाली, यत् उद्भवा च=और वे जैसे उत्पन हुई, तत् सर्वम्=वह सब मैं, त्वत्तः=आपसे, श्रोतुम् इच्छामि=सुनना चाहता हूँ।।६१-६२।।

अन्वितार्थ

हे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ मुनिवर! वह देवी जैसे प्रभाव वाली, जिस स्वरूप वाली हैं और वे जैसे उत्पन हुई वह सब मैं आपसे सुनना चाहता हूँ।।६१-६२।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।६३।।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।।६४।।
तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम।

पदच्छेद

ऋषिरुवाच- नित्या एव सा जगत् मूर्तिः तया सर्वम् इदम् ततम् तथा अपि तत् सम्-उत्पत्तिः बहुधा श्रूयताम् मम।।६३-६४।।

अन्वित-पदार्थ

ऋषिरुवाच-=सुमेधा ऋषि बोले-, सा=वह, जगत् मूर्तिः=जगत् रूपिणी भगवती, नित्या एव=सदा वर्तमान रहती हैं, इदम् सर्वं=यह सब कुछ, तया=उन्हीं से, ततम्=व्याप्त है, तथापि=फिर भी, तत् समुत्पत्तिः=उनकी उत्पत्ति का, बहुधा=अनेक आख्यान, मम श्रूयताम्=मुझसे सुनिए।।६३-६४।।

अन्वितार्थ

सुमेधा ऋषि बोले - हे राजन्! वह जगद् रूपिणी भगवती तीनों कालों में वर्तमान रहती हैं उन्हीं से यह सब कुछ व्याप्त है फिर भी उनकी उत्पत्ति का अनेक आख्यान मुझसे सुनिए।।६३-६४।।

मन्त्र

देवानां कार्यसिध्यर्थमाविर्भवति सा यदा।।६५।।
उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते।

पदच्छेद

देवानाम् कार्य-सिद्धि-अर्थम् आविर्भवति सा यदा उत्पन्ना इति तदा लोके सा नित्या अपि अभिधीयते।।६५।।

अन्वित-पदार्थ

यदा=जब, सा=वह, देवानाम्=देवताओं के, कार्य-सिध्यर्थम्=कार्य की सिद्धि के लिए, आविर्भवति=अवतार लेतीं है, तदा=तब, लोके=संसार में, नित्या अपि=सदा वर्तमान होने पर भी, सा=वह, उत्पन्ना इति="उत्पन्न हुईं" ऐसा, अभि-धीयते=कहते हैं।।६५।।

अन्वितार्थ

जब वह देवताओं के कार्य की सिद्धि के लिए अवतार लेतीं हैं। तब संसार में सदा वर्तमान होने पर भी "उत्पन्न हुईं" ऐसा कहते हैं।।६५।।

मन्त्र

योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते।।६६।।
आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।

पदच्छेद

योग-निद्राम् यदा विष्णुः जगति एक-अर्णवी-कृते आ-स्तीर्य शेषम् अभजत् कल्प-अन्ते भगवान् प्रभुः।।६६।।

अन्वित-पदार्थ

यदा=जब, प्रभुः=सब के स्वामी, भगवान्=भगवान् विष्णुः=विष्णु, कल्पान्ते=चतुर्युग के अन्त में, एकार्णवीकृते जगति=संसार को समुद्र मात्र बना कर, शेषम्=शेष को, आस्तीर्य=बिछा कर, योगनिद्राम्=योगनिद्रा का, अभजत्=सेवन कर रहे थे।।६६।।

अन्तितार्थ

जब सबके स्वामी भगवान् विष्णु चतुर्युग के समाप्ति की अवस्था में संसार को समुद्र मात्र बना कर शेष को बिछा कर योगनिद्रा का सेवन कर रहे थे।।६६।।

मन्त्र

तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ।।६७।।

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ।

पदच्छेद

तदा द्वौ अ-सुरौ घोरौ विख्यातौ मधु-कैटभौ विष्णु-कर्ण-मल-उद्-भूतौ हन्तुम् ब्रह्माणम् उद्यतौ।।६७।।

अन्वित-पदार्थ

तदा=तब, द्वौ=दो, विष्णुकर्णमलोद्भूतौ=विष्णु के कान के मल से उत्पन्न, घोरौ=विकट, मधुकैटभौ=मधुकैटभ नाम से, विख्यातौ=विख्यात, असुरौ=राक्षस, ब्रह्माणम्=ब्रह्मा को, हन्तुम्=मारने के लिए, उद्यतौ=उद्यत हुए।।६७।।

अन्वितार्थ

तब दो विष्णु के कान के मैल से उत्पन्न मधुकैटभ नाम से विख्यात विकट राक्षस ब्रह्मा को मारने के लिए उद्यत हुए।।६७।।

मन्त्र

स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः।।६८।।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम्।

पदच्छेद

स नाभि-कमले विष्णोः स्थितः ब्रह्मा प्रजा-पतिः दृष्ट्वा तौ असुरौ च उग्रौ प्रसुप्तम् च जनार्दनम्।।६८।।

अन्वित-पदार्थ

विष्णोः=विष्णु की, नाभिकमले=नाभि के कमल में, सः=वे, प्रजापतिः=प्रजापति, ब्रह्मा=ब्रह्मा, स्थितः=विराजमान थे, जनार्दनम् च=और लोकरक्षक विष्णु को, प्रसुप्तम्=सोया हुआ, दृष्ट्वा=देख कर, तौ च=उन दोनों, उग्रौ=विकट, असुरौ=राक्षसों ने ।।६८।।

अन्वितार्थ

विष्णु की नाभि के कमल में वे प्रजापति ब्रह्मा विराजमान थे और लोक रक्षक विष्णु को सोया हुआ देख कर उन दोनों विकट राक्षसों ने।।६८।।

मन्त्र

तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः।।६९।।

विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम्।

पदच्छेद

तुष्टाव योग-निद्राम् ताम् एक-अग्र-हृदय-स्थितः विबोधन-अर्थाय हरेः हरि-नेत्र-कृत-आलयाम्।।६९।।

अन्वित-पदार्थ

एकाग्र-हृदय-स्थितः=एकाग्र हृदय से बैठ कर, हरेः=श्रीविष्णु को, विबोध नार्थाय=जगाने के लिए, हरेः=श्रीहरि के, नेत्रयोः=नेत्रों में, कृतालयाम्=निवास स्थान बनाई हुई, ताम्=उस योगनिद्राम्=योगनिद्रा को, तुष्टाव=प्रसन्न करने लगे।।६९।।

अन्वितार्थ

एकाग्र हृदय से बैठ कर श्रीविष्णु को जगाने के लिए श्रीहरि के नेत्रों में निवास स्थान बनाई हुई उस योगनिद्रा को प्रसन्न करने लगे।।६९।।

मन्त्र

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।।७०।।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः।।७१।।

पदच्छेद

ब्रह्मा उवाच विश्वेश्वरीम् जगत्-धात्रीम् स्थिति-संहार-कारिणीम् निद्राम् भगवतीम् विष्णोः अतुलाम् तेजसः प्रभुः।।७०-७१।।

अन्वित-पदार्थ

ब्रह्मा उवाच=ब्रह्मा जी बोले,भगवतीम्=भगवती, विश्वेश्वरीम्=विश्व की स्वामिनी, जगद्धात्रीम्=जगत् का पालन करने वाली, प्रभुः=भगवान्, विष्णोः=श्री विष्णु की, तेजसः=शक्ति से, स्थितिसंहारकारिणीम्=संसार की रचना तथा विनाश करने वाली, अतुलाम्=अगम्य, निद्राम्=निद्रा को (प्रसन्न करने लगे)।।७०-७१।।

अन्वितार्थ

ब्रह्मा जी बोले- भगवती सम्पूर्ण विश्व की स्वामिनी जगत् का पालन करने वाली भगवान् श्रीविष्णु की शक्ति से संसार की रचना तथा विनाश करने वाली अगम्य निद्रा को (प्रसन्न करने लगे)।।७०-७१।।

मन्त्र

ब्रह्मोवाच॥७२॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका॥७३॥
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।

पदच्छेद

ब्रह्मा उवाच- त्वम् स्वाहा त्वम् स्वधा त्वम् हि वषट्-कारः स्वर-आत्मिका सुधा त्वम् अ-क्षरे नित्ये त्रिधा मात्रा-आत्मिका स्थिता॥७२-७३॥

अन्वित पदार्थ

ब्रह्मा उवाच=ब्रह्मा जी बोले, त्वम्=आप, स्वाहा=स्वाहा देवताओं की तर्पिका, त्वम्=आप ही, स्वधा=स्वधा पितरों की तर्पिका, त्वम् हि=आप, वषट्कारः='वषट्' ध्वनि हैं, स्वरात्मिका=तथा स्वररूपिणी हैं, त्वम् सुधा=आप अमृत हैं, अक्षरे=हे क्षरणहीन भगवति, नित्ये=सदा वर्तमान त्रिधा=आप ओंकार की तीन मात्रा रूप में, स्थिता=विराजमान हैं॥७२-७३॥

अन्वितार्थ

ब्रह्मा जी बोले- आप स्वाहा-देवताओं की तर्पिका, आप ही स्वधा-पितरों की तर्पिका, आप 'वषट्' ध्वनि हैं तथा स्वररूपिणी हैं। आप अमृत हैं। हे क्षरणहीन भगवति! सदा वर्तमान आप ओंकार की तीनमात्रा के रूप में विराजमान हैं॥७२-७३॥

मन्त्र

अर्धमात्रास्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः॥७४॥
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा।

पदच्छेद

अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या या अनुच्चार्या विशेषतः त्वम् एव सन्ध्या सावित्री त्वम् देवि जननी परा॥७४॥

अन्वित पदार्थ

या=जो, नित्या=नित्य हैं, विशेषतः=विशेष रूप से, अनुच्चार्या=वाणी से नहीं बताई जा सकती हैं, अर्धमात्रास्थिता=क्योंकि अर्धमात्रा ध्वनिरूप हैं,

त्वम् एव=आप ही, सावित्री=सविता की शक्ति, सन्ध्या=सन्ध्या, त्वम् देवि=हे देवि! आप ही, परा=सर्वोच्च, जननी=माता हैं।।७४।।

अन्वितार्थ

जो नित्य हैं, विशेष रूप से वाणी से नहीं बताई जा सकती हैं, क्योंकि अर्धमात्रा ध्वनिरूप हैं। वे आप ही सविता की शक्ति सन्ध्या हैं। हे देवि! आप ही सर्वोच्च माता हैं।।७४।।

मन्त्र

त्वयैतद् धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत्।।७५।।
त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा।

पदच्छेद

त्वया एतद् धार्यते विश्वम् त्वया एतत् सृज्यते जगत् त्वया एतत् पाल्यते देवि त्वम् अत्सि अन्ते च सर्वदा।।७५।।

अन्वित-पदार्थ

देवि=हे देवि, सर्वदा=सदा, त्वया=आप के द्वारा, एतद् विश्वं धार्यते=यह विश्व धारण किया जाता है, त्वया एतत् जगत्=आप के द्वारा यह विश्व, सृज्यते=निर्मित होता है, त्वया एतत् पाल्यते=आप के द्वारा इसका पालन होता है, त्वम् च अन्ते=आप ही अन्त में, अत्सि=इसका भक्षण करतीं हैं।।७५।।

अन्वितार्थ

हे देवि! सर्वदा आप के द्वारा यह विश्वधारण किया जाता है, आप के द्वारा यह विश्व निर्मित होता है, आप के द्वारा इसका पालन होता है, आप ही अन्त में इसका भक्षण करतीं हैं।।७५।।

मन्त्र

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।।७६।।
तथा संहृतिरूपाऽन्ते जगतोऽस्य जगन्मये।

पदच्छेद

विसृष्टौ सृष्टि-रूपा त्वम् स्थिति-रूपा च पालने तथा संहृति-रूपा अन्ते जगतः अस्य जगत्-मये।।७६।।

अन्वित-पदार्थ

जगन्मये!=हे जगद्रूपिणि भगवति!, त्वम्=आप, अस्य जगतः=इस संसार के, विसृष्टौ=रचना काल में, सृष्टिरूपा=सृष्टि रूपिणी, पालने च=पालन करते समय, स्थितिरूपा=स्थिति रूप में, तथा अन्ते संहृतिरूपा=इसी प्रकार अन्त में संहाररूपिणी होती हैं।।७६।।

अन्वितार्थ

हे जगद्रूपिणि भगवति! आप इस संसार के रचना काल में सृष्टि रूपिणी, पालन करते समय स्थितिरूपिणी, इसी प्रकार अन्त में संहाररूपिणी होती हैं।।७६।।

मन्त्र

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।।७७।।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।

पदछेद

महा-विद्या महा-माया महा-मेधा महा-स्मृतिः महा-मोहा च भवती महा-देवी महा-सुरी।।७७।।

अन्वितपदार्थ

भवती=आप ही, महाविद्या=परम ज्ञान की हेतु, महामाया=महती माया, महामेधा=सर्वोच्च धारणात्मिका शक्ति, महास्मृतिः=परमा स्मृति, महामोहा च=तथा महामोह रूपिणी, महादेवी=परम तेजस्विनी, महासुरी=परमदेव-रूपिणी हैं।।७७।।

अन्वितार्थ

आप ही परम ज्ञान की हेतु, महती माया, सर्वोच्च धारणात्मिका शक्ति, परमस्मृति तथा महामोह रूपिणी, परमतेजस्विनी, परमदेव रूपिणी हैं।।७७।।

मन्त्र

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।।७८।।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा।

पदच्छेद

प्रकृतिः त्वम् च सर्वस्य गुणत्रय-विभाविनी काल-रात्रिः महा-रात्रिः मोह-रात्रिः च दारुणा॥७८॥

अन्वितपदार्थ

त्वम् च=और आप, सर्वस्य=सभी की, गुणत्रयस्य=तीनों गुणों की, विभाविनी=व्यवस्था करने वाली, प्रकृतिः=मूल प्रकृति हैं, कालरात्रिः=आप कालरात्रि, महारात्रिः=महारात्रि, दारुणा च मोहरात्रिः=तथा दारुण मोहरात्रि हैं॥७८॥

अन्वितार्थ

और आप सभी की सत्त्व रजस् तमस् गुणों की व्यवस्था करने वाली मूल प्रकृति हैं आप कालरात्रि महारात्रि तथा दारुण मोहरात्रि हैं॥७८॥

मन्त्र

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा॥७९॥
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च।

पदच्छेद

त्वम् श्रीः त्वम् ईश्वरी त्वम् ह्रीः त्वम् बुद्धिः बोध-लक्षणा लज्जा पुष्टिः तथा तुष्टिः त्वम् शान्तिः क्षान्तिः एव च॥७९॥

अन्वितपदार्थ

त्वम्=आप, श्रीः=लक्ष्मी हैं, त्वम्=आप, ईश्वरी=स्वामिनी हैं, त्वम्=आप, ह्रीः=माया हैं, त्वम्=आप, बोधलक्षणा=बोधरूपा, बुद्धिः=बुद्धि हैं, लज्जा पुष्टिः=लज्जा वैभव, तथा तुष्टिः=और सन्तुष्टि, त्वम् एव च=आप ही, शान्तिः=शान्ति, क्षान्तिः=एवं सहनशक्ति हैं॥७९॥

अन्वितार्थ

आप लक्ष्मी हैं। आप स्वामिनी हैं। आप माया हैं। आप बोधरूपा बुद्धि हैं। लज्जा वैभव और सन्तुष्टि आप ही शान्ति एवं सहनशक्ति हैं॥७९॥

मन्त्र

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा॥८०॥

शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा।

पदच्छेद

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा।।८०।।

अन्वितपदार्थ

खड्गिनी=आप खड्गधारिणी, शूलिनी=शूलधारिणी, घोरा=विकट, गदिनी=गदाधारिणी, चक्रिणी=चक्रधारिणी, तथा शङ्खिनी=इसी प्रकार शंखधारिणी, चापिनी=धनुषधारिणी, बाणभुशुण्डीपरिघायुधा=बाण, भुशुण्डी तथा परिघ नामक अस्त्र-शस्त्र धारण करती हैं।।८०।।

अन्वितार्थ

आप खड्गधारिणी शूलधारिणी विकट गदा धारिणी, चक्रधारिणी इसी प्रकार शंखधारिणी, धनुषधारिणी, बाण, भुशुण्डी तथा परिघ नामक अस्त्र-शस्त्र धारण करती हैं।।८०।।

मन्त्र

सौम्या सौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी।।८१।।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।

पदछेद

सौम्या सौम्य-तरा अशेष-सौम्येभ्यः तु अति-सुन्दरी पर-अपराणाम् परमा त्वम् एव परमेश्वरी।।८१।।

अन्वितपदार्थ

सौम्या=आप मृदुता की मूर्ति हैं, सौम्यतरा=किसी भी अन्य मृदु वस्तु से अधिक मृदु, अशेषसौम्येभ्यः तु=सभी आनन्द रूप मूर्तियों में सबसे अधिक सौम्य, अतिसुन्दरी=अतिसुन्दरी, परापराणाम्=उत्तम तथा अनुत्तम वस्तुओं दोनों में, परमा=परमा उत्तम, त्वम् एव=आप ही, परमेश्वरी= परमेश्वरी हैं।।८१।।

अन्वितार्थ

हे परमेश्वरी! आप मृदुता की मूर्ति हैं। किसी भी अन्य सौम्य वस्तु से अधिक सौम्य, सभी सौम्य मूर्तियों में सबसे अधिक सौम्य, अतिसुन्दरी, उत्तम तथा अनुत्तम वस्तुओं दोनों वस्तुओं में उत्तम, आप ही परमेश्वरी हैं।।८१।।

मन्त्र

यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तुसदसद्वाऽखिलात्मिके।।८२।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।

पदच्छेद

यत् च किञ्चित् क्व-चिद् वस्तु सद् असद् वा अखिल-आत्मिके तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वम् किम् स्तूयसे तदा।।८२।।

अन्वितपदार्थ

अखिलात्मिके=हे सर्व रूपिणि, यत् च किञ्चित् क्वचिद्=जो कुछ कही, वस्तु=पदार्थ है, सत् असत् वा=वह सत् हो या असत्, तस्य सर्वस्य=उन सबकी, या शक्तिः=जो शक्ति है, सा त्वम्=वह आप ही है, तदा किम् स्तूयसे=तो फिर आपकी कैसे स्तुति की जाए।।८२।।

अन्वितार्थ

हे सर्व रूपिणि! जो कुछ कहीं पदार्थ है वह सत् हो या असत् उन सबकी जो शक्ति है वह आप ही हैं तो फिर आपकी कैसे स्तुति की जाए।।८२।।

मन्त्र

यया त्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।।८३।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।

पदच्छेद

यया त्वया जगत् स्त्रष्टा जगत् पाति अत्ति यः जगत् सः अपि निद्रा-वशं नीतः कः त्वाम् स्तोतुम् इह ईश्वरः।।८३।।

अन्वितपदार्थ

यया=जिन, त्वया=आप के द्वारा, जगत् स्रष्टा=संसार के रचयिता, जगत् पाति=संसार का पालन करते हैं, अत्ति यः जगत्=तथा जो संसार का नाश करते हैं, सः अपि=वह भी, निद्रायाः=निद्रा के वशं नीतः=वश में ले जाए गए हैं, इह त्वाम् स्तोतुम्=इस अवस्था में आपकी स्तुति करने के लिए, कः ईश्वरः=कौन समर्थ है।।८३।।

अन्वितार्थ

जिन आप के द्वारा संसार के रचयिता संसार का पालन करते हैं, तथा जो संसार का नाश करते हैं, वह भी निद्रा के वश में ले जाए गए हैं, इस अवस्था में आपकी स्तुति करने के लिए कौन समर्थ है।।८३।।

मन्त्र

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।।८४।।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।

पदच्छेद

विष्णुः शरीर-ग्रहणम् अहम् ईशानः एव च कारिताः ते यतः अतः त्वाम् कः स्तोतुम् शक्ति-मान् भवेत्।।८४।।

अन्वितपदार्थ

यतः=क्योंकि, अहम्=मैं, विष्णुः=विष्णु, ईशानः च=और शिव, ते एव=तीनों ही आपके आदेश पर, शरीरग्रहणम्=देह धारण, कारिताः=कराए गए हैं, अतः त्वाम्=इसलिए आपकी, स्तोतुम्=स्तुति करने में, कः शक्तिमान् भवेत्=कौन समर्थ हो सकता है।।८४।।

अन्वितार्थ

क्योंकि मैं विष्णु और शिव तीनों ही आपके आदेश पर देह धारण कराए गए हैं इसलिए आपकी स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है। कोई शरीरधारी आपकी स्तुति नहीं कर सकता।।८४।।

मन्त्र

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारै र्देवि संस्तुता।।८५।।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।

पदच्छेद

सा त्वम् इत्थम् प्रभावैः स्वैः उदारैः देवि संस्तुता मोहय एतौ दुर्-आधर्षौ असुरौ मधु-कैटभौ।।८५।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे भगवति, सा त्वम्=ऐसी महिमा मयी आप, इत्थम् संस्तुता=इस रूप में प्रार्थना किए जाने पर, स्वैः उदारैः=अपने उदार स्वभाव के, प्रभावैः=प्रभाव से,एतौ दुराधर्षौ=इन दोनों अजेय असुरौ राक्षसों, मध ुकैटभौ= मधु और कैटभ को, मोहय=मोहित करें।।८५।।

अन्वितार्थ

हे भगवति! ऐसी महिमामयी आप (समुचित स्तुति का सामर्थ्य हममें न होने पर भी)इस रूप में प्रार्थना किए जाने पर अपने उदार स्वभाव के प्रभाव से इन दोनों अजेय राक्षसों मधु और कैटभ को मोहित करें।।८५।।

मन्त्र

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।।८६।।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ।।८७।।

पदच्छेद

प्रबोधम् च जगत्-स्वामी नीयताम् अच्युतः लघु बोधः च क्रियताम् अस्य हन्तुम् ऐतौ महा-सुरौ।।८६-८७।।

अन्वितपदार्थ

जगतः स्वामी अच्युतः=हे भगवति! जगदीश्वर विष्णु, लघु=तत्काल, प्रबोधम् च=आपके द्वारा निद्रा विहीन, नीयताम्=हो जाएँ, अस्य=इनकी, एतौ महासुरौ=इन दोनों, हन्तुम् बोधः च=महा राक्षसों का बध करने का, बोध क्रियताम्=भाव उत्पन्न करें।।८६-८७।।

अन्वितार्थ

हे भगवति! जगदीश्वर विष्णु तत्काल आपके द्वारा निद्रा विहीन हो जाएँ इनकी इन दोनों महा राक्षसों का बध करने का भाव उत्पन्न करें।।८६-८७।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥८८॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा॥८९॥
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- एवम् स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुम् मधु-कैटभौ॥८८-८९॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, तदा तत्र=उस समय हिमालय पर, तामसी देवी=तमोगुण प्रधाना देवी, विष्णोः=विष्णु को, प्रबोधनार्थाय=जगाने के लिए, मधुकैटभौ निहन्तुम्=मधुकैटभ के संहार के लिए, वेधसा=ब्रह्मा के द्वारा, एवम् स्तुता=इस प्रकार प्रार्थित होने पर॥८८-८९॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- उस समय हिमालय पर तमोगुणप्रधाना देवी विष्णु को जगाने के लिए मधु-कैटभ के संहार के लिए ब्रह्मा के द्वारा इस प्रकार प्रार्थित होने पर॥८८-८९॥

मन्त्र

नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः॥९०॥
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।

पदच्छेद

नेत्र-आस्य-नासिका-बाहु-हृदयेभ्यः तथा उरसः निर्-गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणः अव्यक्त-जन्मनः॥९०॥

अन्वितपदार्थ

नेत्र-आस्य-नासिका-बाहु-हृदयेभ्यः=आँखों से, मुख से, दोनों नासिका रन्ध्रों से, दोनों भुजाओं से, हृदय भाग से, तथा उरसः=इसी प्रकार जाँघों से, निर्गम्य=निकल कर, अव्यक्त-जन्मनः=अज्ञात जन्मा, ब्रह्मणः= ब्रह्मा के, दर्शने=दृष्टिपथ पर, तस्थौ=विराजमान हो गई॥९०॥

अन्वितार्थ

अज्ञात जन्म वाले विष्णु के नेत्रों से, मुख से, नासिका से, बाहुओं से, हृदय से इसी प्रकार जाँघों से निकल कर ब्रह्मा के दृष्टिपथ पर विराजमान हो गईं।।९०।।

मन्त्र

उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।।९१।।
एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ।

पदच्छेद

उत्तस्थौ च जगत्-नाथः तया मुक्तः जनार्दनः एक-अर्णवे अहि-शयनात् ततः सः ददृशे च तौ।।९१।।

अन्वितपदार्थ

तया च=योगनिद्रा से, मुक्तः=मुक्त होने पर, जगन्नाथः जनार्दनः=जगदीश भगवान् विष्णु एकार्णवे=जलप्लावन की अवस्था में, अहिशयनात्=शेष नाग-शैय्या से, उत्तस्थौ=उठे। ततः च सः=उसके बाद उन्होंने, तौ ददृशे=उन दोनों को देखा।।९१।।

अन्वितार्थ

योगनिद्रा से मुक्त होने पर जगदीश भगवान् विष्णु जलप्लावन की अवस्था में शेष-शैय्या से उठे। उसके बाद उन्होंने उन दोनों को देखा।।९१।।

मन्त्र

मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ।।९२।।
क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ।

पदच्छेद

दुर्-आत्मानौ अति-वीर्य-पराक्रमौ क्रोधेन रक्त-ईक्षणौ अत्तुम् ब्रह्माणम् जनित-उद्यमौ मधु-कैटभौ।।९२।।

अन्वितपदार्थ

दुरात्मानौ=दुष्ट, अतिवीर्यपराक्रमौ=अत्यन्त बली एवं पराक्रमी, क्रोध रक्तेक्षणौ=क्रोध से लाल आखों वाले, ब्रह्माणम् अत्तुम्=ब्रह्मा को खा जाने

के लिए, जनित-उद्यमौ=प्रयत्नशील, मधुकैटभौ ददृशे=मधुकैटभ को देखा।।९२।।

अन्वितार्थ

दुष्ट, अत्यन्त बली एवं पराक्रमी, क्रोध से लाल आखों वाले, ब्रह्मा को खा जाने के लिए प्रयत्नशील मधुकैटभ को देखा।।९२।।

मन्त्र

समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः।।९३।।
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः।

पदच्छेद

समुत्थाय ततः ताभ्याम् युयुधे भगवान् हरिः पञ्चवर्ष-सहस्राणि बाहु-प्रहरणः विभुः।।९३।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, विभुः=व्यापक रूप भगवान्, हरिः=भगवान् श्रीहरि ने, समुत्थाय=योगनिद्रा से उठ कर, ताभ्याम्=उन दोनों से पञ्च-वर्ष-सहस्राणि= पाँचहजार वर्ष तक, बाहु-प्रहरणः=बाहुयुद्ध, युयुध=किया।।९३।।

अन्वितार्थ

इसके बाद व्यापक रूप भगवान् श्रीहरि ने योगनिद्रा से उठ कर उन दोनों से पाँच हजार वर्ष तक बाहुयुद्ध किया।।९३।।

मन्त्र

तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ।।९४।।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम्।।९५।।

पदच्छेद

तौ अपि अति बलेन. उन्-मत्तौ महा-माया-विमोहितौ उक्तवन्तौ वरः अस्मत् तः व्रियताम् इति केशवम्।।९४-९५।।

अन्वितपदार्थ

महामायाविमोहितौ=महामाया के प्रभाव से विमूढ, अति बलेन=अत्यन्त बल के कारण, उन्मत्तौ=पगलाए, तौ अपि=वे दोनों भी, अस्मत्तः="हमसे,

वरः व्रियताम् इति=वर माँगो" ऐसा, केशवम् उक्तवन्तौ=श्रीविष्णु से बोले।।९४-९५।।

अन्वितार्थ

महामाया के प्रभाव से विमूढ और अत्यन्त बल के कारण पगलाए वे दोनों भी "हमसे वर माँगो" ऐसा श्रीविष्णु से बोले।।९४-९५।।

मन्त्र

श्रीभगवानुवाच।।९६।।

भवेतामद्य में तुष्टौ मम वध्यावुभावपि।।९७।
किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम।।९८।।

पदच्छेद

श्रीभगवान् उवाच- भवेताम् अद्य में तुष्टौ मम वध्यौ उभौ अपि किम् अन्येन वरेण अत्र एतावद् हि वृतम् मम।।९६-९८।।

अन्वितपदार्थ

श्रीभगवान् उवाच-=श्रीभगवान् बोले, में तुष्टौ=यदि मुझसे सन्तुष्ट हो, उभौ अपि=तो दोनों, अद्य मम वध्यौ=आज दोनों मेरे वध्य, भवेताम्=हो जाओ, अत्र अन्येन वरेण किम्=इस अवसर पर किसी, अन्य वर से क्या काम, मम एतावद् हि वृतम्=मैं बस इतना ही वर माँगता हूँ।।९६-९८।।

अन्वितार्थ

श्रीभगवान् बोले- यदि मुझसे सन्तुष्ट हो तो दोनों आज मेरे वध्य हो जाओ इस अवसर पर किसी अन्य वर से क्या काम मैं बस इतना ही वर माँगता हूँ।।९६-९८।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।९९।।

वञ्चिताभ्यामिति मे तदा सर्वमापोमयं जगत्।।१००।।
विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- वञ्चिताभ्याम् इति मे तदा सर्वम् आपः मयम् जगत् विलोक्य ताभ्याम् गदितः भगवान् कमलेक्षणः।।९९-१००।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच-=ऋषि बोले-, तदा मे=उस समय मेरे प्रभाव से, वञ्चिताभ्याम् ताभ्याम्=मुग्ध बनाए गए वे दोनों द्वारा, सर्वम् जगद्=पूरे संसार को, आपोमयम् विलोक्य=जलमग्न देख कर, भगवान् कमलेक्षणः=भगवान कमल नयन, इति गदितः=इस प्रकार बोले गए।।९९-१००।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- उस समय मेरे प्रभाव से मुग्ध वे दोनों पूरे संसार को जलमग्न देख कर भगवान् कमलनयन श्रीविष्णु इस प्रकार बोले गए।।९९-१००।।

मन्त्र

आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता।।१०१।।

पदच्छेद

आवाम् जहि न यत्र उर्वी सलिलेन परिप्लुता।।१०१।।

अन्वितपदार्थ

यत्र उर्वी=जहाँ पृथ्वी, सलिलेन=जल से, न परिप्लुता=गीली न हो, आवाम् जहि=वहाँ हमें मारो।।१०१।।

अन्वितार्थ

जहाँ पृथ्वी जल से गीली न हो वहाँ हमें मारो।।१०१।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।१०२।।

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।१०३।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- तथा इति उक्त्वा भगवता शङ्ख-चक्र-गदाभृता कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।१०२-१०३।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच-=ऋषि बोले-, तथा इति उक्त्वा="ठीक है" बोल कर, शङ्खचक्रगदाभृता=शंख-चक्र-गदाधारी, भगवता=भगवान् द्वारा, तयोः शिरसी=दोनों के शिर, जघने कृत्वा=अपने जघन पर रख कर, चक्रेण वै च्छिन्ने=चक्र से काट दिए गए।।१०२-१०३।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- "ठीक है" बोल कर शंख चक्र गदाधारी भगवान् द्वारा दोनों के शिर अपने जघन पर रख कर चक्र से काट दिए गए।।१०२-१०३।।

मन्त्र

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते।।१०४।।

पदच्छेद

एवम् एषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् प्रभावम् अस्या देव्याः तु भूयः शृणु वदामि ते।।१०४।।

अन्वितपदार्थ

एवम्=इस प्रकार, ब्रह्मणा संस्तुता=ब्रह्मा द्वारा प्रशंसित, एषा=यह देवी, स्वयम् समुत्पन्ना=स्वयं ही उत्पन्न, अस्या देव्याः=इस देवी के, भूयः प्रभावम् तु=और भी इनके प्रभाव को, ते वदामि शृणु=आपको बताता हूँ सुनिए।।१०४।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार ब्रह्मा द्वारा प्रशंसित यह देवी स्वयं ही उत्पन्न और भी इनके प्रभाव को आपको बताता हूँ सुनिए।।१०४।।

ॐ जय-जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॐ

॥अथद्वितीयोऽध्यायः॥

विनियोगः

ॐ अस्य मध्यमचरित्रस्य विष्णुः ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे मध्यमचरित्रजपे विनियोगः॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच ॥१॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- देवासुरम् अभूद् युद्धम् पूर्णम् अब्द-शतम् पुरा महिषे असुराणाम् अधिपे देवानाम् च पुरन्दरे॥१-२॥

अन्वित पदार्थ

पुरा=प्राचीन काल में, देवानाम्=देवताओं के, अधिपे=राजा, पुरन्दरे=इन्द्र, असुराणाम् च=और असुरों के, अधिपे=राजा, महिषे=महिष के नेतृत्व में, देवासुरम्=देवों और असुरों का, युद्धम्=संग्राम, पूर्णम्=पूरे, अब्द-शतम्=एक सौ बरस तक, अभूत्=हुआ था॥१-२॥

अन्वितार्थ

प्राचीन काल में देवताओं के राजा इन्द्र और असुरों के राजा महिष के नेतृत्व में देवों और असुरों का संग्राम पूरे एक सौ-बरस तक हुआ था॥१-२॥

मन्त्र

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः॥३॥

पदच्छेद

तत्र असुरैः महा-वीर्यैः देवानाम् सैन्यम् परा-जितम्। जित्वा च सकलान् देवान् इन्द्रः अभूत् महिषासुरः।।३।।

अन्वितपदार्थ

तत्र=उस युद्ध में, महा-वीर्यैः=महाबलशाली, असुरैः=असुरों द्वारा, देवानाम्=देवताओं की, सैन्यम्=सेना, पराजितम्=पराजित हुई, सकलान् च=और समस्त, देवान्=देवताओं को, जित्वा=जीतकर, महिषासुरः= महिषासुर, इन्द्रः=इन्द्र, अभूत्=बन गया।।३।।

अन्वितार्थ

उस युद्ध में महाबलशाली असुरों द्वारा देवताओं की सेना पराजित हुई और समस्त देवताओं को जीतकर महिषासुर इन्द्र बन गया।।३।।

मन्त्र

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ।।४।।

पदच्छेद

ततः परा-जिताः देवाः पद्म-योनिम् प्रजा-पतिम् पुरस्-कृत्य गताः तत्र यत्र ईश-गरुडध्वजौ।।४।।

अन्वित पदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, पराजिताः=हारे हुए, देवाः=देवगण, पद्मयोनिम्=कमल से उत्पन्न, प्रजापतिम्=ब्रह्मा को, पुरस्कृत्य=आगे करके, यत्र=जहाँ, ईशगरुडध्वजौ=शिव एवं विष्णु थे वहाँ, गताः=गए।।४।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् हारे हुए देवगण कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को आगे करके जहाँ शिव एवं विष्णु थे वहाँ गए।।४।।

मन्त्र

यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम्।।५।।

पदच्छेद

यथा वृत्तम् तयोः तद् वत् महिषासुर-चेष्टितम् त्रिदशाः कथयामासुः देव-अभिभव-विस्तरम्।।५।।

अन्वित पदार्थ

तयोः=उन दोनों से, त्रिदशाः=देवतागण, महिषासुरेण=महिषासुर द्वारा किया गया, चेष्टितम्=कर्म, यथा-वृत्तम्=जैसा घटित हुआ था, तद्वत्=उसी प्रकार, देवानाम्=देवताओं के, अभिंभवस्य=पराभव का, विस्तरम्=विस्तृत विवरण, कथयामासुः=सुनाया।।५।।

अन्वितार्थ

उन दोनों से देवतागण महिषासुर द्वारा किया गया कर्म जैसा घटित हुआ था उसी प्रकार देवताओं के पराभव का विस्तृत विवरण सुनाया।।५।।

मन्त्र

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषाञ्चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति।।६।।

पदच्छेद

सूर्य-इन्द्र-अग्नि-अनिल-इन्दूनाम् यमस्य वरुणस्य च अन्येषाम् च अधिकारान् सः स्वयम् एव अधितिष्ठिति।।६।।

अन्वित पदार्थ

सः=वह महिष, सूर्य-इन्द्र-अग्नि-अनिल-इन्दूनाम्=सूर्य के, इन्द्र के, अग्नि के, वायु के, चन्द्रमा के, यमस्य=यम के, वरुणस्य च=और वरुण के, अन्येषां च=तथा अन्य देवों के, अधिकारान्=कार्यक्षेत्रों पर, स्वयम्=स्वयं, एव=ही, अधितिष्ठति=कब्जा किए हुए है।।६।।

अन्वितार्थ

वह महिष सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवों के कार्यक्षेत्रों पर स्वयं ही कब्जा किए हुए है।।६।।

मन्त्र

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।

विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।७।।

पदच्छेद

स्वर्गात् निराकृताः सर्वे तेन देव-गणाः भुवि विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।७।।

अन्वित पदार्थ

तेन=उस, दुरात्मना=दुष्ट, महिषेण=महिष द्वारा, स्वर्गात्=स्वर्ग से, निराकृताः=निकाले गये, देवगणाः=देवगण, यथा मर्त्याः=मनुष्यों की भाँति, तथा भुवि=धरती पर, विचरन्ति=विचरण कर रहे हैं।।७।।

अन्वितार्थ

उस दुष्ट महिष द्वारा स्वर्ग से निकाले गए देव गण मनुष्यों की भाँति ध रती पर विचरण कर रहे हैं।।७।।

मन्त्र

एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो बधस्तस्य विचिन्त्यताम्।।८।।

पदच्छेद

एतत् वः कथितम् सर्वम् अमरारि-विचेष्टितम् शरणम् वः प्रपन्नाः स्मः बधः तस्य विचिन्त्यताम्।।८।।

अन्वित पदार्थ

एतत्=यह, सर्वम्=सब, अमरारि-विचेष्टितम्=देवताओं के शत्रु की करनी हमने, वः=आप दोनों को, कथितम्=बताया है, वः=हम आप दोनों के, शरणम्=शरण में, प्रपन्नाः स्मः=हम पड़े हैं, तस्य=उसके, बधः=बध के विषय में, विचिन्त्यताम्=विचार कीजिए।।८।।

अन्वितार्थ

यह सब देवताओं के शत्रु की करनी हमने आप दोनों को बताया है। हम आप दोनों के शरण में पड़े हैं। उसके बध के विषय में विचार कीजिए।।८।।

मन्त्र

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ॥९॥

पदच्छेद

इत्थम् निशम्य देवानाम् वचांसि मधुसूदनः चकार कोपम् शम्भुः च भ्रुकुटी-कुटिल-आननौ॥९॥

अन्विता पदार्थ

देवानाम्=देवताओं के, इत्थम्=इस प्रकार के, वचांसि=वचन को, निशम्य=सुनकर, भ्रूकुटीकुटिलाननौ=टेढ़ी भौंहों से युक्त मुख वाले, मधुसूदनः=मधु नामक दैत्य के विनाशक विष्णु, शम्भुः च=एवं शिव ने, कोपम्=क्रोध, चंकार=किया॥९॥

अन्वितार्थ

देवताओं के इस प्रकार के वचन को सुनकर टेढ़ी भौंहों से युक्त मुख वाले मधु नामक दैत्य के विनाशक विष्णु एवं शिव ने क्रोध किया॥९॥

मन्त्र

ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च॥१०॥

पदच्छेद

ततः अति-कोपेन पूर्णस्य चक्रिणः वदनात् ततः निश्चक्राम महत् तेजः ब्रह्मणः शङ्करस्य च॥१०॥

अन्वित पदार्थ

ततः=एतदनन्तर, अतिकोपेन=अत्यन्त क्रोप से, पूर्णस्य=भरे हुए चक्रिणः=चक्रधारी विष्णु, ततः=उसके बाद, ब्रह्मणः=ब्रह्मा, शङ्करस्य च=तथा उसके बाद शङ्कर का, महत् तेजः=विशाल तेज, निश्चक्राम=निकला॥१०॥

अन्वितार्थ

एतदनन्तर अत्यन्त कोप से भरे हुए चक्रधारी विष्णु उसके बाद ब्रह्मा तथा उसके बाद शंकर का विशाल तेज निकला॥१०॥

मन्त्र

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत॥११॥

पदच्छेद

अन्येषाम् च एव देवानाम् शक्र-आदीनाम् शरीरतः निर्-गतम् सुमहत् तेजः तत् च ऐक्यम् समगच्छत॥११॥

अन्वित पदार्थ

च अन्येषाम्=और अन्य सभी, शक्रादीनाम्=इन्द्र आदि, देवानाम्=देवताओं के, शरीरतः एव=शरीर से ही, सुमहत्=सुमहान्, तेजः=तेज निकाला, निर्गतम् तत च=और वह सम्पूर्ण तेज, ऐक्यम्=संघटित होकर एक, समगच्छत=हो गया॥११॥

अन्वितार्थ

और अन्य सभी इन्द्र आदि देवताओं के शरीर से ही सुमहान् तेज निकला और वह सम्पूर्ण तेज संघटित होकर एक हो गया॥११॥

मन्त्र

अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्॥१२॥

पदच्छेद

अति इव तेजसः कूटम् ज्वलन्तम् इव पर्वतम् ददृशुः ते सुराः तत्र ज्वाला-व्याप्तम् दिगन्तरम्॥१२॥

अन्वित पदार्थ

तत्र=वहाँ, ते सुराः=उन देवताओं ने, तेजसः=उस एकी-कृत तेज के, कूटम्=पुञ्ज को, अतीव=अत्यन्त, ज्वलन्तम्=जलते हुए, ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरम्=ज्वाला से दिशाओं को व्याप्त करने वाले, पर्वतम् इव=पर्वत के समान, ददृशुः=देखा॥१२॥

अन्वितार्थ

वहाँ उन देवताओं ने उस एकी-कृत तेज के पुञ्ज को अत्यन्त जलती हुई ज्वाला से दिशाओं व्याप्त करने वाले पर्वत के समान देखा॥१२॥

मन्त्र

अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा॥१३॥

पदच्छेद

अ-तुलम् तत्र तत् तेजः सर्वेषाम् देवानाम् शरीरजम् एकस्थम् तद् अभूत् नारी व्याप्तम् लोक-त्रयम् त्विषा॥१३॥

अन्वित पदार्थ

तत्र=हिमालय पर, सर्वेषाम्=सभी, देवानाम्=देवताओं के, शरीरजम्=शरीर से उत्पन्न, तत्=वह, अतुलम्=अतुलनीय, तेजः=तेज, एकस्थम्=एकीकृत होकर, त्विषा=अपने प्रकाश से, व्याप्त-लोक-त्रयम्=तीनों लोकों को व्याप्त कर रहा था, तत्=वही, नारी=स्त्री, अभूत्=हो गया॥१३॥

अन्वितार्थ

हिमालय पर सभी देवताओं के शरीर से उत्पन्न वह अतुलनीय तेज जो एकीकृत होकर अपने प्रकाश से तीनों लोकों को व्याप्त कर रहा था। वही स्त्री रूप हो गया॥१३॥

मन्त्र

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा॥१४॥

पदच्छेद

यत् अभूत् शाम्भवम् तेजः तेन अजायत तत् मुखम् याम्येन च अभवन् केशाः बाहवः विष्णु-तेजसा॥१४॥

अन्वित पदार्थ

यत्=जो, शाम्भवम्=शम्भु से उत्पन्न, तेजः=तेज, अभूत्=था, तेन=उससे, तन्मुखम्=उस नारी का मुख, अजायत=बना, याम्येन च=और यम के तेज से, केशाः=केश, अभवन्=उत्पन्न हुए, विष्णु तेजसा=विष्णु के तेज से, बाहव=भुजाएँ (उत्पन्न हुई)॥१४॥

अन्वितार्थ

जो शम्भु से उत्पन्न तेज था उससे उस नारी का मुख बना और यम के तेज से केश उत्पन्न हुए विष्णु के तेज से भुजाएँ उत्पन्न हुईं।।१४।।

मन्त्र

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।।१५।।

पदच्छेद

सौम्येन स्तनयो: युग्मम् च ऐन्द्रेण च अभवत् वारुणेन च जङ्घा-उरू नितम्ब: तेजसा भुव:।।१५।।

अन्वित पदार्थ

स्तनयो:=स्तनों का, युग्मम्=युग्म, सौम्येन=चन्द्रमा के, ऐन्द्रेण च=तथा इन्द्र के तेज से, मध्यम्=मध्य भाग, वारुणेन च=वरुण के तेज से, जङ्घोरू=पिण्डलियाँ तथा उरु भाग, भुव:=पृथिवी के, तेजसा=तेज से, नितम्ब:=नितम्ब निर्मित हुआ।।१५।।

अन्वितार्थ

स्तनों का युग्म चन्द्रमा के तथा इन्द्र के तेज से मध्य भाग, वरुण के तेज से पिण्डलियाँ तथा उरु भाग, पृथिवी के तेज से नितम्ब निर्मित हुआ।।१५।।

मन्त्र

ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।।१६।।

पदच्छेद

ब्रह्मण: तेजसा पादौ तत् अङ्गुल्य: अर्क-तेजसा वसूनाम् च कराङ्गुल्य: कौबेरेण च नासिका।।१६।।

अन्वित पदार्थ

ब्रह्मण:=ब्रह्मा के, तेजसा=तेज से, पादौ=चरण युगल बने, अर्कतेजसा=सूर्य के तेज से, तत्=उन पैरों की, अङ्गुल्य:=अङ्गुलियाँ, वसूनाम् च=अष्टवसुओं

के तेज से, कराङ्गुल्यः=हाथों की अङ्गुलियों की, नासिका च=एवं नासिका की रचना, कौबेरेण=कुबेर के तेज से हुई॥१६॥

अन्वितार्थ

ब्रह्मा के तेज से चरण युगल बने, सूर्य के तेज से उन पैरों की अङ्गुलियाँ, अष्टवसुओं के तेज से हाथों की अङ्गुलियों की एवं नासिका की रचना कुबेर के तेज से हुई॥१६॥

मन्त्र

तस्यास्तु दन्ता सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा॥१७॥

पदच्छेद

तस्याः तु दन्ताः सम्-भूताः प्राजापत्येन तेजसा नयन-त्रितयम् जज्ञे तथा पावक-तेजसा।

अन्वितपदार्थ

तस्याः=उनकी, दन्ताः तु=दशनपंक्ति, प्राजापत्येन=प्रजापति के, तेजसा=तेज से, सम्भूताः=उत्पन्न हुई, तथा=इसी प्रकार, पावक तेजसा=अग्नि के तेज से, नयन-त्रितयम्=तीनों नयन, जज्ञे=विनिर्मित हुए॥१७॥

अन्वितार्थ

उनकी दशनपंक्ति प्रजापति के तेज से उत्पन्न हुई। इसी प्रकार अग्नि के तेज से तीनों नयन विरचित हुए॥१७॥

मन्त्र

भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा॥१८॥

पदच्छेद

भ्रुवौ च सन्ध्ययोः तेजः श्रवणौ अनिलस्य च अन्येषाम् च एव देवानाम् सम्भवः तेजसा शिवा॥१८॥

अन्वित पदार्थ

सन्ध्ययोः=दोनों सन्ध्याओं का, तेजः=तेज, भ्रुवौ=भ्रूयुगल, अनिलस्य च=वायु

का तेज, श्रवणौ=दोनों श्रोत्र, च अन्येषाम्=तथा अन्य, देवानाम्=देवों के, तेजसाम्=तेजों का, सम्भवः एव=प्रकट रूप ही, शिवा=शिवा सर्वमंगला भगवती हैं।।१८।।

अन्वितार्थ

दोनों सन्ध्याओं का तेज भ्रूयुगल, वायु का तेज दोनों श्रोत्र तथा अन्य देवों के तेजों का प्रकटरूप ही शिवा सर्वमंगला भगवती है।।१८।।

मन्त्र

ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः।।१९।।

पदच्छेद

ततः समस्तानाम् देवानाम् तेजसाम् राशेः सम्-उद्-भवाम् ताम् विलोक्य मुदम् प्रापुः अमराः महिष-अर्दिताः।।१९।।

अन्वित पदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, समस्त देवानाम्=सभी देवताओं के, तेजोराशि समुद्भवाम्=तेज पुञ्ज से उत्पन्न, ताम्=उस भगवती शिवा को, विलोक्य=देखकर, महिषेण=महिषासुर से, अर्दिताः=पीड़ित, अमराः= देवतागण, मुदं प्रापुः=आनन्दित हो गए।।१९।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् सभी देवताओं के तेजपुञ्ज से उत्पन्न भगवती शिवा को देखकर महिषासुर से पीड़ित देवतागण आनन्दित हो गए।।१९।।

मन्त्र

शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः।।२०।।

पदच्छेद

शूलम् शूलाद् विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाक-धृक् चक्रम् च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्व-चक्रतः।।२०।।

अन्वित पदार्थ

पिनाकधृक्='पिनाक' नामक धनुष धारण करने वाले शिव ने, शूलात्=अपने शूल, शूलम्=दिव्यशूल से, विनिष्कृष्य=उत्पन्न करके, तस्यै=शिवा को, ददौ=प्रदान किया, कृष्णः=श्री हरि ने, स्वचक्रतः=अपने 'सुदर्शन' चक्र से, चक्रम्=चक्र, समुत्पाद्य=उत्पन्न करके, ददौ=दिया।।२०।।

अन्वितार्थ

'पिनाक' नामक धनुष धारण करने वाले शिव ने अपने शूल से दिव्यशूल उत्पन्न करके शिवा को प्रदान किया। श्रीहरि ने अपने 'सुदर्शन' चक्र से चक्र उत्पन्न करके दिया।।२०।।

मन्त्र

शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवाँश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधीः।।२१।।

पदच्छेद

शङ्खम् च वरुणः शक्तिम् ददौ तस्यै हुताशनः मारुतः दत्तवान् चापम् बाणपूर्णे तथा इषुधीः।।२१।।

अन्वित पदार्थ

तस्यै=शिवा को, वरुणः=वरुण ने, शङ्खम्=शङ्ख, हुताशन च=तथा अग्नि ने, शक्तिम्=शक्ति नामक अस्त्र, ददौ=दिया, मारुतः=पवन ने, चापम् तथा=धनुष तथा, बाणपूर्णे=बाणों से भरे हुए दो, इषुधीः=तूणीर या तरकश, ददौ=प्रदान किए।।२१।।

अन्वितार्थ

शिवा को वरुण ने शङ्ख तथा अग्नि ने शक्ति नामक अस्त्र दिया पवन ने धनुष तथा बाणों से भरे हुए दो, तूणीर या तरकश प्रदान किए।।२१।।

मन्त्र

वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात्।।२२।।

पदच्छेद

वज्रम् इन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशाद् अमराधिपः ददौ तस्यै सहस्राक्षः घण्टाम् ऐरावताद् गजात्॥२२॥

अन्वितपदार्थ

सहस्राक्षः=सहस्र नेत्रों वाले, अमराधिपः=देवताओं के राजा, इन्द्रः=इन्द्र ने, कुलिशाद्=अपने वज्र से, समुत्पाद्य=उत्पन्न करके, वज्रम्=वज्र, ऐरावतात्=ऐरावत नामक, गजात्=हाथी से, घण्टाम्=घण्टा लेकर, तस्यै=उन्हें, ददौ=प्रदान किया॥२२॥

अन्वितार्थ

सहस्रनेत्रों वाले देवताओं के राजा इन्द्र ने अपने वज्र से उत्पन्न करके दिव्य वज्र तथा ऐरावत नामक हाथी से घण्टा लेकर उन्हें प्रदान किया॥२२॥

मन्त्र

कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्॥२३॥

पदच्छेद

काल-दण्डाद् यमः दण्डम् पाशम् च अम्बुपतिः ददौ प्रजापतिः च अक्षमालाम् ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम्॥२३॥

अन्वितपदार्थ

यमः=यमराज ने, कालदण्डात्=अपने मृत्यु दण्ड से, दण्डम्=दण्ड, अम्बुपतिः च=तथा समुद्र ने, पाशम्=पाश, ददौ=प्रदान किया, प्रजापतिः= प्रजापति, ब्रह्मा=ब्रह्मा ने, अक्षमालाम्=अक्षमाला, कमण्डलुम् च=तथा कमण्डलु, ददौ=दिया॥२३॥

अन्वितार्थ

यमराज ने अपने मृत्यु दण्ड से दण्ड तथा समुद्र ने पाश प्रदान किया प्रजापति ब्रह्मा ने अक्षमाला तथा कमण्डलु दिया॥२३॥

मन्त्र

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम्॥२४॥

पदच्छेद

समस्तेषु रोम-कूपेषु निज-रश्मीन् दिवाकरः कालः च दत्तवान् खड्गम् तस्याः चर्म च निर्मलम्॥२४॥

अन्वित पदार्थ

दिवाकरः=सूर्य ने, तस्याः=उनके, समस्त-रोमकूपेषु=सम्पूर्ण रोमकूपों में, निजरश्मीन्=अपनी किरणों का, कालः च=और मृत्यु ने, खड्गम्=खड्ग, निर्-मलम् च=तथा अत्यन्त निर्मल, चर्म=चर्म (शरीर का आवरण), दत्तवान्=दिया॥२४॥

अन्वितार्थ

सूर्य ने उनके सम्पूर्ण रोमकूपों में अपनी किरणों का और मृत्यु ने खड्ग तथा अत्यन्त निर्मल चर्म (शरीर का आवरण) दिया॥२४॥

मन्त्र

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च॥२५॥

पदच्छेद

क्षीरोदः च अमलम् हारम् अजरे च तथा अम्बरे चूडामणिम् तथा दिव्यम् कुण्डले कटकानि च॥२५॥

अन्वित पदार्थ

क्षीरोदः च=तथा क्षीर सागर ने, अमलम्=निर्मल, हारम्=हार, तथा च=इसी प्रकार, अजरे=कभी पुराने न होने वाले, अम्बरे=वस्त्रों का जोड़ा, दिव्यम्=दिव्य, चूडामणिम्=चूडामणि, कुण्डले=दो कुण्डल, कटकानि च=तथा चूड़ियाँ या वलय॥२५॥

अन्वितार्थ

तथा क्षीर सागर ने निर्मल हार इसी प्रकार कभी पुराने न होने वाले वस्त्रों का जोड़ा, दिव्य चूडामणि, दो कुण्डल तथा चूड़ियाँ या वलय॥२५॥

मन्त्र

अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम्॥२६॥

पदच्छेद

अर्ध-चन्द्रम् तथा शुभ्रम् केयूरान् सर्व-बाहुषु नूपुरौ विमलौ तद् वत् ग्रैवेयकम् अनुत्तमम्॥२६॥

अन्वित पदार्थ

शुभ्रम् च=तथा चमकता हुआ, अर्धचन्द्रम्=अर्धचन्द्र, सर्वबाहुषु=सभी आठ भुजाओं में, केयूरान्=बाजूबन्द, विमलौ=स्वच्छ, नूपुरौ=नूपुरों का जोड़ा, तद्वत्=इसी प्रकार, अनुत्तमम्=जिससे अच्छा बनाया ही नहीं जा सकता ऐसा, ग्रैवेयकम्=गले का आभूषण॥२६॥

अन्वितार्थ

तथा चमकता हुआ अर्धचन्द्र (भाल की शोभा) सभी आठ भुजाओं में बाजूबन्द स्वच्छ नूपुरों का जोड़ा प्रदान किया। इसी प्रकार जिससे अच्छा बनाया ही नहीं जा सकता ऐसा गले का आभूषण॥२६॥

मन्त्र

अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वंगुलीषु च।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम्॥२७॥

पदच्छेद

अङ्गुलीयक-रत्नानि समस्तासु अङ्गुलीषु च विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुम् च अतिनिर्मलम्॥२७॥

अन्वित पदार्थ

समस्तासु च=और सभी अङ्गुलियों में, अङ्गुलीयक-रत्नानि=उत्तम, योग्य अँगूठियाँ, ददौ=प्रदान किया, विश्वकर्मा च=तथा विश्वकर्मा ने, तस्यै=उन्हें, अतिनिर्मलम्=अत्यन्त स्वच्छ, परशुम्=फरसा, ददौ=दिया॥२७॥

अन्वितार्थ

और सभी अङ्गुलियों में उत्तम, योग्य अँगूठियाँ प्रदान किया तथा विश्वकर्मा ने उन्हें अत्यन्त स्वच्छ फरसा दिया॥२७॥

मन्त्र

अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापरान्॥२८॥

पदच्छेद

अस्त्राणि अनेक-रूपाणि तथा अभेद्यम् च दंशनम् अम्लान-पङ्कजाम् मालाम् शिरसि उरसि च अपराम्॥२८॥

अन्वित पदार्थ

तथा=इसी प्रकार विश्वकर्मा ने, अनेकरूपाणि=अनेक प्रकार के, अस्त्राणि=प्रक्षेपास्त्रों, अभेद्यम्=अकाट्य, दंशनं ददौ=कवच प्रदान किया, अम्लानपङ्कजाम्=जिसके कमलों की कभी न मुरझाने वाली, मालाम्=माला, शिरसि=शिर के लिए तथा, उरसि=कटिभाग के लिए, अपरान्= दूसरी॥२८॥

अन्वितार्थ

इसी प्रकार विश्वकर्मा ने अनेक प्रकार के प्रक्षेपास्त्रों अकाट्य कवच प्रदान किया जिसके कमलों की कभी न मुरझाने वाली माला शिर के लिए तथा दूसरी कटिभाग के लिए, ॥२८॥

मन्त्र

अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च॥२९॥

पदच्छेद

अददत् जलधिः तस्यै पङ्कजम् च अतिशोभनम् हिमवान् वाहनम् सिंहम् रत्नानि विविधानि च॥२९॥

अन्वित पदार्थ

अतिशोभनम् च=तथा अत्यन्त सुन्दर, पङ्कजम्=कमल, जलधिः=समुद्र ने, तस्यै=उन्हें, अददत्=प्रदान किया, हिमवान्=हिमालय ने, वाहनम्=सवारी के रूप में, सिंहम्=सिंह, विविधानि च=तथा अनेक प्रकार के, रत्नानि ददौ=रत्नों को दिया॥२९॥

अन्वितार्थ

तथा अत्यन्त सुन्दर कमल समुद्र ने उन्हें प्रदान किया। हिमालय ने सवारी के रूप में सिंह तथा अनेक प्रकार के रत्नों को दिया।।२९।।

मन्त्र

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्।।३०।।
नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा।।३१।।

पदच्छेद

ददौ अशून्यम् सुरया पान-पात्रम् धनाधिपः शेषः च सर्व-नागेशः महा-मणि-विभूषितम् नाग-हारम् ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीम् इमाम् अन्यैः अपि सुरैः देवी भूषणैः आयुधैः तथा।।३०-३१।।

अन्वित पदार्थ

धनाधिपः=कुबेर ने, सुरया=सुरा से, अशून्यम्=पूर्ण, पानपात्रम्=चषक, ददौ=दिया, सर्वनागेशः च=सभी नागों के राजा, यः=जो इमाम् इस, पृथिवीम्=पृथिवी को, धत्ते सः=धारण करते हैं शेषः=शेष ने, महामणिविभूषितम्=महामणियों से सजा हुआ दुर्लभ, नागहारम्=१०८ तन्तुओं से निर्मित महामणियों से विभूषित शिव का दुर्लभ 'नागहार' नामक यज्ञोपवीत, ददौ=दिया, देवी=इस प्रकार देवी शिवा, अन्यैः=अन्य, सुरैः अपि=देवताओं द्वारा भी, भूषणैः=अलंकारों, तथा आयुधैः=तथा शस्त्रास्त्रों से।।३०-३१।।

अन्वितार्थ

कुबेर ने सुरा से पूर्ण चषक दिया, सभी नागों के राजा जो इस पृथिवी को धारण करते हैं शेष ने १००८ तन्तुओं से निर्मित महामणियों से विभूषित शिव का दुर्लभ 'नागहार' नामक यज्ञोपवीत दिया इस प्रकार देवी शिवा अन्य देवताओं द्वारा भी अलङ्कारों तथा शस्त्रास्त्रों से-।।३०-३१।।

मन्त्र

सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः।।३२।।

पदच्छेद

सम्-मानिता ननाद उच्चैः स-अट्टहासम् मुहुः-मुहुः तस्याः नादेन घोरेण कृत्स्नम् आपूरितम् नभः।।३२।।

अन्वित पदार्थ

सम्मानिता=सम्मान प्राप्त करके, उच्चैः=जोर से, साट्टहासम्=अट्टहास के साथ, मुहुर्मुहुः=बार-बार देवी ने, ननाद=घोष किया, तस्याः=उनके, घोरेण=प्रचण्ड, नादेन=नाद से, कृत्स्नम्=पूरा, नभः=आकाश, आपूरितम्= गूँज उठा।।३२।।

अन्वितार्थ

सम्मान प्राप्त करके जोर से अट्टहास के साथ बार-बार देवी ने घोष किया उनके प्रचण्ड नाद से पूरा आकाश गूँज उठा।।३२।।

मन्त्र

अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे।।३३।।

पदच्छेद

अमायता अतिमहता प्रति-शब्दः महान् अभूत् चुक्षुभुः सकलाः लोकाः समुद्रः च चकम्पिरे।।३३।।

अन्वित पदार्थ

अतिमहता=अति विशाल, अमायता=अपरिमेय-अनन्त आकाश से, महान्=सुघोर, प्रतिशब्दः अभूत्=उस अट्टहास की प्रतिध्वनि हुई, सकलाः=उसके कारण सभी, लोकाः=चौदह लोक, चुक्षुभुः=हिल गए, समुद्राः च=तथा चारों समुद्र, चकम्पिरे=काँप गए।।३३।।

अन्वितार्थ

अतिविशाल, अपरिमेय-अनन्त आकाश से सुघोर उस अट्टहास की

प्रतिध्वनि हुई। उसके कारण सभी चौदह लोक हिल गए तथा चारों समुद्र काँप गए।।३३।।

मन्त्र

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्चमहीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्।।३४।।

पदच्छेद

चचाल वसुधा चेलुः सकलाः च महीधराः जय-इति देवाः च मुदा ताम् ऊचुः सिंह-वाहिनीम्।।३४।।

अन्वित पदार्थ

वसुधा=धरती, चचाल=कम्पित हो गई, सकलाः च=और सभी, महीधराः=पर्वत, चेलुः=डगमगा गए, देवाः च=तथा देवतागण, मुदा=प्रसन्नता से, ताम्=उन, सिंहवाहिनीम्=सिंहवाहिनी भगवती के प्रति, जय इति='जय' ऐसा, ऊचुः=घोष करने लगे।।३४।।

अन्वितार्थ

धरती कम्पित हो गई और सभी पर्वत डगमगा गए तथा देवतागण प्रसन्नता से उन सिंहवाहिनी भगवती के प्रति 'जय' ऐसा घोष करने लगे।।३४।।

मन्त्र

तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः।।३५।।

पदच्छेद

तुष्टुवुः मुनयः च एनाम् भक्त्या नम्राः आत्ममूर्तयः दृष्ट्वा समस्तम् संक्षुब्धम् त्रैलोक्यम् अमरारयः।।३५।।

अन्वित पदार्थ

एनाम् च=और भगवती शिवा के प्रति, भक्त्या=भक्ति से, नम्रात्ममूर्तयः=विनम्र शरीर वाले, मुनयः=मुनिगण, तुष्टुवुः=सन्तुष्ट हो गए, समस्तम्=सभी, त्रैलोक्यम्=तीनों लोकों को, संक्षुब्धम्=काँपता हुआ, दृष्ट्वा=देखकर अमरारयः=दैत्यगण।।३५।।

अन्वितार्थ

और भगवती शिवा के प्रति भक्ति से विनम्र शरीर वाले मुनिगण सन्तुष्ट हो गए सभी तीनों लोकों को काँपता हुआ देखकर दैत्यगण।।३५।।

मन्त्र

संनद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः।।३६।।

पदच्छेद

सन्नद्ध-अखिल-सैन्याः ते सम्-उत्तस्थुः उत्-आयुधाः आः किम् एतत् इति क्रोधात् आ-भाष्य महिषासुरः।।३६।।

अन्वित पदार्थ

ते अमरारयः=वे दैत्यगण, सन्नद्ध-अखिलसैन्याः=लड़ने के लिए तैयार समस्त सेना के साथ, उदायुधाः=हथियार उठाकर, समुत्तस्थुः=उठ खड़े हुए, 'आः किम् एतत्' इति=आः! क्या है यह ऐसा, महिषासुरः=महिषासुर ने, क्रोधात्=क्रोध से, आभाष्य=गरजकर।।३६।।

अन्वितार्थ

वे दैत्यगण लड़ने के लिए तैयार समस्त सेना के साथ हथियार उठाकर उठ खड़े हुए आः! क्या है यह ऐसा महिषासुर ने क्रोध से गरजकर।।३६।।

मन्त्र

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा।।३७।।

पदच्छेद

अभि-अधावत तम् शब्दम् अशेषैः असुरैः वृतः सः ददर्श ततः देवी व्याप्त-लोक-त्रयाम् त्विषा।।३७।।

अन्वितपदार्थ

अशेषैः=सम्पूर्ण, असुरैः वृतः=दैत्यों से घिरा हुआ, तम् शब्दम्=उस महान् ध्वनि की ओर, अभ्यधावत=दौड़ पड़ा, ततः सः=उसके बाद उस दैत्य ने, त्विषा=अपने प्रकाश से, व्याप्तलोकत्रयाम्=तीनों लोकों को व्याप्त करने वाली, देवीम्=भगवती पराम्बा को, ददर्श=देखा।।३७।।

अन्वितार्थ

सम्पूर्ण दैत्यों से घिरा हुआ उस महान् ध्वनि की ओर दौड़ पड़ा। उसके बाद उस दैत्य ने अपने प्रकाश से तीनों लोकों को व्याप्त करने वाली भगवती पराम्बा को देखा।।३७।।

मन्त्र

पादाक्रान्त्यानतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्।।३८।।

पदच्छेद

पाद-आक्रान्त्या आनत-भुवम् किरीट-उल्लिखित-अम्बराम् क्षोभित-अशेष-पातालाम् धनुः-ज्या-निःस्वनेन ताम्।।३८।।

अन्वितपदार्थ

पादाक्रान्त्या=चरणों के धरती पर रखने से, आनतभुवम्=पृथिवी को दबाई हुई, किरीटेन=किरीट या मुकुट के आभा से, उल्लिखिताम्बराम्=नभो मण्डल प्रकाशित कराने वाली, धनुर्ज्यानिःस्वनेन=धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार से, क्षोभिताशेषपातालाम्=समस्त पाताल लोकों को कम्पित करने वाली, ताम् ददर्श=उन भगवती को देखा।।३८।।

अन्वितार्थ

चरणों के धरती पर रखने से पृथिवी को दबाई हुई, क़िरीट के आभा से नभो मण्डल प्रकाशित कराने वाली, धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार से समस्त पाताल लोकों को कम्पित करने वाली उन भगवती को देखा।।३८।।

मन्त्र

दिशो भुजसहस्त्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्।।३९।।

पदच्छेद

दिशः भुज-सहस्त्रेण समन्तात् व्याप्य संस्थिताम् ततः प्रववृते युद्धम् तया देव्या सुरद्विषाम्।।३९।।

अन्वितपदार्थ

भुजसहस्त्रेण=सहस्त्र भुजाओं से, समन्तात्=चारों ओर से, दिशः=दिशाओं को, व्याप्य=व्याप्त करके, संस्थिताम्=विराजमान, ताम् ददर्श=भगवती को देखा, ततः=इसके पश्चात्, तया=उन, देव्या=शिवा के साथ, सुरद्विषाम्=देवद्रोहियों का, युद्धम्=युद्ध, प्रववृते=आरम्भ हो गया।।३९।।

अन्वितार्थ

सहस्त्र भुजाओं से चारों ओर से दिशाओं को व्याप्त करके विराजमान भगवती को देखा इसके पश्चात् उन शिवा के साथ देवद्रोहियों का युद्ध आरम्भ हो गया।।३९।।

मन्त्र

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः।।४०।।

पदच्छेद

शस्त्र-अस्त्रैः बहुधा मुक्तैः आदीपित-दिगन्तरम् महिषासुर-सेनानी चिक्षुर-आख्यः महासुरः।।४०।।

अन्वितपदार्थ

बहुधा=जिस युद्ध में अनेक प्रकार से, मुक्तैः=चलाए गए, शस्त्रैः=मारक आयुध, अस्त्रैः=एवं प्रक्षेपास्त्रों से, आदीपित दिगन्तरम्=दिशाएँ चमक उठी, महिषासुरस्य=महिषासुर का, सेनानी=सैनिक, चिक्षुराख्यः=चिक्षुर नामक, महासुरः=प्रचण्डराक्षस।।४०।।

अन्वितार्थ

जिस युद्ध में अनेक प्रकार से चलाए गए मारक आयुध एवं प्रक्षेपास्त्रों से दिशाएँ चमक उठीं ऐसा युद्ध आरम्भ हो गया। महिषासुर का सैनिक चिक्षुर नामक प्रचण्डराक्षस ।।४०।।

मन्त्र

युयुधे चामरश्चान्यै श्चतुरङ्गबलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः।।४१।।

पदच्छेण्द

युयुधे चामरः च अन्यैः चतुः-अङ्गेण बलेन अन्वितः रथानाम् अयुतैः षड्भिः उदग्र-आख्यः महा-असुरः।।४१।।

अन्वितपदार्थ

चामरः च=तथा चामर नामक राक्षस, अन्यैः=अतिरिक्त रूप से, चतुरङ्गेण=चारों अङ्गों वाली, बलेन=सेना से, अन्वितः=सज्जित होकर, युयुधे=युद्ध करने लगे, उदग्राख्यः=उदग्र नामक, महासुर=विशाल दैत्य ने, रथानाम्=रथों की, षड्भिः अयुतैः=६x१००००=६०००० की संख्या लेकर।।४१।।

अन्वितार्थ

तथा चामर नामक राक्षस अतिरिक्त रूप से चारों अङ्गों वाली सेना से सज्जित होकर युद्ध करने लगे उदग्र नामक विशाल दैत्य ने रथों की ६x१००००=६०००० की संख्या लेकर।।४१।।

मन्त्र

अयुध्यतायुतानां च सहस्त्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्चनियुतैरसिलोमा महासुरः।।४२।।

पदच्छेद

अयुध्यत अयुतानाम् च सहस्त्रेण महाहनुः पञ्चाशद्भिः च नियुतैः असि-लोमा महासुरः।।४२।।

अन्वितपदार्थ

अयुध्यत=युद्ध कर रहा था, महाहनुः च=और महाहनु, अयुतानाम् सहस्त्रेण=(१००००x१०००=१००००००००)एक करोड़ सेना से साथ, महासुरः=महादैत्य, असिलोमा च=तथा असिलोमा, पञ्चाशद्भिः=पचास, नियुतैः=करोड़ सेना से साथ।।४२।।

अन्वितार्थ

युद्ध कर रहा था और महाहनु (१००००x१०००=१००००००००) एक करोड़ सेना से साथ महादैत्य तथा असिलोमा पचास करोड़ सेना से साथ।।४२।।

मन्त्र

अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्त्रौघैरनेकैः परिवारितः।।४३।।

पदच्छेद

अयुतानाम् शतैः षड्भिः बाष्कलो युयुधे रणे गजानाम् वाजिनाम् सहस्त्रैः ओघैः अनेकैः परिवारितः।।४३।।

अन्वितपदार्थ

बाष्कलः=बाष्कल, अयुतानाम् षड्भिः शतैः=१००००x६x१००=६करोड़, रणे=सेना के साथ युद्ध क्षेत्र में, युयुधे=लड़ रहा था, गजानाम्=हाथियों, वाजिनाम्=घोड़ों के, सहस्त्रैः=असंख्य, ओघैः=झुण्डों के साथ।।४३।।

अन्वितार्थ

बाष्कल १००००x६x१००=६ करोड़ सेना के साथ युद्ध क्षेत्र में लड़ रहा था। हाथियों, घोड़ों के असंख्य झुण्डों के साथ।।४३।।

मन्त्र

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः।।४४।।

पदच्छेद

वृतः रथानाम् कोट्या च युद्धे तस्मिन् अयुध्यत बिडालाख्यः अयुतानाम् च पञ्चाशद्भिः रथा-अयुतैः।।४४।।

अन्वितपदार्थ

रथानाम् च कोट्या=तथा करोड़ रथों से, वृतः=सुसज्जित होकर, अयुध्यत=युद्ध कर रहा था, तस्मिन् युद्धे=उस विकट संग्राम में, बिडालाख्यः च=बिडाल नामक राक्षस, पञ्चाशद्भिः अयुतानाम्=५x१००००=पाँच लाख सेना, रथायुतैः च=तथा १०००० रथों के साथ।।४४।।

अन्वितार्थ

तथा करोड़ रथों से सुसज्जित होकर युद्ध कर रहा था उस विकट संग्राम में बिडाल नामक राक्षस ५x१००००=पाँच लाख सेना तथा १०००० रथों के साथ।।४४।।

मन्त्र

युयुधुः संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः॥४५॥

पदच्छेद

युयुधे संयुगे तत्र रथानाम् परिवारत: अन्ये च तत्र अयुतश: रथ-नाग-हयै: वृता:॥४५॥

अन्वितपदार्थ

रथानाम्=रथों से, परिवारित:=घिरा हुआ राक्षस, तत्र=उस, संयुगे=महासमर में, युयुधे=युद्ध कर रहा था, अन्ये च तत्र=तथा अन्य राक्षस गण, अयुत:=दस-दस हजार, रथ-नाग-हयै:=रथों, हाथियों, घोड़ों से, वृता:=सज्जित होकर॥४५॥

अन्वितार्थ

रथों से घिरा हुआ राक्षस उस महासमर में युद्ध कर रहा था तथा अन्य राक्षस गण दस-दस हजार रथों, हाथियों, घोड़ों से सज्जित होकर॥४५॥

मन्त्र

युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा॥४६॥

पदच्छेद

युयुधे संयुगे देव्या सह तत्र महा-सुराः कोटि-कोटि सहस्रैः तु रथानाम् दन्तिनाम् तथा॥४६॥

अन्वितपदार्थ

महासुराः=राक्षस समुदाय, देव्या सह=भगवती के साथ, तत्र संयुगे=उस संग्राम में, युयुधे=लड़ रहा था, कोटि-कोटि सहस्रैः=हजारों करोड़, रथानाम्=रथों, तथा दन्तिनाम्=तथा हाथियों से॥४६॥

अन्वितार्थ

राक्षस समुदाय भगवती के साथ उस संग्राम में लड़ रहा था। हजारों करोड़ रथों तथा हाथियों से॥४६॥

मन्त्र

हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा॥४७॥

पदच्छेद

हयानाम् च वृतः युद्धे तत्र अभूत् महिषासुरः तोमरैः भिन्दिपालैः च शक्तिभिः मुसलैः तथा॥४७॥

अन्वितपदार्थ

हयानाम् च=तथा घोड़ों से, तत्र युद्धे=रथ क्षेत्र में, महिषासुरः=महिषासुर, वृतः=घिरा हुआ, अभूत्=था, तोमरैः=शबरी, भिन्दिपालैः च=और गोफन नामक अस्त्रों, शक्तिभिः=कटारों, तथा मुसलैः=एवं मुसलों से॥४७॥

अन्वितार्थ

तथा घोड़ों से रथ क्षेत्र में महिषासुर घिरा हुआ था। शबरी और गोफन नामक अस्त्रों कटारों (साँगों) एवं मुसलों से॥४७॥

मन्त्र

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशाँस्तथापरे॥४८॥

पदच्छेद

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशु-पट्टिशैः केचित् पाशान् तथा अपरे॥४८॥

अन्वितपदार्थ

संयुगे=युद्ध में, देव्या=भगवती के साथ, युयुधः=लड़ रहे थे, केचित्=कुछ राक्षस, खड्गैः=खड्गों, परशुभिः=परशुओं एव, पट्टिशैः युयुधुः=पट्टिशों या कटार की धार वाली गदा से प्रहार कर रहे थे। केचित्=कुछ दैत्य, शक्तीः=साँगों, केचित्=कुछ राक्षस, पाशन्=पाशों को, चिक्षिपुः=फेक कर प्रहार कर रहे थे। तथा=इसी प्रकार, अपरे=दूसरे॥४८॥

अन्वितार्थ

युद्ध में भगवती के साथ लड़ रहे थे। कुछ राक्षस खड्गों, परशुओं एवं कटार की धार वाली गदा से प्रहार कर रहे थे। कुछ दैत्य साँगों, कुछ राक्षस पाशों को फेंक कर प्रहार कर रहे थे। इसी प्रकार दूसरे॥४८॥

मन्त्र

देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका।४९।।

पदच्छेद

देवीम् खड्ग-प्रहारैः तु ते ताम् हन्तुम् प्रचक्रमुः सा अपि देवी ततः तानि शस्त्राणि अस्त्राणि चण्डिका।४९।।

अन्वितपदार्थ

ते=दैत्यगण, ताम्=उन, देवीम्=शिवा को, खड्गप्रहारैः=तलवार से, हन्तुम्=मारने के लिए, प्रचक्रमुः=प्रयास कर रहे थे, ततः=तब, सा=वह, चण्डिका देवी अपि=चण्डिका देवी भी, तानि=उन सभी, शस्त्राणि=प्रहरणों, अस्त्राणि=प्रक्षेपास्त्रों को।४९।।

अन्वितार्थ

दैत्यगण उन शिवा को तलवार से मारने के लिए प्रयास कर रहे थे तब वह चण्डिका देवी भी उन सभी प्रहरणों प्रक्षेपास्त्रों को।४९।।

मन्त्र

लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः।।५०।।

पदच्छेद

लीलया एव प्रचिच्छेद निज-शस्त्र-अस्त्र-वर्षिणी अनायस्त-आनना देवी स्तूयमाना सुरैः ऋषिभिः।।५०।।

अन्वितपदार्थ

लीलया एव=खेल-खेल में ही, प्रचिच्छेद=काट डाला, निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी= अपने दिव्य आयुधों की वर्षा करने वाली, अनायस्तानना=तनाव विहीन मुखमण्डल वाली, सुरैः=देवताओं, ऋषिभिः=एवं ऋषियों द्वारा, स्तूयमाना= प्रार्थित, देवी=भगवती।।५०।।

अन्वितार्थ

खेल-खेल में ही काट डाला अपने दिव्य आयुधों की वर्षा करने वाली, तनाव विहीन मुखमण्डल वाली, देवताओं एवं ऋषियों द्वारा प्रार्थित भगवती।।५०।।

मन्त्र

मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी॥५१॥

पदच्छेद

मुमोच असुर-देहेषु शस्त्राणि अस्त्राणि च ईश्वरी सः अपि क्रुद्धः धुत-सटः देव्याः वाहन-केसरी॥५१॥

अन्वितपदार्थ

ईश्वरी=सर्वस्वामिनी अम्बिका ने, असुर देहेषु=राक्षसों के शरीरों पर, शस्त्राणि=प्रहरण शस्त्रों, अस्त्राणि च=तथा प्रक्षेपास्त्रों को, मुमोच=छोड़ा, सः=उस, देव्याः=भगवती की, वाहन-केसरी=सवारी सिंह ने, अपि=भी, धुतसटः=अपने अयालों को झटककर, क्रुद्धः=क्रोधित रूप में॥५१॥

अन्वितार्थ

सर्वस्वामिनी अम्बिका ने राक्षसों के शरीरों पर प्रहरण शस्त्रों तथा प्रक्षेपास्त्रों को छोड़ा उस भगवती की सवारी सिंह ने भी अपने अयालों को झटककर क्रोधित रूप में॥५१॥

मन्त्र

चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे याँश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका॥५२॥

पदच्छेद

चचार असुर-सैन्येषु वनेषु इव हुत-अशनः निःश्वासान् मुमुचे यान् च युध्यमाना रणे अम्बिका॥५२॥

अन्वितपदार्थ

असुराणाम्=राक्षसों की, सैन्येषु=सेना में, वनेषु=जंगल में, हुताशन=आग, इव=की भाँति, चचार=विचरण करने लगे, अम्बिका च=और अम्बिका भगवती, रणे=संग्राम में, युध्यमाना=युद्ध करती हुई, यान्=जो, निःश्वासान्=श्वासों को, मुमुचे=छोड़ रही थीं॥५२॥

अन्वितार्थ

राक्षसों की सेना में जंगल में आग की भाँति विचरण करने लगे और अम्बिका भगवती संग्राम में युद्ध करती हुई जो श्वासों को छोड़ रही थीं।।५२।।

मन्त्र

त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्त्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः।।५३।।

पदच्छेद

ते एव सद्यः सम्भूताः गणाः शतानां सहस्त्रशः युयुधुः ते परशुभिः भिन्दिपालैः असिभिः पट्टिशैः।।५३।।

अन्वितपदार्थ

ते एव=वे निश्वास ही, सद्यः=तुरन्त, शतसहस्त्रशः=सैकड़ों हजार, गणाः=गणों के रूप में, सम्भूताः=उत्पन्न होकर, युयुधुः=युद्ध करने लगे, ते=वे सभी, परशुभिः=फरसों, भिन्दिपाल-असि-पट्टिशैः=भिन्दिपालों, तलवारों, पट्टिशों से।।५३।।

अन्वितार्थ

वे निश्वास ही तुरन्त सैकड़ों हजार गणों के रूप में उत्पन्न होकर युद्ध करने लगे वे सभी फरसों, भिन्दिपालों, तलवारों, पट्टिशों से।।५३।।

मन्त्र

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खास्तथापरे।।५४।।

पदच्छेद

नाशयन्तः असुर-गणान् देव्याः शक्त्या उप-बृंहिताः अवादयन्त पटहान् गणाः शंखाः तथा अपरे।।५४।।

अन्वितपदार्थ

असुरगणान्=राक्षसों को, नाशयन्तः=विनाश करते हुए, देव्याः=अम्बिका की, शक्त्या=शक्ति के द्वारा, उपबृंहिताः=आप्यायित, उत्साहित, गणाः=गण लोग, पटहान्=नगाड़े, अवादयन्त=बजाने लगे, तथा अपरे=तथा दूसरे गण।।५४।।

अन्वितार्थ

राक्षसों का विनाश करते हुए, अम्बिका की शक्ति के द्वारा आप्यायित, उत्साहित गण लोग नगाड़े बजाने लगे तथा दूसरे गण।।५४।।

मन्त्र

मृदङ्गाँश्चतथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः।।५५।।

पदच्छेद

मृदङ्गान् च तथा अन्ये तस्मिन् युद्ध-महोत्सवे ततः देवी त्रिशूलेन गदया शक्ति-वृष्टिभिः।।५५।।

अन्वितपदार्थ

युद्धमहोत्सवे=समर रूपी महोत्सव में, मृदङ्गान् च=मृदंग बजा रहे थे, तथा एव=इसी प्रकार, अन्ये=अन्यगण भी उत्साहित थे, ततः=इस वातावरण में, देवी=भगवती ने, त्रिशूलेन=त्रिशूल, गदया=गदा एव, शक्ति-वृष्टिभिः=शक्तियों की वर्षा के द्वारा।।५५।।

अन्वितार्थ

समर रूपी महोत्सव में मृदंग बजा रहे थे। इसी प्रकार अन्यगण भी उत्साहित थे। इस वातावरण में भगवती ने त्रिशूल, गदा एवं शक्तियों की वर्षा के द्वारा।।५५।।

मन्त्र

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्।।५६।।

पदच्छेद

खड्ग-आदिभिः च शतशः निजघान महासुरान् पातयामास च एव अन्यान् घण्टा-स्वन-विमोहितान्।।५६।।

अन्वितपदार्थ

खड्गादिभिः च=खड्ग आदि शस्त्रों से, शतशः=सैकड़ों, महासुरान्=महादैत्यों को, निजघान=ध्वस्त कर डाला, अन्यान् च=और अन्यों को तो,

घण्टा-स्वन-विमोहितान्=अपने घण्टा के गम्भीर ध्वनि से ही मूर्च्छित करके, पातयामास=धराशायी कर डाला।।५६।।

अन्वितार्थ

खड्ग आदि शस्त्रों से सैकड़ों महादैत्यों को ध्वस्त कर डाला। और अन्यों को तो अपने घण्टा के गम्भीर ध्वनि से ही मूर्च्छित करके धराशायी कर डाला।।५६।।

मन्त्र

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्थापरे।।५७।।

पदच्छेद

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा च अन्यान् अकर्षयत् केचित् द्विधा कृताः तीक्ष्णैः खड्ग-पातैः तथा अपरे।।५७।।

अन्वितपदार्थ

असुरान्=दैत्यों को, भुवि=धरती परगिरा डाला, अन्यान् च=और दूसरों को, पाशेन=पाश से, बद्ध्वा=बाँधकर, अकर्षयत्=खींचा, केचित्=कुछ, तीक्ष्ण=तीखे, खड्गपातैः=तलवार के प्रहार से, द्विधा=दो टुकड़े, कृताः=कर दिए गए, तथा अपरे=तथा दूसरे।।५७।।

अन्वितार्थ

दैत्यों का धरती पर गिरा डाला और दूसरों को पाश से बाँधकर खींचा कुछ तीखे तलवार के प्रहार से दो टुकड़े कर दिए गए तथा दूसरे।।५७।।

मन्त्र

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः।।५८।।

पदच्छेद

वि-पोथिता नि-पातेन गदया भुवि शेरते वेमुः च केचित् रुधिरम् मुसलेन भृशम् हताः।।५८।।

अन्वितपदार्थ

गदया=गदा प्रहार से, विपोथिताः=कुचले गए, निपातेन=तथा गिर कर, भुवि=भूमि पर, शेरते=पड़े थे, केचित् च=और कुछ दैत्य, मुशलेन=मुशल से, भृशम् हताः=पिट कर, रुधिरम्=रक्त, वेमुः=वमन कर रहे थे।।५८।।

अन्वितार्थ

गदा प्रहार से कुचले गए तथा गिर कर भूमि पर पड़े थे और कुछ दैत्य मुशल से पिट कर रक्त वमन कर रहे थे।।५८।।

मन्त्र

केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे।।५९।।

पदच्छेद

केचित् निपतिताः भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि निरन्तराः शर–ओघेन कृताः केचित् रण–अजिरें।।५९।।

अन्वितपदार्थ

केचित्=कुछ, वक्षसि=छाती पर, शूलेन=शूल प्रहार से, भिन्नाः=टुकड़े होकर, भूमौ=धरती पर, निपतिताः=गिरे, केचित्=कुछ, रणस्य=उस युद्ध के, अजिरे=प्रांगण में, शरौघेन=तीरों के गुच्छकों से, निरन्तराः कृताः=बिँध कर आपस में सटा दिए गए।।५९।।

अन्वितार्थ

कुछ छाती पर शूल प्रहार से टुकड़े होकर धरती पर गिरे कुछ उस युद्ध के प्रांगण में तीरों के गुच्छकों से बिँधकर आपस में सटा दिए गए।।५९।।

मन्त्र

श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे।।६०।।

पदच्छेद

श्येन–अनुकारिणः प्राणान् मुमुचुः त्रिदशार्दनाः केषाञ्चिद् बाहवः छिन्नाः छिन्न–ग्रीवाः तथा अपरे।।६०।।

अन्वितपदार्थ

श्येनानुकारिण:=बाज के तीखे मारकता का अनुकरण करने वाले, त्रिदशार्दना:=देवधर्षक दैत्यों ने, प्राणान्=प्राणों को, मुमुचु:=त्याग दिए, केषाञ्चित्=कुछ के, बाहव:=हाँथ, छिन्ना:=कटे थे, तथा अपरे=तथा दूसरे, छिन्न ग्रीवा:=कटी गर्दन वाले थे।।६०।।

अन्वितार्थ

बाज के तीखे मारकता का अनुकरण करने वाल देवधर्षक दैत्यों ने प्राणों को त्याग दिए कुछ के हाँथ कटे थे तथा दूसरे कटी गर्दन वाले धड़ मात्र थे।।६०।।

मन्त्र

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिता:।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुरा:।।६१।।

पदच्छेद

शिरांसि पेतु: अन्येषाम् अन्ये मध्ये विदारिता: विच्छिन्न जङ्घा: तु अपरे पेतु: उर्व्यां महा-असुरा:।।६१।।

अन्वितपदार्थ

अन्येषाम्=कुछ दूसरों के, शिरांसि=शिर कट कर, पेतु:=गिरे, अन्ये=दूसरे, मध्ये=बीच से, विदारिता=चिरे हुए थे, अपरे तु महासुरा:=दूसरे महादैत्य, विच्छिन्न जङ्घा=कटे हुए जाँघों के क़ारण, उर्व्याम्=धरती पर, पेतु:=गिरे थे।।६१।।

अन्वितार्थ

कुछ दूसरों के शिर कट कर गिरे। दूसरे बीच से चिरे हुए थे। कुछ दूसरे महादैत्य कटे हुए जाँघों के क़ारण धरती पर गिरे थे।।६१।।

मन्त्र

एकबाह्वक्षिचरणा: केचिद्देव्या द्विधा कृता:।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिता: पुनरुत्थिता:।।६२।।

पदच्छेद

एक-बाहु-अक्षि-चरणाः केचित् देव्या द्विधा कृताः छिन्ने अपि च अन्ये शिरसि पतिताः पुनः-उत्थिताः॥६२॥

अन्वितपदार्थ

एकबाह्वक्षिचरणाः=इस प्रकार एक हाथ, एक आँख, एक पैर के राक्षस गिरे-पड़े थे, देव्या=भगवती द्वारा, केचित्=कुछ तो, द्विधाकृताः=दो टुकड़े कर दिए गए थे, अन्ये च=और कुछ दूसरे राक्षस, शिरसि=सर, छिन्ने अपि=कटने पर भी, पतिताः=गिरकर, पुनः=फिर, उत्थिताः= उठे॥६२॥

अन्वितार्थ

इस प्रकार एक हाथ, एक आँख, एक पैर के राक्षस गिरे पड़े थे। भगवती द्वारा कुछ तो दो टुकड़े कर दिए गए थे और कुछ दूसरे राक्षस सर कटने पर भी गिरकर फिर उठे॥६२॥

मन्त्र

कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः॥६३॥

पदच्छेद

कबन्धाः युयुधुः देव्याः गृहीतपरम-आयुधाः ननृतुः च अपरे तत्र युद्धे तूर्य-लय-आश्रिताः॥६३॥

अन्वितपदार्थ

गृहीतपरमायुधाः=भयानक हथियारों को लेकर, कबन्धाः=ये सरकटे राक्षस, देव्या=देवी के साथ, युयुधुः=युद्ध कर रहे थे, अपरे च=और दूसरे कबन्ध , तूर्यस्य=तुरही के, लयेन=ध्वनि से, आश्रिताः=ताल मिलाकर, तत्र युद्धे=उस रण भूमि में, ननृतुः=नाच रहे थे॥६३॥

अन्वितार्थ

भयानक हथियारों को लेकर ये सरकटे राक्षस देवी के साथ युद्ध कर रहे थे और दूसरे कबन्ध तुरही के ध्वनि से ताल मिलाकर उस रण भूमि में नाच रहे थे॥६३॥

मन्त्र

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः॥६४॥

पदच्छेद

कबन्धाः छिन्न-शिरसः खड्ग-शक्ति-ऋषि-पाणयः तिष्ठ-तिष्ठ इति भाषन्तः देवीम् अन्ये महासुराः॥६४॥

अन्वितपदार्थ

छिन्न-शिरसः=इस प्रकार बिना सर वाले, खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः=खड्ग, शक्ति एवं एक धार की तलवार लेकर, कबन्धाः=कबन्ध राक्षस, अन्ये= दूसरे, महासुराः=दैत्य, देवीम्=भगवती को, 'तिष्ठ-तिष्ठ' इति भाषन्तः= 'रुक-रुक' चिल्लाते हुए, युयुधुः=लड़ रहे थे॥६४॥

अन्वितार्थ

इस प्रकार बिना सर वाले खड्ग, शक्ति एवं एकधार की तलवार लेकर कबन्ध राक्षस और दूसरे दैत्य भगवती को 'रुक-रुक' चिल्लाते हुए लड़ रहे' थे॥६४॥

मन्त्र

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः॥६५॥

पदच्छेद

पातितैः रथ-नाग-अश्वैः असुरैः च वसुन्धरा अगम्या सा अभवत् तत्र यत्र अभूत् सः महारणः॥६५॥

अन्वितपदार्थ

यत्र=जहाँ, सः महारणः=वह महासंग्राम, अभूत्=हुआ था, तत्र=वहाँ, वसुन्धरा च=धरती तो, रथ-नाग-अश्वैः=रथों, हाथियों, घोड़ों, असुरैः च=तथा असुरों के, पतितैः=गिराए जाने से, अगम्या=आने-जाने के भी अयोग्य, अभवत्=हो गई थी॥६५॥

अन्वितार्थ

जहाँ वह महासंग्राम हुआ था वहाँ धरती तो रथों, हाथियों, घोड़ों, तथा असुरों के गिराए जाने से आने-जाने के भी अयोग्य हो गई थी।।६५।।

मन्त्र

शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्त्रुवुः।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम्।।६६।।

पदच्छेद

शोणित-ओघा महा-नद्यः सद्यः तत्र प्रसुस्त्रुवुः मध्य च असुराणाम् सैन्यस्य वारण-असुर-वाजिनाम्।।६६।।

अन्वितपदार्थ

तत्र च=और उस, युद्धे=युद्ध के, मध्ये सद्यः=बीच उसी समय, वारण-असुर-वाजिनाम्=हाथियों, राक्षसों, घोड़ों के, शोणितौघाः=खून के से भरी, महानद्यः=महानदियाँ, प्रसुस्त्रुवुः=बह रहीं थीं।।६६।।

अन्वितार्थ

और उसी समय उस युद्ध के बीच हाथियों, राक्षसों, घोड़ों के खून के से भरी महानदियाँ बह रहीं थीं।।६६।।

मन्त्र

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्।।६७।।

पदच्छेद

क्षणेन तत् असुराणाम् तथा अम्बिका निन्ये क्षयम् यथा वह्निः तृण-दारु-महाचयम्।।६७।।

अन्वितपदार्थ

तत्=उस, असुराणाम्=महादैत्यों की, महासैन्यम्=विशाल सैन्यबल को, अम्बिका=अम्बिका ने, क्षणेन=क्षणमात्र में, तथा=उसी प्रकार, क्षयम्=विनाश को, निन्ये=पहुँचा दिया, यथा=जिस प्रकार, वह्नि=आग, तृणदारुमहाचयम्=तिनकों एवं लकड़ियों के ढेर को विनष्ट करता है।।६७।।

अन्वितार्थ

महादैत्यों की उस विशाल सैन्यबल को अम्बिका ने क्षणमात्र में उसी प्रकार विनाश को पहुँचा दिया जिस प्रकार आग तिनकों एवं लकड़ियों के ढेर को विनष्ट करता है।।६७।।

मन्त्र

स च सिंहो महानादमुत्सृजन् धुतकेसरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति।।६८।।

पदच्छेद

सः च सिंहः महा-नादम् उत्सृजन् धुतकेसरः शरीरेभ्यः अमर-अरीणाम् असून् इव विचिन्वति।।६८।।

अन्वितपदार्थ

सः धुतकेसरः सिंहः च=और वह सिंह अयालों को झटककर, अमरारीणाम्=देवताओं के शत्रुओं के, शरीरेभ्यः=शरीरों से, असून्=प्राणों को, विचिन्वति इव=मानों फूलों की तरह चुनते हुए, महानादम्=भयानक गर्जन, उत्सृजन्=करते हुए युद्ध कर रहा था।।६८।।

अन्वितार्थ

और वह सिंह अयालों को झटक कर असुरों के शरीरों से प्राणों को मानों फूलों की तरह चुनते हुए भयानक गर्जन करते हुए युद्ध कर रहा था।।६८।।

मन्त्र

देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि।।६९।।

पदच्छेद

देव्या गणैः च तैः तत्र कृतम् युद्धम् महासुरैः यथा एषाम् तुतुषुः देवा पुष्प-वृष्टि-मुचः दिवि।।६९।।

अन्वितपदार्थ

देव्या=भगवती, तैः च=और भगवती के उन, गणैः=गणों द्वारा, तत्र=वहाँ

रण स्थल में, महासुरैः=महाराक्षसों के साथ, युद्धम्=ऐसा युद्ध, कृतम्=किया गया, यथा=जिससे अभिभूत होकर, दिवि=स्वर्ग से, पुष्पवृष्टिमुचः=फूल बरसाने वाले, देवाः=देवताओं ने, एषाम्=इन गणों एवं सिंह को, तुतुषुः=सम्मानिता एवं प्रसन्न किया।।६९।।

अन्वितार्थ

भगवती और भगवती के उन गणों द्वारा वहाँ रण स्थल में महाराक्षसों के साथ ऐसा युद्ध किया गया जिससे अभिभूत होकर स्वर्ग से फूल बरसाने वाले देवताओं ने इन गणों एवं सिंह को सम्मानिता एवं प्रसन्न किया।।६९।।

।। श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये भगवतीप्रादुर्भावोनाम द्वितीयः विश्रामः।।

अथतृतीयोध्यायः

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१॥

निहन्यमानं तत् सैन्यमवलोक्य महासुरः।

सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम्॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच निहन्यमानम् तत् सैन्यम् अवलोक्य महासुरः सेनानी चिक्षुरः कोपात् ययौ योद्धुम् अथ अम्बिकाम्॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=मार्कण्डेय ऋषि बोले, अथ=इसके पश्चात्, तत् सैन्यम्=महादैत्यों की उस विशाल सेना को, निहन्यमानम्=पूर्णतः विनष्ट होता हुआ, अवलोक्य=देखकर, महिषासुरः=महिषासुर का, सेनानीः=सेनानी, चिक्षुरः=चिक्षुर, कोपात्=क्रोधित होकर, योद्धुम्=लड़ने के लिए, अम्बिकाम्=अम्बिका की ओर, ययौ=गया॥१-२॥

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय ऋषि बोले- इसके पश्चात् महादैत्यों की उस विशाल सेना को पूर्णतः विनष्ट होता हुआ देखकर महिषासुर का सेनानी चिक्षुर क्रोधित होकर लड़ने के लिए अम्बिका की ओर गया॥१-२॥

मन्त्र

स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः॥३॥

पदच्छेद

सः देवीम् शर-वर्षेण ववर्ष समरे असुरः यथा मेरु-गिरेः शृङ्गम् तोय-वर्षेण तोयदः॥३॥

अन्वितपदार्थ

सः=वह, असुरः=राक्षस, यथा=जिस प्रकार, मेरुगिरेः=सुमेरु पर्वत की, शृङ्गम्=चोटी पर, तोयदः=बादल, तोयवर्षेण=जल की बौछार से आप्यायित करते हैं, तथा शरवर्षेण=उसी प्रकार बाणों की बौछार से, देवीम्=भगवती के प्रति, ववर्ष=वर्षा करने लगा।।३।।

अन्वितार्थ

वह राक्षस जिस प्रकार सुमेरु पर्वत की चोटी पर बादल जल की बौछार से आप्यायित करते हैं उसी प्रकार बाणों की बौछार से भगवती के प्रति वर्षा करने लगा।।३।।

मन्त्र

तस्य च्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम्।।४।।

पदच्छेद

तस्य छित्वा ततः देवी लीलया एव शर-उत्करान् जघान तुरगान् बाणैः यन्तारम् च एव वाजिनाम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इस पर, देवी=चण्डिका ने, लीलया एव=खेल-खेल में ही, शराणाम्=बाणों के, उत्करान्=बौछार को, छित्वा=काटकर, बाणैः एव=बाणों से ही, तुरगान्=उसके घोड़ों, वाजिनाम् च=तथा घोड़ों, यन्तारम्=नियन्ता सारथी को, जघान=मार डाला।।४।।

अन्वितार्थ

इस पर चण्डिका ने खेल-खेल में ही बाणों के बौछार को काटकर बाणों से ही उसके घोड़ों तथा घोड़ों के नियन्ता सारथी को मार डाला।।४।।

मन्त्र

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चाति समुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः।।५।।

पदच्छेद

चिच्छेद च धनुः सद्यः ध्वजम् च अति-सम्-उच्छ्रितम् विव्याध च एव गात्रेषु छिन्न-धन्वानम् आशुगैः॥५॥

अन्वितपदार्थ

सद्यः च=और तुरन्त ही, धनुः=धनुष, अतिसमुच्छ्रितम् च=और अत्यन्त ऊँचा, ध्वजम्=ध्वज, चिच्छेद=काट दिया, छिन्नधन्वानम् च=और कटे धनुष वाले चिक्षुर के, गात्रेषु=अङ्गों में, आशुगैः एव=बाणों से ही, चिच्छेद=छेद डाला॥५॥

अन्वितार्थ

और तुरन्त ही धनुष और अत्यन्त ऊँचा ध्वज काट दिया और कटे धनुष वाले चिक्षुर के अङ्गों में बाणों से ही छेद डाला॥५॥

मन्त्र

स छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः॥६॥

पदच्छेद

सः छिन्न-धन्वा वि-रथः हत-सारथिः अभि-अधावत ताम् देवीम् खड्ग-चर्म-धरः असुरः॥६॥

अन्वितपदार्थ

सः=वह, छिन्नधन्वा=कटे धनुष वाला, विरथः=रथहीन, हताश्वः=मृत अश्वों वाला, हतसारथि=जिसका सारथी भी मारा जा चुका था, खड्गचर्म-धरः=तलवार लेकर, कवच पहन कर, असुरः=चिक्षुर राक्षस, ताम्=उन, देवीम्=देवी की ओर, अभ्यधावत=दौड़ पड़ा॥६॥

अन्वितार्थ

वह कटे धनुष वाला, रथहीन, मृत अश्वों वाला, जिसका सारथी भी मारा जा चुका था, तलवार लेकर, कवच पहन कर चिक्षुर राक्षस उन देवी की ओर दौड़ पड़ा॥६॥

मन्त्र

सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान्॥७॥

पदच्छेद

सिंहम् आहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि आजघान भुजे सव्ये देवीम् अपि अति-वेगवान्॥७॥

अन्वितपदार्थ

तीक्ष्णधारेण=तीखे धार वाली, खड्गेन=तलवार से, सिंहम्=सिंह के, मूर्धनि=सर पर, आहत्य=वार करके, अतिवेगवान्=अत्यन्त फुर्तीले चिक्षुर ने, देवीम् अपि=भगवती के भी, सव्ये=दाहिनी, भुजे=भुजा पर, आजघान=वार किया॥७॥

अन्वितार्थ

तीखे धार वाली तलवार से सिंह के सर पर वार करके अत्यन्त फुर्तीले चिक्षुर ने भगवती के दाहिनी भुजा पर भी वार किया॥७॥

मन्त्र

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः॥८॥

पदच्छेद

तस्याः खड्गः भुजम् प्राप्य पफाल नृप-नन्दन ततः जग्राह शूलम् सः कोपात् अरुण-लोचनः॥८॥

अन्वितपदार्थ

हे नृपनन्दन=हे राजन्!, खड्गः=वह तलवार, तस्याः=उनकी, भुजम्=भुजा पर, प्राप्य=पड़कर, पफाल=टुकड़े-टुकड़े हो गई, ततः=उसके बाद, कोपात्=क्रोध से, अरुणलोचनः=आँखें लाल किए, सः=उस चिक्षुर ने, शलूम्=भाला, जग्राह=पकड़ा॥८॥

अन्वितार्थ

हे राजन्! वह तलवार उनकी भुजा पर पड़कर टुकड़े-टुकड़े हो गई उसके बाद क्रोध से आँखें लाल किए उस चिक्षुर ने भाला पकड़ा।।८।।

मन्त्र

चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात्।।९।।

पदच्छेद

चिक्षेप च ततः तत् तु भद्र-काल्यां महासुरः जाज्वल्य-मानम् तेजोभिः रवि-बिम्बम् इव अम्बरात्।।९।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, तु=तो, महासुरः=उस राक्षस ने, तत्=उस भाले को, भद्रकाल्याम्=भद्रकाली पर, चिक्षेप=प्रहार किया, अम्बरात्=आकाश से, रविबिम्बम् इव=सूर्य बिम्ब के समान, तेजोभिः=तैजस आभा से, जाज्वल्यमानम्=चमकता हुआ शूल।।९।।

अन्वितार्थ

इसके बाद तो उस राक्षस ने उस भाले को भद्रकाली पर प्रहार किया। आकाश से सूर्य के बिम्ब के समान चमकता हुआ शूल।।९।।

मन्त्र

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः।।१०।।

पदच्छेद

दृष्ट्वा तदा अपतत् शूलम् देवी शूलम् अमुञ्चत तत् शूलम् शतधा तेन नीतम् स च महासुरः।।१०।।

अन्वितपदार्थ

अपतत्=गिरता हुआ, शूलम्=भाला शूल, दृष्ट्वा=देखकर, देवी=भगवती ने, तदा=उसी समय, शूलम्=अपना शूल, अमुञ्चत=छोड़ा, तेन=भगवती

के उस शूल के द्वारा, तत्=चिक्षुर का वह, शूल=भाला, शतधा=सौ टुकड़ों में काट, नीतम्=दिया गया, सः च=और उस, महासुरः=महाराक्षस के भी सौ टुकड़े हो गए।।१०।।

अन्वितार्थ

गिरता हुआ भाला शूल देखकर भगवती ने उसी समय अपना शूल छोड़ा। भगवती के उस शूल के द्वारा चिक्षुर का वह भाला सौ टुकड़ों में काट दिया गया और उस महाराक्षस के भी सौ टुकड़े हो गए।।१०।।

मन्त्र

हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः।।११।।

पदच्छेद

हते तस्मिन् महा-वीर्ये महिषस्य चमू-पतौ आजगाम गज-आरूढः चामरः त्रिदश-अर्दनः।।११।।

अन्वितपदार्थ

महिषस्य=महिषासुर के, तस्मिन्=उस, महावीर्ये=महा बलवान्, चमूपतौ=सेनापति के, हते=मार दिए जाने पर, त्रिदशार्दनः=देवताओं का धर्षक, चामरः=चामर नामक दैत्य, गजारूढः=हाथी पर सवार होकर, आजगाम=आगे आया।।११।।

अन्वितार्थ

महिषासुर के उस महाबलवान् सेनापति के मार दिए जाने पर देवताओं का धर्षक चामर नामक दैत्य हाथी पर सवार होकर आगे आया।।११।।

मन्त्र

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।।१२।।

पदच्छेद

सः अपि शक्तिम् मुमोच देव्याः ताम् अम्बिका द्रुतम् हुं-कार-अभि-हताम् भूमौ पातयामास निष्प्रभाम्।।१२।।

अन्वितपदार्थ

सः अपि=उसने भी, देव्याः=भगवती पर, शक्तिम्=शल्य को, मुमोच=छोड़ा, ताम्=उस शक्ति को, अम्बिका=अम्बिका ने, द्रुतम्=तुरन्त, हुंकाराभिहताम्=हुंकार मात्र से विनष्ट एवं, निष्प्रभाम्=कान्ति हीन करके, भूमौ=धरती पर, पातयामास=गिरा दिया।।१२।।

अन्वितार्थ

उसने भी भगवती पर वार करने के लिए शल्य को छोड़ा उस शक्ति को अम्बिका ने तुरन्त हुंकार मात्र से विनष्ट एवं कान्तिहीन करके धरती पर गिरा दिया।।१२।।

मन्त्र

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत्।।१३।।

पदच्छेद

भग्नाम् शक्तिम् निपतिताम् दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः चिक्षेप चामरः शूलम् बाणैः तद् अपि सा अच्छिनत्।।१३।।

अन्वितपदार्थ

शक्तिम्=शक्ति को, भग्नाम्=विखण्डित एवं, निपतिताम्=गिरी हुई, दृष्ट्वा=देखकर, क्रोधसमन्वितः=क्रोध से बौखलाए, चामरः=चामर ने, शूलम्=भाला, चिक्षेप=फेंका, सा=भगवती ने, तत् अपि=उसे भी, बाणैः अच्छिनत्=बाणों से काट दिया।।१३।।

अन्वितार्थ

शक्ति को विखण्डित एवं गिरी हुई देखकर क्रोध से बौखलाए चामर ने भाला फेंका भगवती ने उसे भी बाणों से काट दिया।।१३।।

मन्त्र

ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा।।१४।।

पदच्छेद

ततः सिंहः समुत्पत्य गज-कुम्भ-अन्तरे स्थितः बाहु-युद्धेन युयुधे तेन उच्चैः त्रिदश-अरिणा।।१४।।

अन्वितपदार्थ

ततः=तभी, सिंहः=भगवती का वाहन सिंह, उच्चैः=ऊँची, समुत्पत्य=छलाँग लगाकर, गजकुम्भान्तरे=हाथी के बिन्दु स्थल पर, स्थितः=चढ़ कर, तेन=उस, त्रिदशारिणा=देव शत्रु चामर से, बाहुयुद्धेन=बाहु युद्ध, युयुधे=करने लगा।।१४।।

अन्वितार्थ

तभी भगवती का सिंह ऊँची छलाँग लगाकर हाथी के बिन्दुस्थल(सर पर) पर चढ़ कर उस देव शत्रु चामर से बाहु युद्ध करने लगा।।१४।।

मन्त्र

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः।।१५।।

पदच्छेद

युद्ध्य-मानौ ततः तौ तु तस्मात् नागात् महीम् गतौ युयुधाते अति-संरब्धौ प्रहारैः अति-दारुणैः।।१५।।

अन्वितपदार्थ

ततः तु=उसके बाद तो, युद्ध्यमानौ=आपस में भिड़े हुए, तौ=दोनों, तस्मात्=उस, नागात्=हाथी से, महीम्=भूमि पर, गतौ=आ गिरे, अतिसंरब्धौ=अत्यन्त क्रुद्ध होकर, अतिदारुणैः=भयानक, प्रहारैः=प्रहारों से, युयुधाते=आपस में युद्ध करने लगे।।१५।।

अन्वितार्थ

उसके बाद तो आपस में भिड़े हुए दोनों उस हाथी से भूमि पर आ गिरे तथा अत्यन्त क्रुद्ध होकर भयानक प्रहारों से आपस में युद्ध करने लगे।।१५।।

मन्त्र

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम्।।१६।।

पदच्छेद

ततः वेगात् खम् उत्-पत्य नि-पत्य च मृग-अरिणा कर-प्रहारेण शिरः चामरस्य पृथक् कृतम्।।१६।।

अन्वितपदार्थ

ततः मृगारिणा=इसके अनन्तर सिंह के द्वारा, वेगात्=तेजी से, खम्=आकाश में, उत्पत्य=उछलकर, निपत्य च=तथा नीचे आकर, करयोः=अपने पञ्जों के, प्रहारेण=वार से, चामरस्य=चामर का, शिरः=सर, पृथक्=धड़ से अलग, कृतम्=कर दिया गया।।१६।।

अन्वितार्थ

इसके अनन्तर सिंह के द्वारा तेजी से आकाश में उछलकर तथा नीचे आकर अपने पञ्जों के वार से चामर का सर धड़ से अलग कर दिया गया।।१६।।

मन्त्र

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः।।१७।।

पदच्छेद

उदग्रः च रणे देव्या शिला-वृक्ष-आदिभिः हतः दन्त-मुष्टि-तलैः च एव करालः च निपातितः।।१७।।

अन्वितपदार्थ

उदग्रः=उदग्र राक्षस, देव्या=भगवती द्वारा, शिलाभिः=पत्थरों, वृक्षादिभिः च=वृक्षों आदि के वार से, करालः च=तथा कराल नामक दैत्य, दन्तैः=सिंह द्वारा दाँतों, मुष्टितलैः च=और पञ्जों के प्रहार से, रणे एव=युद्ध स्थल में ही, निपातितः=धराशायी कर दिए गए।।१७।।

अन्वितार्थ

उदग्र राक्षस भगवती द्वारा पत्थरों, वृक्षों आदि के वार से तथा कराल नामक दैत्य सिंह द्वारा दाँतों और पञ्जों के प्रहार से युद्ध स्थल में ही धराशायी कर दिए गए॥१७॥

मन्त्र

देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्॥
बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम्॥१८॥

पदच्छेद

देवी क्रुद्धा गदा-पातैः चूर्णयामास च उद्धतम् बाष्कलम् भिन्दिपालेन बाणैः ताम्रम् तथा अन्धकम्॥१८॥

अन्वितपदार्थ

क्रुद्धा=क्रुद्ध, देवी=भगवती नें, उद्धतम्=उद्दण्ड, बाष्कलम्=बाष्कल नामक राक्षस को, गदापातैः=गदा के आघात से, ताम्रम्=ताम्र, तथा अन्धकम्=तथा अन्धक को, भिन्दिपालेन=भिन्दिपाल से, बाणैः च=और बाण से, चूर्णयामास=चूर चूर कर दिया,॥१८॥

अन्वितार्थ

क्रुद्ध भगवती ने उद्दण्ड बाष्कल नामक राक्षस को, गदा के आघात से ताम्र तथा अन्धक को, भिन्दिपाल से और बाण के प्रहार से चूर-चूर कर दिया॥१८॥

मन्त्र

उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्॥
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी॥१९॥

पदच्छेद

उग्रास्यम् उग्रवीर्यम् च तथा एव च महाहनुम् त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी॥१९॥

अन्वितपदार्थ

एवं च=इसी प्रकार, त्रिनेत्रा=तीन नेत्रों वाली, परमेश्वरी=भगवती ने,

उग्रास्यम्=उग्रास्य, उग्रवीर्यम् च=और उग्रवीर्य को, तथा च=और इसी प्रकार, महाहनुम्=महाहनु नामक दैत्य को, त्रिशूलेन=त्रिशूल से, जघान=मार दिया।।१९।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार तीन नेत्रों वाली भगवती ने उग्रास्य और उग्रवीर्य को और इसी प्रकार महाहनु नामक दैत्य को त्रिशूल से मार दिया।।१९।।

मन्त्र

विडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्।।२०।।

पदच्छेद

विडालस्य असिना कायात् पातयामास वै शिरः दुर्-धरम् दुर्-मुखम् च उभौ शरैः निन्ये यम-क्षयम्।।२०।।

अन्वितपदार्थ

असिना=तलवार से, विडालस्य=बिडाल का, वै शिरः=सर, कायात्=धड़ से, पातयामास=नीचे गिरा दिया, शरैः=बाणों से, च दुर्धरम्=दुर्धर और, दुर्मुखम्=दुर्मुख, उभौ=दोनों को यमक्षयम्=यमलोक, निन्ये=ले गई।।२०।।

अन्वितार्थ

तलवार से बिडाल का सर धड़ से नीचे गिरा दिया बाणों से दुर्धर और दुर्मुख दोनों को यम लोक ले गई।।२०।।

मन्त्र

एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।२१।।

पदच्छेद

एवम् संक्षीयमाणे तु स्व-सैन्ये महिषासुरः माहिषेण स्व-रूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।२१।।

अन्वितपदार्थ

एवम्=इस प्रकार, स्वसैन्ये=अपनी सेना के, संक्षीयमाणे=पूरी तरह नष्ट हो जाने पर, महिषासुरः तु=महिषासुर ने, तान्=उन, गणान्=देवी के गणों को, माहिषेण=भैंसे के, स्वरूपेण=अपने रूप द्वारा, त्रासयामास=कष्ट देने लगा।।२१।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार अपनी सेना के पूरी तरह नष्ट हो जाने पर महिषासुर उन देवी के गणों को अपने भैंसे के रूप द्वारा कष्ट देने लगा।।।।२१।।

मन्त्र

काँश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडिताँश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।२२।।
वेगेन काँश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च।।
निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।२३।।

पदच्छेद

कान् चित् तुण्ड-प्रहारेण खुर-क्षेपैः तथा अपरान् लाङ्गूल-ताडितान् च अन्यान् शृङ्गाभ्याम् च विदारितान् वेगेन कान् चिद् अपरान् नादेन भ्रमणेन च निःश्वास-पवनेन अन्यान् पातयामास भूतले।।२२-२३।।

अन्वितपदार्थ

कान् चित्=कुछ को, तुण्डस्य=नथुनों के, प्रहारेण=चोट से, तथा अपरान्=तथा दूसरों को, खुरक्षेपैः=खुरों की चोट से, च अन्यान्=और दूसरों को, लाङ्गूलताडितान्=पूँछों से मार कर शृङ्गाभ्याम् च=और सींगों से, विदारितान्=चीर कर, काँश्चित्=कुछ, अपरान्=दूसरे गणों को, वेगेन=अपने वेग, नादेन=गर्जन, भ्रमणेन च=और चक्करों से, अन्यान्=दूसरों को, निःश्वासपवनेन=श्वास वायु से, भूतले=धरती पर, पातयामास=गिरा दिया।।२२-२३।।

अन्वितार्थ

कुछ को नथुनों के चोट से तथा दूसरों को खुरों की चोट से और दूसरों को पूँछों से मार कर और सींगों से चीर कर कुछ दूसरे गणों को अपने वेग गर्जन और चक्करों से दूसरों को श्वासवायु से धरती पर गिरा दिया॥२२-२३॥

मन्त्र

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः॥
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका॥२४॥

पदच्छेद

निपात्य प्रमथ-अनीकम् अभि-अधावत सः असुरः सिंहम् हन्तुम् महादेव्याः कोपम् चक्रे ततः अम्बिका॥२४॥

अन्वितपदार्थ

सः असुरः=वह राक्षस, प्रमथानीकम्=मुख्य सेना पतियों और सेना को, निपात्य=धराशायी करके, महादेव्याः=महादेवी के, सिंहम्=सिंह को, हन्तुम्=मारने के लिए, अभ्यधावत=दौड़ पड़ा, ततः=इस पर, अम्बिका=भगवती अम्बिका ने, कोपम् चक्रे=क्रोध किया॥२४॥

अन्वितार्थ

वह राक्षस मुख्य सेना पतियों और सेना को धराशायी करके महादेवी के सिंह को मारने के लिए दौड़ पड़ा इस पर भगवती अम्बिका ने क्रोध किया॥२४॥

मन्त्र

सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः॥
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चाँश्चिक्षेप च ननाद च॥२५॥

पदच्छेद

सः अपि कोपात् महावीर्यः खुर-क्षुण्ण-महीतलः शृङ्गाभ्याम् पर्वतान् उच्चान् चिक्षेप च ननाद च॥२५॥

अन्वितपदार्थ

सः अपि=और वह, खुरक्षुण्णमहीतलः=खुरों से धरती को खोद डालने वाला, महावीर्यः=महाबली, कोपात्=गुस्से से, उच्चान् पर्वतान्=ऊँचे पर्वतों को, शृङ्गाभ्याम्=अपने दोनों सीगों से, चिक्षेप च=गिरा डाला, ननाद च=और गरजता रहा॥२५॥

अन्वितार्थ

और वह खुरों से धरती को खोद डालने वाला महाबली गुस्से से ऊँचे पर्वतों को अपने दोनों सीगों से गिरा डाला और गरजता रहा॥२५॥

मन्त्र

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः॥२६॥

पदच्छेद

वेगभ्रमण-विक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत लाङ्गूलेन आहतः च अब्धिः प्लावयामास सर्वतः॥२६॥

अन्वितपदार्थ

तस्य=उसके, वेगभ्रमणेन=तेज चक्करों से, विक्षुण्णा=टूटी हुई, मही=पृथिवी, व्यशीर्यत=चूर-चूर हो गई, लाङ्गूलेन च=और पूँछ से, आहतः=पिटा हुआ, अब्धिः=सागर, सर्वतः=सब ओर, प्लावयामास=जलमग्न कर रहा था॥२६॥

अन्वितार्थ

उसके तेज चक्करों से टूटी हुई पृथिवी चूर-चूर हो गई और पूँछ से पिटा हुआ सागर सब ओर जलमग्न कर रहा था॥२६॥

मन्त्र

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः॥
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः॥२७॥

पदच्छेद

धुत-शृङ्ग-विभिन्ना: च खण्डम् खण्डम् ययु: घना: श्वास-अनिला: ता: शतश: निपेतु: नभस: अचला:।।२७।।

अन्वितपदार्थ

धुतशृङ्गविभिन्ना: च=और घूमते हुए सीगों से फटे हुए, घना;=बादल, खण्डं-खण्डम्=टुकड़े-टुकड़े, ययु:=हो गए, ता:=उन, श्वासानिला:= फूत्कारों ने, नभस:=आकाश से, शतश:=सैकडों अचला:=पर्वत, निपेतु:= बरसाए।।२७।।

अन्वितार्थ

और घूमते हुए सीगों से फटे हुए बादल टुकड़े-टुकड़े हो गए उन फूत्कारों ने आकाश से सैकडों पर्वत बरसाए।।२७।।

मन्त्र

इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद् बधाय तदाकरोत्।।२८।। व ?

पदच्छेदं

इति क्रोधेन सम्-आ-ध्मातम् आ-पतन्तम् महा-असुरम् दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपम् तद् बधाय तदा अकरोत्।।२८।।

अन्वितपदार्थ

इति=इस प्रकार, क्रोधेन=गुस्से से, समाध्मातम्=हाँफते हुए, महासुरम्= महादानव को, आपतन्तम्=आता हुआ, दृष्ट्वा=देख कर, सा चण्डिका=उन भगवती चण्डिका ने, तदा=तुरन्त, तद् बधाय=उसका बध करने के लिए, कोपम् अकरोत्=क्रोधित हो गई।।२८।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार गुस्से से हाँफते हुए महादानव को आता हुआ देख कर उस भगवती चण्डिका ने तुरन्त, उसका बध करने के लिए क्रोधित हो गई।।२८।।

मन्त्र

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥२९।

पदच्छेद

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशम् तम् बबन्ध महा-असुरम् तत्याज माहिषम् रूपम् सः अपि बद्धः महा-मृधे॥२९॥

अन्वितपदार्थ

महामृधे=उस महा युद्ध में, सा=भगवती ने, पाशम्=पाश, क्षिप्त्वा=फेंक कर, तम् महासुरम्=उस महा दैत्य को, बबन्ध=बाँध दिया, सः अपि=उसने भी, बद्धः=बँधने के बाद, तस्य=अपना, माहिषम् रूपम् वै=भैंसे का रूप, तत्याज=छोड़ दिया॥२९॥

अन्वितार्थ

उस महायुद्ध में भगवती ने पाश फेंक कर उस महादैत्य को बाँध दिया उसने भी बँधने के बाद अपना भैंसे का रूप छोड़ दिया॥२९॥

मन्त्र

ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत॥३०॥

पदच्छेद

ततः सिंहः अभवत् सद्यः यावत् तस्य अम्बिका शिरः छिनत्ति तावत् पुरुषः खड्ग-पाणिः अदृश्यत॥३०॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, सद्यः=तुरन्त, सिंहः=सिंह, अभवत्=हो गया, यावत्=जब तक, अम्बिका=अम्बिका, तस्य=उसका, शिरः=सर, छिनत्ति=काटती, तावत्=तब तक, खड्गपाणिः=तलवार धारी, पुरुषः=पुरुष के रूप में, अदृश्यत=दिखाई दिया॥३०॥

अन्वितार्थ

इसके बाद तुरन्त सिंह हो गया जब तक अम्बिका उसका सर काटतीं

तब तक तलवार धारी पुरुष के रूप में दिखाई दिया।।३०।।

मन्त्र

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः।।३१।।

पदच्छेद

तत एव आशु पुरुषम् देवी चिच्छेद सायकैः तम् खड्ग-चर्मणा सार्धम् ततः सः अभूत् महा-गजः।।३१।।

अन्वितपदार्थ

तत एव=तभी, देवी=भगवती ने, आशु=तुरन्त, तम्=उस, पुरुषम्=पुरुष को, खड्गचर्मणा=तलवार एवं कवच, सार्धम्=के साथ, सायकैः=बाणों से, चिच्छेद=काट डाला, ततः सः=तब वह, महागजः=विशालकाय हाथी, अभूत्=बन गया।।३१।।

अन्वितार्थ

तभी भगवती ने तुरन्त उस पुरुष को तलवार एवं कवच के साथ बाणों से काट डाला तब वह विशाल काय हाथी बन गया।।३१।।

मन्त्र

करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत।।३२।।

पदच्छेद

करेण च महा-सिंहम् तम् चकर्ष जगर्ज च कर्षतः तु करम् देवी खड्गेन निर्-अकृन्तत।।३२।।

अन्वितपदार्थ

तम् च=और उस, महासिंहम्=भगवती के वाहन विशाल सिंह को, करेण=सूँड से, चकर्ष=पकड़ कर खीचा, जगर्ज च=तथा गरजने लगा, कर्षतः=खीचते समय, करम् तु=उसकी सूँड को, देवी=भगवती ने, खड्गेन=खड्ग से, निरकृन्तत=काट दिया।।३२।।

अन्वितार्थ

और उस भगवती के वाहन विशाल सिंह को सूँड से पकड़ कर खीचा तथा गरजने लगा खीचते समय ही उसकी सूँड को भगवती ने खड्ग से काट दिया।।३२।।

मन्त्र

ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्।।३३।।

पदच्छेद

ततः महा-असुरः भूयः माहिषम् वपुः आस्थितः तथा एव क्षोभयामास त्रैलोक्यम् स चराचरम्।।३३।।

अन्वितपदार्थ

ततः=तब, महासुरः=महा दानव ने, भूयः=विशाल, माहिषम्=भैंसे का, वपुः=शरीर, आस्थितः=धारण कर लिया, तथा एव=और उसी प्रकार, स चराचरम्=जड चेतन सहित; त्रैलोक्यम्=तीनों लोकों को, क्षोभयामास=हिला डाला।।३३।।

अन्वितार्थ

तब महा दानव ने विशाल भैंसे का शरीर धारण कर लिया और उसी प्रकार जड चेतन सहित तीनों लोकों को हिला डाला।।३३।।

मन्त्र

ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना।।३४।।

पदच्छेद

ततः क्रुद्धा जगतः माता चण्डिका पानम् उत्तमम् पपौ पुनः-पुनः च एव जहास अरुणलोचना।।३४।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, जगतः=संसार की, माता=जननी, चण्डिका=चण्डिका देवी ने, पुनः-पुनः=कई बार, उत्तमम् पानम्=उत्तम पेयद्रव्य का,

पपौ=पान किया, अरुणलोचना च=और लाल आँखों वाली भगवती ने, क्रुद्धा एव=क्रोधित भाव में ही, जहास=अट्टहास किया।।३४।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् संसार की जननी चण्डिका देवी ने कई बार उत्तम पेय द्रव्य का पान किया और लाल आँखों वाली भगवती ने क्रोधित भाव में ही अट्टहास किया।।३४।।

मन्त्र

ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्।।३५।।

पदच्छेद

ननर्द च असुरः सः अपि बल-वीर्य-मद-उद्धतः विषाणाभ्याम् च चिक्षेप चण्डिकाम् प्रति भू-धरान्।।३५।।

अन्वितपदार्थ

सः=वह, असुरः=असुर, अपि=भी, बलवीर्यमदोद्धतः=शक्ति, सामर्थ्य और घमण्ड के कारण से बलबला कर, ननर्द=कूदने लगा, विषाणाभ्याम् च=और अपनी सींगों से, भूधरान्=पहाड़ों को, चण्डिकाम् प्रति=चण्डिका की ओर, चिक्षेप=फेंकने लगा।।३५।।

अन्वितार्थ

वह असुर भी शक्ति, सामर्थ्य और घमण्ड के कारण बलबला कर कूदने लगा और अपनी सींगों से पहाड़ों को चण्डिका की ओर फेंकने लगा।।३५।।

मन्त्र

सा च तान् प्रहिताँस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्।।३६।।

पदच्छेद

सा च तान् प्रहितान् तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः उवाच तम् मद-उद्धूत-मुखराग-आकुल-अक्षरम्।।३६।।

अन्वितपदार्थ

सा च=और वे, तेन=उसके द्वारा, प्रहितान्=फेंके हुए, तान्=उन पहाड़ों को, शरोत्करैः=बाणों के बौछारों से, चूर्णयन्ती=चूर करती हुई, मदेन=क्रोध के मद से, उद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्=तमतमाए हुए मुख से तीखे वचन, तम्=उससे, उवाच=बोलीं।।३६।।

अन्वितार्थ

और वे उसके द्वारा फेंके हुए उन पहाड़ों को बाणों के बौछारों से चूर करती हुई क्रोध के मद से तमतमाए हुए मुख से उससे तीखे वचन बोलीं।।३६।।

मन्त्र

देव्युवाच।।३७।।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः।।३८।।

पदच्छेद

देवी उवाच। गर्ज-गर्ज क्षणम् मूढ! मधु यावत् पिबामि अहम् मया त्वयि हते अत्र एव गर्जिष्यन्ति आशु देवताः।।३७-३८।।

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=देवी बोली, मूढ!=रे मूर्ख, क्षणम्=कुछ देर, गर्ज-गर्ज=गरज ले, यावत्=जबतक, अहम्=मै, मधु=मधु, पिबामि=पीती हूँ, मया=मेरे द्वारा, त्वयि=तेरे, हते=मारे जाने पर, अत्र एव=यही, आशु=तुरन्त, देवताः=देवता गण, गर्जिष्यन्ति=प्रसन्नता से गरजेगें।।३७-३८।।

अन्वितार्थ

देवी बोलीं- रे मूर्ख! कुछ देर गरज ले जब तक मैं मधु पीती हूँ मेरे द्वारा तेरे मारे जाने पर यहीं तुरन्त ही देवतागण प्रसन्नता से गरजेगें।।३७-३८।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।३९।।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम्।।

पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्॥४०॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच। एवम् उक्त्वा समुत्पत्य सा आरूढा तम् महासुरम् पादेन आक्रम्य कण्ठे च शूलेन एनम् अताडयत्॥३९-४०॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले-, सा=उन भगवती ने, एवम्=इस प्रकार, उक्त्वा=कह कर, समुत्पत्य=उछल कर, तम्=उस, महासुरम्=महा दानव को, पादेन=अपने पैरों से, आक्रम्य=कुचल कर, आरूढा=उसके ऊपर चढ़ कर, कण्ठे च=और गले पर, एनम्=इस राक्षस को, शूलेन=भाले से, अताडयत्=मारा॥३९-४०॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- उन भगवती ने इस प्रकार कह कर उछल कर उस महादानव को अपने पैरों से कुचल कर उसके ऊपर चढ़ कर और गले पर इस राक्षस को भाले से मारा॥३९-४०॥

मन्त्र

ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः॥४१॥

पदच्छेद

ततः सः अपि पदाक्रान्तः तया निजमुखात् ततः अर्ध-निष्क्रान्तः एव आसीद् देव्या वीर्येण संवृतः॥४१॥

अन्वितपदार्थ

ततः=भाले की चोट लगने के बाद, अति वीर्येण=अतिशय बल से, संवृतः=संपन्न, तया=उन, देव्या=भगवती चण्डी के, पदाक्रान्तः अपि=पैरों से दबे होने पर भी, सः=वह महिषासुर, ततः निजमुखात्=अपने मुख से, अर्धनिष्क्रान्तः एव=आधा बाहर निकला हुआ ही॥४१॥

अन्वितार्थ

भाले की चोट लगने के बाद अतिशय बल से संपन्न उन भगवती

चण्डी के पैरों से दबे होने पर भी वह महिषासुर अपने मुख से आधा बाहर निकला हुआ ही-।।४१।।

मन्त्र

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः।।४२।।

पदच्छेद

अर्ध-निष्क्रान्तः एव असौ युध्यमानः महासुरः तया महासिना देव्या शिरः छित्त्वा निपातितः।।४२।।

अन्वितपदार्थ

असौ=वह, महासुरः=महाराक्षस, अर्धनिष्क्रान्त एव=आधे निकले हुए अवस्था में ही, युध्यमानः=युद्ध कर रहा था, तया=उसी अवस्था में उन, देव्या=देवी के द्वारा, महासिना=अपने विशाल खड्ग से, शिरः छित्त्वा=सर काट कर, निपातितः=धराशायी कर दिया गया।।४२।।

अन्वितार्थ

वह महाराक्षस आधे निकले हुए अवस्था में ही युद्ध कर रहा था उसी अवस्था में उन देवी के द्वारा अपने विशाल खड्ग से सर काट कर धराशायी कर दिया गया।।४२।।

मन्त्र

ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः।।४२।।

पदच्छेद

ततः हा-हा-कृतम् सर्वम् दैत्य-सैन्यम् ननाश तत् प्रहर्षम् च परम् जग्मुः सकला देवता-गणाः।।४२।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, हा-हाकृतम्=हाहाकार करती हुई, तत्=वह, सर्वम्=सारी, दैत्य-सैन्यम्=दानवों की सेना, ननाश=गायब हो गई,

सकला च=और सभी, देवतागणाः=देवता गण, परम्=अत्यधिक, प्रहर्षम् जग्मुः=प्रसन्न होगए।।४२।।

अन्वितार्थ

इसके बाद हाहाकार करती हुई वह सारी दानवों की सेना गायब हो गई और सभी देवता गण अत्यधिक प्रसन्न हो गए।।४२।।

मन्त्र

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः।।४३।।

पदच्छेद

तुष्टुवुः ताम् सुराः देवीम् सह दिव्यैः महा-ऋषभिः जगुः गन्धर्व-पतयः ननृतुः च अप्सरः गणाः।।४३।।

अन्वितपदार्थ

सुराः=देवतागण, सह दिव्यैः महर्षिभिः=दिव्य महर्षियों के साथ, ताम् देवीम्=उस महा देवी के पास, जगुः=गए, तुष्टुवुः=एवं उनको स्तवन द्वारा प्रसन्न किया, गन्धर्वपतयः=गन्धर्वों के राजा, अप्सरः गणाः च=और अप्सराएँ ननृतुः=नाचने लगीं।।४३।।

अन्वितार्थ

देवतागण दिव्य महर्षियों के साथ उस महा देवी के पास गए एवं उनका स्तवन द्वारा प्रसन्न किया, गन्धर्वों के राजा और अप्सराएँ नाचने लगीं।।४३।।

।। इति श्रीसप्तशतीमध्यभागे

महिषासुरविनाशनं नाम तृतीयो विश्रामः।।४।।

अथचतुर्थोऽध्यायः

मन्त्र

ॐ ऋषिरुवाच॥१॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- शक्र-आदयः सुर-गणाः निहते अतिवीर्ये तस्मिन् दुरात्मनि सुरारि-बले च देव्या ताम् तुष्टुवुः प्रणति-नम्र-शिरोधर-अंसाः वाग्भिः प्रहर्ष-पुलक-उद्गम-चारुदेहाः॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

तस्मिन्=उस, अतिवीर्ये=अत्यन्त प्रतापी, दुरात्मनि=दुरात्मा महिषासुर, सुरारिबले च=तथा देवघातिनी सेना के, देव्या=भगवती द्वारा, हते=मारे जाने पर, प्रणतिनम्रशिरोधरांसाः=नमन के कारण झुके हुए ग्रीवा एवं कन्धों वाले, प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः=आनन्द के रोमाञ्च से अलंकृत शरीर वाले, शक्रादयः=इन्द्र आदि, सुरगणाः=देवतागण, ताम्=उस पराशक्ति का, वाग्भिः=दिव्य वचनों से, तुष्टुवुः=स्तुति करने लगे॥१-२॥

अन्वितार्थ

उस अत्यन्त प्रतापी दुरात्मा महिषासुर तथा देवघातिनी सेना के भगवती द्वारा मारे जाने पर नमन के कारण झुके हुए ग्रीवा एवं कन्धों वाले आनन्द के रोमाञ्च से अलंकृत शरीर वाले इन्द्र आदि देवतागण उस पराशक्ति का दिव्य वचनों से इस प्रकार स्तुति स्तुति करने लगे॥१-२॥

मन्त्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशत्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
ताममम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।३।।

पदच्छेद

देव्या यया ततम् इदम् जगद् आत्म-शक्त्या निःशेष-देवगण-शक्तिसमूह-मूर्त्या ताम् अम्बिकाम् अखिल-देव-महर्षि-पूज्याम् भक्त्या नताः स्मः विदधातु शुभानि सा नः।।३।।

अन्वितपदार्थ

निश्शेष-देवगण-शक्तिसमूह-मूर्त्या=सम्पूर्ण देवताओं की शक्तियों के संघटित रूप में अवतरित, देव्या=जिन भगवती के, आत्मशक्त्या=स्वरूपशक्ति से, इदम् जगत्=यह दृश्यमान सतत गतिशील विश्व, ततम्=विनिर्मित है, अखिलदेवमहर्षिपूज्याम्=सभी देवताओं एवं महर्षियों की उपास्या, ताम्=उन, अम्बिकाम्=अम्बिका के प्रति हम, भक्त्या=भक्ति से, नताः=प्रणत, स्मः=हैं, सा=वह परमेश्वरी, नः=हमें, शुभानि=शुभ तत्त्वों को, विदधातु=उपलब्ध कराएँ।।३।।

अन्वितार्थ

सम्पूर्ण देवताओं के संघटित रूप में अवतरित जिन भगवती के स्वरूप शक्ति से यह दृश्यमान सतत गतिशील विश्व विनिर्मित है, सभी देवताओं एवं महर्षियों की उपास्या उन अम्बिका के प्रति हम भक्ति से प्रणत हैं। वह परमेश्वरी हमें शुभ तत्त्वों को उपलब्ध कराएँ।।३।।

मन्त्र

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।४।।

पदच्छेद

यस्याः प्रभावम् अतुलम् भगवान् अनन्तः ब्रह्मा हरः च न हि वक्तुम् अलम् बलम् च सा चण्डिका अखिल-जगत्-परिपालनाय नाशाय च अशुभ-भयस्य मतिम् करोतु॥४॥

अन्वितपदार्थ

यस्याः=जिनके, अतुलम्=अतुलनीय, प्रभावम्=प्रभुत्व, बलम् च=तथा शक्ति को, भगवान् अनन्तः=भगवान् विष्णु, ब्रह्मा=ब्रह्मा, हरः च=और शिव, न हि वक्तुम् अलम्=बताने में समर्थ नहीं हैं, सा चण्डिका=वह देवी चण्डिका, अखिल-जगत्-परिपालनाय=सम्पूर्ण संसार के समग्र रक्षा के लिए, अशुभ-भयस्य=तथा अनिष्टकारी भय के, नाशाय=विनाश के लिए, मतिम्=अपना संकल्प उत्पन्न, करोतु=करें॥४॥

अन्वितार्थ

जिनके अतुलनीय प्रभुत्व तथा शक्ति को बताने में भगवान् विष्णु, ब्रंह्मा और शिव समर्थ नहीं हैं। वह देवी चण्डिका सम्पूर्ण संसार के समग्र रक्षा के लिए तथा अनिष्टकारी भय के विनाश के लिए अपना संकल्प उत्पन्न करें॥४॥

मन्त्र

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥५॥

पदच्छेद

या श्रीः स्वयम् सुकृतिनाम् भवनेषु अलक्ष्मीः पापात्मनाम् कृत-धियाम् हृदयेषु बुद्धिः श्रद्धा सताम् कुलजन-प्रभवस्य लज्जा ताम् त्वाम् नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥५॥

अन्वितपदार्थ

या स्वयम्=जो परमेश्वरी साक्षात् स्वयं, सुकृतिनाम्=सुकर्म या शास्त्रों

द्वारा विहित कर्म करने वालों के, भवनेषु=घरों में, श्री:=तीनों कालों में शान्ति एवं समृद्धि रूप में विराज मान हैं, पापात्मनाम्=कुकर्मियों के घर में, अलक्ष्मी:=दरिद्रता, कलह, आलस्य आदि रूप में, कृतधियाम्=निर्मल अन्त:करण वालों के, हृदयेषु=हृदयों में, बुद्धि:=असत्-तिरस्कारिणी एवं तत्त्वग्राहिणी बुद्धि या समझ के रूप में, सताम् हृदयेषु=उचित मार्ग पर चलने वालों के हृदय में, श्रद्धा=परम्परा से प्राप्त तत्त्वज्ञान में विश्वास रूपिणी, कुलजनप्रभवस्य=उत्तम परिवारों में जन्म लेने वाले की, लज्जा=लज्जा रूपिणी हैं, ताम्=ऐसी पराशक्ति, त्वाम्=आपके प्रति, नता:=हम प्रणत, स्म:=है, देवि=हे अम्बिके, विश्वम्=सम्पूर्ण विश्व का, परिपालय=आप समुचित रूप में संरक्षण करें।।५।।

अन्वितार्थ

जो परमेश्वरी साक्षात् स्वयं सुकर्म या शास्त्रों द्वारा विहित कर्म करने वालों के घरों में तीनों कालों में शान्ति एवं समृद्धि रूप में विराज मान हैं, कुकर्मियों के घरों में दरिद्रता, कलह, आलस्य आदि रूप में, निर्मल अन्त:करण वालों के हृदयों में असत् तिरस्कारिणी एवं तत्त्वग्राहिणी बुद्धि रूप में, उचित मार्ग पर चलने वालों के हृदय में परम्परा से प्राप्त तत्त्वज्ञान में विश्वासरूपिणी, उत्तम परिवारों में जन्म लेने वालों में लज्जा रूप में विराज मान हैं ऐसी पराशक्ति आपके प्रति हम प्रणत हैं। हे अम्बिके! सम्पूर्ण विश्व का आप समुचित रूप में संरक्षण करें।।५।।

मन्त्र

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि ताद्भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।६।।

पदच्छेद

किम् वर्णयाम: तव रूपम् अचिन्त्यम् एतत् किम् च अतिवीर्यम् असुर-क्षय-कारि भूरि किम् च आहवेषु चरितानि तव अद्भुतानि सर्वेषु देवि असुर-देवगण-आदिकेषु।।६।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे अम्बे भगवति, असुर-देव-गण-आदिकेषु=मधु-कैटभ, महिष आदि दैत्यों, शिव, विष्णु, ब्रह्मा आदि देवों, प्रमथ समूहों के रूप में आपके गणों, ऋषि, सिद्ध प्रभृति दिव्यों में भी, एतत् तव रूपम्=यह आपका यह परात्पर रूप, अचिन्त्यम्=अनिर्वाच्य है, अवर्णनीय है, किं वर्णयामः=हम क्या वर्णन करें, किं च भूरि=क्या आपका महान्, असुरक्षयकारि=असुर संहारक, अतिवीर्यम्=परम सामर्थ्य, किं च=क्या, सर्वेषु=सभी युद्धों में, तव=आपका, अद्भुतानि=आश्चर्यकारक, चमत्कारकारक, चरितानि=आचरण, किं वर्णयामः=हम क्या वर्णन करें सभी तो हमारे लिए कल्पनातीत है।।६।।

अन्वितार्थ

हे अम्बे भगवति! मधु-कैटभ, महिष आदि दैत्यों, शिव, विष्णु, ब्रह्मा आदि देवों, प्रमथ समूहों के रूप में आपके गणों, ऋषि, सिद्ध प्रभृति दिव्यों में भी यह आपका परात्पर रूप अनिर्वाच्य है। अवर्णनीय है। हम क्या वर्णन करें। क्या आपका महान् असुर संहारक परमसामर्थ्य, क्या सभी युद्धों में आपका आश्चर्यकारक, चमत्कारकारक आचरण हम क्या वर्णन करें! सभी तो हमारे लिए कल्पनातीत है।।६।।

मन्त्र

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।७।।

पदच्छेद

हेतुः समस्त-जगताम् त्रिगुणा अपि दोषैः न ज्ञायसे हरि-हर-आदिभिः अपि अपारा सर्वाश्रया अखिलम् इदम् जगद् अंश-भूतम् अव्याकृता हि परमा प्रकृतिः त्वम् आद्या।।७।।

अन्वितपदार्थ

त्रिगुणा=सत्त्व, रजस्, तमस् स्वरूपिणी आप, समस्त जगताम् हेतुः=सम्पूर्ण जगत् के उद्‌भव, स्थिति एवं संहार का कारण हैं, अपि दोषैः=तब भी गुण-त्रितय के लघुता, राग, आवरण आदि दोषों के माध्यम से, न ज्ञायसे=नहीं जानी जा सकतीं। क्योंकि उनसे मुक्त हैं, हरिहरादिभिः=विष्णु द्वारा, शिव द्वारा एवं ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा, अपारा अपि=अज्ञेय होकर भी, सर्वाश्रया=विश्व की अधिष्ठान हैं, इदम्=यह, अखिलम्=सारा अनन्त ब्रह्माण्ड रूप, जगत्=संसार, अंशभूतम्=आपका अंश मात्र है, त्वं हि=आप तो, आद्या=प्रथमा, परमा=सर्वोच्च, प्रकृतिः=स्वभाव हैं।।७।।

अन्वितार्थ

सत्त्व, रजस्, तमस् स्वरूपिणी आप सम्पूर्ण जगत् के उद्भव, स्थिति एवं संहार का कारण हैं। तब भी गुण-त्रितय के लघुता-सत्त्व, राग-राजस्, आवरण-तमः आदि दोषों के माध्यम नहीं जानी जा सकतीं। क्योंकि उनसे मुक्त हैं। विष्णु द्वारा, शिव द्वारा, ब्रह्मा आदि देवताओं के द्वारा अज्ञेय होकर भी विश्व की अधिष्ठान हैं। यह सारा अनन्त ब्रह्माण्डरूप संसार आपका अंश मात्र है। आप ही प्रथम एवं सर्वोच्च स्वभाव हैं।।७।।

मन्त्र

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।८।।

पदच्छेद

यस्याः समस्ता सुरता समुदीरणेन तृप्तिम् प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि स्वाहा असि वै पितृ-गणस्य च तृप्ति-हेतुः उच्चार्यसे त्वम् अतः एव जनैः स्वधा च।।८।।

अन्वितपदार्थ

देवि!=हे भगवति!, स्वाहा=आप स्वाहा की ध्वनि, असि=हैं, यस्याः=जिसके, समुदीरणेन=उचित उच्चारण से, समस्ता=सम्पूर्ण, सुरता=देवत्व, सकलेषु=सभी, मखेषु=यज्ञों में, तृप्तिम्=तृप्ति, प्रयाति=प्राप्त करता है। त्वम् च वै=और आप ही, पितृगणस्य=पितरों के, तृप्तिहेतुः=तर्पण की कारणभूता शक्ति हैं, अतः एव च=तथा इसी कारण, जनैः=लोगों द्वारा, स्वधा=स्वधा ध्वनि रुप में, उच्चार्यसे=उच्चारित की जातीं हैं।।८।।

अन्वितार्थ

हे भगवति! आप स्वाहा की ध्वनि हैं। जिसके उचित उच्चारण से सम्पूर्ण देवत्व सभी यज्ञों में तृप्ति प्राप्त करता है। और आप ही पितरों के तर्पण की कारण भूता शक्ति हैं तथा इसी कारण लोगों द्वारा स्वधा-ध्वनि के रुप में उच्चारित की जाती हैं।।८।।

मन्त्र

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि।।९।।

पदच्छेद

या मुक्ति-हेतुः अविचिन्त्य-महाव्रता त्वम् अभ्यस्यसे सुनियत-इन्द्रिय-तत्त्वसारैः मोक्ष-अर्थिभिः मुनिभिः अस्त-समस्त-दोषैः विद्या असि सा भगवती परमा हि देवि।।९।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि!, या=जो आप, अविचिन्त्यमहाव्रता=सृष्टि, स्थिति, संहार रूपी अकल्पनीय महासंकल्प धारण करने वाली, मुक्तिहेतुः=मोक्ष की कारण, त्वम्=आप, सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः=सम्यक्तया इन्द्रियनिग्रह के कारण तत्त्वज्ञानस्वरुप वाले, अस्तसमस्तदोषैः=समस्तदोषविहीन,

मोक्षार्थिभि:=केवल मोक्ष चाहने वाले, मुनिभि:=मुनियों द्वारा, अभ्यस्यसे= उपासित होती हैं। सा हि=आप वही, भगवती=ऐश्वर्यमयी, परमा=उत्तमा, विद्या=माया, असि=हैं।।९।।

अन्वितार्थ

हे देवि! जो आप सृष्टि, स्थिति, संहार रूपी अकल्पनीय महासंकल्प धारण करने वाली, मोक्ष की कारण, सम्यक्तया इन्द्रियनिग्रह के कारण तत्त्वज्ञानस्वरुप वाले, समस्त दोषविहीन, केवल मोक्ष चाहने वाले मुनियों द्वारा उपासित होती हैं। आप वही ऐश्वर्यमयी उत्तमा माया हैं।।९।।

मन्त्र

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भव भावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।।१०।।

पदच्छेद

शब्दात्मिका सुविमल-ऋग्-यजुषाम् निधानम् उद्गीथ-रम्यपद-पाठवताम् च साम्नाम् देवी त्रयी भगवती भव-भावनाय वार्ता च सर्व-जगताम् परमार्ति-हन्त्री।।१०।।

अन्वितार्थ

भवभावनाय=संसार के सतत प्रवृत्ति के लिए जो परमेश्वरी, शब्दात्मिका= शब्दरूपा हैं सुविमल-ऋग्-यजुषाम्=दोषविहीन स्तुतियों, यज्ञविधायक मन्त्रों, उद्गीथ-रम्यपद-पाठवताम्=तथा गानविधि से रमणीय पद समूहों में पढ़े जाने वाले, साम्नाम् च=साममन्त्रों का, निधानम्=अधिष्ठान रूपिणी, देवी त्रयी=देदीप्यमान वेदत्रयी हैं, सर्वजगताम्=तथा सम्पूर्ण जगत् के, परमार्तिहन्त्री=कठिनतम कष्टों के निवारण की सर्वोच्च प्रकट सत्ता, वार्ता च=कृषि, वाणिज्य, पशुपालन आदि विकास की प्रक्रिया रूपिणी एवं प्राणियों के जीवन यापन की हेतु रूपा हैं।।१०।।

अन्वितार्थ

संसार के सतत प्रवृत्ति के लिए जो परमेश्वरी शब्दरूपा हैं। दोषविहीन स्तुतियों, यज्ञ विधायक मन्त्रों तथा गानविधि रमणीय पदसमूहों में पढ़े जाने वाले साममन्त्रों का अधिष्ठान रूपिणी देदीप्यमान वेदत्रयी हैं तथा सम्पूर्ण जगत् के कठिनतम कष्टों के निवारण की सर्वोच्च प्रकट सत्ता, कृषि, वाणिज्य, पशुपालन आदि विकास की प्रक्रिया रूपिणी एवं प्राणियों के जीवन यापन की हेतु रूपा हैं।।१०।।

मन्त्र

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।११।।

पदच्छेद

मेधा असि देवि विदिता अखिल-शास्त्रसारा दुर्गा असि दुर्ग-भवसागर-नौः असङ्गा, श्रीः कैटभारि-हृदय-एक-कृताधिवासा गौरी त्वम् एव शशिमौलि-कृत-प्रतिष्ठा।।११।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे परामबा आप, विदिताखिल-शास्त्रसारा=समस्त शास्त्रों का तत्त्वों जानने वाली, मेधा=मेधा धारणात्मिका बुद्धि, असि=हैं, असंगा=बिना किसी नाविक आदि साधनों के चलने वाली, दुर्गभवसागर-नौः=दुस्तर संसार सागर को पार कराने वाली ज्ञान रूपी नौका हैं अतः, दुर्गा=दुष्प्राप्य, असि=हैं, कैटभारिहृदयैककृताधिवासा=भगवान् विष्णु के हृदय में एकमात्र निवास करने वाली, श्रीः=लक्ष्मी हैं, त्वं एव=आप ही, शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा=चन्द्रचूड शिव में अर्धांग रूप में विराजमान, गौरी=गौरी हैं।।११।।

अन्वितार्थ

हे परामबा! आप समस्त शास्त्रों का तत्त्व जानने वाली मेधा, धारणात्मिका

बुद्धि हैं। बिना किसी नाविक आदि साधनों के चलने वाली, दुस्तर संसार सागर को पार कराने वाली ज्ञाननौका हैं। अतः दुष्प्राप्य हैं। भगवान् विष्णु के हृदय में एकमात्र निवास करने वाली लक्ष्मी हैं। आप ही चन्द्रचूड़ शिव में अर्धाङ्ग रूप में विराजमान गौरी हैं।।११।।

मन्त्र

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।१२।।

पदच्छेद

ईषत् सहासम् अमलम् परिपूर्ण-चन्द्र-बिम्बानुकारि कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम् अत्यद्भुतम् प्रहृतम् आत्त-रुषा तथा अपि वक्त्रम् विलोक्य सहसा महिषासुरेण।।१२।।

अन्वितपदार्थ

ईषत् सहासम्=मन्द मुस्कान वाला, अमलम्=निर्दोष, परिपूर्णचन्द्र-बिम्बानुकारि=सर्वथा पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब की उपमा वाला, कनकोत्तमकान्तिकान्तम्=उत्तम सोने की कान्ति के समान ज्योतिष्मान्, वक्त्रम्=यह मुख मण्डल, विलोक्य अपि=देखकर भी आपके ऊपर, आत्तरुषा=क्रोधपूर्वक, महिषासुरेण=महिषासुर द्वारा, तथा=ऐसा भीषण, प्रहृतम्=प्रहार किया गया था, अत्यद्भुतम्=यह महान् आश्चर्य जनक रहस्य है।।१२।।

अन्वितार्थ

मन्द मुस्कान वाला, निर्दोष, सर्वथा पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब की उपमा वाला, उत्तम सोने की कान्ति के समान ज्योतिष्मान् यह मुख मण्डल देखकर भी आप के ऊपर क्रोधपूर्वक महिषासुर द्वारा ऐसा भीषण प्रहार किया गया था। यह महान् आश्चर्यजनक रहस्य है।।१२।।

मन्त्र

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रम्
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन॥१३॥

पदच्छेद

दृष्ट्वा तु देवि कुपितम् भ्रुकुटी-करालम् उद्यत्-शशाङ्क-सदृश-छवि यत् न सद्यः प्राणान् मुमोच महिषः तद् अति इव चित्रम् कैः जीव्यते हि कुपित-अन्तक-दर्शनेन॥१३॥

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि आपका, भ्रुकुटीकरालम्=भौंहों की तिरछी होने के कारण भीषण, उद्यत्-शशाङ्कच्छवि=उदय कालीन लाल चन्द्रमा की शोभा वाला, कुपितम्=क्रोधित मुख मण्डल, दृष्ट्वा=देखकर, यत्=जो, महिषः=महिषासुर ने, सद्यः=तुरन्त, प्राणान्=प्राणों को, न मुमोच=नहीं त्याग दिया था, तत्=वह, अतीव चित्रम्=अत्यन्त आश्चर्यकारक है, कुपितान्तक दर्शनेन=क्रोधित काल को देखने पर, कैः=किनसे, जीव्यते=जिया जाता है॥१३॥

अन्वितार्थ

हे देवि! आपका भौंहों की तिरछी होने के कारण भीषण, उदयकालीन लाल चन्द्रमा की शोभा वाला क्रोधित मुखमण्डल देखकर महिषासुर ने जो तुरन्त प्राणों को नहीं त्याग दिया था वह अत्यन्त आश्चर्यकारक है। क्रोधित काल को देखने पर किनसे जिया जाता है?॥१३॥

मन्त्र

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य॥१४॥

पदच्छेद

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यः विनाशयसि कोप-वती कुलानि विज्ञातम् एतद् अधुना एव यद् अस्तम् एतत् नीतम् बलम् सुविपुलम् महिषासुरस्य।।१४।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे परमेश्वरी, भवती=आप, परमा=सर्वोच्च अनुग्रह शालिनी, भवाय=हमारे सतत् संरक्षण, अभ्युन्नति के लिए, प्रसीद=प्रसन्न रहें, कोपवती=क्योंकि क्रोध की अवस्था में, सद्यः=तुरन्त ही, कुलानि=सारे कुल का, विनाशयति=विनाश कर देती हैं, एतत्=यह तथ्य, अधुना=अभी-अभी, एव=ही, विज्ञातम्=हमने जाना है, यत्=कि, महिषासुरस्य=महिषासुर का, सुविपुलम्=विशाल, बलम्=सैन्य बल कोप के कारण आपने, अस्तं नीतम्=समाप्त कर दिया।।१४।।

अन्वितार्थ

हे परमेश्वरी! आप सर्वोच्च अनुग्रह शालिनी हैं। हमारे सतत् संरक्षण, अभ्युन्नति के लिए प्रसन्न रहें, क्योंकि आप क्रोध की अवस्था में तुरन्त ही सारे कुल का विनाश कर देती हैं। यह तथ्य अभी-अभी ही हमने जाना है कि महिषासुर का विशाल सैन्यबल कोप के कारण आपने समाप्त कर दिया।।१४।।

मन्त्र

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषाम्
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदाराः
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।१५।।

पदच्छेद

ते सम्मताः जन-पदेषु धनानि तेषाम् तेषाम् यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः धन्याः ते एव निभृतात्मज-भृत्य-दाराः येषाम् सदा अभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।१५।।

अन्वितपदार्थ

जनपदेषु=समाज में, ते=वे लोग ही, सम्मताः=सम्मानित हैं, धनानि=सभी प्रकार की सम्पत्तियाँ, तेषाम्=उन्हीं की हैं, यशांसि=सब प्रकार का यश, तेषाम्=उन्हीं को मिलता है, धर्मवर्गः=तथा उनकी धर्म सम्मत क्रियाएँ, च न सीदति=शिथिल नहीं होतीं, ते एव=वे ही निभृतात्मजभृत्यदाराः=पुत्र, परिजन, पत्नी से, धन्याः=सम्पन्न रहते हैं, येषाम्=जिनके प्रति, सदा अभ्युदयदा=सदा उन्नति करने वाली, भवती=आप, प्रसन्ना=प्रसन्न रहतीं हैं।।१५।।

अन्वितार्थ

समाज में वे लोग ही सम्मानित हैं, सभी प्रकार की सम्पत्तियाँ उन्हीं की हैं, सब प्रकार का यश उन्हीं को मिलता है तथा उनकी धर्म सम्मत क्रियाएँ शिथिल नहीं होतीं, वे ही पुत्र, परिजन, पत्नी से सम्पन्न रहते हैं जिनके प्रति सदा उन्नति करने वाली आप प्रसन्न रहतीं हैं।।१५।।

मन्त्र

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन।।१६।।

पदच्छेद

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माणि अत्यादृतः प्रति-दिनम् सुकृती करोति। स्वर्गम् प्रयाति च ततः भवती प्रसादात् लोक-त्रये अपि फलदा ननु देवि तेन।।१६।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे! भगवती आप जिससे प्रसन्न हों उसके, सकलानि=सम्पूर्ण, कर्माणि=कर्म, धर्म्याणि=धर्मानुकूल होते हैं, सदैव=सदा ही, अत्यादृतः= अत्यन्त आदर प्राप्त करता है, प्रतिदिनम्=प्रतिदिन, सर्वदा, सुकृती=अच्छे कार्य ही, करोति=करता है, ततः च=और इसके बाद मृत्यु के बाद,

भवती=आपकी ही, प्रसादात्=प्रसन्नता के कारण, स्वर्गम्=स्वर्ग, प्रयाति=जाता है, देवि=हे देवि!, तेन ननु=इससे स्पष्ट है कि, लोकत्रये अपि=आप तीनों ही लोकों में, फलदा=फल प्रदान करतीं हैं।।१६।।

अन्वितार्थ

हे भागवति! आप जिससे प्रसन्न हों उसके सम्पूर्ण कर्म धर्मानुकूल होते हैं। सदा ही अत्यन्त आदर प्राप्त करता है। प्रतिदिन सर्वदा अच्छे कार्य ही करता है और मृत्यु के बाद आपकी ही प्रसन्नता के कारण स्वर्ग जाता है। हे देवि! इससे स्पष्ट है कि आप तीनों में लोकों में फल प्रदान करतीं हैं।।१६।।

मन्त्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।१७।।

पदच्छेद

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम् अशेष-जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिम् अतीव शुभाम् ददासि दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वद्-अन्या सर्वोपकार-करणाय सदार्द्र-चित्ता।।१७।।

अन्वितपदार्थ

दुर्गे=हे दुर्गे आप, स्मृता=दैहिक, दैविक, भौतिक भय की अवस्था में स्मरण किए जाने पर, अशेषजन्तोः=सभी प्राणियों के, भीतिम्=भय को, हरसि=समाप्त करत्ती हैं, स्वस्थैः=आत्मनिष्ठ योगियों द्वारा, स्मृता=स्मरण किए जाने पर, अतीव शुभाम्=अत्यन्त कल्याणकारी, मतिम्=बुद्धि, ददासि=प्रदान करतीं हैं, दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि=दरिद्रता का, दुःखों का, भयसभूह का हरण करने वाली हे माता!, सर्वोपकारकरणाय=सभी प्रकार का उपकार करने के लिए, सदार्द्रचित्ता=सर्वदा करुणा से पूर्ण हृदय वाली, त्वदन्या=आपके अतिरिक्त, का=कौन है, केवल आप ही हैं।।१७।।

अन्वितार्थ

हे दुर्गे! आप दैहिक, दैविक, भौतिक भय की अवस्था में स्मरण किए जाने पर सभी प्राणियों के भय को समाप्त करतीं हैं। आत्मनिष्ठ योगियों द्वारा स्मरण किए जाने पर अत्यन्त कल्याणकारी बुद्धि प्रदान करतीं हैं। दरिद्रता का, दुःखों का, भयसमूहों का हरण करने वाली हे माता! आपके अतिरिक्त सभी प्रकार का उपकार करने के लिए सर्वदा करुणा से पूर्ण हृदय वाली कौन है? केवल आप ही हैं।।१७।।

मन्त्र

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि।।१८।।

पदच्छेद

एभिः हतैः जगद् उप-एति सुखम् तथा एते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्, संग्राम-मृत्युम् अधि-गम्य दिवम् प्रयान्तु मत्वा इति नूनम् अहितान् विनिहंसि देवि।।१८।।

अन्वितपदार्थ

एभिः हतैः=इन दैत्यों के मारे जाने पर, जगत् सुखम्=जिस प्रकार, संसार सुख, उपैति=प्राप्त करता है, तथा=उसी प्रकार, चिराय=दीर्घ काल तक, नरकाय=नरक के लिए, पापं कुर्वन्तु=पाप करते रहें। यह स्थिति थी, संग्राममृत्युम्=तथापि युद्ध में वीरगति, अधिगम्य=प्राप्त करके, दिवम्=स्वर्ग लोक में ये दैत्य भी, प्रयान्तु=जाएँ, नूनम्=अवश्य ही, इति मत्वा=यह सोचकर, देवि=हे अम्बे आप, अहितान्=सृष्टि के लिए अहितकर दैत्यों का, विनिहंसि=विनाश आप रणभूमि में करतीं हैं।।१८।।

अन्वितार्थ

इन दैत्यों के मारे जाने पर जिस प्रकार संसार सुख प्राप्त करता है, उसी

प्रकार ये सभी दैत्य दीर्घकाल तक नरक के लिए पाप करते रहें यह स्थिति थी। तथापि युद्ध में वीरगति प्राप्त करके स्वर्ग लोक में ये दैत्य भी जाएँ अवश्य ही यह सोचकर हे अम्बे! आप सृष्टि के लिए अहितकर दैत्यों का विनाश रणभूमि में करतीं हैं।।१८।।

मन्त्र

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी।।१९।।

पदच्छेद

दृष्ट्वा एव किम् न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरान् अरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम् लोकान् प्रयान्तु रिपवः अपि हि शस्त्र-पूताः इत्थम् मतिः भवति तेषु अपि ते अति-साध्वी।।१९।।

अन्वितपदार्थ

भवती=आप, सर्वान् असुरान्=सभी राक्षसों को, दृष्ट्वा एव=देखने मात्र से ही, भस्म=राख, किं न प्रकरोति=क्यों नहीं कर देतीं हैं, अरिषु=शत्रुओं पर, यत्=जो, शस्त्रम्=शस्त्र का, प्रहणोषि=प्रयोग करतीं हैं। उसका कारण यह है कि, रिपवः=शत्रुगण, अपि=भी, शस्त्रपूताः=आपके शस्त्रों से पवित्र होकर, लोकान्=दिव्यलोकों के प्रति, प्रयान्तु=जा सकें, इत्थम्=इस प्रकार की, तेषु अपि=उन शत्रुओं पर भी, ते=आपकी, अति साध्वी=अत्यन्त शुभ, कृपामयी, मतिः=भावना, भवति=होती है।।१९।।

अन्वितार्थ

आप सभी राक्षसों को देखने मात्र से ही राख क्यों नहीं कर देतीं है? शत्रुओं पर जो शस्त्र का प्रयोग करतीं हैं उसका कारण यह है कि शत्रुगण भी आपके शस्त्रों से पवित्र होकर दिव्य लोकों में जा सकें। इस प्रकार की आपकी अत्यन्त शुभ, कृपामयी भावना उन शत्रुओं पर भी होती है।।१९।।

मन्त्र

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥२०॥

पदच्छेद

खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैः तथा उग्रैः शूल-अग्र-कान्ति-निवहेन दृशः असुराणाम् यत् न आगता विलयम् अंशुमद्-इन्दु-खण्ड-योग्य-आननम् तव विलोकयताम् यद् एतत्॥२०॥

अन्वितपदार्थ

खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैः=आपके खड्ग के प्रकाश के समूहों की चमक से, उग्रैः=तीक्ष्ण, तथा=इसी प्रकार, शूल-अग्र-कान्ति-निवहेन=आपके शूल के अगले भाग या फाल की चमक के पुंज से, असुराणाम्=राक्षसों की, दृशः=आँखें, विलयम्=समाप्त, यत् न आगताः=जो नहीं हो गईं उसका कारण था कि, अंशुमदिन्दुखण्ड-योग्याननम्=पूर्ण किरणों से युक्त चन्द्रमा के रूप का खण्डन करने में समर्थ इस, तव आननम्=आपके अत्यन्त आह्लादकारक मुख को, विलोकयताम्=निरन्तर देखने वाले राक्षसों की आँखे नहीं नष्ट हो पाईं॥२०॥

अन्वितार्थ

आपके खड्ग के प्रकाश के समूहों के तीक्ष्ण चमक से, इसी प्रकार आपके शूल के अगले भाग या फाल की चमक के पुंज से राक्षसों की आँखें जो समाप्त नहीं हो गईं उसका कारण था कि, पूर्ण किरणों से युक्त चन्द्रमा के रूप का खण्डन करने में समर्थ आपके इस अत्यन्त आह्लादकारक मुख को निरन्तर देखने वाले राक्षसों की आँखें नहीं नष्ट हो पाईं॥२०॥

मन्त्र

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलम्
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणाम्
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम्॥२१॥

पदच्छेद

दुर्-वृत्त-वृत्त-शमनम् तव देवि शीलम् रूपम् तथा एतत् अविचिन्त्यम् अतुल्यम् अन्यैः वीर्यम् च हन्तृ-हृत-देव-पराक्रमाणाम् वैरिषु अपि प्रकटिता एव दया त्वया इत्थम्॥२१॥

अन्वितपदार्थ

तथा=इस प्रकार से, देवि=हे देदीप्यमान अम्बे, तव=आपका, दुर्वृत्तवृत्तशमनम्=दुष्टों की जीवनशैली समाप्त करने वाला, शीलम्=स्वभाव, एतत् च=और यह, अविचिन्त्यम्=अकल्पनीय, अन्यैः अतुल्यम्=किसी से जिसकी तुलना नहीं हो सकती, रूपम्=ऐसा रूप, हृतदेवपराक्रमाणाम्=जिन्होंने देवताओं का पराक्रम आत्मसात् कर लिया ऐसे पराक्रमी दैत्यों के, हन्तृवीर्यम्=बल का नाश करने वाली वीरता, इत्थम्=फिर भी उन्हें मुक्ति देना इस तरह तो, त्वया=आपके द्वारा, वैरिषु अपि=शत्रुओं पर भी, दया एव=दया ही, प्रकटिता=प्रदर्शित की गई॥२१॥

अन्वितार्थ

इस प्रकार हे देदीप्यमान अम्बे! आपका दुष्टों की जीवनशैली समाप्त करने वाला स्वभाव और यह अकल्पनीय रूप, जिन्होंने देवताओं का पराक्रम आत्मसात् कर लिया ऐसे पराक्रमी दैत्यों के बल का नाश करने वाली वीरता, फिर भी उन्हें मुक्ति देना इस तरह तो आपके द्वारा शत्रु पर भी दया ही प्रदर्शित की गई॥२१॥

मन्त्र

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि॥२२॥

पदच्छेद

केन उपमा भवतु ते अस्य पराक्रमस्य रूपम् च शत्रु-भय-कारि अति-हारि कुत्र चित्ते कृपा समरे निष्ठुरता च दृष्टा त्वयि एव देवि वरदे भुवन-त्रये अपि॥२२॥

अन्वितपदार्थ

ते=आपके, अस्य=इस, पराक्रमस्य=युद्धबल का, केन=किससे, उपमा=तुलना, भवतु=हो सकती है, च=और, शत्रुभयकारि=शत्रुओं के लिए भयानक, अतिहारि रूपम्=किन्तु अत्यन्त मनोहर रूप, कुत्र=कहाँ है, देवि=हे देवि, वरदे=इच्छित वरदायिनि, भुवनत्रये अपि=तीनों लोकों में भी, चित्ते कृपा=हृदय में दया, समरे निष्ठुरता=युद्ध में कठोरता, त्वयि एव=आप में ही, दृष्टा=दिखाई देती है॥२२॥

अन्वितार्थ

आपके इस युद्धबल का किससे तुलना हो सकती है और शत्रुओं के लिए भयानक किन्तु अत्यन्त मनोहर रूप कहाँ है। हे देवि! इच्छित वरदायिनि! त्तीनों लोकों में भी हृदय में दया युद्ध में कठोरता केवल आप में ही दिखाई देती है॥२२॥

मन्त्र

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते॥२३॥

पदच्छेद

त्रैलोक्यम् एतत् अखिलम् रिपु-नाशनेन त्रातम् त्वया समर-मूर्धनि ते अपि हत्वा नीताः दिवम् रिपु-गणाः भयम् अपि अपास्तम् अस्माकम् उन्मद-सुरारि-भवम् नमः ते।।२३।।

अन्वितपदार्थ

त्वया=हे अम्बे आपके द्वारा, रिपुनाशनेन=शत्रु विनाश के माध्यम से, एतत् त्रैलोक्यम्=यह तीनों लोक, त्रातम्=सुरक्षित हुए, रिपुगणाः अपि=शत्रुगण भी, समरमूर्धनि=रण स्थल में, हत्वा=मर कर, दिवम् नीताः=स्वर्ग ले जाए गए, अस्माकम्=हम सभी का, उन्मदसुरारिभवम्= मदान्ध राक्षसों द्वारा उत्पन्न, भयम्=भय, अपास्तम्=समाप्त हुआ, ते=आपको, नमः=प्रणाम समर्पित है।।२३।।

अन्वितार्थ

हे अम्बे! आपके द्वारा शत्रु विनाश के माध्यम से यह तीनों लोक सुरक्षित हुए शत्रुगण भी रणस्थल में मर कर स्वर्ग ले जाए गए। हम सभी का मदान्ध राक्षसों द्वारा उत्पन्न भय समाप्त हुआ आपको प्रणाम समर्पित है।।२३।।

मन्त्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।२४।।

पदच्छेद

शूलेन पाहि नः देवि पाहि खड्गेन च अम्बिके घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च।।२४।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि, शूलेन=अपने शूल से, खड्गेन=और खड्ग से, नः पाहि=हमारी रक्षा कीजिए, अम्बिके=हे अम्बिके, घण्टास्वनेन=घण्टा के निनाद से, चापज्या-निःस्वनेन च=धनुष के प्रत्यञ्चा की टंकार के द्वारा, नः पाहि=हमारी सुरक्षा कीजिए।।२४।।

अन्वितार्थ

हे देवि! अपने शूल से और खड्ग से हमारी रक्षा कीजिए। हे अम्बिके घण्टा के निनाद से धनुष के प्रत्यञ्चा की टण्कार के द्वारा हमारी सुरक्षा कीजिए।।२४।।

मन्त्र

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२५।।

पदच्छेद

प्राच्याम् रक्ष प्रतीच्याम् च चण्डिके रक्ष दक्षिणे भ्रामणेन आत्म-शूलस्य उत्तरस्याम् तथा ईश्वरि।।२५।।

अन्वितपदार्थ

चण्डिके=हे चण्डिका देवि, ईश्वरी=हे अधीश्वरि, आत्मशूलस्य=अपने शूल को, भ्रामणेन=चारों दिशाओं में घुमाते हुए, प्राच्याम्=पूर्व, प्रतीच्यां च=एवं पश्चिम दिशाओं में, रक्ष=हमारी रक्षा करें, दक्षिणे=दक्षिण में, तथा=इसी प्रकार, उत्तरस्यां रक्ष=उत्तर दिशाओं में रक्षा करें।।२५।।

अन्वितार्थ

हे चण्डिका देवि! हे अधीश्वरि! अपने शूल को चारों दिशाओं में घुमाते हुए पूर्व एवं पश्चिम दिशाओं में हमारी रक्षा करें। दक्षिण में इसी प्रकार उत्तर दिशाओं में रक्षा करें।।२५।।

मन्त्र

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम्।।२६।।

पदच्छेद

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते यानि च अत्यर्थ-घोराणि तैः रक्ष अस्मान् तथा भुवम्।।२६।।

अन्वितपदार्थ

ते=आपकी, यानि=जितनी, सौम्यानि=सुकोमल, रूपाणि=स्वरूप, यानि

च=तथा जितनी, अत्यर्थेन=अत्यन्त, घोराणि=कराल मूर्तियाँ, त्रैलोक्ये=तीनों लोकों में, विचरन्ति=क्रियाशील हैं, तैः=उन सभी के माध्यम से, अस्मान्=हमारी, तथा=इसी प्रकार, भुवम्=लोक की, रक्ष=रक्षा करें।।२६।।

अन्वितार्थ

आपकी जितनी सुकोमल स्वरूप तथा जितनी अत्यन्त कराल मूर्तियाँ तीनों लोकों में क्रियाशील हैं। उन सभी के माध्यम से हमारी इसी प्रकार लोक की रक्षा करें।।२६।।

मन्त्र

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।२७।।

पदच्छेद

खड्ग-शूल-गदा-आदीनि यानि च अस्त्राणि ते अम्बिके कर-पल्लव-सङ्गीनि तैः अस्मान् रक्ष सर्वतः।।२७।।

अन्वितपदार्थ

अम्बिके=हे अम्बि माता, यानि=जितने, ते=आपकी, करपल्लव-सङ्गीनि= अङ्गुलियों के साथी, खड्गशूलगदादीनि=तलवार, माला, गदा आदि, अस्त्राणि=आयुध हैं, तैः=उनके माध्यम से, अस्मान्=हमारी सभी ओर से रक्षा करें।।२७।।

अन्वितार्थ

हे अम्बे माता! जितनी आपकी अङ्गुलियों की साथी तलवार, माला, गदा आदि आयुध हैं उनके माध्यम से सभी ओर से हमारी रक्षा करें।।२७।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।२८।।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।२९।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच-एवम् स्तुता सुरैः दिव्यैः कुसुमैः नन्दनोद्भवैः अर्चिता जगताम् धात्री तथा गन्धानुलेपनैः।।२८-२९।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=मार्कण्डेय ऋषि बोले, सुरैः=देवताओं द्वारा, एवं स्तुता=इस प्रकार प्रार्थित, नन्दने=नन्दन वन में, उद्भवैः=उत्पन्न होने वाले, दिव्यैः कुसुमैः=दैवी पुष्पों, तथा=एव, गन्धैः=सुगन्ध सामग्रियों, अनुलेपनैः=दिव्य उबटनों द्वारा, अर्चिता=पूजित, जगताम्=संसार का, धात्री=पालन करने वाली।।२८-२९।।

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय ऋषि बोले- देवताओं द्वारा इस प्रकार प्रार्थित नन्दन वन में उत्पन्न होने वाले दैवी पुष्पों एवं सुगन्ध सामग्रियों, दिव्य उबटनों द्वारा पूजित संसार का पालन करने वाली-।।२८-२९।।

मन्त्र

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।३०।।

पदच्छेद

भक्त्या समस्तैः त्रिदशैः दिव्यैः धूपैः तु धूपिता प्राह प्रसाद-सुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्।।४०।।

अन्वितपदार्थ

समस्तैः=सभी, त्रिदशैः भक्त्या=देवताओं द्वारा भक्तिभाव से, दिव्यैः= देवलोक के, धूपैः=धूपन पदार्थों से, धूपिता=धूपित होकर, प्रसादसुमुखी= प्रसन्न मुख से, समस्तान्=सभी, प्रणतान्=प्रणाम के लिए विनम्र, सुराणान्= देवगणों के प्रति, प्राह=बोलीं।।३०।।

अन्वितार्थ

सभी देवताओं द्वारा भक्तिभाव से देवलोक के धूपन पदार्थों से धूपित होकर प्रसन्न मुख से प्रणाम के लिए विनम्र सभी देवगणों के प्रति बोलीं।।३०।।

मन्त्र

देव्युवाच॥३१॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्॥३२॥

पदच्छेद

देवी उवाच- व्रियताम् त्रिदशाः सर्वे यद् अस्मत्-तः अभिवाञ्छितम्॥३१-३२॥

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती बोली, सर्वे=सभी, त्रिदशाः=देवतागण, यत्=जो, अस्मत्तः=मुझसे, अभिवाञ्छितम्=प्राप्त करना चाहते हो वह, व्रियताम्=वर माँग लो॥३१-३२॥

अन्वितार्थ

भगवती बोलीं- सभी देवतागण जो मुझसे प्राप्त करना चाहते हो वह वर माँग लो॥३१-३२॥

मन्त्र

देवा ऊचुः॥३३॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते॥३४॥

पदच्छेद

देवाः ऊचुः- भगवत्या कृतम् सर्वम् न किम्-चित् अव-शिष्यते॥३३-३४॥

अन्वितपदार्थ

देवाः ऊचुः=देवतागणों ने कहा, सर्वम्=सब कुछ, भगवत्या=भगवती द्वारा, कृतम्=किया जा चुका है, किञ्चित् न=कुछ भी प्राप्तव्य नहीं, अवशिष्यते=बचा है॥३३-३४॥

अन्वितार्थ

देवतागणों ने कहा- सब कुछ भगवती द्वारा किया जा चुका है। कुछ भी प्राप्तव्य नहीं बचा है॥३३-३४॥

मन्त्र

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि॥३५॥

पदच्छेद

यत् अयम् निहतः शत्रुः अस्माकम् महिषासुरः यदि च अपि वरः देयः त्वया अस्माकम् महा-ईश्वरि।।३५।।

अन्वितपदार्थ

महेश्वरि=हे अधीश्वरि, यत्=क्योंकि, अस्माकम्=हमारा, शत्रुः=शत्रु, अयं महिषासुर=यह महिषासुर, निहतः=मारा गया उसके बाद कुछ प्राप्तव्य नहीं बचा, अपि च=तथापि, यदि=यदि, त्वया=आपके द्वारा, अस्माकम्=हमको, वरः=वर, देयः=दिया जाना है तो।।३५।।

अन्वितार्थ

हे अधीश्वरि! क्योंकि हमारा शत्रु यह महिषासुर मारा गया उसके बाद कुछ प्राप्तव्य नहीं बचा। तथापि यदि आपके द्वारा हमें वर दिया जाना है तो।।३५।।

मन्त्र

संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने।।३६।।

पदच्छेद

संस्मृता संस्मृता त्वम् नः हिंसेथाः परमापदः यः च मर्त्यः स्तवैः एभिः त्वाम् स्तोष्यति अमलानने।।३६।।

अन्वितपदार्थ

अमलानने=हे निर्मलमुखमण्डल वाली देवि, त्वम्=आप, संस्मृता=स्मरण किए जाने पर, नः=हम देवताओं का, यः च=और जो, मर्त्यः=मनुष्य, एभिः=इन, स्तवैः=स्तुतियों द्वारा, त्वाम्=आपकी, स्तोष्यति=प्रार्थना करेगा उसके द्वारा, संस्मृता=स्मरण किए जाने पर, परमापदः=कठिनतम आपत्तियों को, हिंसेथाः=नष्ट कर डालें।।३६।।

अन्वितार्थ

हे निर्मलमुखमण्डल वाली देवि! आप स्मरण किए जाने पर हम देवताओं का और जो मनुष्य इन स्तुतियों द्वारा आपकी प्रार्थना करेगा उसके द्वारा स्मरण किए जाने पर कठिनतम आपत्तियों को नष्ट कर डालें।।३६।।

मन्त्र

तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके॥३७॥

पदच्छेद

तस्य वित्त-ऋद्धि-विभवैः धन-दारा-आदि-सम्पदाम् वृद्धये अस्मत् प्रसन्ना त्वम् भवेथाः सर्वदा अम्बिके॥३७॥

अन्वितपदार्थ

अम्बिके=हे अम्बिके भगवती, अस्मात् प्रसन्ना=हम लोगों से प्रसन्न, त्वम्=आपकी, तस्य=उस भक्त के, वित्त-ऋद्धि-विभवैः=ज्ञान, सम्पत्ति, ऐश्वर्य के साथ, धनदारादिसम्पदाम्=धन, स्त्री, पुत्र, क्षेत्र आदि संपत्तियों की, वृद्धये=समृद्धि के लिए, सर्वदा=सदा कृपा, भवेथाः=बनी रहे॥३७॥

अन्वितार्थ

हे अम्बिका भगवति! हम लोगों से प्रसन्न आपकी कृपा उस भक्त के ज्ञान, सम्पत्ति, ऐश्वर्य के साथ धन, स्त्री, पुत्र, क्षेत्र आदि संपत्तियों की समृद्धि के लिए बनी रहे॥३७॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥३८॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप॥३९॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- इति प्रसादिता देवैः जगतः अर्थे तथा आत्मनः 'तथा' इति उक्त्वा भद्र-काली बभूव अन्तर्हिता नृप॥३८-३९॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच- सुमेधा ऋषि बोले, नृप=हे राजन्, जगतः=इस प्रकार जगत् के, तथा=तथा आत्मनः=अपने, अर्थे=लाभ के लिए, देवैः=देवगणों द्वारा, प्रसादिता=प्रसन्न की हुई, भद्रकाली माता, 'तथा'='ऐसा ही हो', इति उक्त्वा=यह कहकर अन्तर्धान हो गईं॥३८-३९॥

अन्वितार्थ

सुमेधा ऋषि बोले- हे राजन्! इस प्रकार जगत् के तथा अपने लिए देवगणों द्वारा प्रसन्न की हुई भद्रकाली माता **'ऐसा ही हो'** यह कहकर अन्तर्धान हो गईं।।३८-३९।।

मन्त्र

इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी।।४०।।

पदच्छेद

इति एतत् कथितम् भूप सम्भूता सा यथा पुरा। देवी देव-शरीरेभ्यः जगत्-त्रय-हितैषिणी।।४०।।

अन्वितपदार्थ

भूप=हे राजन्, सा=वह, जगत्त्रयहितैषिणी=तीनों लोकों का केवल हित करने वाली, देवी=भगवती, पुरा=प्राचीन काल में, यथा=जिस रूप में, देवानाम्=देवताओं के, शरीरेभ्यः=शरीरों से, सम्भूता=प्रकट हुई थीं, इति एतत्=यह कथा जैसे का तैसा, कथितम्=बताया गया है।।४०।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! तीनों लोकों का केवल हित करने वाली वह भगवती प्राचीन काल में जिस रूप में देवताओं के शरीरों से प्रकट हुई थीं। वह कथा जैसे का तैसा बताया गया है।।४०।।

मन्त्र

पुनश्च गौरी देहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
बधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः।।४१।।

पदच्छेद

पुनः च गौरी देहात् सा समुद्भूता यथा अभवत् बधाय दुष्टदैत्यानाम् यथा शुम्भ-निशुम्भयोः।।४१।।

अन्वितपदार्थ

पुनः च=फिर से, सा=वे महादेवी, शुम्भनिशुम्भयोः=शुम्भ निशुम्भ,

यथा=जैसे, दुष्टदैत्यानाम्=दुष्ट दानवों के, बधाय=बध के लिए, यथा=जिस प्रकार, समुद्भूता=प्रकट अभवत्=हुई थीं।।४१।।

अविन्तार्थ

फिर से वे महादेवी शुम्भ निशुम्भ जैसे दुष्ट दानवों के बध के लिए जिस प्रकार प्रकट हुई थीं।।४१।।

मन्त्र

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते।।४२।।

पदच्छेद

रक्षणाय च लोकानाम् देवानाम् उपकारिणी तत् श्रृणुष्व मया आख्यातम् यथावत् कथयामि ते।।४२।।

अन्वितपदार्थ

देवानाम्=देवताओं का, उपकारिणी=कल्याण करने वाली अम्बा, लोकानाम्=संसार के, रक्षणाय च=रक्षा के लिए जिस प्रकार प्रकट हुई थीं, मया=मैने, आख्यातम्=पूर्व में बताया है, तत्=उस वृत्तान्त को, यथावत्=ज्यों का त्यो, ते कथयामि=बता रहा हूँ, श्रृणुष्व=सुनो।।४२।।

अन्वितार्थ

देवताओं का कल्याण करने वाली अम्बा संसार के रक्षा के लिए जिस प्रकार प्रकट हुई थीं मैनें पूर्व में बताया है उस वृत्तान्त को ज्यों का त्यों बता रहा हूँ।।४२।।

।। श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देवीमाहात्म्ये शक्रादिदेवकृतस्तवनं नाम
चतुर्थः विश्रामः।।

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

विनियोगः

ॐ अस्य उत्तमचरित्रस्य रुद्रः ऋषिः, महासरस्वतीदेवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, श्रीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तमचरित्रजपे विनियोगः॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात्॥२॥

पदच्छेद

पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्याम् असुराभ्याम् शचीपतेः, त्रैलोक्यम् यज्ञ-भागाः च हृताः मद-बल-आश्रयात्॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

पुरा=प्राचीन काल में, शुम्भनिशुम्भाभ्याम्=शुम्भ और निशुम्भ नामक, असुराभ्याम्=राक्षसों द्वारा, शचीपतेः=इन्द्र से, त्रैलोक्यम्=तीनों लोक, यज्ञभागाश्च=तथा यज्ञ का भाग, मदबलस्य=मदोन्मत्तता के, आश्रयात्=कारण, हृताः=छीन लिया गया था॥१-२॥

अन्वितार्थ

प्राचीन काल में शुम्भ और निशुम्भ नामक राक्षसों द्वारा इन्द्र से तीनों लोक तथा यज्ञ का भाग मदोन्मत्तता के कारण छीन लिया गया था॥१-२॥

मन्त्र

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च॥३॥

पदच्छेद

तौ एव सूर्यताम् तद् वद् अधिकारम् तथा ऐन्दवम् कौबेरम् अथ याम्यम् च चक्राते वरुणस्य च।।३।।

अन्वितपदार्थ

तौ=उन दोनों ने, एव=ही, सूर्यताम्=सूर्यत्व पर अधिकार कर लिया, तद् वत्=इसी प्रकार, ऐन्दवम्=चन्द्रत्व, तथा=इसी प्रकार, कौबेरम्=धनपतित्व, अथ च=और, याम्यम्=मृत्यु पर, वरुणस्य च=और जलतत्त्व पर, अधिकारम्=कब्जा, चक्राते=कर लिया था।।३।।

अन्वितार्थ

उन दोनों ने ही सूर्यत्व पर अधिकार कर लिया। इसी प्रकार चन्द्रत्व, धनपतित्व, मृत्यु और जलतत्त्व पर कब्जा कर लिया था।।३।।

मन्त्र

तावेव पवनर्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः।।४।।

पदच्छेद

तौ एव पवन-ऋद्धिम् च चक्रतुः वह्नि-कर्म च ततः देवाः विनिर्धूताः भ्रष्टराज्याः पराजिताः।।४।।

अन्वितपदार्थ

तौ=उन दोनों ने, एव=ही, पवनर्द्धिम्=वायु की सम्पत्ति पर, वह्निकर्म च=और आग के जलाने की शक्ति पर, चक्रतुः=अधिकार कर लिया था। ततः=उसके बाद, पराजिताः=हारे हुए, भ्रष्टराज्याः=अपने राज्य से हीन, विनिर्धूताः=निष्कासित, देवाः=देवता गण।।४।।

अन्वितार्थ

उन दोनों ने ही वायु की सम्पत्ति और आग के जलाने की शक्ति पर अधिकार कर लिया था। उसके बाद हारे हुए, अपने राज्य से हीन, निष्कासित देवता गण।।४।।

मन्त्र

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजितम्॥५॥

पदच्छेद

हृताः अधिकाराः त्रि-दशाः ताभ्याम् सर्वे निर्-आकृताः महासुराभ्याम् ताम् देवीम् संस्मरन्ति अपराजिताम्॥५॥

अन्वितपदार्थ

तभ्याम्=उन्हीं, महासुराभ्याम्=विकट राक्षसों द्वारा, सर्वे=सभी, हृताः=छिने हुए, अधिकाराः=अधिकार वाले, निराकृताः=भगा दिए गए, त्रिदशाः= देवतागण, ताम्=उन्हीं, अपराजितम्=सदा विजेत्री, देवीम्=देवी की, संस्मरन्ति=याद कर रहे हैं॥५॥

अन्वितार्थ

उन्हीं विकट राक्षसों द्वारा सभी छिने हुए अधिकार वाले, भगा दिए गए देवतागण उन्हीं सदा विजेत्री देवी की याद कर रहे हैं॥५॥

मन्त्र

तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः॥६॥

पदच्छेद

तया अस्माकम् वरः दत्तः यथा आपत्सु स्मृता अखिलाः भवताम् नाशयिष्यामि तत् क्षणात् परमाः आपदः॥६॥

अन्वितपदार्थ

तया=देवी अपराजिता के द्वारा, अस्माकम्=हम लोगों को, वरः=वर, दत्तः=दिया गया है, यथा=कि, आपत्सु=विपत्तियों में, स्मृता=स्मरण करने पर, भवताम्=आप लोगों की, अखिला=अशेष, परमापदः=कठिनतम विपत्तियों का, तत्क्षणात्=उसीक्षण, नाशयिष्यामि=विनाश कर दूँगी॥६॥

अन्वितार्थ

देवी अपराजिता के द्वारा हम लोगों को वर दिया गया है कि, विपत्तियों में स्मरण करने पर आप लोगों की अशेष कठिनतम विपत्तियों का उसीक्षण विनाश कर दूँगी।।६।।

मन्त्र

इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः।।७।।

पदच्छेद

इति कृत्वा मतिम् देवाः हिमवन्तम् नग-ईश्वरम् जग्मुः तत्र ततः देवी विष्णु-मायाम् प्रतुष्टुवुः।।७।।

अन्वितपदार्थ

देवाः=सभी देवतागण, इति मतिम्=इस प्रकार का विचार, कृत्वा=बना कर, नगेश्वरम्=हिमालय की ओर, जग्मुः=चले गए, ततः=इसके बाद, तत्र=वहाँ, देवीम्=भगवती, विष्णुमायाम्=विष्णु की माया को, प्रतुष्टुवुः=प्रसन्न किया।।७।।

अन्वितार्थ

सभी देवता गण इस प्रकार का विचार बना कर हिमालय की ओर चले गए। इसके बाद वहाँ भगवती विष्णु की माया को प्रसन्न किया।।७।।

मन्त्र

देवा ऊचुः।।८।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।९।।

पदच्छेद

नमः देव्यै महा-देव्यै शिवायै सततम् नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।८-९।।

अन्वितपदार्थ

देव्यै=देवी को, नमः=प्रणाम, महादेव्यै=महादेवी, शिवायै=शिवा को,

सततम्=सतत, नमः=प्रणाम, भद्रायै=कल्याणकारिणी, प्रकृत्यै=प्रकृति को, नमः=प्रणाम, ताम्=उनके प्रति, नियताः=एकनिष्ठ होकर, प्रणताः=हम प्रणत, स्मः=हैं।।८-९।।

अन्वितार्थ

देवी को प्रणाम। महादेवी शिवा को सतत प्रणाम। कल्याणकारिणी प्रकृति को प्रणाम। उनके प्रति एकनिष्ठ होकर हम प्रणत हैं।।८-९।।

मन्त्र

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमोनमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः।।१०।।

पदच्छेद

रौद्रायै नमः नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमः नमः ज्योत्स्नायै च इन्दु-रूपिण्यै सुखायै सततम् नमः।।१०।।

अन्वितपदार्थ

रौद्रायै=रुद्र की शक्ति को, नमः=प्रणाम, नित्यायै=नित्य स्वरूपा, धात्र्यै=पालन करने वाली, गौर्यै=गौरी को, नमोनमः=बार-बार प्रणाम, इन्दुरूपिण्यै=चन्द्ररूपिणी, ज्योत्स्नायै=प्रकाशरूपा, च=तथा, सुखायै=सुखरूपा भगवती को, सततम्=अनवरत, नमः=प्रणाम।।१०।।

अन्वितार्थ

रुद्र की शक्ति को प्रणाम। नित्य स्वरूपा पालन करने वाली गौरी को बार-बार प्रणाम। चन्द्ररूपिणी प्रकाशरूपा तथा सुखरूपा भगवती को अनवरत प्रणाम।।१०।।

मन्त्र

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमोनमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमोनमः।।११।।

पदच्छेद

कल्याण्यै प्रणताम् वृद्ध्यै शर्वाण्यै ते नमः नमः नैर्ऋत्यै भू-भृताम् लक्ष्म्यै सिद्ध्यै कुर्मः नमः नमः।।११।।

अन्वितपदार्थ

कल्याण्यै=मङ्गलरूपिणी, प्रणताम्=शरणागत की, वृद्ध्यै=समृद्धिरूपिणी, सिद्ध्यै=सिद्धिरूपिणी, नैर्ऋत्यै=उग्रशक्ति, ते=आप को हम, नमोनमः=बार-बार प्रणाम, कुर्मः=करते हैं, भूभृताम्=राजाओं की, लक्ष्म्यै=विजयरूपिणी, शर्वाण्यै=शिवा को, नमोनमः=बार-बार प्रणाम।।११।।

अन्वितार्थ

मङ्गलरूपिणी, शरणागत की समृद्धिरूपिणी, सिद्धिरूपिणी, उग्रशक्ति आप को बार-बार हम प्रणाम करते हैं। राजाओं की विजयरूपिणी शिवा को बार-बार प्रणाम करते हैं।।११।।

मन्त्र

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः।।१२।।

पदच्छेद

दुर्गायै दुर्ग-पारायै सारायै सर्व-कारिण्यै ख्यात्यै तथा एव कृष्णायै धूम्रायै सततम् नमः।।१२।।

अन्वितपदार्थ

दुर्गायै=भगवती दुर्गा, दुर्गपारायै=संसार के दुर्गमता से पार करने वाली, सारायै=तत्त्वरूपिणी, सर्वकारिण्यै=सब कुछ करने वाली, ख्यात्यै=तत्त्वज्ञान रूपिणी देवी को, तथा एव=इसी प्रकार, कृष्णायै=कृष्ण की शक्ति, धूम्रायै=धूम्रवर्ण वाली देवी को, सततम्=अनवरत, नमः=प्रणाम।।१२।।

अन्वितार्थ

भगवती दुर्गा संसार के दुर्गमता से पार करने वाली तत्त्वरूपिणी सब कुछ करने वाली तत्त्वज्ञानरूपिणी देवी को, इसी प्रकार कृष्ण की शक्ति धूम्रवर्ण वाली देवी को अनवरत प्रणाम।।१२।।

मन्त्र

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः।
नमो जगत् प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः।।१३।।

पदच्छेद

अति-सौम्या-अति-रौद्रायै नताः तस्यै नमः नमः, नमः जगत्-प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमः नमः॥१३॥

अन्वितपदार्थ

अति सौम्यातिरौद्रायै=परम कोमल किन्तु अत्यन्त भयानक देवी के प्रति, नताः=हम सभी विनत हैं, तस्यै=उन्हें हमारा, नमोनमः=बार-बार प्रणाम, नमः जगत्-प्रतिष्ठायै=संसार की आधार शक्ति को प्रणाम, कृत्यै=व्यक्त रूपात्मिका, देव्यै=देवी को, नमोनमः=बार बार प्रणाम॥१३॥

अन्वितार्थ

परम कोमल किन्तु अत्यन्त भयानक देवी के प्रति हम सभी विनत हैं। उन्हें हमारा बार-बार प्रणाम। संसार की आधार-शक्ति को प्रणाम। व्यक्तरूपात्मिका देवी को बार-बार प्रणाम॥१३॥

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥१४-१६॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु विष्णु-माया इति शब्दिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः॥१४-१६॥

अन्वितपदार्थ

सर्वेषु=सभी, भूतेषु=प्राणियों में, या देवी=जो भगवती, विष्णुमाया= **'विष्णुमाया'**, इति=इस रूप में, शब्दिता=कही जाती हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमः-नमः=उन्हें बार-बार प्रणाम॥१४-१६॥

अन्वितार्थ

सभी प्राणियों में जो भगवती **'विष्णुमाया'** इस रूप में कही जाती हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बार-बार प्रणाम॥१४-१६॥

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१७-१९॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु चेतना इति अभि-धीयते नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः॥१७-१९॥

अन्वितपदार्थ

या=जो, देवी=भगवती, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, चेतना=***'चेतना'***, इति=रूप में, अभिधीयते=कही जाती हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमः नमः=उन्हें सतत प्रणाम॥१७-१९॥

अन्वितार्थ

जो भगवती सभी प्राणियों में **'चेतना'** रूप में कही जाती हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें सतत प्रणाम॥१७-१९॥

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२०-२२॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः॥२०-२२॥

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, बुद्धिरूपेण=**बुद्धि** रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें

प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमोनमः=उनको बार बार प्रणाम॥२०-२२॥

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्रणियों में **बुद्धि** रूप से स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बार बार प्रणाम॥२०-२२॥

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥२३-२५॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः॥२३-२५॥

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, निद्रारूपेण=**निद्रा** के रूप में, संस्थिता=स्थित हैं। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमोनमः=उनको बार बार प्रणाम है॥२३-२५॥

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **निद्रा** के रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बार बार प्रणाम है॥२३-२५॥

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥२६-२८॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता। नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः ॥२६-२८॥

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, क्षुधारूपेण=भूख रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमोनमः=बार बार प्रणाम।।२६-२८।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में भूख रूप से स्थित हैं, उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बार-बार प्रणाम।।२६-२८।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।२९-३१।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु छाया-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः ।।२९-३१।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, छायारूपेण=छाया रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उनको प्रणाम, नमोनमः=बारम्बार प्रणाम।।२९-३१।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में छाया रूप से स्थित हैं। उन्हें प्रणाम, उन्हें प्रणाम, उन्हें प्रणाम, उनको बारम्बार प्रणाम।।२९-३१।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।३२-३४।।

पदच्छेद

या दैवी सर्व-भूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः ।।३२-३४।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, शक्तिरूपेण=**शक्ति** रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उनको बार-बार प्रणाम।।३२-३४।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **शक्ति** रूप से स्थित है, उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बार बार प्रणाम।।३२-३४।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।३५-३७।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः ।।३५-३७।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्व-भूतेषु=सभी प्राणियों में, तृष्णा रूपेण=**प्यास** के रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=बारम्बार प्रणाम ।।३५-३७।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में तृष्णा रूप से स्थित है, उन्हें प्रणाम, उन्हें प्रणाम, उन्हें प्रणाम, बार बार प्रणाम ।।३५-३७।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूोण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।३८-४०।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।३८-४०।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्व-भूतेषु=सभी प्राणियों में, क्षान्ति=**सहनशक्ति**, रूपेण=रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=बारम्बार प्रणाम।।३८-४०।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **सहनशक्ति** रूप से स्थित हैं उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बारम्बार प्रणाम।।३८-४०।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।४१-४३।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।४१-४३।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वेषु=सभी, भूतेषु=प्राणियों में, जातिः=**जाति**, रूपेण=रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=बारम्बार प्रणाम।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **जाति** रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बारम्बार प्रणाम।।४१-४३।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।४४-४६।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।४४-४६।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, लज्जारूपेण=लज्जा रूप से, संस्थिता=स्थित है, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=उनको बारम्बार प्रणाम।।४४-४६।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम, उन्हें प्रणाम, उनको बारम्बार प्रणाम।।४४-४६।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।४७-४९।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।४७-४९।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्व-भूतेषु=सभी प्राणियों में, शान्ति-रूपेण=शान्ति रूप से, संस्थिता=स्थित है, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=उनको बारम्बार प्रणाम।।४७-४९।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में शान्ति रूप से स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बारम्बार प्रणाम।।४७-४९।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।५०-५२।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।५०-५२।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, श्रद्धारूपेण=**श्रद्धा** रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उनको बारम्बार प्रणाम।।५०-५२।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **श्रद्धा** रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बारम्बार प्रणाम।।५०-५२।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।५३-५५।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः।।५३-५५।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्राणियों में, कान्तिरूपेण=**कान्ति** रूप में, संस्थिता=स्थित हैं। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=उनको बारम्बार प्रणाम।।५३-५५।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **कान्ति** रूप से स्थित हैं उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बारम्बार प्रणाम।।५३-५५।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।५६-५८।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः।।५६-५८।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वेषु भूतेषु=सभी प्रणियों में, लक्ष्मीरूपेण=**समृद्धि** रूप में, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=बारम्बार प्रणाम।।५६-५८।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **समृद्धि** रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उनको बारम्बार प्रणाम।।५६-५८।।

मन्त्र

या देवी सर्वेभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।५९-६१।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः तस्यै, नमः नमः।।५९-६१।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्रणियों में, वृत्तिरूपेण=**आजीविका की शक्ति** रूप में, संस्थिता=स्थित है, तस्यै नमः=उन्हें नमस्कार, तस्यै नमः=उन्हें नमस्कार, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम। नमो नमः=उनको बारम्बार नमस्कार।।५९-६१।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **आजीविका की शक्ति** के रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बारम्बार प्रणाम।।५९-६१।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥६२-६४॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः॥६२-६४॥

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वेषु भूतेषु=सभी प्राणियों में, स्मृतिरूपेण=**स्मृति** रूप से, संस्थिता=स्थित है, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उन्हें बारम्बार प्रणाम॥६२-६४॥

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **स्मृति** रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बारम्बार प्रणाम॥६२-६४॥

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥६५-६७॥

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु दया-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः॥६५-६७॥

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वेषु भूतेषु=सभी प्राणियों में, दयारूपेण=**दया** रूप में, संस्थिता=स्थित है, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उन्हें बारम्बार प्रणाम॥६५-६७॥

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **दया** रूप में स्थित है। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बारम्बार प्रणाम।।६५-६७।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।६८-७०।।

पदच्छेद

या देवी सर्व-भूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।६८-७०।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्वभूतेषु=सभी प्रणियों में, तुष्टिरूपेण=**सन्तुष्टि** रूप में, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उन्हें बारम्बार प्रणाम।।६८-७०।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **संतुष्टि** रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बारम्बार प्रणाम।।६८-७०।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।७१-७३।।

पदच्छेद

या देवी सर्वेषु भूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।७१-७३।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्व-भूतेषु=सभी प्रणियों में, मातृ-रूपेण=**माता** के रूप से, संस्थिता=स्थित हैं। तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=बारम्बार प्रणाम।।७१-७३।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **माता** के रूप में स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बारम्बार प्रणाम।।७१-७३।।

मन्त्र

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।७४-७६।।

पदच्छेद

या देवी सर्वेषु भूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।७४-७६।।

अन्वितपदार्थ

या देवी=जो देवी, सर्व-भूतेषु=सभी प्रणियों में, भ्रान्ति-रूपेण=**भ्रम** रूप से, संस्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उन्हें बारम्बार प्रणाम।।७४-७६।।

अन्वितार्थ

जो देवी सभी प्राणियों में **भ्रम** रूप से स्थित हैं। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें बारम्बार प्रणाम।।७४-७६।।

मन्त्र

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदैव्यै नमोनमः।।७७।।

पदच्छेद

इन्द्रियाणाम् अधिष्ठात्री भूतानाम् च अखिलेषु या भूतेषु सततम् तस्यै व्याप्ति दैव्यै नमः नमः।।७७।।

अन्वितपदार्थ

या च=एवम् जो, अखिलेषु=सम्पूर्ण, भूतेषु=जीवों में, भूतानाम्=जो जीवों के, इन्द्रियाणाम्=इन्द्रिय वर्ग की, अधिष्ठात्री हैं, तस्यै व्याप्ति देव्यै=उन व्याप्ति देवी को, सततं नमो नमः=निरन्तर प्रणाम।।७७।।

अन्वितार्थ

एवम् जो सम्पूर्ण जीवों में जो जीवों के इन्द्रिय वर्ग की अधिष्ठात्री हैं उन व्याप्ति देवी को निरन्तर प्रणाम।।७७।।

मन्त्र

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।७८-८०।।

पदच्छेद

चिति-रूपेण या कृत्स्नम् एतद् व्याप्य स्थिता जगत् नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमः नमः।।७८-८०।।

अन्वितपदार्थ

या चितिरूपेण=जो देवी **चित्-शक्ति** रूप से, एतत् कृत्स्नम्=इस सम्पूर्ण, जगद् व्याप्य=जगत् को व्याप्त करके, स्थिता=स्थित हैं, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, तस्यै नमः=उन्हें प्रणाम, नमो नमः=उन्हें बारम्बार प्रणाम।।७८-८०।।

अन्वितार्थ

जो देवी **चित् शक्ति** रूप से इस सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करके स्थित हैं उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम। उन्हें प्रणाम, उन्हें बारम्बार प्रणाम।।७८-८०।।

मन्त्र

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।।८१।।

पदच्छेद

स्तुता सुरैः पूर्वम् अभि-इष्ट-संश्रयात् तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता करोतु सा नः शुभहेतुः ईश्वरी शुभानि भद्राणि अभिहन्तु च आपदः।।८१।।

अन्वितपदार्थ

पूर्वम्=प्राचीन काल में, अभीष्ट-संश्रयात्=इच्छित फल के लिए जिनकी,

स्तुता=प्रार्थना की गई थी, तथा=तथा, सुरेन्द्रेण=इन्द्र के द्वारा, दिनेषु=बहुत दिनों तक, सेविता=पूजित थीं, सा=वह, ईश्वरी=सबकी स्वामिनी, नः=हमारे, शुभहेतुः=शुभ का कारण, करोतु=निर्मित करें, शुभानि भद्राणि=शुभ एवं कल्याण करें, आपदः च=तथा आपत्तियों का, अभिहन्तु=विनाश करें।।८१।।

अन्वितार्थ

प्राचीन काल में इच्छित फल के लिए जिनकी प्रार्थना की गई थी। तथा इन्द्र के द्वारा जो बहुत दिनों तक पूजित थीं। वह सबकी स्वामिनी हमारे शुभ का कारण निर्मित करें। हमारा शुभ एवं कल्याण करें तथा आपत्तियों का विनाश करें।।८१।।

मन्त्र

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
सा च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।।८२।।

पदच्छेद

या साम्प्रतम् च उद्धत-दैत्य-तापितैः अस्माभिः ईशा च सुरैः नमस्यते सा च स्मृता तत्-क्षणम् एव हन्ति नः सर्वाः आपदः भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः।।८२।।

अन्वितपदार्थ

साम्प्रतम्=इस समय, उद्धत-दैत्य-तापितैः=उद्दण्ड राक्षसों द्वारा पीड़ित, अस्माभिः=हम, सुरैः या=देवताओं द्वारा जो, नमस्यते=नमस्कृत हैं, सा च=वही देवी, भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः=भक्ति से झुके हुए गात्र वाले हम देवताओं द्वारा, स्मृता=याद किए जाने पर, नः=हमारी, सर्वाः=सभी, आपदः=आपत्तियों को, तत्क्षणम्=उसी क्षण, हन्ति=नष्ट करेंगीं ।।८२।।

अन्वितार्थ

इस समय उद्दण्ड राक्षसों द्वारा पीड़ित हम देवताओं द्वारा जो नमस्कृत हैं। वही देवी भक्ति से झुके हुए गात्र वाले हम देवताओं द्वारा याद किए जाने पर हमारी सभी आपत्तियों को उसी क्षण नष्ट करेंगीं ॥८२॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन॥८४॥

पदच्छेद

ऋषिः एवं स्तव-आदिभिः युक्तानाम् देवानाम् तत्र पार्वती स्नातुम् अभि आययौ तोये जाह्नव्याः नृपनन्दन॥८३-८४॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=मार्कण्डेय ऋषि बोले, नृपनन्दन=हे राजन्, तत्र=वहाँ, एवं=इस प्रकार, स्तवादियुक्तानाम्=स्तुति, विनय, शरणागति आदि से युक्त, देवानाम्=देवताओं के प्रति, अभि जाह्नव्याः=गङ्गा की ओर, तोये स्नातुम्=जल में स्नानार्थ, पार्वती=भगवती पार्वती, आययौ=आ पहुँची॥८३-८४॥

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय ऋषि बोले- हे राजन्! वहाँ इस प्रकार स्तुति, विनय, शरणागति आदि से युक्त देवताओं की ओर गङ्गा के जल में स्नानार्थ भगवती पार्वती आ पहुँची॥८३-८४॥

मन्त्र

साऽब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा॥८५॥

पदच्छेद

या अब्रवीत् तान् सुरान् सुभ्रूः भवद्भिः स्तूयते अत्र का। शरीर-कोशतः च अस्याः समुद्भूता अब्रवीत् शिवा॥८५॥

अन्वितपदार्थ

सा=वह देवी, तान् सुरान्=उन देवताओं से, अब्रवीत्=बोली, भवद्भिः=आप लोगों के द्वारा, अत्र=यहाँ, का स्तूयते=किसकी स्तुति हो रही है, अस्याः=तभी पार्वती के, शरीरकोशतः=शरीर के कोश से, समुद्भूता=उत्पन्न वह, सुभ्रूः=सुन्दर भ्रकुटि वाली सुन्दरी, शिवा=शिव की शक्ति अब्रवीत्=बोल पड़ीं।।८५।।

अन्वितार्थ

वह देवी उन देवताओं से बोली आप लोगों के द्वारा यहाँ किसकी स्तुति हो रही है। तभी पार्वती के शरीर के कोश से उत्पन्न वह सुन्दर भ्रकुटि वाली सुन्दरी शिव की शक्ति बोल पड़ीं।।८५।।

मन्त्र

स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।८६।।

पदच्छेद

स्तोत्रम् मम एतत् क्रियते शुम्भेन दैत्य-निराकृतैः देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः।।८६।।

अन्वितपदार्थ

एतत्=इस, समरे=युद्ध में, समेतैः=एक साथ, निशुम्भेन=निशुम्भ से, पराजितैः=पराजित, शुम्भदैत्यनिराकृतैः=शुम्भदैत्य से अपमानित, दैवः= देवताओं द्वारा, एतत्=यह, मम=मेरी, स्तोत्रम्=स्तुति, क्रियते=की जा रही है।।८६।।

अन्वितार्थ

इस युद्ध में एक साथ निशुम्भ से पराजित शुम्भदैत्य से अपमानित देवताओं द्वारा यह मेरी स्तुति की जा रही है।।८६।।

मन्त्र

शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।८७।।

पदच्छेद

शरीरस्य कोशाद् यत् तस्याः पार्वत्याः निःसृता अम्बिका कौशिकी इति समस्तेषु ततः लोकेषु गीयते।।८७।।

अन्वितपदार्थ

यतः अम्बिका=क्योंकि अम्बिका रुद्र की शक्ति, तस्या=उन, पार्वत्याः= पार्वती देवी के, शरीरस्यः=शरीर के, कोशात्=कोश से, निःसृता=निकलीं, ततः=इस कारण, समस्तेषु=सम्पूर्ण, लोकेषु=लोकों में, कौशिकी= 'कौशिकी' इति=इस नाम से, गीयते=प्रसिद्ध है।।८७।।

अन्वितार्थ

क्योंकि अम्बिका रुद्र की शक्ति उन पार्वती देवी के शरीर के कोश से निकलीं इस कारण सम्पूर्ण लोकों में 'कौशिकी' इस नाम से प्रसिद्ध है।।८७।।

मन्त्र

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत् सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमालचकृताश्रया।।८८।।

पदच्छेद

तस्याम् विनिर्गतायाम् तु कृष्णा अभूत् सा अपि पार्वती कालिका इति हिमाचले कृताश्रया।।८८।।

अन्वितपदार्थ

पार्वती=पार्वती, तस्याम्=उन अम्बिका के, विनिर्गतायाम्=उत्पन्न होने के बाद, कृष्णा अभूत्=काले वर्ण की हो गई, सा अपि=वे भी, हिमाचले=हिमाचल में, कृताश्रया=वास करती हुई, कालिका इति='कालिका' इस नाम से, समाख्याता=सम्बोधित की गई।।८८।।

अन्वितार्थ

पार्वती उन अम्बिका के उत्पन्न होने के बाद काले वर्ण की हो गई। वे भी हिमाचल में वास करती हुई कालिका नाम से सम्बोधित की गईं।।८८।।

मन्त्र

ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः।।८९।।

पदच्छेद

ततः अम्बिकाम् परम् रूपम् बिभ्राणाम् सुमनोहरम् ददर्श चण्डः मुण्डः च भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भयोः।।८९।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, शुम्भ-निशुम्भयोः=शुम्भ-निशुम्भ के, चण्डः मुण्डः च=चण्ड तथा मुण्ड नामक, भृत्यौ=नौकरों ने, सुमनोहरम्=अत्यन्त मनोहारी, परम्=उत्तम, रूपम्=रूप, बिभ्राणाम्=प्रकाशित करने वाली, अम्बिकाम्=अम्बिका को, ददर्श=देखा।८९।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् शुम्भ-निशुम्भ के चण्ड तथा मुण्ड नामक नौकरों ने अत्यन्त मनोहारी उत्तम रूप प्रकाशित करने वाली अम्बिका को देखा।८९।।

मन्त्र

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९०।।

पदच्छेद

ताभ्याम् शुम्भाय च आख्याता सा अति-इव सुमनोहरा का अपि आस्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्।।९०।।

अन्वितपदार्थ

ताभ्यां च=और उन दोनों द्वारा, शुम्भाय=शुम्भ के प्रति, आख्याता=वर्णित

हुई कि, महाराज=हे महाराज!, कापि=कोई, अतीव=अत्यन्त, सुमनोहरा= सुन्दरी, स्त्री=नारी, आस्ते=है, सा हिमाचलम्=वह हिमालय को अपनी कान्ति से, भासयन्ती वर्तते=प्रकाशित करती हुई विराजमान है।।९०।।

अन्वितार्थ

और उन दोनों द्वारा शुम्भ के समक्ष वर्णित हुई कि, हे महाराज! कोई अत्यन्त सुन्दरी नारी है। वह हिमालय को अपनी कान्ति से प्रकाशित करती हुई विराजमान है।।९०।।

मन्त्र

नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर।।९१।।

पदच्छेद

न एव तादृक् क्वचित् रूपम् दृष्टम् केन-चिद् उत्तमम् ज्ञायताम् कापि असौ देवी गृह्यताम् च असुरेश्वर।।९१।।

अन्वितपदार्थ

तादृक्=उस तरह का, उत्तमम्=उत्तम, रूपम्=सौन्दर्य, क्वचित्=किसी के द्वारा, न एव=नहीं, दृष्टम्=देखा गया है, असुरेश्वर=हे राक्षसराज, असौ=वह, देवी अपि=देवी भी, का=कौन है, ज्ञायताम्=कृपया पता लगाइए, गृह्यताम् च=एवं उसको ग्रहण कर लीजिए।।९१।।

अन्वितार्थ

उस तरह का उत्तम सौन्दर्य किसी के द्वारा नहीं देखा गया है। हे राक्षसराज! वह देवी कौन है? कृपया पता लगाइए एवं उसको ग्रहण कर लीजिए।।९१।।

मन्त्र

स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति।।९२।।

पदच्छेद

स्त्री-रत्नम् अति चारु-अङ्गी द्योतयन्ती दिशः त्विषा सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र ताम् भवान् द्रष्टुम् अर्हति।।९२।।

अन्वितपदार्थ

दैत्येन्द्र=है दैत्यराज, सा=वह, स्त्रीरत्नम्=श्रेष्ठ स्त्री, अतिचार्वङ्गी=अत्यन्त सुन्दर अङ्गों वाली, त्विषा दिशः=दिशाओं को अपनी कान्ति से, द्योतयन्ती तु=भासित करती हुई, तिष्ठति=विराजमान है। भवान्=आप, ताम्=उसे, द्रष्टुम्=देखने की, अर्हति=योग्यता रखते हैं।।९२।।

अन्वितार्थ

हे दैत्यराज! वह श्रेष्ठ स्त्री अत्यन्त सुन्दर अङ्गों वाली दिशाओं को अपनी कान्ति से भासित करती हुई विराजमान है। आप उसे देखने की योग्यता रखते हैं।।९२।।

मन्त्र

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे।।९३।।

पदच्छेद

यानि रत्नानि मणयः गज-अश्व-आदीनि वै प्रभो त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतम् भान्ति ते गृहे।।९३।।

अन्वितपदार्थ

प्रभो=हे स्वामी, गजाश्वादीनि=हाथी घोड़े आदि, मणयः=मणियाँ, यानि=जितनी भी, रत्नानि=श्रेष्ठ वस्तुएँ, त्रैलोक्ये=तीनों लोकों में हैं, साम्प्रतम्=इस समय, समस्तानि=सभी, ते गृहे=आपके घर में, भान्ति=सुशोभित हो रही है।।९३।।

अन्वितार्थ

हे स्वामी! हाथी, घोड़े आदि मणियाँ जितनी भी श्रेष्ठ वस्तुएँ तीनों लोकों में हैं। इस समय सभी आपके घर में सुशोभित हो रही है।।९३।।

मन्त्र

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः॥९४॥

पदच्छेद

ऐरावतः समानीतः गज-रत्नम् पुरन्दरात् पारिजात-तरुः च अयम् तथा एव उच्चैःश्रवा हयः॥९४॥

अन्वितपदार्थ

पुरन्दरात्=इन्द्र से, गजरत्नम्=गजश्रेष्ठ, ऐरावतः=ऐरावत, अयम्=यह, पारिजाततरु=कल्पवृक्ष, च तथा एव=और इसी प्रकार, उच्चैःश्रवा= 'उच्चैःश्रवा' नामक, हयः=घोड़ा, समानीतः=लाया जा चुका है॥९४॥

अन्वितार्थ

इन्द्र से गजश्रेष्ठ ऐरावत, यह कल्पवृक्ष और इसी प्रकार 'उच्चैःश्रवा' नामक घोड़ा लाया जा चुका है॥९४॥

मन्त्र

विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम्॥९५॥

पदच्छेद

विमानम् हंस-संयुक्तम् एतत् तिष्ठति ते अङ्गणे रत्न-भूतम् इह आ-नीतम् यद् आसीत् वेधसः अद्भुतम्॥९५॥

अन्वितपदार्थ

यत्=वह जो, वेधसः विधाता का, हंससंयुक्तम्=हंस जुता हुआ, रत्नभूतम्=रत्नस्वरूप, अद्भुतम्=चमत्कारकारी, विमानम्=आकाशगामी यान, आसीत्=था, इह=यहाँ, आनीतम्=लाया जा चुका है, एतत्=यह, ते=आपके, अङ्गणे=आँगन में, तिष्ठति=रखा हुआ है॥९५॥

अन्वितार्थ

वह जो विधाता ब्रह्मा का हंस जुता हुआ रत्नस्वरूप चमत्कारकारी विमान था। वह यहाँ लाया जा चुका है, यह आपके आँगन में रखा हुआहै॥९५॥

मन्त्र

निधिरेषः महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्।।९६।।

पदच्छेद

निधिः एषः महापद्मः समानीतः धनेश्वरात् किञ्जल्किनीं ददौ च अब्धिः मालाम् अम्लान-पङ्कजाम्।।९६।।

अन्वितपदार्थ

एषः=यह 'महापद्म' नामक, निधिः=दुर्लभ खजाना, धनेश्वरात्=कुबेर के पास से, समानीतः=लाया जा चुका है। अब्धिः=समुद्र ने, अम्लान-पङ्कजाम्=कभी न कुँभलाने वाले कमलों एव, किञ्जल्किनीम्=केसरों से युक्त, मालाम्=माला, ददौ=आपको दे दिया।।९६।।

अन्वितार्थ

यह 'महापद्म' नामक दुर्लभ खजाना कुबेर के पास ले जाया जा चुका है। समुद्र ने कभी न कुँभलाने वाले कमलों एवं केसरों से युक्त माला दे दिया।।९६।।

मन्त्र

छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽसीत्प्रजापतेः।।९७।।

पदच्छेद

छत्रम् ते वारुणम् गेहे काञ्चन-स्त्रावि तिष्ठति, तथा अयम् स्यन्दन-वरः यः पुरा आसीत् प्रजापतेः।।९७।।

अन्वितपदार्थ

काञ्चनस्त्रावि=सोने की वर्षा करने वाला, वारुणम्=वरुण देवता का, छत्रम्=छत्र, तथा=और, अयम्=यह, स्यन्दनवरः=उत्तम रथ, यः=जो, पुरा=पहले, प्रजापतेः=ब्रह्मा का, आसीत्=हुआ करता था, ते=आपके, गेहे=घर में, तिष्ठति=रखा है।।९७।।

अन्वितार्थ

सोने की वर्षा करने वाला वरुण देवता का छत्र और यह उत्तम रथ जो पहले ब्रह्मा का हुआ करता था। आपके घर में रखा है।।९७।।

मन्त्र

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे।।९८।।

पदच्छेद

मृत्योः उत्-क्रान्ति-दा नाम शक्तिः ईश त्वया हृता पाशः सलिल-राजस्य भ्रातुः तव परिग्रहे।।९८।।

अन्वितपदार्थ

ईश=हे स्वामी, मृत्योः=यम की, उत्क्रान्तिदा नाम='उत्क्रान्तिदा' नाम वाली, शक्तिः=कटार, त्वया=आपके द्वारा, हृता=छीन ली गई, सलिलराजस्य=सागरराज का, पाशः=फन्दा, तव=आपके, भ्रातुः=भाई निशुम्भ के, परिग्रहे=हाथों में है।।९८।।

अन्वितार्थ

हे स्वामी! यम की 'उत्क्रान्तिदा' नाम वाली कटार आपके द्वारा छीन ली गई सागरराज का फन्दा आपके भाई निशुम्भ के हाथों में है।।९८।।

मन्त्र

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निश्चापि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी।।९९।।

पदच्छेद

निशुम्भस्य अब्धि-जाताः च समस्ताः रत्न-जातयः वह्निः च अपि ददौ तुभ्यम् अग्नि-शौचे व वाससी।।९९।।

अन्वितपदार्थ

अब्धिजाताः च=और सागर से उत्पन्न, समस्ताः=सभी, रत्नजातयः= रत्नसमूह, निशुम्भस्य=निशुम्भ के कब्जे में हैं, अपि च=इसके अतिरिक्त,

वह्निः=अग्नि देव ने, अग्निशौचे=अग्नि द्वारा विशोधित परमनिर्मल, वाससी च=वस्त्रों का जोड़ा, ददौ=दिया है।।९९।।

अन्वितार्थ

और सागर से उत्पन्न सभी रत्नसमूह निशुम्भ के कब्जे में हैं। इसके अतिरिक्त अग्नि देव ने अग्निद्वारा विशोधित परमनिर्मल वस्त्रों का जोड़ा दिया है।।९९।।

मन्त्र

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।।१००।।

पदच्छेद

एवम् दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तानि आहृतानि ते स्त्रीरत्नम् एषा कल्याणी त्वया कस्मात् न गृह्यते।।१००।।

अन्वितपदार्थ

दैत्येन्द्र=हे राक्षसराज, एवम्=इस प्रकार, समस्तानि=सम्पूर्ण, रत्नानि=रत्न, ते=आप तक, आहृतानि=आ चुके हैं, एषा कल्याणी=यह सुन्दरी, स्त्रीरत्नम्=स्त्रियों में श्रेष्ठ, त्वया=तुम्हारे द्वारा, कस्मात्=क्यों, न=नहीं, गृह्यते=ग्रहण की जाती।।१००।।

अन्वितार्थ

हे राक्षस राज! इस प्रकार सम्पूर्ण रत्न आप तक आ चुके हैं। यह स्त्रियों में श्रेष्ठ सुन्दरी तुम्हारे द्वारा क्यों नहीं ग्रहण की जाती है।।१००।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।१०१।।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम्।।१०२।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- निशम्य इति वचः शुम्भः सः तदा चण्ड-मुण्डयोः प्रेषयामास सुग्रीवम् दूतम् देव्या महासुरम्।।१०१-१०२।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, सः शुम्भः=उस शुम्भ ने, इति चण्डमुण्डयोः वचः=चण्ड-मुण्ड से इस प्रकार के वचन, निशम्य=सुनकर, महासुरम्=महाराक्षस, सुग्रीवम्=सुग्रीव को, दूतम्=दूत के रूप में, देव्या=देवी की ओर, प्रेषयामास=भेजा।।१०१-१०२।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- उस शुम्भ ने चण्ड-मुण्ड से इस प्रकार के वचन सुनकर महाराक्षस सुग्रीव को दूत के रूप में देवी की ओर भेजा।१०१-१०२।।

मन्त्र

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु।।१०३।।

पदच्छेद

इति च इति च वक्तव्या सा गत्वा वचनात् मम यथा च अभि-एति सम्प्रीत्या तथा कार्यम् त्वया लघु।।१०३।।

अन्वितपदार्थ

मम=मेरे, वचनात्=आदेशानुसार, गत्वा=जाकर, इति च इति च=इस-इस प्रकार से, सा=उसे, वक्तव्या=बताया जाय, यथा च=और जैसे भी, सम्प्रीत्या=प्रेमपूर्वक, लघु अभ्येति=तुरन्त आ जाए, तथा=वैसा, त्वया=तुम्हारे द्वारा, कार्यम्=किया जाना है।।१०३।।

अन्वितार्थ

मेरे आदेशानुसार जाकर इस-इस प्रकार से उसे बताया जाय। और जैसे भी प्रेम पूर्वक तुरन्त आ जाए वैसा उपाय तुम्हारे द्वारा किया जाना है।।१०३।।

मन्त्र

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा।।१०४।।

पदच्छेद

सः तत्र गत्वा यत्र आस्ते शैल-उद्देशे अति शोभने सा देवी ताम् ततः प्राह श्लक्ष्णम् मधुरया गिरा।।१०४।।

अन्वितपदार्थ

सः=वह दूत, अतिशोभने=अत्यन्त शोभायमान, शैलानाम्=पहाड़ों के, उद्देशे=प्रदेश में, यत्र=जहाँ, सा देवी=वह देवी, आस्ते=विराजमान थीं, तत्र गत्वा=वहाँ जाकर, ताम्=उनसे, मधुरया=मीठी, गिरा=वाणी में, श्लक्ष्णम्=चिकनी-चुपड़ी बातें, प्राह=कहने लगा।।१०४।।

अन्वितार्थ

वह दूत अत्यन्त शोभायमान पहाड़ों के प्रदेश में जहाँ वह देवी विराजमान थी, वहाँ जाकर उसने मीठी वाणी में चिकनी-चुपड़ी बातें कहने लगा।।१०४।।

मन्त्र

दूत उवाच।।१०५।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः।।१०६।।

पदच्छेद

दूतः उवाच- देवि दैत्य-ईश्वरः शुम्भः त्रैलोक्ये परम-ईश्वरः दूतः अहम् तेन त्वत् सकाशम् इहः आगतः।।१०६।।

अन्वितपदार्थ

दूतः उवाच=दूत बोला, देवि=हे देवि, त्रैलोक्ये=तीनों लोकों में, परमेश्वरः=परमोच्च स्वामी, दैत्येश्वरः=दैत्याधिराज, शुम्भः=शुम्भ हैं, तेन=उनके द्वारा, प्रेषितः=भेजा गया, दूतः=संदेशवाहक, अहम्=मैं सुग्रीव, त्वत्=आपके, सकाशम्=पास, इह=यहाँ, आगतः=आया हूँ।।१०६।।

अन्वितार्थ

दूत बोला- हे देवि! तीनों लोकों में परमोच्च स्वामी दैत्याधिराज शुम्भ हैं उनके द्वारा प्रेषित दूत मैं सुग्रीव आपके पास आया हूँ।।१०६।।

मन्त्र

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।१०७।।

पदच्छेद

अव्याहत-आज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु निर्जित-अखिल-दैत्य-अरिः सः यद् आह श्रृणुष्व तत्।।१०७।।

अन्वितपदार्थ

यः=जो, सदा=सदा, सर्वासु=सभी यक्ष, किन्नर, गन्धर्व आदि, देवयोनिषु=देवयोनियों पर, अव्याहताज्ञः=अकाट्य आदेश पारित करते हैं, निर्जिताखिलदैत्यारिः=सारे असुरद्रोहियों के विजेता हैं, सः=उन्होंने, यत्=जो, आह=कहा है, तत्=उसे, श्रृणुष्व=सुनो।।१०७।।

अन्वितार्थ

जो सदा सभी यक्ष, किन्नर, गन्धर्व आदि देवयोनियों पर अकाट्य आदेश पारित करते हैं। सारे असुरद्रोहियों के विजेता हैं। उन्होंने जो कहा है उसे सुनो।।१०७।।

मन्त्र

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक्-पृथक्।।१०८।।

पदच्छेद

मम त्रैलोक्यम् अखिलम् मम देवाः वशाः अनुगाः यज्ञ-भागान् अहं सर्वान् उप-अश्नामि पृथक्-पृथक्।।१०८।।

अन्वितपदार्थ

अखिलम्=सम्पूर्ण, त्रैलोक्यम्=तीनों लोक, मम=मेरे अधिकार में है, देवाः=देववृन्द, मम=मेरे, वशाः=वशवर्ती, अनुगाः=अनुचर हैं, सर्वान्=सभी प्रकार के, यज्ञभागान्=यज्ञ के भागों को, पृथक्-पृथक्=अलग-अलग सभी देवों के स्थान पर, उपाश्नामि=मैं ही भक्षण करता हूँ।।१०८।।

अन्वितार्थ

सम्पूर्ण तीनों लोक मेरे अधिकार में है। देववृन्द मेरे वशवर्ती हैं तथा अनुचर हैं। सभी प्रकार के यज्ञ के भागों को अलग-अगल सभी देवों के स्थान पर मैं ही भक्षण करता हूँ।।१०८।।

मन्त्र

त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम्।।१०९।।

पदच्छेद

त्रैलोक्य-वर-रत्नानि मम वश्यानि अशेषत् तथा एव गज-रत्नम् च हृतम् देवेन्द्र-वाहनम्।।१०९।।

अन्वितपदार्थ

त्रैलोक्ये=तीनों लोकों में, अशेषतः=सभी, वररत्नानि=श्रेष्ठ रत्न, मम वश्यानि=मेरे वश में हैं, देवेन्द्रवाहनम्=देवराज का वाहन, गजरत्नम्=श्रेष्ठ हाथी ऐरावत भी, तथा एव=उसी प्रकार, हृतम्=छीना जा चुका है।।१०९।।

अन्वितार्थ

तीनों लोकों में सभी श्रेष्ठ रत्न मेरे वश में हैं। देवराज का वाहन श्रेष्ठ हाथी ऐरावत भी उसी प्रकार छीना जा चुका है।।१०९।।

मन्त्र

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैः श्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्।।११०।।

पदच्छेद

क्षीरोद-मथन-उद्-भूतम् अश्व-रत्नम् मम अमरैः उच्चैःश्रवस-संज्ञम् तद् प्रणिपत्य समर्पितम्।।११०।।

अन्वितपदार्थ

अमरैः=देवताओं द्वारा, क्षीरोदमथनोद्भूतम्=क्षीरसागर के मन्थन से उत्पन्न, उच्चैःश्रवससंज्ञम्=उच्चैःश्रवा नामक, तत्=वह, अश्वरत्नम्=श्रेष्ठ घोड़ा,

प्रणिपत्य=मेरे पैरों पर गिरकर, समर्पितम्=समर्पित किया जा चुका है।।११०।।

अन्वितार्थ

देवताओं द्वारा क्षीरसागर के मन्थन से उत्पन्न उच्चैःश्रवा नामक वह श्रेष्ठ घोड़ा मेरे पैरों पर गिरकर समर्पित किया जा चुका है।।११०।।

मन्त्र

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।।१११।।

पदच्छेद

यानि व अन्यानि देवेषु गन्धर्वेषु उरगेषु च रत्नभूतानि भूतानि तानि मयि एव शोभने।।१११।।

अन्वितपदार्थ

शोभने=हे सुन्दरि, यानि च=और जितने, देवेषु=देवताओं, गन्धर्वेषु=गन्धर्वों, उरगेषु च=तथा नागों के अधिकार में, रत्नभूतानि=रत्न के रूप में, भूतानि=वस्तुएँ थी, तानि=ये सभी, मयि एव=मेरे ही अधिकार में हैं।।१११।।

अन्वितार्थ

हे सुन्दरि! और जितने देवताओं गन्धर्वों तथा नागों के अधिकार में रत्न के रूप में वस्तुएँ थीं वे सभी मेरे पास ही अधिकार में हैं।।१११।।

मन्त्र

स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्।।११२।।

पदच्छेद

स्त्री-रत्नभूताम् त्वाम् देवि लोके मन्यामहे वयम् सा त्वम् अस्मान् उप-आगच्छ यतः रत्नभुजः वयम्।।११२।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि, वयम्=हम लोग, लोके=संसार में, त्वाम्=तुमको, स्त्रीरत्नभूताम्=स्त्रियों में रत्नस्वरूपिणी, मन्यामहे=मानते हैं, सा त्वम्=रत्नरूपिणी तुम, अस्मान्=हमारे, उपागच्छ=पास आ जाओ, यतः=क्योंकि, वयम्=हमी लोग, रत्नभुजः=सभी रत्नों के भोक्ता हैं।।११२।।

अन्वितार्थ

हे देवि! हम लोग संसार में तुमको स्त्रियों में रत्नस्वरूपिणी मानते हैं। रत्नस्वरूपिणी तुम हमारे पास आ जाओ। क्योंकि हमी लोग सभी रत्नों के भोक्ता हैं।।११२।।

मन्त्र

मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः।।११३।।

पदच्छेद

माम् वा मम अनुजम् वा अपि निशुम्भम् उरु विक्रमम् भज त्वम् चञ्चल-अपाङ्गि रत्नभूता असि वै यतः।।११३।।

अन्वितपदार्थ

चञ्चलापाङ्गि=हे चञ्चल नयनान्तों वाली सुन्दरी, मम उरुविक्रमम्=मेरे महापराक्रमी, अनुजम्=छोटे भाई, निशुम्भम्=निशुम्भ को, माम् वा=अथवा मुझे, त्वम्=तुम, भज=आश्रय बना लो, यतः वै=क्योंकि, रत्नभूता=तुम भी रत्नरूपा, असि=हो।।११३।।

अन्तिार्थ

मेरे महापराक्रमी छोटे भाई निशुम्भ को या मुझे चञ्चल नयनान्तों वाली सुन्दरी तुम आश्रय बना लो। क्योंकि तुम भी रत्नरूपा हो।।११३।।

मन्त्र

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज।।११४।।

पदच्छेद

परम ऐश्वर्यम् अतुलम् प्राप्स्यसे मत् परिग्रहात् एतत् बुद्ध्या समालोच्य मत् परिग्रहताम् व्रज।।११४।।

अन्वितपदार्थ

मत्=मेरे, परिग्रहात्=आश्रित रहने पर, अतुलम्=अतुलनीय, परमैश्वर्यम्=सर्वोच्च सम्पदाओं को, प्राप्स्यसे=पा सकोगी, एतत्=यह सब, बुद्ध्या=बुद्धि पूर्वक, समालोच्य=विचार करके, मत् परिग्रहताम्=मेरे आश्रय में, व्रज=आ जाओ।।११४।।

अन्वितार्थ

मेरे आश्रित रहने पर अतुलनीय सर्वोच्च सम्पदाओं को पा सकोगी। यह सब बुद्धि पूर्वक विचार करके मेरे आश्रय में आ जाओ।।११४।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच:।।११५।।

इत्युक्ता सा तदा देवी गभीरान्तः स्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत्।।११६।।

पदच्छेद

ऋषि: उवाच- इति उक्ता सा सदा देवी गभीरा अन्त:-स्मिता जगौ दुर्गा भगवती भद्रा यया इदम् धार्यते जगत्।।११५-११६।।

अन्वितपदार्थ

ऋषि: उवाच=ऋषि ने कहा कि, तदा=उस अवसर पर, इति उक्ता=इस प्रकार सन्देश पाने पर, यया=जिनके द्वारा, इदम्=यह, जगत्=जगत्, गभीरा=गम्भीर स्वभाव वाली, अन्त:स्मिता=मन में मुस्कराती हुई, भगवती=भगवती, भद्रा दुर्गा=भद्रकाली दुर्गा, देवी=देवी, जगौ=बोली।।११५-११६।।

अन्वितार्थ

ऋषि ने कहा कि, उस अवसर पर इस प्रकार सन्देश पाने पर जिनके द्वारा यह जगत् धारण किया जाता है। वह गम्भीर स्वभाव वाली, मन में मुस्काती हुई भगवती भद्रकालीदुर्गा देवी बोलीं।।११५-११६।।

मन्त्र

देव्युवाच।।११७।।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम्।
त्रैलोक्यस्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः।।११८।।

पदच्छेद

देवी उवाच- सत्यम् उक्तम् त्वया न अत्र मिथ्या किञ्चित् त्वया उदितम् त्रैलोक्यस्य अधिपतिः शुम्भः निशुम्भः च अपि तादृशः।।११७-११८।।

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=देवी ने कहा, त्वया=तुम्हारे द्वारा, सत्यम्=सच, उक्तम्=कहा गया है, शुम्भः=शुम्भः, त्रैलोक्य=तीनों लोकों का, अधिपतिः=स्वामी है, च=तथा, निशुम्भः च अपि तादृशः=निशुम्भ भी उसी के समान है, अत्र=इसमें, त्वया=तुम्हारे द्वारा, किञ्चित्=कुछ भी, मिथ्या=झूठ, न उदितम्=नहीं कहा गया।।११७-११८।।

अन्वितार्थ

देवी ने कहा- तुम्हारे द्वारा सच कहा गया है। शुम्भ तीनों लोकों का स्वामी है तथा निशुम्भ भी उसी के समान है। इसमें तुम्हारे द्वारा कुछ भी झूठ नहीं कहा गया।।११७-११८।।

मन्त्र

किन्त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।११९।।

पदच्छेद

किन्तु अत्र यत् प्रतिज्ञातम् मिथ्या तत् क्रियते कथम्। श्रूयताम् अल्प-बुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।११९।।

अन्वितपदार्थ

किन्तु=लेकिन, अत्र=इस सम्बन्ध में, यत्=जो, प्रतिज्ञातम्=प्रतिज्ञा की जा चुकी है, तत्=उसे, मिथ्या=झूठी, कथम्=कैसे, क्रियते=किया जाय, पुरा=बहुत पहले, अल्पबुद्धित्वात्=नासमझी के कारण, यत्=जो, प्रतिज्ञा=प्रतिज्ञा, कृता=की गई थी, तत्=उसे, श्रूयताम्=सुनिए।।११९।।

अन्वितार्थ

लेकिन इस सम्बन्ध में जो प्रतिज्ञा की जा चुकी है उसे झूठा कैसे किया जाय। बहुत पहले नासमझी के कारण जो प्रतिज्ञा की गई थी उसे सुनिए।।११९।।

मन्त्र

यो मां जयति सङ्ग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।१२०।।

पदच्छेद

यः माम् जयति सङ्ग्रामे यः मे दर्पं वि-अप-उहति, यः मे प्रतिबलः लोक सः मे भर्ता भविष्यति।।१२०।।

अन्वितपदार्थ

यः=जो, सङ्ग्रामे=युद्ध में, माम्=मुझे, जयति=जीत ले, यः=जो, मे=मेरा, दर्पम्=घमण्ड, व्यपोहित=नष्ट कर दे, लोके=संसार में, यः=जो मेरे, प्रतिबलः=समकक्ष बलशाली हो, सः=वह, मे भर्ता=मेरा पति, भविष्यति=बनेगा।।१२०।।

अन्वितार्थ

जो युद्ध में मुझे जीत ले, जो मेरा घमण्ड नष्ट कर दे, संसार में जो मेरे समकक्ष बलशाली हो वही मेरा पति बनेगा।।१२०।।

मन्त्र

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महाबलः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु।।१२१।।

पदच्छेद

तद् आ-गच्छतु शुम्भः अत्र निशुम्भः वा महा-असुरः माम् जित्वा किम् चिरेण अत्र पाणिम् गृह्णातु मे लघु॥१२१॥

अन्वितपदार्थ

तत्=तो, अत्र किं चिरेण=यहाँ देर करने से क्या लाभ, महासुरः=महाराक्षस, शुम्भः=शुम्भ, निशुम्भः वा=अथवा निशुम्भ, आगच्छतु=आजाए, माम्=मुझे, जित्वा=जीत कर, लघु=तुरन्त ही, मे=मेरा, पाणिं गृह्णातु=पाणिग्रहण कर ले॥१२१॥

अन्वितपदार्थ

तो यहाँ देर करने से क्या लाभ जाओ महाराक्षस शुम्भ अथवा निशुम्भ आजाए और मुझे इसी स्थान पर जीत कर तुरन्त ही मेरा पाणिग्रहण कर ले॥१२१॥

मन्त्र

दूत उवाच॥१२२॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमाँस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः॥१२३॥

पदच्छेद

अव-लिप्ता असि मा एवम् देवि ब्रूहि मम अग्रतः। त्रैलोक्ये: कः पुमान् तिष्ठेद् अग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः॥१२२-१२३॥

अन्वितपदार्थ

दूतः उवाच=दूत सुग्रीव बोला, देवि=हे देवि, अवलिप्ता= तुम विवेकहीन हो गई, असि=हो, मम=मेरे, अग्रतः=सामने, एवं मा=इस प्रकार मत, ब्रूहि=बोलो, त्रैलोक्ये=तीनों लोकों में, कः पुमान्=कौन पुरुष, शुम्भ-निशुम्भयोः=शुम्भ-निशुम्भ के, अग्रे=सामने, तिष्ठेत्=ठहर सकता है॥१२२-१२३॥

अन्वितार्थ

दूत सुग्रीव बोला- हे देवि! तुम विवेकहीन हो गई हो? मेरे सामने इस प्रकार मत बोलो। तीनों लोकों में कौन पुरुष शुम्भनिशुम्भ के सामने ठहर सकता है।।१२२-१२३।।

मन्त्र

अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका।।१२४।।

पदच्छेद

अन्येषाम् अपि दैत्यानाम् सर्वे देवाः न वै युधि तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किम् पुनः स्त्री त्वम् एकिका।।१२४।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि, अन्येषाम्=दूसरे, दैत्यानाम्=दानवों के, अपि=भी, युद्धे=युद्ध में, सर्वे देवाः=सभी देवता मिलकर, सम्मुखे=सामने, न वै=नहीं, तिष्ठन्ति=ठहर पाते, पुनः=फिर, त्वम्=तुम, एकिका=अकेली, स्त्री=स्त्री, किम्=क्या कर लोगी।।१२४।।

अन्वितार्थ

हे देवि! दूसरे दानवों के भी युद्ध में सभी देवता मिलकर सामने नहीं ठहर पाते फिर तुम अकेली स्त्री क्या कर लोगी।।१२४।।

मन्त्र

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां प्रयास्यसि सम्मुखम्।।१२५।।

पदच्छेद

इन्द्र-आद्याः सकलाः देवाः तस्थुः येषाम् न संयुगे शुम्भ-आदीनाम् कथम् तेषाम् स्त्री प्रयास्यसि सम्-मुखम्।।१२५।।

अन्वितपदार्थ

येषाम्=जिन, शुम्भदीनाम्=शुम्भ आदि के, संयुगे=युद्ध में, इन्द्राद्याः=इन्द्र आदि, सकलाः=समस्त, देवाः=देव मण्डली, न तस्थुः=नहीं टिक पा

रहे थे, तेषाम्=उनके, सम्मुखम्=सामने, त्वं स्त्री=तुम अकेली स्त्री, कथम्=कैसे, प्रयास्यसि=जाओगी।।१२५।।

अन्वितार्थ

जिन शुम्भ के युद्ध में इन्द्र आदि समस्त देव मण्डली नहीं टिक पा रहे थे उनके सामने तुम अकेली स्त्री कैसे जाओगी।।१२५।।

मन्त्र

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि।।१२६।।

पदच्छेद

सा त्वम् गच्छ मया एव उक्ता पार्श्वम् शुम्भ निशुम्भयो: केश-आकर्षण-निर्-धूत-गौरवा मा गमिष्यसि।।१२६।।

अन्वितपदार्थ

सा त्वम्=निर्बलस्त्री तुम, मया एव=मेरे ही, उक्ता=कहने पर, शुम्भ-निशुम्भयो:=शुम्भ निशुम्भ के, पार्श्वम्=पास, गच्छ=चली जाओ, केश-आकर्षण-निर्-धूत-गौरवा=बालों के खींचे जाने से अपने घमण्ड की धज्जी उड़वा कर, मा=मत, गमिष्यसि=जाओ।।१२६।।

अन्वितार्थ

अरे निर्बल स्त्री! तुम मेरे ही कहने पर शुम्भ-निशुम्भ के पास चली जाओ। बालों को खींचे जाने से अपने घमण्ड की धज्जी उड़वाकर मत जाओ।।१२६।।

मन्त्र

देव्युवाच।।१२७।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चाति वीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा में यदनालोचिता पुरा।।१२८।।

पदच्छेद

देवी उवाच- एवत् एतत् बली शुम्भः निशुम्भः च अति-वीर्यवान् किम् करोमि प्रतिज्ञा में यद् अनालोचिता पुरा।।१२७-१२८।।

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=देवी बोली, एवम् एतत्=अच्छा ऐसा है, बली शुम्भः=बलवान्=शुम्भ, अतिवीर्यवान् च=तथा अति उत्साही, निशुम्भः=निशुम्भ इस प्रकार ले जाएँगे, किं करोमि=क्या करूँ, मे= मेरी, प्रतिज्ञा=प्रतिज्ञा, पुरा अनालोचिता=पहले ही सुविचारित नहीं हो पाई थी॥१२७-१२८॥

अन्वितार्थ

अच्छा ऐसा है! बलवान् शुम्भ तथा अति उत्साही निशुम्भ इस प्रकार ले जाएँगे? क्या करूँ! मेरी प्रतिज्ञा पहले ही सुविचारित नहीं हो पाई थी॥१२७-१२८॥

मन्त्र

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत्॥१२९॥

पदच्छेद

सः त्वम् गच्छ मया एव उक्तम् यद् एतत् सर्वम् आ-दृतः आचक्ष्व असुर-इन्द्राय सः च युक्तम् करोतु यत्॥१२९॥

अन्वितपदार्थ

सः त्वम्=दूत रूप में तुम, आदृतः=एव सम्मान, पूर्वक ही, गच्छ=चले जाओ, यत्=जो, एतत्=यह, सर्वम्=सारा, मया=मेरे द्वारा, उक्तम्=कहा गया है, तत्=उसे, असुरेन्द्राय=असुराज को, आचक्ष्व=बताओ, सः च=और वह, यत् युक्तम्=जो उचित हो, करोतु=करे॥१२९॥

अन्वितार्थ

दूत रूप में तुम एव सम्मान पूर्वक ही चले जाओ जो यह सारा मेरे द्वारा कहा गया है, उसे असुराज को बताओ और वह जो उचित हो करे॥१२९॥

॥श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देवीसूक्तं नाम पञ्चमः विश्रामः॥५॥

।।अथ षष्ठोऽध्याय।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच:।।१।।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्।।२।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच=इति आकर्ण्य वचः देव्याः सः दूतः अमर्ष-पूरितः। समाचष्ट समागम्य दैत्य-राजाय विस्तरात्।।१-२।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि मार्कण्डेय बोले, इति=इस प्रकार, देव्याः=भगवती के, वचः=वचनों को, आकर्ण्य=सुनकर, अमर्षपूरितः=क्रोध से भरे हुए, सः दूतः=उस दूत ने, समागम्य=वापस आकर, दैत्यराजाय=राक्षसराज को, विस्तरेण=विस्तार से, समाचष्ट=बताया।।१-२।।

अन्वितार्थ

ऋषि मार्कण्डेय बोले- इस प्रकार भगवती के वचनों को सुनकर क्रोध से भरे हुए उस दूत ने वापस आकर राक्षसराज को विस्तार से बताया।।१-२।।

मन्त्र

तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम्।।३।।

पदच्छेद

तस्य दूतस्य तत् वाक्यम् आ-कर्ण्य असुर-राट् ततः स-क्रोधः प्राह दैत्यानाम् अधिपम् धूम्रलोचनम्।।३।।

अन्वितपदार्थ

ततः=उसके पश्चात्, तस्य=उस, दूतस्य=दूत के, तत् वाक्यम्=उस कथन को, आकर्ण्य=सुनकर, असुरराट्=राक्षसराज शुम्भ, सक्रोधः=क्रोधपूर्वक, दैत्यानाम्=दानवों के, अधिपम्=राजा, धूम्रलोचनम्=धूम्रलोचन के प्रति, प्राह=बोला।।३।।

अन्वितार्थ

उसके पश्चात् उस दूत के उस कथन को सुनकर राक्षसराज शुम्भ क्रोधपूर्वक दानवों के राजा धूम्रलोचन के प्रति बोला।।३।।

मन्त्र

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानय बलादुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्।।४।।

पदच्छेद

हे धूम्रलोचन! आशु त्वम् स्वसैन्येन परिवारितः ताम् आनय बलात् दुष्टाम् केशाकर्षणेन विह्वलाम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

हे धूम्रलोचन=हे धूम्रलोचन, त्वम्=तुम, स्वसैन्येनपरिवारितः=अपनी सेना से सुसज्जित होकर, केशार्षणविह्वलाम्=बालों को खींचने से घबराई हुई, ताम्=उस, दुष्टाम्=दुष्टा को, बलात्=जबरदस्ती, आशु=तुरन्त, आनय=ले आओ।।४।।

अन्वितार्थ

हे धूम्रलोचन! तुम अपनी सेना से सुसज्जित होकर बालों से खींचने से घबराई हुई उस दुष्टा को जबरदस्ती तुरन्त लेकर आओ।।४।।

मन्त्र

तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठते परः।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा।।५।।

पदच्छेद

तत् परि-त्राणद: कश्चिद् यदि वा उत्-तिष्ठते पर: स: हन्तव्य: अमर: वा अपि यक्ष: गन्धर्व एव वा।।५।।

अन्वितपदार्थ

कश्चित्=कोई, पर: वा=दूसरा, यदि=यदि, तत्=उसका, परित्राणद:=रक्षक, उत्तिष्ठते=खड़ा हो तो, स:=वह, अमर:=देवता, अपि वा=अथवा, यक्ष:=यक्ष, गन्धर्व: एव वा=या गन्धर्व ही हो, हन्तव्य:=मार दिया जाना चाहिए।।५।।

अन्वितार्थ

कोई दूसरा यदि उसका रक्षक खड़ा हो तो वह देवता अथवा यक्ष या गन्धर्व ही हो, मार दिया जाना चाहिए।।५।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच:।।६।।

तेनाज्ञप्तस्तत: शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचन:।
वृत: षष्ट्या सहस्त्राणामसुराणां द्रुतं ययौ।।७।।

पदच्छेद

ऋषि: उवाच- तेन आज्ञप्त: तत: शीघ्रम् स दैत्य: धूम्रलोचन: वृत: षष्ट्या सहस्त्राणाम् असुराणाम् द्रुतम् ययौ।।६-७।।

अन्वितपदार्थ

ऋषि: उवाच=ऋषि बोले, तत:=इसके बाद, तेन=शुम्भ द्वारा, आज्ञप्त:=आदेश पा कर, स: धूम्रलोचन:=वह धूम्रलोचन, दैत्य:=राक्षस, शीघ्रम्=जल्दी से, षष्ट्या=साठ, सहस्त्राणाम्=हजार, असुराणाम्=राक्षसों की सेना से, वृत:=घिरा हुआ, द्रुतम्=तुरन्त, ययौ=भगवती की ओर गया।।६-७।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- इसके बाद शुम्भ द्वारा आदेश पाकर वह धूम्रलोचन राक्षस जल्दी से साठ हजार राक्षसों की सेना से घिरा हुआ तुरन्त भगवती की ओर गया।।६-७।।

मन्त्र

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः॥८॥

पदच्छेद

सः दृष्ट्वा ताम् ततः देवीम् तुहिन-अचल-संस्थिताम् जगाद उच्चैः प्रयाहि इति मूलम् शुम्भ-निशुम्भयोः॥८॥

अन्वितपदार्थ

सः=उसने, ताम्=उन, देवीम्=देवी की, तुहिनाचलसंस्थिताम्=हिमालय पर बैठी, दृष्ट्वा=देखकर, प्रयाहि=चलो, शुम्भनिशुम्भयोः=शुम्भनिशुम्भ के, मूलम्=पास, इति=ऐसा, उच्चैः=जोर से, जगाद=चिल्लाया॥८॥

अन्वितार्थ

उसने उन देवी को हिमालय पर बैठी देखकर 'चलो, शुम्भनिशुम्भ के पास चलो' ऐसा जोर से चिल्लाया॥८॥

मन्त्र

न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम्॥९॥

पदच्छेद

न चेत् प्रीत्या भवती मत् भर्तारम् उपैष्यति ततः बलात् नयामि एष केश-आकर्षण-विह्वलाम्॥९॥

अन्वितपदार्थ

अद्य=आज, मत्=मेरे, भर्तारम्=स्वामी के पास, प्रीत्या=प्रेम से, न उपैष्यति=नहीं जाती, चेत्=तो, एष=यह, केशाकर्षणविह्वलाम्=बालों को खींचने से व्याकुल, भवतीम्=आपको, बलात्=जबदस्ती, नयामि=ले जाऊँगा॥९॥

अन्वितार्थ

आज मेरे स्वामी के पास प्रेम से नहीं जातीं तो यह बालों को खींचने से व्याकुल आपको जबरदस्ती आज ले जाऊँगा॥९॥

मन्त्र

देव्युवाच॥१०॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्॥११॥

पदच्छेद

देवी उवाच- दैत्य-ईश्वरेण प्रहितः बलवान् बलेन संवृतः बलात् नयसि माम् एवम् ततः किम् करोमि अहम्॥१०-११॥

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती ने कहा, दैत्यानाम्=दैत्यों के, ईश्वरेण=राजा द्वारा, प्रहितः=भेजे गए हो, बलवान्=शक्तिशाली हो, बलेन संवृतः=सेना से सुसज्जित हो, माम्=मुझे, एवम्=इस प्रकार घसीट कर, बलात्=जबरदस्ती, नयसि=ले जाते हो, ततः=तो, अहम्=मैं, ते=तुम्हारा, किम्=क्या, करोमि=कर लूँगी॥१०-११॥

अन्वितार्थ

भगवती ने कहा- दैत्यों के राजा द्वारा भेजे गए हो, शक्तिशाली हो, सेना से सुसज्जित हो, मुझे इस प्रकार घसीट कर जबरदस्ती ले जाते हो तो मैं तुम्हारा क्या कर लूँगी॥१०-११॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१२॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुङ्कारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका तदा॥१३॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- इति उक्त सः अभि-अधावत् ताम् असुरः धूम्रलोचनः। हुङ्कारेण एव तम् भस्म चकार अम्बिका ततः॥१२-१३॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, इति उक्त=उत्तर में इस प्रकार बोला गया, सः धूम्रलोचन=वह धूम्रलोचन, असुरः=राक्षस, ताम्=उनकी ओर,

अभ्यधावत्=वेग पूर्वक दौड़ा, ततः=तब, अम्बिका=अम्बिका ने, तम्=उसे, हुङ्कारेण एव=अपने गर्जन मात्र से, भस्म=भस्म, चकार=कर डाला।।१२-१३।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- उत्तर में इस प्रकार बोला गया वह धूम्रलोचन राक्षस उनकी ओर वेग पूर्वक दौड़ा। तब अम्बिका ने उसे अपने गर्जन मात्र से भस्म कर डाला।।१२-१३।।

मन्त्र

अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः।।१४।।

पदच्छेद

अथ क्रुद्धम् महासैन्यम् असुराणाम् तथा अम्बिका ववर्ष सायकैः तीक्ष्णैः तथा शक्ति-परश्वधैः।।१४।।

अन्वितपदार्थ

अथ=हुङ्कार मात्र से अक्रामक धूम्रलोचन के भस्म होने पर, असुराणाम्=राक्षसों की, महासैन्यम्-क्रुद्धम्=सेना बौखला गई, तथा=इसी प्रकार अम्बिका=कुपित होकर भगवती अम्बिका नें, तीक्ष्णैः=तीखे, सायकैः=वाणों, तथा=और, शक्ति-परश्वधैः=शक्ति सहित कुठारों से, ववर्ष=आयुधों की वर्षा कर दी।।१४।।

अन्वितार्थ

हुङ्कार मात्र से आक्रामक धूम्रलोचन के भस्म होने पर राक्षसों की सेना बौखला गई। इसी प्रकार कुपित होकर भगवती अम्बिका ने तीखे वाणों और शक्ति सहित कठारों से आयुधों की वर्षा कर दी।।१४।।

मन्त्र

ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः।।१५।।

पदच्छेद

ततः धुत-सटः कोपात् कृत्वा नादम् सुभैरवम् पपात असुर-सेनायाम् सिंहः देव्याः स्व-वाहनः।।१५।।

अन्वितपदार्थ

ततः=सङ्ग्राम आरम्भ हो जाने पर, देव्याः=भगवती का, स्ववाहनः=अपना वाहन, सिंह=सिंह, धुतसटः=केसरों को फड़फड़ाकर, कोपात्=क्रोध से, सुभैरवम्=महाभयानक, नादम्=गर्जना, कृत्वाः=करके, असुराणाम्=राक्षसों की, सेनायाम्=सेना पर, पपात=टूट पड़ा।।१५।।

अन्वितार्थ

सङ्ग्राम आरम्भ हो जाने पर भगवती का अपना वाहन सिंह केसरों को फड़फड़ाकर क्रोध से महाभयानक गर्जना करके राक्षसों की सेना पर टूट पड़ा।।१५।।

मन्त्र

काञ्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रान्त्या चाधरेणान्यान् जघान स महासुरान्।।१६।।

पदच्छेद

कान् चित् कर-प्रहारेण दैत्यान् आस्येन च अपरान्, आ-क्रान्त्या च अधरेण अन्यान् जघानः सः महासुरान्।।१६।।

अन्वितपदार्थ

सः=उस सिंह ने, काञ्चित्=कुछ, दैत्यान्=दैत्यों को, कर प्रहारेण=पञ्जों के वार से, अपरान् च=और कुछ दूसरों को, आस्येन=मुख से, अधरेण च=तथा ओठ से पकड़ कर, आक्रान्त्या=प्रचण्ड आक्रमण से, अन्यान्=दूसरे, महासुरान्= महाराक्षसों का, जघान=संहार कर डाला।।१६।।

अन्वितार्थ

उस सिंह ने कुछ दैत्यों को पञ्जों के वार से और कुछ दूसरों को मुख से तथा ओठों पकड़ कर, दूसरे महाराक्षसों का संहार प्रचण्ड आक्रमण से कर डाला।।१६।।

मन्त्र

केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।१७।।

पदच्छेद

केषाम्-चित् पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी, तथा तल-प्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।१७।।

अन्वितपदार्थ

केसरी=सिंह ने, केषाञ्चित्=कुछ राक्षसों के, कोष्ठानि=पेट को, नखैः=नखों से, पाटयामास=विदीर्ण कर दिया, तथा=इसी प्रकार, तलस्य=हथेली के, प्रहारेण, चोट से, शिरांसि=सरों को, पृथक्=अलग, कृतवान्=कर डाला।।१७।।

अन्वितार्थ

सिंह ने कुछ राक्षसों के पेट को नखों से विदीर्ण कर दिया इसी प्रकार हथेली के चोट से सरों को अलग कर डाला।।१७।।

मन्त्र

विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः।।१८।।

पदच्छेद

वि-च्छिन्न-बाहु-शिरसः कृताः तेन, तथा अपरे, पपौ च रुधिरम् कोष्ठात् अन्येषाम् धुतकेसरः।।१८।।

अन्वितपदार्थ

तथा तेन=और सिंह के आक्रमणों से, अपरे=कुछ दूसरे, विच्छिन्नबाहुशिरसः=हँथकटे सरकटे, कृताः=बना दिए गए, धुतकेसर=अयालों को झटक कर सिंह ने, तथा अन्येषाम् च=इसी प्रकार कुछ राक्षसों के, कोष्ठात्=पेट फाड़कर उससे, रुधिरम्=खून, पपौ=पी डाला।।१८।।

अन्वितार्थ

और सिंह के आक्रमणों से कुछ दूसरे हँथकटे, सरकटे बना दिए गए इसी प्रकार अयालों को झटक कर सिंह ने दूसरे राक्षसों के पेट फाड़कर उससे खून पी डाला।।१८।।

मन्त्र

क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना।।१९।।

पदच्छेद

क्षणेन तत् बलम् सर्वम् क्षयम् नीतम् महात्मना तेन केसरिणा देव्या: वाहनेन अति-कोपिना।।१९।।

अन्वितपदार्थ

तेन=उन, अतिकोपिना=भयानक कोपाविष्ट, देव्या: वाहनेन=भगवती के वाहन, महात्मना=दिव्यात्मा, केसरिणा=सिंह द्वारा, तत्=वह, सर्वम्=समस्त, बलम्=सैन्यबल, क्षणेन=कुछ पलों में, क्षयम्=विनाश को, नीतम्=पहुँचा दिया गया।।१९।।

अन्वितार्थ

उस भयानक कोपाविष्ट भगवती के वाहन दिव्यात्मा सिंह द्वारा वह समस्त सैन्यबल कुछ पलों में विनाश को पहुँचा दिया गया।।१९।।

मन्त्र

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नम् देवी केसरिणा तत:।।२०।।

पदच्छेद

श्रुत्वा तम् असुरम् देव्या निहतम् धूम्रलोचनम् बलम् च क्षयितम् कृत्स्नम् देवी-केसरिणा तत:।।२०।।

अन्वितपदार्थ

तम्=प्रतापी, धूम्रलोचनम्=धूम्रलोचन, असुरम्=राक्षस, देव्या=भगवती के हुङ्कार से, निहतम्=मारा गया, तत:=उसके बाद, देवींकेसरिणा च=

और तेजस्वी सिंह द्वारा, कृत्स्नम्=सम्पूर्ण, बलम्=सेना, क्षयितम्=विनष्ट कर डाली गई, श्रुत्वा=यह सुनकर।।२०।।

अन्वितार्थ

प्रतापी धूम्रलोचन राक्षस भगवती के हुङ्कार से मारा गया। उसके बाद तेजस्वी सिंह द्वारा सम्पूर्ण सेना विनष्ट कर डाली गई यह सुनकर।।२०।।

मन्त्र

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ।।२१।।

पदच्छेद

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः आज्ञापयामास च तौ चण्ड-मुण्डौ महासुरौ।।२१।।

अन्वितपदार्थ

दैत्यानाम्=दैत्यों के, अधिपतिः=स्वामी, शुम्भः=शुम्भ, चुकोप=अत्यन्त कुपित हो गया, प्रस्फुरिताधरः च=और क्रोध से फड़कते हुए होठों से, तौ=उन दोनों, महासुरौ=महादैत्य, चण्डमुण्डौ=चण्डमुण्ड को, आज्ञापयामास=आज्ञा दी।।२१।।

अन्वितार्थ

दैत्यों के स्वामी शुम्भ अत्यन्त कुपित हो गया और क्रोध से फड़कते हुए होठों से (बोलते हुए) उन दोनों महादैत्य चण्डमुण्ड को आज्ञा दी।।२१।।

मन्त्र

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु।।२२।।

पदच्छेद

हे चण्ड! हे मुण्ड! बलैः बहुभिः परि-वारितौ तत्र गच्छत, गत्वा च सा समानीयताम् लघु।।२२।।

अन्वितपदार्थ

हे चण्ड हे मुण्ड=हे चण्ड मुण्ड तुम दोनों, बहुभिः=ढेर सारी, बलैः=सेनाओं से, परिवारितौ=सुसज्जित होकर, तत्र=वहाँ, गच्छत=जाओ, गत्वा च=एवं जाकर, लघु=तुरन्त, सा=उसे, समानीयताम्=लेकर आओ।।२२।।

अन्वितार्थ

हे चण्ड! हे मुण्ड! तुम दोनों ढेर सारी सेनाओं से सुसज्जित होकर वहाँ जाओ एवं जाकर तुरन्त उसे लेकर आओ।।२२।।

मन्त्र

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्।।२३।।

पदच्छेद

केशेषु आकृष्य बद्ध्वा वा यदि संशयः युधि तदा अशेष-आयुधैः सर्वैः असुरैः विनिहन्यताम्।।२३।।

अन्वितपदार्थ

केशेषु=बालों से, आकृष्य=घसीटकर, वा बद्ध्वा=अथवा बाँधकर लाओ, यदि वा=अन्यथा अगर, युधि=युद्ध जीतने में, संशयः=संदेह हो, तदा=तो, अशेषैः=सारे, आयुधैः=हथियारों का प्रयोग करके, सर्वैः=सभी, असुरैः=राक्षसों के माध्यम से, विनिहन्त्यताम्=मार डालो।।२३।।

अन्वितार्थ

बालों से घसीटकर अथवा बाँधकर लाओ। अन्यथा अगर युद्ध जीतने में संदेह हो तो सारे हथियारों का प्रयोग करके, सभी राक्षसों के माध्यम से मार डालो।।२३।।

मन्त्र

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्।।२४।।

पदच्छेद

तस्याम् हतायाम् दुष्टायाम् सिंहे च विनिपातिते शीघ्रम् आगम्यताम् बद्ध्वा गृहीत्वा ताम् अथ अम्बिकाम्।।२४।।

अन्वितपदार्थ

तस्याम्=उस, दुष्टायाम्=दुष्टा के, हतायाम्=मारे जाने पर, सिंहे च=एवं सिंह के, विनिपतिते=धराशायी कर दिए जाने पर, अथ=अथवा, ताम्=उस, अम्बिकाम्=अम्बिका को, गृहीत्वा=पकड़कर, बद्ध्वा=सिंह को बाँधकर, शीघ्रम्=तुरन्त, आगम्यताम्=ले आओ।।२४।।

अन्वितार्थ

उस दुष्टा के मारे जाने पर एवं सिंह के धराशायी कर दिए जाने पर अथवा उस अम्बिका को पकड़कर सिंह को बाँधकर तुरन्त ले आओ।।२४।।

।।जय जय श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये उत्तम चरिते धूम्रलोचनसंहारोनाम षष्ठः विश्रामः।।६।।

॥अथ सप्तमोऽध्यायः॥

मन्त्र

ऋषिरुवाचः॥१॥

आज्ञाप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- आज्ञप्ताः ते ततः दैत्याः चण्ड-मुण्ड-पुरः-गमाः चतुर्-अङ्ग-बल-उपेताः ययुः अभि-उद्यत-आयुधाः॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, ततः=इसके पश्चात्, आज्ञप्ताः=शुम्भ की आज्ञा पाकर, चण्डमुण्डपुरोगमाः=चण्डमुण्ड के नेतृत्व में, ते दैत्याः=वे सभी दैत्य, चतुरङ्गबलोपेताः=हाथी, घोड़े, रथ एवं पैदल चारों अंगों वाली की सेना से सुसज्जित होकर, अभ्युद्यतायुधाः=शस्त्रों को युद्ध के लिए तैयार किये हुए, ययुः=गए॥१-२॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- इसके पश्चात् शुम्भ की आज्ञा पाकर चण्डमुण्ड के नेतृत्व में वे सभी दैत्य हाथी, घोड़े, रथ एवं पैदल चारों अंगों वाली सेना से सुसज्जित होकर, शस्त्रों को युद्ध के लिए तैयार किये हुए गए॥१-२॥

मन्त्र

ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने॥३॥

पदच्छेद

ददृशुः ते ततः देवीम् ईषद् हासाम् वि-अवस्थिताम्, सिंहस्य उपरि शैलेन्द्र-शृङ्गे महित काञ्चने।।३।।

अन्वितपदार्थ

ततः=तत्पश्चात्, ते=उन राक्षसों ने, महति=अत्यन्त ऊँचे, काञ्चने=सुवर्णमय, शैलेन्द्रस्य=पर्वतराज के, शृङ्गे=शिखर पर, सिंहस्य=सिंह के, उपरि=ऊपर, व्यवस्थिताम्=विराजमान, ईषत्=थोड़ी, हासाम्=मुस्कुराती हुई, देवीम्= देदीप्यमान भगवती को, ददृशुः=देखा।।३।।

अन्वितार्थ

तत्पश्चात् उन राक्षसों ने अत्यन्त ऊँचे सुवर्णमय पर्वतराज के शिखर पर सिंह के ऊपर विराजमान थोड़ी मुस्कुराती हुई देदीप्यमान भगवती को देखा।।३।।

मन्त्र

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्टचापासिधरास्तथाऽन्ये तत्समीपगाः।।४।।

पदच्छेद

ते दृष्ट्वा ताम् समादातुम् उद्-यमम् चक्रुः उद्-यताः आकृष्टचाप-असिधराः तथा अन्ये तत् समीपगाः।।४।।

अन्वितपदार्थ

ते=उन राक्षसों ने, ताम्=उस स्वरूप में भगवती को, दृष्ट्वा=देखकर, सामादातुम्=उन्हें पकड़ने के लिए, उद्यताः=उत्सुक होकर, उद्यमम्= प्रयास, चक्रुः=करने लगे, अन्ये=दूसरे राक्षस, आकृष्टचापाः=धनुष खींचे हुए, आसिधराः=हाथों में तलवार लिए हुए, तत्=उनके, समीपगाः=निकट जाते हुए, तथा वैसा ही करने लगे।।४।।

अन्वितार्थ

उन राक्षसों ने उसे स्वरूप में भगवती को देखकर उन्हें पकड़ने के लिए उत्सुक होकर प्रयास करने लगे दूसरे राक्षस धनुष खींचे हुए हाथों में

तलवार लिए हुए उनके निकट जाते हुए वैसा ही प्रयास करने लगे।।४।।

मन्त्र

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा।।५।।

पदच्छेद

ततः कोपम् चकार, उच्चैः अम्बिका तान् अरीन् प्रति कोपेन च अस्याः वदनम् मषी-वर्णम् अभूत् तदा।।५।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इस घटना के बाद, अम्बिका=अम्बिका ने, तान्=उन, अरीन्=शत्रुओं के, प्रति=प्रति, उच्चैः=तीव्र, कोपम्=क्रोध, चकार=किया, तदा च=और उस समय, कोपेन=कोप के कारण, अस्याः=इनका, वदनम्=चेहरा, मषीवर्णम्=स्याही के रंग का, अभूत्=हो गया।।५।।

अन्वितार्थ

इस घटना के बाद अम्बिका ने उन शत्रुओं के प्रति तीव्र क्रोध किया और उस समय कोप के कारण उनका चेहरा स्याही के रंग का हो गया।।५।।

मन्त्र

भ्रूकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद् द्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।।६।।
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा।।७।।
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्ना रक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा।।८।।

पदच्छेद

भ्रू-कुटी-कुटिलात् तस्याः ललाट-फलकात् द्रुतम् काली कराल-वदना वि-निष्-क्रान्ता असि-पाशिनी। विचित्र-खट्वाङ्ग-धरा नर-माला-विभूषणा द्वीपि-चर्म-परीधाना शुष्क-मांसा अति-भैरवा अति-विस्तार-वदना जिह्वा-ललन-भीषणा निमग्ना रक्त-नयना नाद-आपूरित दिङ्-मुखाः।।६-८।।

अन्वितपदार्थ

तस्याः=उनके, भ्रूकुटी-कुटिलात्=भौहों के टेढ़ेपन के कारण, ललाटफलकात्=माथे के तल के कारण, करालवदना=भयानक मुखमण्डल वाली, असि-पाशिनी=खड्ग एवं पाश धारण करने वाली, विचित्रखट्वाङ्गधरा=आश्चर्यजनक नरपञ्जर का शस्त्र धारण करने वाली, नरमालाविभूषणा=नरमुण्डों की माला से सुसज्जित, द्वीपिचर्मपरीधाना=हाथी की खाल वस्त्र के रूप में पहने हुए, शुष्कमांसा=शरीर में सूखे मांस वाली, अतिभैरवा=अत्यन्त भयानक, अतिविस्तारवदना=मुख को अत्यधिक फैलाए हुए, जिह्वा-ललन-भीषणा=जीभ के लपलपाने के कारण भय उत्पन्न करने वाली, निमग्ना=धसी हुई, रक्तनयना=लाल आँखों वाली, नादापूरितदिङ्मुखा काली=गर्जन से सभी दिशाओं को गुञ्जायमान करने वाली काली, विनिष्क्रान्ता=प्रकट हुई।।६-८।।

अन्वितार्थ

उनके भौहों के टेढ़पन के कारण माथे के तल से भयानक मुखमण्डल वाली, खड्ग एवं पाश धारण करने वाली, आश्चर्यजनक नरपञ्जर धारण करने वाली, नर मुण्डों की माला से सुसज्जित, हाथी की खाल वस्त्र के रूप में पहने हुए, सूखे मांस वाली, अत्यन्त भयानक मुख को अत्यधिक फैलाए हुए, जीभ के लपलपाने के कारण भय उत्पन्न करने वाली, धँसी हुई लाल आँखों वाली, गर्जन से सभी दिशाओं को गुञ्जायमान करने वाली, काली प्रकट हुई।।६-८।।

मन्त्र

सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणाभक्षयत तद्बलम्।।९।।

पदच्छेद

सा वेगेन अभि-पतिता घातयन्ती महा-असुरान् सैन्ये तत्र सुर-अरीणाम् अभक्षयत तत् बलम्।।९।।

अन्वितपदार्थ

सा=वे भगवती काली, वेगेन=तीव्रता पूर्वक, महासुरान्=राक्षसों को, घातयन्ती=मारती हुईं, सैन्ये=सेना पर, अभिपतिता=टूट पड़ीं, तत्र=तथा समर में, सुरारीणाम्=राक्षसों के, तत्=उस विशाल, बलम्=सैन्य बल को, अभक्षयत्=भक्षण कर गईं।।९।।

अन्वितार्थ

वे भगवती काली तीव्रता पूर्वक राक्षसों को मारती हुईं सेना पर टूट पड़ीं तथा समर में राक्षसों के उस विशाल सैन्य बल को भक्षण कर गईं।।९।।

मन्त्र

पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राही योधघण्टासमन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।१०।।

पदच्छेद

पार्ष्णि-ग्राह-अङ्कुश-ग्राही योध-घण्टा-सम्-अनु-इतान् समादाय एकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।१०।।

अन्वितपदार्थ

पार्ष्णिग्राह:=गज शिक्षक, अङ्कुशग्राही=महावत, योध:=हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाले योद्धा, घण्टा=हाथी के गले में लटकने वाला घण्टा, तत् समन्वितान्=इन सबके सहित, वारणान्=हाथियों को, एकेन हस्तेन=एक हाथी से, समादाय=पकड़कर, मुखे=मुख में, चिक्षेप=झोंक देती थीं।।१०।।

अन्वितार्थ

गज शिक्षक महावत, हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाले योद्धा, हाथी के गले में लटकने वाली घण्टा इन सबके सहित हाथियों को एक ही हाथ में पकड़कर मुख में झोंक देती थीं।।१०।।

मन्त्र

तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्।।११।।

पदच्छेद

तथा एव योधम् तुरगैः रथम् सारथिना सह निक्षिप्य वक्त्रे दशनैः चर्वयन्ती अतिभैरवम्।।११।।

अन्वितंपदार्थ

तथा एव=इसी प्रकार से, तुरगैः सह=घोड़ों के साथ, योधम्=घुड़सवारी को, सारथिना सह=सारथी सहित, रथम्=रथ को वक्त्रे=मुख में, निक्षिप्य=डालकर, दशनैः=दाँतों से, अतिभैरवम्=अतिशय भयानक रूप से, चर्वयन्ती=चबाती हुईं।।११।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार से घोड़ों के साथ घुड़सवार को, सारथी सहित रथ को मुख में डालकर दाँतों से अतिशय भयानक रूप से चबाती हुईं।।११।।

मन्त्र

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसाऽन्यमपोथयत्।।१२।।

पदच्छेद

एकम् जग्राह केशेषु ग्रीवायाम् अथ च अपरम् पादेन आक्रम्य च एव अन्यम् उरसा अन्यम् अप-ऊथयत्।।१२।।

अन्वितपदार्थ

एकम्=एक को, केशेषु=बालों से, जग्राह=पकड़ा, अथ च=ऐसे ही, अपरम्=दूसरे को, पादेन एव=चरण से ही, अन्यम्=दूसरे को, आक्रम्य=कुचल कर, अन्यम्=अन्य की, उरसा=छाती को, अपोथयत्=मसल डाला।।१२।।

अन्वितार्थ

एक को बालों से पकड़ा, ऐसे ही दूसरे को चरण से ही कुचल कर अन्य की छाती को मसल डाला।।१२।।

मन्त्र

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथा सुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि।।१३।।

पदच्छेद

तैः मुक्तानि शस्त्राणि महा-अस्त्राणि तथा असुरैः, मुखेन जग्राह रुषा दशनैः मथितानि अपि।।१३।।

अन्वितपदार्थ

तथा=इसी प्रकार, तैः=उन, असुरैः=राक्षसों द्वारा, मुक्तानि=छोड़े गए, शस्त्राणि=शस्त्रों, महास्त्राणि=खतरनाक प्रक्षेपास्त्रों को, रुषा=गुस्से में, मुखे=मुख से, जग्राह=पकड़ लिया, दशनैः=दाँतों से, मथितानि अपि=पीस भी डाला।।१३।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार उन राक्षसों द्वारा छोड़े गए शस्त्रों, खतरनाक प्रक्षेपास्त्रों को गुस्से में मुख में पकड़ लिया दाँतों से पीस भी डाला।।१३।।

मन्त्र

बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्याँश्चाताडयत्तथा।।१४।।

पदच्छेद

बलिनाम् तत् बलम् सर्वम् असुराणाम् दुर्-आत्मनाम् ममर्द अभक्षयत् च अन्यान् च अताडय् तथा।।१४।।

अन्वितपदार्थ

तथा=ऐसे ही, महात्मनाम्=बड़े-बड़े, बलिनाम्=विशाल सैन्यबल वाले, असुराणाम्=राक्षसों की, तत् सर्वम्=वह सारी, बलम्=सेना, ममर्द=कुचल डाला, अन्यान् च=कुछ को, अभक्षयत्=भक्षण कर लिया, अन्यान् च=कुछ को, अताडयत्=पीट दिया।।१४।।

अन्वितार्थ

ऐसे ही बड़े-बड़े विशाल सैन्यबल वाले राक्षसों की वह सारी सेना को

कुचल डाला कुछ को भक्षण कर लिया कुछ को पीट दिया।।१४।।

मन्त्र

असिना निहताः केचित्केचित् खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा।।१५।।

पदच्छेद

असिना निहताः केचित् खट्वाङ्ग-ताडिताः जग्मुः विनाशम् असुराः दन्त-अग्र-अभि-हताः तथा।।१५।।

अन्वितपदार्थ

तथा=इसी प्रकार, केचित्=कुछ, असिना=तलवार से, निहताः=मारे गए, केचित्=कुछ, खट्वाङ्गताडिताः=अस्थिपञ्जरों से बने शस्त्र से पीटे गए, दन्ताग्राभिहताः=दाँतों की नोक से घायल किए गए, असुराः=दैत्य गण, विनाशम्=विनाश की ओर, जग्मुः=चले गए।।१५।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार कुछ तलवार से मारे गए कुछ अस्थिपञ्जरों से बने शस्त्र से पीटे गए दाँतों की नोक से घायल किए गए दैत्यगण विनाश की ओर चले गए।।१५।।

मन्त्र

क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्।।१६।।

पदच्छेद

क्षणेन तत् बलम् सर्वम् असुराणाम् निपातितम् दृष्ट्वा चण्डः अभि-दुद्राव ताम् कालीम् अति-भीषणाम्।।१६।।

अन्वितपदार्थ

असुराणाम्=राक्षसों की, तत् सर्वम्=वह सारी, बलम्=सेना, क्षणेन=कुछ ही पलों में, विनिपातितम्=धराशायी, दृष्ट्वा=देखकर, चण्डः=चण्ड, ताम्=उन, अतिभीषणाम्=महाभयानक, कालीम्=काली की ओर, अभिदुद्राव=दौड़ पड़ा।।१६।।

अन्वितार्थ

राक्षसों की वह सारी सेना कुछ ही पलों में धराशायी देखकर चण्ड उन महाभयानक काली की और दौड़ पड़ा।।१६।।

मन्त्र

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्त्रशः।।१७।।

पदच्छेद

शर-वर्षैः महा-भीमैः भीमाक्षीम् ताम् महा-सुरः छादयामास चक्रैः च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्त्रशः।।१७।।

अन्वितपदार्थ

महासुरः=विशाल दैत्य, मुण्डः=मुण्ड ने, महाभीमैः=अत्यन्त भयानक, शरवर्षैः=बाणों की वर्षा से, सहस्त्रशः च=और हजारों, चक्रैः=चक्रों को, क्षिप्तैः=फेंक कर, ताम्=उन, भीमाक्षीम्=भयानक आँखों वाली काली को, छादयामास=आच्छादित कर दिया।।१७।।

अन्वितार्थ

विशाल दैत्य मुण्ड ने अत्यन्त भयानक बाणों की वर्षा से और हजारों चक्रों को फेंक कर उन भयानक आँखों वाली काली को आच्छादित कर दिया।।१७।।

मन्त्र

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।।१८।।

पदच्छेद

तानि चक्राणि अनेकानि विशमानानि तत् मुखम् बभुः यथा अर्क-बिम्बानि सु-बहूनि घन-उदरम्।।१८।।

अन्वितपदार्थ

तस्याः=उनके, मुखम्=मुख से, विशमानानि=घुसते हुए, तानि=वे, अनेकानि=अनेकों, चक्राणि=चक्र, घनोदरम्=घने बादल के भीतर घुसे

हुए, सुबहूनि=ढेर सारे, अर्कबिम्बानि=सूर्य-बिम्बों, यथा=की तरह, बभुः=शोभित हो रहे थे।।१८।।

अन्वितार्थ

उनके मुख में घुसते हुए वे अनेकों चक्र घने बादल के भीतर घुसते हुए ढेर सारे सूर्य-बिम्बों की तरह शोभित हो रहे थे।।१८।।

मन्त्र

ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला।।१९।।

पदच्छेद

ततः जहास अति-रुषा भीमम् भैरव-नादिनी काली कराल-वक्त्र-अन्तः दुर्दर्श-दशन-उज्ज्वला।।१९।।

अन्वितपदार्थ

ततः=चण्ड द्वारा आक्रमण के पश्चात्, करालवक्त्रान्तः=भयानक मुख के भीतर, दुर्दर्शैः=दीखने वाले भयंकर, दशनैः=दाँतों के कारण, उज्वला=चमकती हुईं, भैरवनादिनी=भयावह ध्वनि में गर्जन करने वाली, काली=भगवती काली ने, अतिरुषा=अत्यन्त क्रोधपूर्वक, भीमम्=भयावह, जहास=अट्टहास किया।।१९।।

अन्वितार्थ

चण्ड द्वारा आक्रमण के पश्चात् भयानक मुख के भीतर दीखने वाले भयंकर दाँतों के कारण चमकती हुई भयावह ध्वनि में गर्जन करने वाली भगवती काली ने अत्यन्त क्रोधपूर्वक भयावह अट्टहास किया।।१९।।

मन्त्र

उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्।।२०।।

पदच्छेद

उत्थाय च महा-असिम् हं देवी चण्डम् अधावत, गृहीत्वा च अस्य केशेषु शिरः तेन असिना अच्छिनत्।।२०।।

अन्वितपदार्थ

देवी च=और भगवती काली, महा-असिम्=विशाल खड्ग को, उत्थाय=उठाकर, चण्डम्=चण्ड की ओर, अधावत=दौड़ पड़ी, अस्य च=और उसको, केशेषु=बालों से, गृहीत्वा=पकड़ कर, तेन=उसी, असिना=खड्ग से, हं='हं' बोलते हुए, शिरः=शिर को, अच्छिनत्=काट डाला।।२०।।

अन्वितार्थ

और भगवती काली विशाल खड्ग को उठाकर चण्ड की ओर दौड़ पड़ी और उसको बालों से पकड़ कर उसी खड्ग से 'हं' बोलते हुए शिर को काट डाला।।२०।।

मन्त्र

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा।।२१।।

पदच्छेद

अथ मुण्डः अभि-अधावत् ताम् दृष्ट्वा चण्डम् निपातितम् तम् अपि अपातयद् भूमौ सा खड्ग-अभिहतम् रुषा।।२१।।

अन्वितपदार्थ

अथ=इसके बाद, मुण्डः=मुण्ड, चण्डम्=चण्ड को, निपातितम्=धराशायी, दृष्ट्वा=देख कर, ताम्=उनकी ओर, अभ्यधावत=दौड़ा, रुषा=क्रोधपूर्वक, खड्गाभिहतम्=खड्ग से घातित, तम् अपि=उस चण्ड को भी, सा=उन्होंने, भूमौ=धरती पर, अपातयत्=गिरा दिया।।२१।।

अन्वितार्थ

इसके बाद चण्ड को धराशायी देख कर मुण्ड उनकी ओर दौड़ा। क्रोधपूर्वक खड्ग से घातित उस चण्ड को भी उन्होंने धरती पर गिरा दिया।।२१।।

मन्त्र

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्॥२२॥

पदच्छेद

हत-शेषम् ततः सैन्यम् दृष्ट्वा चण्डम् नि-पातितम्, मुण्डम् च सु-महा-वीर्यम् दिशः भेजे भय-आतुरम्॥२२॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके अनन्तर, सुमहावीर्यम्=महापराक्रमी, चण्डम्=चण्ड, मुण्डम् च=और मुण्ड को, विनिपातितम्=गिरा हुआ, दृष्ट्वा=देख कर, हतशेषम्=भगवती द्वारा मरने से बची हुई, सैन्यम्=सेना, भयेन=भय से, आतुरम्=व्याकुल होकर, दिशः=विभिन्न दिशाओं में, भेजे=भाग गई॥२२॥

अन्वितार्थ

इसके अनन्तर महापराक्रमी चण्ड और मुण्ड को गिरा देख कर भगवती द्वारा मरने से बची हुई सेना भय से व्याकुल होकर विभिन्न दिशाओं में भाग गई॥२२॥

मन्त्र

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥२३॥

पदच्छेद

शिरः चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डम् एव च प्राह प्रचण्ड-अट्टहास-मिश्रम् अभि-एत्य चण्डिकाम्॥२३॥

अन्वितपदार्थ

काली च=और देवी काली, चण्डस्य=चण्ड का, शिरः=शिर, मुण्डम् एव च=तथा मुण्ड को ही, गृहीत्वा=लेकर, चण्डिकाम्=भगवती चण्डी के, अभ्येत्य=पास जाकर, प्रचण्डाट्टहासमिश्रम्=जोरदार ठहाके करती हुई, प्राह=बोलीं॥२३॥

अन्वितार्थ

और देवी काली चण्ड का शिर तथा मुण्ड को ही लेकर भगवती चण्डी के पास जाकर जोरदार ठहाके करती हुई बोलीं॥२३॥

मन्त्र

मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि॥२४॥

पदच्छेद

मया तव अत्र उप-हृतौ चण्ड-मुण्डौ महा-पशू युद्ध-यज्ञे स्वयम् शुम्भम् निशुम्भम् च हनिष्यसि॥२४॥

अन्वितपदार्थ

मया=मेरे द्वारा, अत्र=इस, युद्धयज्ञे=युद्धरूपी यज्ञ में, महापशू=दो महापशु, चण्डमुण्डौ=चण्ड और मुण्ड, तव=आपको, उपहृतौ=उपहार रूप में दिए जा रहे हैं, शुम्भम्=शुम्भ, निशुम्भम् च=और निशुम्भ को, स्वयम्=स्वयम् आप, हनिष्यसि=नष्ट करेंगी॥२४॥

अन्वितार्थ

मेरे द्वारा इस युद्धरूपी यज्ञ में दो महापशु चण्ड और मुण्ड आपको उपहार रूप में दिए जा रहे हैं। शुम्भ और निशुम्भ को स्वयम् आप नष्ट करेंगी॥२४॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥२५॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः॥२६॥

पदच्छेद

ऋषि उवाच- तौ आनीतौ ततः दृष्ट्वा चण्ड-मुण्डौ महा-सुरौ, उवाच कालीम् कल्याणी ललितम् चण्डिका वचः॥२५-२६॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि ने कहा, ततः=इसके बाद, तौ=उन दोनों,

महासुरौ=महादैत्य, चण्डमुण्डौ=चण्डमुण्ड को, आनीतौ=लाया हुआ, दृष्ट्वा=देखकर, कल्याणी=मङ्गलमयी, चण्डिका=चण्डिका, कालीम्=काली से, ललितम्=मनोरम, वचः=वाणी, उवाच=बोलीं।।२५-२६।।

अन्वितार्थ

ऋषि ने कहा- इसके बाद उन दोनों महादैत्य चण्डमुण्ड को लाया हुआ देखकर मङ्गलमयी चण्डिका काली से मनोरम वाणी बोलीं।।२५-२६।।

मन्त्र

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि।।२७।।

पदच्छेद

यस्मात् चण्डम् च मुण्डम् च गृहीत्वा त्वम् उप-आगता। चामुण्डा इति ततः लोके ख्याता देवी भविष्यसि।।२७।।

अन्वितपदार्थ

यस्मात्=क्योंकि, त्वम्=आप, चण्डम् च=चण्ड, मुण्डम् च=तथा मुण्ड को, गृहीत्वा=लेकर, उपागता=यहाँ आई है। ततः=इसलिए, लोके=समाज में, चामुण्डादेवी=**'चामुण्डादेवी'**, इति ख्याता=इस नाम से प्रसिद्ध, भविष्यसि=होगी।।२७।।

अन्वितार्थ

क्योंकि आप चण्ड तथा मुण्ड को लेकर यहाँ आई हैं। इसलिए समाज में **'चामुण्डादेवी'** इस नाम से प्रसिद्ध होगी।।२७।।

।। जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डसंहारो नाम सप्तमः विश्रामः ।।७।।

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१॥

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः॥२॥

पदच्छेद

चण्डे च नि-हते दैत्ये मुण्डे च वि-निपातिते बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेषु असुर-ईश्वरः॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, चण्डे दैत्ये च=राक्षस चण्ड के, निहते=मारे जाने पर, मुण्डे च=तथा मुण्ड के, विनिपातिते=धराशायी कर दिए जाने पर, बहुलेषु च=और अधिकांश, सैन्येषु=सेना के, क्षयितेषु=समाप्त हो जाने पर, असुरेश्वरः=राक्षसराज॥१-२॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- राक्षस चण्ड के मारे जाने पर तथा मुण्ड के धराशायी कर दिए जाने पर और अधिकांश सेना के समाप्त हो जाने पर राक्षसराज॥१-२॥

मन्त्र

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह॥३॥

पदच्छेद

ततः कोप-पराधीन-चेताः शुम्भः प्रतापवान् उद्-योगम् सर्व-सैन्यानाम् दैत्यानाम् आदिदेश ह॥३॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, कोपपराधीनचेताः=क्रोध के वशीभूत, प्रतापवान्=प्रतापी, शुम्भः=शुम्भ ने, सर्वसैन्यानाम्=सम्पूर्ण सेना से सुसज्जित, दैत्यानाम्=दैत्यों को, उद्योगम्=तैयारी के लिए, आदिदेश ह=आदेश दिया।।३।।

अन्वितार्थ

इसके बाद क्रोध के वशीभूत प्रतापी शुम्भ ने सम्पूर्ण सेना से सुसज्जित दैत्यों को तैयारी के लिए आदेश दिया।।३।।

मन्त्र

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः।।४।।

पदच्छेद

अद्य सर्व-बलैः दैत्याः षडशीतिः उद्-आयुधाः कम्बूनाम् चतुर्-अशीतिः निः-यान्तु स्व-बलैः वृताः।।४।।

अन्वितपदार्थ

षडशीतिः=छियासी, उदायुधाः=उदायुध, जाति के, दैत्याः=दैत्यगण, सर्वबलैः=सम्पूर्ण सेना के साथ, कम्बूनाम्=कम्बु जाति के, चतुरशीतिः=चौरासी दैत्यगण, स्वबलैः=अपनी सेनाओं से, वृताः=सुसज्जित होकर, अद्य=आज ही, निर्यान्तु=प्रयाण करें।।४।।

अन्वितार्थ

छियासी उदायुध जाति के दैत्यगण सम्पूर्ण सेना के साथ कम्बु जाति के चौरासी दैत्यगण अपनी सेनाओं से सुसज्जित होकर आज ही प्रयाण करें।।४।।

मन्त्र

कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया।।५।।

पदच्छेद

कोटि-वीर्याणि पञ्चाशत् असुराणाम् कुलानि वै शतम् कुलानि धौम्राणाम् निर्-गच्छन्तु मम आज्ञया।।५।।

अन्वितपदार्थ

पञ्चाशत्=पचास, असुराणाम्=राक्षसों वाला, कोटिवीर्याणि=कोटिवीर्यों का, कुलानि=परिवार, धौम्राणाम्=धूम्र वंशियों के, शतम्=एक सौ, कुलानि=परिवार, मम=मेरी, आज्ञया=आज्ञा से, निर्गच्छन्तु=निकलें।।५।।

अन्वितार्थ

पचास राक्षसों वाला कोटिवीर्यों का परिवार धूम्रवंशियों के एक सौ परिवार मेरी आज्ञा से निकलें।।५।।

मन्त्र

कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथाऽसुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।।६।।

पदच्छेद

कालकाः दौर्हृदाः मौर्याः कालकेयाः तथा असुराः युद्धाय सज्जाः निर्-यान्तु आज्ञया त्वरिताः मम।।६।।

अन्वितपदार्थ

तथा=इसी प्रकार, कालकाः=कालकगण, दौर्हृदाः=दौर्हृदगण, मौर्याः=मौर्यगण, कालकेयाः=कालकेय जातियों के, असुराः=राक्षस गण, त्वरिताः=तेजी से, युद्धाय=युद्ध के लिए, सज्जाः=तैयार होकर, मम=मेरी, आज्ञया=आज्ञा से, निर्गच्छन्तु=प्रस्थान करें।।६।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार कालकगण, दौर्हृदगण, मौर्यगण, कालकेय जातियों के राक्षस गण तेजी से युद्ध के लिए तैयार होकर मेरी आज्ञा से प्रस्थान करें।।६।।

मन्त्र

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः।।७।।

पदच्छेद

इति आ-ज्ञाप्य असुराणाम् पतिः शुम्भ भैरव-शासनः निर्-जगाम् महा-सैन्य-सहस्रैः बहुभिः वृतः।।७।।

अन्वितपदार्थ

इति=इस प्रकार से, आज्ञाप्य=आज्ञा देकर, असुराणाम्=राक्षसों का, पतिः=स्वामी, भैरवशासनः=कठोर शासक, शुम्भ=शुम्भ स्वयम्, बहुभिः=अनेकों प्रकार की, महासैन्यसहस्रैः=विशाल सेनाओं की टुकड़ियों से, वृतः=सुसज्जित होकर, निर्जगाम=निकला।।७।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार से आज्ञा देकर राक्षसों का स्वामी कठोर शासक स्वयम् अनेकों प्रकार की विशाल सेनाओं की हजारों टुकड़ियों से सुसज्जित होकर निकला।।७।।

मन्त्र

आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत् सैन्यमतिभीषणम्।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम्।।८।।

पदच्छेद

आयान्तम् चण्डिका दृष्ट्वा तत् सैन्यम् अतिभीषणम् ज्या-स्वनैः पूरयामास धरणी-गगन-अन्तरम्।।८।।

अन्वितपदार्थ

चण्डिका=भगवती चण्डिका ने, तत्=उस, अतिभीषणाम्=अत्यन्त भयानक, सैन्यम्=सेना को, आयान्तम्=आते हुए, दृष्ट्वा=देखकर, ज्यास्वनैः=धनुष के प्रत्यञ्चा के टङ्कारों से, धरणीगगनान्तरम्=धरती एवं आकाश के मध्य भाग अन्तरिक्ष को, पूरयामास=गुँजा डाला।।८।।

अन्वितार्थ

भगवती चण्डिका ने उस अत्यन्त भयानक सेना को आते देखकर धनुष के प्रत्यञ्चा के टङ्कारों से धरती एवं आकाश के मध्य भाग अन्तरिक्ष को गुँजा डाला।।८।।

मन्त्र

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप।
घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत्।।९।।

पदच्छेद

ततः सिंह महानादम् अति-इव कृतवान् नृप घण्टा-स्वनेन तत् नादम् अम्बिका च उप-बृंहयत्।।९।।

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्, ततः=इन टङ्कारों के बाद, सिंह=भगवती के वाहन सिंह ने, अतीव=अत्यन्त, महानादम्=भयानक गर्जन, कृतवान्=किया, अम्बिका च=तथा अम्बिका ने, तत्=उस, नादम्=गर्जन को, घण्टास्वनेन=अपने घण्टा की ध्वनि के द्वारा, उपबृंहयत्=और बढ़ा दिया।।९।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! इन टङ्कारों के बाद भगवती के वाहन सिंह ने अत्यन्त भयानक गर्जन किया और तथा अम्बिका ने उस गर्जन को अपने घण्टा की ध्वनि के द्वारा और बढ़ा दिया।।९।।

मन्त्र

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना।।१०।।

पदच्छेद

धनुर्-ज्या-सिंह-घण्टानाम् नाद-आपूरित-दिङ्मुखा निनादैः भीषणैः काली जिग्ये विस्तारित-आनना।।१०।।

अन्वितपदार्थ

धनुर्-ज्या-सिंह-घण्टानाम्=भगवती के धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार सिंह एवं घण्टा के, भीषणैः=भीषण, निनादैः=ध्वनियों से, नाद-आपूरित-दिङ्मुखा=अपनी गर्जना से दिशाओं को भर देने वाली, विस्तारितानना=मुख की विस्तारित की हुई, काली=पहले से गरज रही भगवती काली, जिग्ये=जीत ली गई।।१०।।

अन्वितार्थ

भगवती के धनुष की प्रत्यञ्चा के टङ्कार सिंह एवं घण्टा के भीषण ध्वनियों से अपनी गर्जना से दिशाओं को भर देने वाली मुख को

विस्तारित की हुई पहले से गरज रही भगवती काली जीत ली गई (दबा दी गई)।।१०।।

मन्त्र

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिता:।।११।।

पदच्छेद

तत् नि-नादम् उप-श्रुत्य दैत्यानाम् सैन्यैः चतुर्-दिशम् देवी सिंहः तथा काली सरोषैः परि-वारिता:।।११।।

अन्वितपदार्थ

तत्=उस, चतुर्दिशम्=चारों दिशाओं में व्याप्त, निनादम्=महानाद को, उपश्रुत्य=सुनकर, देवी=देवी, सिंहः=उनका सिंह, तथा=एव, काली=काली, दैत्यानाम्=दैत्यों की, सरोषैः=क्रुद्ध, सैन्यैः=सेनाओं द्वारा, परिवारिता:=घेर लिए गए।।११।।

अन्वितार्थ

उस चारों दिशाओं में व्याप्त महानाद को सुनकर देवी, उनका सिंह एवं काली दैत्यों की क्रुद्ध सेनाओं द्वारा घेर लिए गए।।११।।

मन्त्र

एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विता:।।१२।।

पदच्छेद

एतस्मिन् अन्तरे भूप विनाशाय सुर-द्विषाम् भवाय अमर-सिंहानाम् अति-वीर्य-बल-अन्विता:।।१२।।

अन्वितपदार्थ

भूप=हे राजन्!, एतस्मिन्=इसी, अन्तरे=बीच, सुरद्विषाम्=देवद्रोही राक्षसों के, विनाशाय=विनाश के लिए तथा, अमरसिंहानाम्=देवश्रेष्ठों की, भवाय=समृद्धि के लिए, अतिवीर्यबलान्विता:=अति उत्साह एवं शक्ति से सम्पन्न।।१२।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! इसी बीच देवद्रोही राक्षसों के विनाश के लिए तथा देवश्रेष्ठों की समृद्धि के लिए अति उत्साह एवं शक्ति से सम्पन्न॥१२॥

मन्त्र

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः॥१३॥

पदच्छेद

ब्रह्म-ईशं-गुह-विष्णूनाम् तथा एव इन्द्रस्य च शक्तयः शरीरेभ्यः वि-निष्-क्रम्य तद् रूपैः चण्डिकाम् ययुः॥१३॥

अन्वितपदार्थ

ब्रह्म-ईश-गुह-विष्णूनाम्=ब्रह्मा की शिव की, स्कन्द कुमार की, विष्णु की, तथा एव=इसी प्रकार, इन्द्रस्य=इन्द्र की, शक्तयः=शक्तियाँ, शरीरेभ्यः=विग्रहों से, विनिष्क्रम्यः=निकल कर, तत्=उन्हीं देवों के, रूपैः=रूपों में, चण्डिकाम्=भगवती की ओर, ययुः=गईं॥१३॥

अन्वितार्थ

ब्रह्मा की, शिव की, स्कन्द कुमार की, विष्णु की इसी प्रकार इन्द्र की शक्तियाँ विग्रहों से निकल कर उन्हीं देवों के रूपों में भगवती की ओर गईं॥१३॥

मन्त्र

यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम्।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ॥१४॥

पदच्छेद

यस्य देवस्य यद् रूपम् यथा भूषणम् वाहनम् तद् वद् एव हि तत् शक्तिः असुरान् योद्धुम् आययौ॥१४॥

अन्वितपदार्थ

यस्य=जिस, देवस्य=देव ही, यत्=जो, रूपम्=रूप, यथा=जैसा, भूषणम्=अलंकार एव, वाहनम्=वाहन था, तद्वदेव हि=उसी रूप में ही, तत् शक्तिः=उनकी शक्ति, असुरान्=राक्षसों से, योद्धुम्=लड़ने के लिए,

आययौ=आ पहुँची॥१४॥

अन्वितार्थ

जिस देवी की जो रूप जैसा अलंकार एवं वाहन था। उसी रूप में ही उनकी शक्ति राक्षसों से लड़ने के लिए आ पहुँची॥१४॥

मन्त्र

हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते॥१५॥

पदच्छेद

हंस-युक्त-विमान-अग्रे स-अक्ष-सूत्र-कमण्डलुः आयाताः ब्रह्मणः शक्तिः ब्रह्माणी सा अभि-धीयते॥१५॥

अन्वितपदार्थ

ब्रह्मणः=ब्रह्मा की, शक्तिः=शक्ति, हंस-युक्त-विमान-अग्रे=हंस जुते हुए विमान के अग्रिम आसन पर विराजमान, साक्षसूत्रकमण्डलुः= अक्षमाला एवं कमण्डलु लिए हुए, आयाता, आईं, सा=उन्हें, ब्रह्माणी=**ब्रह्माणी**, अभिधीयते=कहा जाता है॥१५॥

अन्वितार्थ

ब्रह्मा की शक्ति हंस जुते हुए विमान के अग्रिम आसन पर विराजमान, अक्षमाला एवं कमण्डलु लिए हुए आईं। उन्हें **ब्रह्माणी** कहा जाता है॥१५॥

मन्त्र

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा॥१६॥

पदच्छेद

माहेश्वरी वृष-आरूढा त्रिशूलवर-धारणी महा-अहि-वलया प्राप्ता चन्द्र-रेखा-विभूषणा॥१६॥

अन्वितपदार्थ

वृषारूढा=वृषभ पर विराजमान, त्रिशूल-वर-धारणी=त्रिशूल एवं वर मुद्रा

धारण करने वाली, महाहिवलया=विशाल नाग का कंगन पहने हुए, चन्द्ररेखाविभूषणा=चन्द्रमा की सोलहवीं कला से विभूषित, माहेश्वरी=महेश्वर शिव की शक्ति **माहेश्वरी**, प्राप्ता=उपस्थित हुईं।।१६।।

अन्वितार्थ

वृषभ पर विराजमान त्रिशूल एवं वर मुद्रा धारण करने वाली विशाल नाग का कंगन पहने हुए चन्द्रमा की सोलहवीं कला से विभूषित महेश्वर शिव की शक्ति **माहेश्वरी** उपस्थित हुईं।।१६।।

मन्त्र

कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी।।१७।।

पदच्छेद

कौमारी शक्ति-हस्ता च मयूर-वर-वाहना योद्धुम् अभि-आ-याययौ दैत्यान् अम्बिका गुह-रूपिणी।।१७।।

अन्वितपदार्थ

गुहरूपिणी=स्कन्द रूप में, अम्बिका=भगवती, कौमारी च=कौमारी कार्तिकेय की शक्ति, शक्तिहस्ता=शल्य शस्त्र को हाथ में लिए, मयूरवरवाहना=श्रेष्ठ मयूर पर विराजमान होकर, योद्धुम्=युद्ध के लिए, अभ्याययौ=आ पहुँची।।१७।।

अन्वितार्थ

स्कन्द रूप में भगवती **कौमारी** कार्तिकेय की शक्ति शल्यशस्त्र को हाथ में लिए श्रेष्ठ मयूर पर विराजमान होकर युद्ध के लिए आ पहुँची।।१७।।

मन्त्र

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरिसंस्थिता।
शंखचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ।।१८।।

पदच्छेद

तथा एव वैष्णवी शक्तिः गरुड-उपरि संस्थिता शंख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-हस्ता अभि-उप-आ-ययौ।।१८।।

अन्वितपदार्थ

तथा एव=इसी प्रकार से, गरुडस्य=गरुड के, उपरि=ऊपर, संस्थिता=विराजमान, शंखचक्रगदाशार्ङ्गहस्ता=शंख-चक्र-गदा एवं शार्ङ्ग धनुष हाथों में धारण किये हुए, वैष्णवीशक्ति=विष्णु की शक्ति वैष्णवी, अभ्युपाययौ=आ गईं।।१८।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार से गरुड के ऊपर विराजमान शंख-चक्र-गदा एवं शार्ङ्गधनुष हाथों में धारण किये हुए विष्णु की शक्ति **वैष्णवी** आ गईं।।१८।।

मन्त्र

यज्ञवाराहमतुलं रूपं सा विभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्यायययौ तत्र वाराहीं विभ्रती तनुम्।।१९।।

पदच्छेद

यज्ञ-वाराहम् अ-तुलम् रूपम् या विभ्रतः हरेः शक्तिः सा अपि आययौ तत्र वाराहीम् विभ्रती तनुम्।।१९।।

अन्वितपदार्थ

अतुलम्=अनुपमेय, यज्ञवाराहम्=यज्ञ वाराह का, रूपम्=रूप, विभ्रतः=धारण करने वाले, हरेः या=श्रीहरि की जो, शक्तिः=शक्ति हैं, सा अपि=वे भी, वाराहीम्=वाराही, तनुम्=विग्रह, विभ्रती=धारण किए हुए, तत्र=उस रणभूमि में, आययौ=आ गईं।।१९।।

अन्वितार्थ

अनुपमेय यज्ञवाराह का रूप धारण करने वाले श्रीहरि की जो शक्ति हैं। वे भी **वाराही** विग्रह धारण किए हुए उस रणभूमि में आ गईं।।१९।।

मन्त्र

नारसिंही नृसिंहस्य विभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः।।२०।।

पदच्छेद

नारसिंही नृसिंहस्य विभ्रती सदृशम् वपुः प्राप्ता तत्र सटा-आक्षेप-

क्षिप्त-नक्षत्र-संहति:।।२०।।

अन्वितपदार्थ

सटा-आक्षेप-क्षिप्त-नक्षत्र-संहति:=आयालों के झटकने से बिखराए गए हैं नक्षत्रों के समूह जिनके द्वारा वे, नृसिंहसदृशम्=नृसिंह के समान, वपु:=शरीर, विभ्रती=धारण की हुई, नारसिंही=नृसिंह की शक्ति नारसिंही, तत्र=उस स्थान पर, प्राप्ता=आ गईं।।२०।।

अन्वितार्थ

अयालों के झटकने से बिखराए गए हैं नक्षत्रों का समूह जिनके द्वारा वे नृसिंह के समान शरीर धारण की हुई नृसिंह की शक्ति **नारसिंही** उस स्थान पर आ गईं।।२०।।

मन्त्र

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरिस्थिता।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा।।२१।।

पदच्छेद

वज्र-हस्ता तथा एव ऐन्द्री गज-राज-उपरि स्थिता प्राप्ता सहस्र-नयना यथा शक्र: तथा एव सा।।२१।।

अन्वितपदार्थ

तथा एव=इसी प्रकार, यथा=जिस तरह, शक्र:=इन्द्र हैं, सा=उसी रूप में, वज्रहस्ता=इन्द्र की शक्ति हाथ में वज्र लिए हुए, गजराजस्य=गजराज ऐरावत के, उपरि=ऊपर, स्थिता=बैठी हुईं, सहस्रनयना=हजार नेत्रों वाली, ऐन्द्री=ऐन्द्री, प्राप्ता=आईं।।२१।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार जिस तरह इन्द्र हैं उसी रूप में इन्द्र की शक्ति हाथ में वज्र लिए हुए, गजराज ऐरावत के ऊपर बैठी हुईं, हजार नेत्रों वाली **ऐन्द्री** आईं।।२१।।

मन्त्र

तत: परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभि:।
हन्यन्तामसुरा: शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम्।।२२।।

पदच्छेद

ततः परिवृतः ताभिः ईशानः देव-शक्तिभिः हन्यन्ताम् असुराः शीघ्रम् मम प्रीत्या आह चण्डिकाम्।।२२।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, ताभिः=उन, देवशक्तिभिः=देव शक्तियों से, परिवृतः=परिवेष्टित, ईशानः=परमेश्वर ईशान शिव ने, चण्डिकाम्=भगवती चण्डिका से, आह=कहा कि, ''मम=''मेरी, प्रीत्या=प्रसन्नता के लिए, शीघ्रम्=शीघ्र, असुराः=राक्षस गण, हन्यन्ताम्''=विनष्ट किए जाएँ''।।२२।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् उन देव शक्तियों ने परिवेष्टित परमेश्वर ईशान शिव ने भगवती चण्डिका से कहा कि ''मेरी प्रसन्नता के लिए शीघ्र राक्षसगण विनष्ट किए जाएँ''।।२२।।

मन्त्र

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रातातिभीषणा।
चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी।।२३।।

पदच्छेद

ततः देव्याः शरीरात् तु विनिष्-क्रान्ता अति-भीषणा चण्डिका-शक्तिः अति-उग्रा शिवा-शत-निनादिनी।।२३।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसी अवसर पर, देव्याः=भगवती कौशिकी के, शरीरात्=शरीर से, अतिभीषणा=अत्यन्त भयानक, अति उग्रा=अत्यन्त रौद्र स्वभाव वाली, शिवानाम् शतेन=अकेली ही एक सौ श्रृगालियों की, निनादिनी=ध्वनि करने वाली, चण्डिकायाः=चण्डिका की, शक्तिः=शक्ति, विनिष्क्रान्ता=प्रकट हुईं।।२३।।

अन्वितार्थ

इसी अवसर पर भगवती कौशिकी के शरीर से अत्यन्त भयानक अत्यन्त रौद्र स्वभाव वाली अकेली ही एक सौ श्रृगालियों की ध्वनि करने वाली

चण्डिका की शक्ति प्रकट हुई।।२३।।

मन्त्र

सा च धूम्रजटिलमीशानपराजिता।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः।।२४।।

पदच्छेद

सा च आह धूम्र-जटिलम् ईशानम् अ-पराजिता दूत त्वम् गच्छ भगवन् पार्श्वम् शुम्भ-निशुम्भयोः।।२४।।

अन्वितपदार्थ

सा च=और उन, अपराजिता=भगवती अपराजिता ने, धूम्रजटिलम्=धुँए के समान काली जटाओं वाले, ईशानम्=ईशान शिव से, आह=कहा, "भगवन्!="हे ऐश्वर्यसम्पन्न ईश्वर सन्देश वाहक रूप में, त्वम्=आप, शुम्भनिशुम्भयोः=शुम्भनिशुम्भ के, पार्श्वम्=पास, गच्छ"=जाओ"।।२४।।

अन्वितार्थ

और उन भगवती अपराजिता ने धुँए के समान काली जटाओं वाले ईशान शिव से कहा "हे ऐश्वर्यसम्पन्न ईश्वर! सन्देश वाहक रूप में आप शुम्भनिशुम्भ के पास जाओ"।।२४।।

मन्त्र

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः।।२५।।

पदच्छेद

ब्रूहि शुम्भम् निशुम्भम् च दानवौ अतिगर्वितौ ये च अन्ये दानवाः तत्र युद्धाय समुस्थिताः।।२५।।

अन्वितपदार्थ

अतिगर्वितौ=अतिघमण्डी, दानवौ=दोनों दैत्यों, शुम्भम् निशुम्भम् च=शुम्भ और निशुम्भ से, ये च=और जो, अन्ये=दूसरे, दानवाः=दैत्य, तत्र युद्धाय=युद्ध के लिए, समुस्थिताः=तैयार हैं, उनसे, ब्रूहि=कहो।।२५।।

अन्वितार्थ

अत्यधिक घमण्डी दानव शुम्भ निशुम्भ से और जो दूसरे दैत्य युद्ध के लिए तैयार हैं उनसे, कहो।।२५।।

मन्त्र

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ।।२६।।

पदच्छेद

त्रैलोक्यम् इन्द्रः लभताम् देवाः सन्तु हविर्-भुजः यूयम् प्रयात पातालम् यदि जीवितुम् इच्छथ।।२६।।

अन्वितपदार्थ

''इन्द्र=''इन्द्र, त्रैलोक्यम्=त्रैलोक्य का अधिकार, लभताम्=पाएँ, देवाः=देवगण, हविर्भुजः=यज्ञ भाग का भोग करने वाले, सन्तु=हो जाएँ, यदि यूयम्=यदि तुम दोनों, जीवितुम्=जीवित रहना, इच्छथ=चाहते हो तो, पातालम्=पाताल, प्रयात''=चले जाओ''।।२६।।

अन्वितार्थ

''इन्द्र त्रैलोक्य का अधिकार पाएँ, देवता गण यज्ञभाग का भोग करने वाले हो जाएँ और यदि तुम दोनों जीवित रहना चाहते हो तो पाताल चले जाओ''।।२६।।

मन्त्र

बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः।।२७।।

पदच्छेद

बल-अवलेपाद् अथ चेद् भवन्तः युद्ध-काङ्क्षिणः तद् आगच्छत तृप्यन्तु मत् शिवाः पिशितेन वः।।२७।।

अन्वितपदार्थ

अथ चेत्=किन्तु यदि, बलावलेपात्=शक्ति के घमण्ड के कारण, भवन्तः=तुम

लोग, युद्धकाङ्क्षिणः=युद्ध की इच्छा रखते हो, तत्=तो, आगच्छत=आ जाओ, मम=मेरी, शिवाः=शिवाएँ, वः=तुम सभी के, पिशितेन=मांस से, तृप्यन्ताम्=तृप्त हों।।२७।।

अन्वितार्थ

किन्तु यदि शक्ति के घमण्ड के कारण तुम लोग युद्ध की इच्छा रखते हो तो आ जाओ मेरी शिवाएँ तुम सभी के मांस से तृप्त हों।।२७।।

मन्त्र

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता।।२८।।

पदच्छेद

यतः नियुक्तः दौत्येन तथा देव्या शिवः स्वयम् शिव-दूती इति लोके अस्मिन् ततः सा ख्यातिम् आगता।।२८।।

अन्वितपदार्थ

यतः=क्योंकि, तया=उन, देव्या=भगवती के द्वारा, स्वयम्=साक्षात्, शिवः=शिव, दौत्येन=संदेशवाहक रूप में, नियुक्तः=नियोजित किए गए थे, ततः=इसलिए, सा=वह शक्ति, अस्मिन्=इस, लोके=जगत् में, शिवदूती इति=**'शिवदूती'** इस नाम से, ख्यातिम्=विख्यात, आगता= हुईं।।२८।।

अन्वितार्थ

क्योंकि उन भगवती के द्वारा साक्षात् शिव संदेशवाहक रूप में नियोजित किए गए थे इसलिए वह श्क्ति इस जगत में **'शिवदूती'** इस नाम से विख्यात हुईं।।२८।।

मन्त्र

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्या शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता।।२९।।

पदच्छेद

ते अपि श्रुत्वा वचः देव्याः शर्व-आख्यातम् महासुराः अमर्ष-आपूरिताः जग्मुः यत्र कात्यायनी स्थिता।।२९।।

अन्वितपदार्थ

ते=वे, महासुराः=महाराक्षस, अपि=भी, शर्व-आख्यातम्=शिव के द्वारा बताए गए, देव्याः=भगवती के, वचः=वचनों को, श्रुत्वा=सुनकर, अमर्ष-आपूरिताः=क्रोध से भरे हुए, यत्र=जहाँ, कात्यायनी=भगवती कात्यायनी, स्थिता=विराजमान थीं वहाँ, जग्मुः=गए॥२९॥

अन्वितार्थ

वे महाराक्षस भी शिव के द्वारा बताए गए भगवती के वचनों को सुनकर क्रोध से भरे हुए जहाँ भगवती कात्यायनी विराजमान थीं वहाँ गए॥२९॥

मन्त्र

ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः॥३०॥

पदच्छेद

ततः प्रथमम् एव अग्रे शर-शक्ति-ऋष्टि-वृष्टिभिः ववर्षुः उद्धत-अमर्षाः ताम् देवीम् अमरारयः॥३०॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, उद्धतामर्षाः=क्रोध से बौखलाए, अमरारयः= देवशत्रुओं ने, प्रथमम्=पहले, एव=ही, अग्रे=सम्मुख आकर, शर=बाणों, शक्ति=शल्यों, ऋष्टि=दोधार वाले विशेष प्रकार के खड्गों के, वृष्टिभिः=सन्धानों से, ताम्= उन, देवीम्=भगवती पर, ववर्षुः=वर्षा कर दी॥३०॥

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् क्रोध से बौखलाए देवशत्रुओं ने पहले ही सम्मुख आकर बाणों, शल्यों विशेष प्रकार के दोधार वाले खड्गों के सन्धानों से उन भगवती पर वर्षा कर दी।

मन्त्र

सा च तान्प्रहितान्बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः॥३१॥

पदच्छेद

सा च तान् प्रतिहतान् बाणान् शूल-शक्ति-परश्वघान् चिच्छेद लीलया आ-ध्मातैः धनुर्-मुक्तैः महा-इषुभिः॥३१॥

अन्वितपदार्थ

सा च=और उन्होंने, प्रतिहतान्=प्रहार किए गए, तान्=उन, बाणान्=बाणों, शूल-शक्ति-परश्वघान्=भालों, शल्यों और फरसों को, धनुषा=अपने धनुष द्वारा, मुक्तैः=छोड़े गए, आध्मातैः=सनसनाते हुए, महेषुभिः=विशाल बाणों द्वारा, लीलया=खेल-खेल में, चिच्छेद=काट डाला॥३१॥

अन्वितार्थ

और उन्होंने प्रहार किए गए उन बाणों भालों शल्यों और फरसों को अपने धनुष द्वारा छोड़े गए, सनसनाते हुए विशाल बाणों द्वारा खेल-खेल में काट डाला॥३१॥

मन्त्र

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथिताँश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा॥३२॥

पदच्छेद

तस्याः अग्रतः तथा काली, शूल-पात-विदारितान् खट्वाङ्ग-पोथितान् च अन्यान् कुर्वती व्यचरत् तदा॥३२॥

अन्वितपदार्थ

तथा=इसी प्रकार से, तदा=उस समय, तस्याः=उन भगवती के, अग्रतः=आगे होकर, अन्यान् च=दूसरे राक्षसों को, शूलपातविदारितान्=भालों के आघात से विदीर्ण, खट्वाङ्ग-पोथितान्=नरकङ्काल द्वारा निर्मित शस्त्र से चीथड़े, कुर्वती=करती हुई, काली=भगवती काली, व्यचरत्=विचरण करने लगी॥३२॥

अन्वितार्थ

इसी प्रकार से उस समय उन भगवती के आगे होकर दूसरे राक्षसों को भालों के आघात से विदीर्ण एवं नरकङ्काल निर्मित शस्त्र से चीथड़े करती हुई भगवती काली विचरण करने लगी॥३२॥

मन्त्र

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः।
ब्रह्माणी चाऽकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति।।३३।।

पदच्छेद

कमण्डलु-जल-आक्षेपात् हत-वीर्यान् हत-ओजसः ब्रह्माणी च अकरोत् शत्रून् येन-येन स्म धावति।।३३।।

अन्वितपदार्थ

ब्रह्माणी=ब्रह्माणी, येन-येन=जिस-जिस ओर से, धावति स्म=दौड़ती थीं, कमण्डलु-जलाक्षेपात्=कमण्डुलु के अभिन्त्रित जल के प्रक्षेप से, शत्रून्=शत्रुओं को, हतवीर्यान्=उत्साहहीन, हतौजसः च=और निस्तेज, अकरोत्=कर देती थीं।।३३।।

अन्वितार्थ

ब्रह्माणी जिस-जिस ओर से दौड़ती थीं वहाँ कमण्डुलु के अभिन्त्रित जल के प्रक्षेप से शत्रुओं को उतसाह हीन और निस्तेज कर देती थीं।।३३।।

मन्त्र

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना।।३४।।

पछच्छेद

माहेश्वरी त्रिशूलेन् तथा चक्रेण वैष्णवी दैत्यान् जघान कौमारी तथा शक्त्या अतिकोपना।।३४।।

अन्वितपदार्थ

माहेश्वरी=माहेश्वरी ने, त्रिशूलेन=त्रिशूल से, तथा=इसी प्रकार से, वैष्णवी=वैष्णवी ने, चक्रेण=चक्र से, तथा=और, अतिकोपना=अत्यन्त गुस्से वाली, कौमारी=कौमारी ने, शक्त्या=शल्य शस्त्र से, दैत्यान्=दैत्यों को, जघान=मारा।।३४।।

अन्वितार्थ

माहेश्वरी ने त्रिशूल से इसी प्रकार से वैष्णवी ने चक्र से और अत्यन्त

गुस्से वाली कौमारी ने शल्य शस्त्र से दैत्यों को मारा।।३४।।

मन्त्र

ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः।
पेतुर्विदारिताः भूमौ रुधिरौघप्रवर्षिणः।।३५।।

पदच्छेद

ऐन्द्री-कुलिश-पातेन शतशः दैत्य-दानवाः पेतुः विदारिताः भूमौ रुधिर-ओघ-प्रवर्षिणः।।३५।।

अन्वितपदार्थ

ऐन्द्रीकुलिशपातेन=ऐन्द्री के वज्रपात से, विदारिताः=चीरे गए, रुधिरौघप्रवर्षिणः= अतः रक्त की धारा बरसाने वाले, शतशः=सैकड़ों, दैत्याः=दैत्य, दानवाः= दानव, भूमौ=धरती पर, पेतुः=गिर पड़े।।३५।।

अन्वितार्थ

ऐन्द्री के वज्रपात से चीरे गए अतः रक्त की धारा बरसाने वाले सैकड़ों दैत्य दानव धारती पर गिर पड़े।।३५।।

मन्त्र

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः।
वाराहमूर्त्या न्यपतँश्चक्रेण च विदारिताः।।३६।।

पदच्छेद

तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ताः दंष्ट्र-अग्र-क्षत-वक्षसः वाराह-मूर्त्या नि-अपतन् चक्रेण च विदारिताः।।३६।।

अन्वितपदार्थ

वाराह-मूर्त्या=वराह के रूप में वाराही के, तुण्ड-प्रहारेण=नथुने के प्रहार से, विध्वस्ताः=विनष्ट, दंष्ट्राग्रेण=डाढ़ों की नोकों से, क्षतवक्षसः=फटी हुई छाती वाले, चक्रेण च=तथा चक्र से, विदारिताः=काटे गए, राक्षस, न्यपतन्=धराशायी हो रहे थे।।३६।।

अन्वितार्थ

वराह के रूप में वाराही के नथुने के प्रहार से विनष्ट, डाढ़ों की नोकों

से फटी हुई छाती वाले तथा चक्र से काटे गए राक्षस धराशायी हो रहे थे॥३६॥

मन्त्र

नखैर्विदारिताँश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा॥३७॥

पदच्छेद

नखैः विदारितान् च अन्यान् भक्षयन्ती महासुरान् नारसिंही चचार आजौ नाद-आपूर्ण-दिग्-अम्बरा॥३७॥

अन्वितपदार्थ

आजौ च=और युद्ध में, नादापूर्णदिगम्बरा=गर्जना से दिशाओं और आकाश को भर देने वाली, नारसिंही=नारसिंही, नखैः=नख से, विदारितान्=फाड़े हुए, अन्यान्=अन्य, महासुरान्=महाराक्षसों का, भक्षयन्ती=भक्षण करती हुईं, चचार=विचरण कर रही थी॥३७॥

अन्वितार्थ

और युद्ध में गर्जना से दिशाओं और आकाश को भर देने वाली नारसिंही नख से फाड़े हुए अन्य महाराक्षसों का भक्षण करती हुईं विचरण कर रही थी॥३७॥

मन्त्र

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्याभिदूषिताः।
पेतुर्विदारिताः भूमौ ताँश्चखादाथ सा तदा॥३८॥

पदच्छेद

चण्ड-अट्टहासैः असुराः शिव-दूत्या अभि-दूषिताः पेतुः विदारिता भूमौ तान् चखाद अथ सा तदा॥३८॥

अन्वितपदार्थ

शिवदूत्या=शिवदूती के द्वारा उत्पन्न, चण्डैः=भयानक, अट्टहासैः=अट्टहासों से, अभिदूषिताः=पूरी तरह डरे हुए और, विदारिताः=चिथड़े हुए, असुराः=राक्षसगण, भूमौ=धरती पर, पेतुः=गिर गए थे। अथ=इसके पश्चात्, तदा=तब, सा=उन्होंने, तान्=उनका, चखाद=भक्षण कर डाला॥३८॥

अन्वितार्थ

शिवदूती के द्वारा उत्पन्न भयानाक अट्टहासों से मूर्छित एवं चिथड़े हुए राक्षसगण धरती पर गिर गए थे। इसके पश्चात् तब उन्होंने उनका भक्षण कर डाला।।३८।।

मन्त्र

इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाऽभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः।।३९।।

पदच्छेद

इति मातृ-गणम् क्रुद्धम् मर्दयन्तम् महासुरान् दृष्ट्वा अभि-उपायैः विविधैः नेशुः देव-अरि-सैनिकाः।।३९।।

अन्वितपदार्थ

इति=इस प्रकार, विवधैः=अनेक प्रकार के, अभ्युपायैः=युद्ध के उपकरणों के द्वारा, महासुरान्=विशाल राक्षसों को, मर्दयन्तम्=कुचलते हुए, क्रुद्धम्=कुपित, मातृगणम्=मातृ शक्तियों को, दृष्ट्वा=देखकर, देवारि-सैनिकाः= देवद्रोही राक्षसों के सैनिक लोग, नेशुः=भाग खड़े हुए।।३९।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार अनेक प्रकार के युद्ध के उपकरणों के द्वारा विशाल राक्षसों को कुचलते हुए कुपित मातृशक्तियों को देखकर देवद्रोही राक्षसों के सैनिक लोग भाग खड़े हुए।।३९।।

मन्त्र

पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः।।४०।।

पदच्छेद

पलायन-परान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृ-गण-अर्दितान् योद्धुम् अभि-आययौ क्रुद्ध रक्त-बीजः महासुरः।।४०।।

अन्वितपदार्थ

मातृगणैः=मातृशक्तियों से, अर्दितान्=प्रताड़ित, दैत्यान्=राक्षसों को, पलायनपरान्= भागते हुए, दृष्ट्वा=देखकर, महासुरः=महाराक्षस, रक्तबीजः= रक्तबीज,

क्रुद्ध=गुस्साया हुआ, योद्धम् लड़ने के लिए, अभ्याययौ=आ गया।।४०।।

अन्वितार्थ

मातृशक्तियों से प्रताड़ित राक्षसों को भागते हुए देखकर महाराक्षस रक्तबीज गुस्साया हुआ लड़ने के लिए आ गया।।४०।।

मन्त्र

रक्तविन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणो महासुरः।।४१।।

पदच्छेद

रक्त-विन्दुः यदा भूमौ पतति अस्य शरीरतः सम्-उत्-पतति मेदिन्याम् तत्-प्रमाणः महासुरः।।४१।।

अन्वितपदार्थ

'यदा='जब, अस्य=इसके, शरीरतः=शरीर से, रक्त-विन्दुः=रक्त की बूँद, भूमौ=भूमि पर, पतति=गिरती है, तत्प्रमाणः=उसी के समान, महासुरः=विशाल दैत्य, मेदिन्याम्=धरती पर, समुत्पतति'=पैदा हो जाता है'।।४१।।

अन्वितार्थ

'जब इसके शरीर से रक्त की बूँद भूमि पर गिरती है उसी के समान विशाल दैत्य धरती पर पैदा हो जाता है'।।४१।।

मन्त्र

युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्।।४२।।

पदच्छेद

युयुधे सः गदापाणिः इन्द्र-शक्त्या महासुरः ततः च ऐन्द्री स्व-वज्रेण रक्तबीजम् अताडयत्।।४२।।

अन्वितपदार्थ

गदापाणिः=हाथ में गदा लेकर, सः=उस, महासुरः=महाराक्षस ने, इन्द्र-शक्त्या=इन्द्र की शक्ति के साथ, युयुधे=युद्ध किया, ततः च=और तब, ऐन्द्री=ऐन्द्री ने, स्ववज्रेण=अपने वज्र से, रक्तबीजम्=रक्त बीज को, अताडयत्=मारा।।४२।।

अन्वितार्थ

हाथ में गदा लेकर उस महाराक्षस ने इन्द्र की शक्ति के साथ युद्ध किया और तब ऐन्द्री ने अपने वज्र से रक्तबीज को मारा।।४२।।

मन्त्र

कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः।।४३।।

पदच्छेद

कुलिशेन आहतस्य आशु बहु सुस्राव शोणितम् सम्-उत्-तस्थुः ततः योधाः तद्-रूपाः तत्-पराक्रमाः।।४३।।

अन्वितपदार्थ

कुलिशेन=वज्र से, आहतस्य=घायल राक्षस का, बहु=अत्यधिक, शोणितम्=रक्त, आशु=तत्काल, सुस्राव=बह निकला, ततः=तदनन्तर, तद्रूपाः=उसी के समान, तत्पराक्रमाः=वैसे ही पराक्रमी, योद्धाः=लड़ाके राक्षस, समुत्तस्थुः=उठ खड़े हुए।।४३।।

अन्वितार्थ

वज्र से घायल राक्षस का तत्काल अत्यधिक रक्त बह निकला तदनन्तर उसी के समान वैसे ही पराक्रमी लड़ाके राक्षस उठ खड़े हुए।।४३।।

मन्त्र

यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तविन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः।।४४।।

पदच्छेद

यावन्तः पतिताः तस्य शरीरात् रक्त-विन्दवः तावन्तः पुरुषाः जाताः तद्-वीर्य-बल-विक्रमाः।।४४।।

अन्वितपदार्थ

यावन्त=जितनी, रक्तस्य=रक्त की, विन्दवः=बूँदे, तस्य=उसके, शरीरत्=शरीर से, पतिताः=गिरी, तावन्तः=उतनी संख्या में, तद्वीर्यबलविक्रमाः=उसी के समान तीखे, बली एवं पराक्रमी, पुरुषाः=पुरुष, जाताः=उत्पन्न हो गए थे।।४४।।

अन्वितार्थ

जितनी रक्त की बूँदें उसके शरीर से गिरीं उतने उसी के समान तीखे, बली एवं पराक्रमी पुरुष उत्पन्न हो गए थे।।४४।।

मन्त्र

ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्।।४५।।

पदच्छेद

ते च अपि युयुधुः तत्र पुरुषाः रक्त-सम्भवाः समम् मातृभिः अति-उग्र-शस्त्रपात-अतिभीषणम्।।४५।।

अन्वितपदार्थ

अपि च=और, ते=वे, रक्तसम्भवाः=रक्त से उत्पन्न, पुरुषाः=पुरुष, तत्र=उस रणभूमि में, अत्युग्राणाम्=अत्यन्त मारक, शस्त्राणाम्=शस्त्रों के, पातैः=प्रहारों द्वारा, मातृभिः=मातृशक्तियों के, समम्=साथ, अतिभीषणम्=अत्यन्त भयानक, युयुधः=युद्ध करने लगे।।४५।।

अन्वितार्थ

और वे रक्त से उत्पन्न पुरुष उस रणभूमि में अत्यन्त मारक शस्त्रों के प्रहारों द्वारा मातृशक्तियों के साथ अत्यन्त भयानक युद्ध करने लगे।।४५।।

मन्त्र

पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्त्रशः।।४६।।

पदच्छेद

पुनः च वज-पातेन क्षतम् अस्य शिरः यदा ववाह रक्तम् पुरुषाः ततः जाताः सहस्त्रशः।।४६।।

अन्वितपदार्थ

पुनः च=और फिर से, वज्रस्य=वज्र के, पातेन=प्रहार से, यदा=जब, अस्य=इसका, शिरः=शिर, क्षतम्=घायल हुआ, रक्तम्=रक्त, ववाह=बहा, ततः=उससे, सहस्त्रशः=हजारों, पुरुषाः=पुरुष, जाताः=पैदा हो गए।।४६।।

अन्वितार्थ

और फिर से वज्र के प्रहार से जब इसका शिर घायल हुआ, रक्त बहा उससे हजारों पुरुष पैदा हो गए।।४६।।

मन्त्र

वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्।।४७।।

पदच्छेद

वैष्णवी समरे च एनम् चक्रेण अभि-जघान ह गदया ताडयामास ऐन्द्री तम् असुर-ईश्वरम्।।४७।।

अन्वितपदार्थ

वैष्णवी च=और वैष्णवी ने, समरे=रण में, एनम्=इसे, चक्रेण ह=चक्र से, अभिजघान=मारा, ऐन्द्री=ऐन्द्री ने, तम्=उस, असुरेश्वरम्=राक्षसराज को, गदया=गदा से, ताडयामास=घायल किया।।४७।।

अन्वितार्थ

और वैष्णवी ने रण में इसे चक्र से मारा ऐन्द्री ने उस राक्षसराज को गदा से घायल किया।।४७।।

मन्त्र

वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्त्रावसम्भवैः।
सहस्त्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः।।४८।।

पदच्छेद

वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य रुधिर-स्त्राव-सम्भवैः सहस्त्रशः जगत्-व्याप्तम् तत् प्रमाणैः महासुरैः।।४८।।

अन्वितपदार्थ

वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य=वैष्णवी के चक्र से कटे असुर के, रुधिरस्त्राव-सम्भवैः=खून की धारा से उत्पन्न, तत्प्रमाणैः=उसी के समान, सहस्त्रशः=हजारों, महासुरैः=महाराक्षसों से, जगत्=संसार, व्याप्तम्=व्याप्त हो गया।।४८।।

अन्वितार्थ

वैष्णवी के चक्र से कटे असुर के खून की धारा से उत्पन्न उसी के समान हजारों महाराक्षसों से संसार व्याप्त हो गया।।४८।।

मन्त्र

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्।।४९।।

पदच्छेद

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथा असिना माहेश्वरी त्रि-शूलेन रक्त-बीजम् महासुरम्।।४९।।

अन्वितपदार्थ

महासुरम्=महाराक्षस, रक्तबीजम्=रक्तबीज को, कौमारी=कौमारी ने, शक्त्या=शल्य से, तथा च=और इसी प्रकार, वाराही=वाराही ने, असिना=खड्ग से, माहेश्वरी=माहेश्वरी ने, त्रिशूलेन=त्रिशूल से, जघान=मारा।।४९।।

अन्वितार्थ

महाराक्षस रक्तबीज को कौमारी ने शल्य से और इसी प्रकार वाराही ने खड्ग से, माहेश्वरी ने त्रिशूल से मारा।।४९।।

मन्त्र

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।।
मातॄः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः।।५०।।

पदच्छेद

स च अपि गदया दैत्यः सर्वाः एव अहनत् पृथक् मातॄ-कोप-समाविष्टः रक्तबीजः महासुरः।।५०।।

अन्वितपदार्थ

अपि च=तथा, सः=उस, कोपसमाविष्टः=क्रोध से भरे हुए, महासुरः=महाराक्षस, रक्तबीजः=रक्तबीज, दैत्यः=दैत्य ने, सर्वा एव=सभी, मातॄः=मातृ शक्तियों को, पृथक्=अलग-अलग, गदया=गदा से, अहनत्= मारा।।५०।।

अन्वितार्थ

तथा उस क्रोध में भरे हुए महाराक्षस रक्तबीज दैत्य ने सभी मातृशक्तियों को अलग-अलग गदा से मारा।।५०।।

मन्त्र

तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः।।५१।।

पदच्छेद

तस्य आहतस्य बहुधा शक्ति-शूल-आदिभिः भुवि पपातः यः वै रक्त-ओघः तेन आसन् शतशः असुराः।।५१।।

अन्वितपदार्थ

बहुधा=अनेक बार, आहतस्य=मारे गए, तस्य=उसको, यः=जो, रक्तस्य=रक्त की, ओघः=धारा, भुवि=धरती पर, पपात वै=गिरी थी, तेन=उससे, शतशः=सैकड़ों, असुराः=राक्षस, आसन्=हो गए थे।।५१।।

अन्वितार्थ

अनेक बार मारे गए उसको जो रक्त की धारा धरती पर गिरी थी उससे सैकड़ों राक्षस हो गए थे।।५१।।

मन्त्र

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।
व्याप्तमासीतत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्।।५२।।

पदच्छेद

तैः च असुर-असृक्-सम्-भूतैः असुरैः सकलम् जगत् व्याप्तम् आसीत् ततः देवाः भयम् आजग्मुः उत्तमम्।।५२।।

अन्वितपदार्थ

असुर-असृक्-सम्भूतैः=दानव रक्तबीज के रक्त से पैदा हुए, असुरैः=राक्षसों से, सकलम्=सम्पूर्ण, जगत्=संसार, व्याप्तम्=भर गया, आसीत्=था, ततः=इस से, देवाः=देवतागण, उत्तमम्=सर्वाधिक, भयम्=भय, आजग्मुः=ग्रस्त हो गए थे।।५२।।

अन्वितार्थ

दानव रक्तबीज के रक्त से पैदा हुए राक्षसों से सम्पूर्ण संसार भर गया था इस से देवतागण सर्वाधिक भय से ग्रस्त हो गए थे।।५२।।

मन्त्र

तान्विषण्णान्सुरान्दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु।।५३।।

पदच्छेद

तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा उवाच कालीम् चामुण्डे विस्तीर्णम् वदनम् कुरु।।५३।।

अन्वितपदार्थ

तान्=उन, सुरान्=देवताओं को, विषण्णान्=दुःखी, दृष्ट्वा=देखकर, सत्वरा=तुरन्त, चण्डिका=चण्डिका भगवती ने, कालीम्=काली से, उवाच=कहा, ''चामुण्डे=हे चामुण्डे, वदनम्=मुख को, विस्तीर्णम्=विस्तृत, कुरु=करो''।।५३।।

अन्वितार्थ

उन देवताओं को दुःखी देखकर तुरन्त चण्डिका भगवती ने काली से कहा हे चामुण्डे मुख को विस्तृत करो।।५३।।

मन्त्र

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तविन्दून् महासुरान्।
रक्तविन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना।।५४।।

पदच्छेद

मम शस्त्रस्य पात-सम्-भूतान् रक्त-विन्दून् महा-असुरान् रक्त-विन्दोः प्रति-इच्छ त्वम् वक्त्रेण अनेन वेगिना।।५४।।

अन्वितपदार्थ

मम=मेरे, शस्त्रस्य=शस्त्र के, पातेन=प्रहार से, सम्भूतान्=उत्पन्न, रक्तविन्दून्=रक्तविन्दुओं और, रक्तविन्दोः=रक्तविन्दु से उत्पन्न, महासुरान्=राक्षसों को, अनेन=इस, वेगिना वक्त्रेण=अत्यन्त तीव्र मुख से, त्वम्=तुम, प्रतीच्छ=पकड़ो।।५४।।

अन्वितार्थ

मेरे शस्त्र के प्रहार से उत्पन्न रक्तविन्दुओं और रक्तविन्दु से उत्पन्न राक्षसों को अपने अत्यन्त तीव्र मुख से तुम पकड़ो॥५४॥

मन्त्र

भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान् महासुरान्।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति॥५५॥

पदच्छेद

भक्षयन्ती चर रणे तद्-उत्पन्नान् महा-असुरान् एवम् एष क्षयम् दैत्यः क्षीण-रक्तः गमिष्यति॥५५॥

अन्वितपदार्थ

रणे=युद्धभूमि में, तदुत्पन्नान्=उस रक्तविन्दुओं से उत्पन्न, महासुरान्=राक्षसों को, भक्षयन्ती=भक्षण करते हुए, चर=विचरण करो, एवम्=इस प्रकार, एषः=यह, दैत्यः=राक्षस, क्षीणरक्तः=रक्तविहीन होकर, क्षयम् गमिष्यति=समाप्त हो जाएगा॥५५॥

अन्वितार्थ

युद्धभूमि में उस रक्तविन्दुओं से उत्पन्न राक्षसों को भक्षण करते हुए विचरण करो इस प्रकार यह राक्षस रक्तविहीन होकर समाप्त हो जाएगा॥५५॥

मन्त्र

भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पतस्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्॥५६॥

पदच्छेद

भक्ष्यमाणाः त्वया च उग्राः न च उत्-पतस्यन्ति च अपरे इति उक्त्वा ताम् ततः देवी शूलेन अभिजघान तम्॥५६॥

अन्वितपदार्थ

त्वया च=और तुम्हारे द्वारा, भक्ष्यमाणाः=भक्षित हो रहे, अपरे=दूसरे, उग्राः=भयानक राक्षस, न च=नहीं ही, उत्पतस्यन्ति=उत्पन्न होंगे। इति=इस

प्रकार, ताम्=उनसे, उक्त्वा=कहकर, ततः च=उसके पश्चात्, देवी=भगवती ने, तम्=उस राक्षस को, शूलेन=भाले से, अभिजघान=आहत किया।।५६।।

अन्वितार्थ

और तुम्हारे द्वारा भक्षित हो रहे दूसरे भयानक रक्तबीज से उत्पन्न राक्षस नहीं ही उत्पन्न होंगे। इस प्रकार उनसे कहकर उसके पश्चात् भगवती ने उस राक्षस को भाले से आहत किया।।५६।।

मन्त्र

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।।५७।।

पदच्छेद

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।।५७।।

अन्वितपदार्थ

रक्तबीजस्य=रक्तबीज का, शोणितम्=रक्त, काली=काली ने, मुखेन=मुख द्वारा, जगृहे=ग्रहण कर लिया।।५७।।

अन्वितार्थ

रक्तबीज का रक्त काली ने मुख द्वारा ग्रहण कर लिया।।५७।।

मन्त्र

ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।
न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।।५८।।

पदच्छेद

ततः असौ आजघान अथ गदया तत्र चण्डिकाम् न च अस्याः वेदनाम् चक्रे गदा-पातः अल्पिकाम् अपि।।५८।।

अन्वितपदार्थ

अथ ततः=और इसके बाद, तत्र=रणक्षेत्र में, असौ=उसने, गदया=गदा से, चण्डिकाम्=भगवती चण्डिका को, आजघान=मारा। गदयाः=गदा का, पातः=प्रहार, अस्याः=उनको, अल्पिकाम् अपि=तनिक भी, वेदनाम्=पीड़ा, न चक्रे=नहीं दे पाया।।५८।।

अन्वितार्थ

और इसके बाद रणक्षेत्र में उसने गदा से भगवती चण्डिका को मारा। गदा का प्रहार उनको तनिक भी पीड़ा नहीं दे पाया।।५८।।

मन्त्र

तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्।
यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।।५९।।

पदच्छेद

तस्य आहतस्य देहात् तु बहु सुस्राव शोणितम् यतः ततः तद् वक्त्रेण चामुण्डा सम्-प्रति-इच्छति।।५९।।

अन्वितपदार्थ

आहतस्य=घायल, तस्य=उस राक्षस के, देहात् तु=शरीर से तो, बहु=बहुत, शोणितम्=रक्त, सुस्राव=बह रहा था। यतः ततः=यहाँ वहाँ से बहते हुए, तत्=उस रक्त को, वक्त्रेण=मुख से, चामुण्डा=चामुण्डा देवी, सम्प्रतीच्छति=ग्रहण कर लेतीं थीं।।५९।।

अन्वितार्थ

उस घायल राक्षस के शरीर से तो बहुत रक्त बह रहा था। यहाँ वहाँ से बहते हुए उस रक्त को मुख से चामुण्डा देवी ग्रहण कर लेतीं थी।।५९।।

मन्त्र

मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः।
ताँश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।।६०।।

पदच्छेद

मुखे सम्-उद्-गताः ये अस्याः रक्तपातात् महा-असुराः तान् चखाद अथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।।६०।।

अन्वितपदार्थ

ततः=अतः, ये=जो रक्तबीज, महासुरा=राक्षस, रक्तपातात्=रक्त के गिरने के कारण, अस्याः=उनके, मुखे=मुख में, समुद्गता=उत्पन्न हुए थे। अथ=उत्पन्न होते ही, चामुण्डा=चामुण्डा, तान्=उनको, चखाद=भक्षण कर गई, तस्य च=और उनके, शोणितम्=रक्त को, पपौ=पी गई।।६०।।

अन्वितार्थ

अतः जो रक्तबीज राक्षस रक्त के गिरने के कारण उनके मुख में उत्पन्न हुए थे। उत्पन्न होते ही चामुण्डा उनको भक्षण कर गई और उनके रक्त को पी गई।।६०।।

मन्त्र

देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डा पीतशोणितम्।।६१।।

पदच्छेद

देवी शूलेन वज्रेण बाणैः असिभिः ऋष्टिभिः जघान रक्तबीजम् तम् चामुण्डा-पीत-शोणितम्।।६१।।

अन्वितपदार्थ

शूलेन=भालों, वज्रेण=वज्रों, बाणैः=बाणों, असिभिः=तलवारों, ऋष्टिभिः= कटारों से, देवी=देवी कौशिकी ने, चामुण्डा-पीतशोणितम्=चामुण्ड के द्वारा जिसका पूरा रक्त पिया जा चुका था, तम्=उस, रक्तबीजम्=रक्तबीज को, जघान=मारा, शस्त्रसंघैः=शस्त्र समूहों से, जघान=मार डाला।।६१।।

अन्वितार्थ

भालों, वज्रों, बाणों, तलवारों, कटारों से देवी कौशिकी ने चामुण्डा के द्वारा जिसका पूरा रक्त पिया जा चुका था उस रक्तबीज को मारा, शस्त्र समूहों से मार डाला।।६१।।

मन्त्र

स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंघसमाहतः।
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।।६२।।

पदच्छेद

स पपात् मही-पृष्ठे शस्त्र-संघैः समाहतः नीरक्तः च महीपाल रक्त-बीजः महा-असुरः।।६२।।

अन्वितपदार्थ

सः=वह राक्षस, महीपृष्ठे=धरती पर, पपात=गिर पड़ा, महीपाल=हे धरतीपति

सुरथ!, नीरक्तः च=और रक्तविहीन, महासुरः=महाराक्षस, रक्तबीज=रक्तबीज के गिरने पर॥६२॥

अन्वितार्थ

वह राक्षस, धरती पर गिर पड़ा। हे धरतीपति सुरथ! रक्तविहीन महाराक्षस रक्तबीज के गिरने पर॥६२॥

मन्त्र

ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप।
तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः॥६३॥

पदच्छेद

ततः ते हर्षम् अ-तुलम् अवापुः त्रि-दशाः नृप तेषाम् मातृ-गणः जातः ननर्त असृङ्-मद-उद्धतः॥६३॥

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्, ततः=इस बार, ते त्रिदशाः=वे देवतागण, अतुलम्=अपार, हर्षम्=आनन्द, अवापुः=पाए। तस्मिन्=उस रणस्थल में, तेषाम्=उन राक्षसों के मारे जाने पर, मातृगणः=मातृशक्तियों का समूह, असृङ्मदोद्धतः=रक्त के मद से मस्त, जातः=हो कर, ननर्त=नृत्य करने लगा॥६३॥

अन्वितार्थ

हे राजन्! इस बार वे देवतागण अपार आनन्दित हुए। उस रणस्थल में उन राक्षसों के मारे जाने पर मातृशक्तियों का समूह रक्त के मद से मस्त होकर नृत्य करने लगा॥६३॥

॥ जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देवीमाहात्म्ये रक्तबीजविध्वंसनं नामाष्टमः विश्रामः॥८॥

॥अथ नवमोऽध्याय:॥

मन्त्र

राजोवाज॥१॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम॥
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजबधाश्रितम्॥२॥

पदच्छेद

राजा उवाच- विचित्रम् इदम् आख्यातम् भगवन् भवता मम, देव्या: चरित्र-माहात्म्यम् रक्त-बीज-बध-आश्रितम्॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

राजा उवाच=सुरथ राजा ने कहा, भगवन्=हे भगवन्, भवता=आपके द्वारा, इदम्=यह, रक्तबीज-बध-आश्रितम्=रक्तबीज के बध पर आधारित, देव्या:=भगवती के, चरित्रम्=कार्य एवम्, विचित्रम्=अद्भुत, माहात्म्यम्= महिमा, मम=मुझे, आख्यातम्=बताई गई॥१-२॥

अनिवतार्थ

सुरथ राजा ने कहा- हे भगवन्! आपके द्वारा यह रक्तबीज के वध पर आधारित भगवती के कार्य एवम् अद्भुत महिमा मुझे बताई गई॥१-२॥

मन्त्र

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतु रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपन:॥३॥

पदच्छेद

भूय: च इच्छामि अहम् श्रोतुम् रक्त-बीजे निपातिते चकार शुम्भ: यत् कर्म निशुम्भ: च अति-कोपन:॥३॥

अन्वितपदार्थ

अतिकोपनः=अत्यन्त क्रोधी, शुम्भः=शुम्भ, निशुम्भः च=एवं निशुम्भ ने, रक्तबीजे=रक्तबीज के, निपातिते=मारे जाने पर, यत् कर्म=जो प्रतिकार कर्म, चकार=किया था, अहम्=मैं, भूयः च=विस्तार से, श्रोतुम्=सुनना, इच्छामि=चाहता हूँ।।३।।

अन्वितार्थ

अत्यन्त क्रोधी शुम्भ एवं निशुम्भ ने रक्तबीज के मारे जाने पर जो प्रतिकार कर्म किया था। मैं विस्तार से सुनना चाहता हूँ।।३।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।४।।

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे।।५।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- चकार कोपम् अतुलम् रक्त-बीजे निपातिते, शुम्भ-असुरः निशुम्भः च हतेषु अन्येषु च आहवे।।४-५।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, रक्तबीजे=रक्तबीज के, निपातिते=धराशायी होने पर, आहवे च=तथा युद्ध में, अन्येषु=अन्य राक्षसों के, हतेषु=मारे जाने पर, शुम्भासुरः=शुम्भ राक्षस, निशुम्भः च=और निशुम्भ ने, अतुलम्=अतुलनीय, कोपम्=क्रोध, चकार=किया।।४-५।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- रक्तबीज के धराशायी होने पर तथा युद्ध में अन्य राक्षसों के मारे जाने पर राक्षस शुम्भ और निशुम्भ ने अतुलनीय क्रोध किया।।४-५।।

मन्त्र

हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययाऽसुरसेनया।।६।।

पदच्छेद

हन्यमानम् महा-सैन्यम् विलोक्य अमर्षम् उद्-वहन् अभि-अधावत् निशुम्भः अथ मुख्यया असुर-सेनया॥६॥

अन्वितपदार्थ

अथ=इसके बाद, निशुम्भः=निशुम्भ ने, महासैन्यम्=भारी भरकम सेना का, हन्यमानम्=विनाश होता, विलोक्य=देखकर, अमर्षम्=क्रोध उद्वहन्=किए हुए, असुराणाम्=राक्षसों की, मुख्यया=प्रधान, सेनया=सेना के साथ, अभ्यधावत=आक्रमण किया॥६॥

अन्वितार्थ

इसके बाद निशुम्भ ने भारी भरकम सेना का विनाश होता देखकर क्रोध किए हुए राक्षसों की प्रधान सेना के साथ आक्रमण किया॥६॥

मन्त्र

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धाः हन्तुं देवीमुपाययुः॥७॥

पदच्छेद

तस्य अग्रतः तथा पृष्ठे पार्श्वयोः च महा-असुराः सन्दष्ट-ओष्ठ-पुटाः क्रुद्धाः हन्तुम् देवीम् उप-आ-ययुः॥७॥

अन्वितपदार्थ

तस्य=उसके, अग्रतः=आगे, तथा पृष्ठे=इसी प्रकार पीछे, पार्श्वयोः च=और दोनों बगल, सन्दष्टौष्ठपुटाः=दाँतों से ओठ चबाते हुए, क्रुद्धाः=क्रोध से भरे हुए, महासुराः=महादैत्यों के झुण्ड, देवीम्=भगवती को, हन्तुम्=मारने के लिए, उपाययुः=निकट आ पहुँचे॥७॥

अन्वितार्थ

उसके आगे, इसी प्रकार पीछे और दोनों बगल, दाँतों से ओठ चबाते हुए, क्रोध से भरे हुए महादैत्यों के झुण्ड भगवती को मारने के लिए निकट आ पहुँचे॥७॥

मन्त्र

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः॥८॥

पदच्छेद

आजगाम महावीर्यः शुम्भः अपि स्वस्य बलैः वृतः निहन्तुम् चण्डिकाम् कोपात् कृत्वा युद्धम् तु मातृभिः॥८॥

अन्वितपदार्थ

महावीर्यः=महाबलशाली, शुम्भः=शुम्भ, अपि=भी, स्वस्य=अपनी, बलैः=सेना से, वृतः=सुसज्जित होकर, मातृभिः तु=ब्रह्माणी और मातृकाओं से, युद्धम्=युद्ध, कृत्वा=करके, कोपात्=क्रोधपूर्वक, चण्डिकाम्=भगवती चण्डिका को, निहन्तुम्=मारने के लिए, आजगाम=आ गया॥८॥

अन्वितार्थ

महाबलशाली शुम्भ भी अपनी सेना से सुसज्जित होकर ब्रह्माणी और मातृकाओं से युद्ध करके क्रोधपूर्वक भगवती चण्डिका को मारने के लिए आ गया॥८॥

मन्त्र

ततो युद्धमतीवासीद्देव्याः शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः॥९॥

पदच्छेद

ततः युद्धम् अति-इव आसीत् देव्या शुम्भ-निशुम्भयोः, शर-वर्षम् अतीव उग्रम् मेघयोः इव वर्षतोः॥९॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके अनन्तर, देव्या=भगवती के साथ, शुम्भनिशुम्भयोः=शुम्भनिशुम्भ का, मेघयोः इव=जैसे दो-दो बादल, वर्षतोः=बरस रहे हों इस प्रकार, अतीव उग्रम्=अत्यन्त तीव्र, शरवर्षम्=बाणों की वर्षा वाला, युद्धम्=युद्ध, आसीत्=हुआ था॥९॥

अन्वितार्थ

इसके अनन्तर भगवती के साथ शुम्भ निशुम्भ का जैसे दो-दो बादल बरस रहे हों इस प्रकार अत्यन्त तीव्र बाणों की वर्षा वाला युद्ध हुआ था।।९।।

मन्त्र

चिच्छेदास्ताञ्छराँस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ।।१०।।

पदच्छेद

चिच्छेद अस्तान् शरान् ताभ्याम् चण्डिका स्व-शर-उत्करैः ताडयामास च अङ्गेषु शस्त्र-ओघैः असुर-ईश्वरौ।।१०।।

अन्वितपदार्थ

चण्डिका=भगवती चण्डी ने, स्वस्य=अपने, शर-उत्करैः=बाणों के गुच्छकों से, ताभ्याम्=उन दोनों के द्वारा, अस्तान्=चलाए गए, शरान्=बाणों को, चिच्छेद=काट डाला, शस्त्रौघैः च=तथा आयुधों के पुञ्जों से, असुरेश्वरौ=दोनों राक्षसों के, अङ्गेषु=अङ्गों को, ताडयामास=प्रहार किया।।१०।।

अन्वितार्थ

भगवती चण्डी ने अपने बाणों के गुच्छकों से उन दोनों के द्वारा चलाए गए बाणों को काट डाला तथा आयुधों के पुंजों से दोनों राक्षसों के अङ्गों पर प्रहार किया।।१०।।

मन्त्र

निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्।।११।।

पदच्छेद

निशुम्भः निशितम् खड्गम् चर्म च आदाय सुप्रभम् अताडयत् मूर्ध्नि सिंहम् देव्याः वाहनम् उत्तमम्।।११।।

अन्वितपदार्थ

निशुम्भः=निशुम्भ ने, निशितम्=तीखा, खड्गम्=खड्ग, सुप्रभम् च=तथा चमकता हुआ, चर्म=चर्मशस्त्र, आदाय=लेकर, देव्याः=भगवती के, उत्तमम्=श्रेष्ठ, वाहनम् सिंहम्=वाहन सिंह के, मूर्ध्नि=सर पर, अताडयत्=वार किया।।११।।

अन्वितार्थ

निशुम्भ ने तीखा खड्ग तथा चमकता हुआ 'चर्म' शस्त्र लेकर भगवती के श्रेष्ठ वाहन सिंह के सर पर वार किया।।११।।

मन्त्र

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्।।१२।।

पदच्छेद

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेण असिम् उत्तमम् निशुम्भस्य आशु चिच्छेद चर्म च अपि अष्टचन्द्रकम्।।१२।।

अन्वितपदार्थ

वाहने=वाहन सिंह पर, ताडिते=प्रहार किए जाने, देवी=भगवती ने, क्षुरप्रेण=अपने 'क्षुरप्र' बाण से, निशुम्भस्य=निशुम्भ के, उत्तमम्=उत्तम लोहे से निर्मित, असिम्=खड्ग, अष्टचन्द्रकम् चापि=तथा आठ चन्द्राकार कटारों से निर्मित घातक, चर्म=फलक शस्त्र को, आशु=तत्काल, चिच्छेद=काट डाला।।१२।।

अन्वितार्थ

वाहन सिंह पर प्रहार किए जाने पर भगवती ने अपने 'क्षुरप्र' बाण से से निशुम्भ के उत्तम लोहे से निर्मित खड्ग तथा आठ चन्द्राकार कटारों वाले घातक फलक शस्त्र को तत्काल काट डाला।।१२।।

मन्त्र

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्।।१३।।

पदच्छेद

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिम् चिच्छेप सः असुरः ताम् अपि अस्य द्विधा चक्रे चक्रेण अभि-मुख-आगताम्।।१३।।

अन्वितपदार्थ

चर्मणि=अष्टचन्द्र फलक, खड्गे च=तथा खड्ग के, छिन्ने=काटे जाने पर, सः=उस, असुरः=राक्षस ने, शक्तिम्=शल्य का, चिक्षेप=प्रक्षेप किया, अस्य=उसकी, ताम्=उस, अभिमुखागताम्=सामने चले आ रहे शल्य को, चक्रेण=चक्र से, द्विधा=दो टुकड़े, चक्रे=कर डाला।।१३।।

अन्वितार्थ

अष्टचन्द्र चर्म तथा खड्ग के काटे जाने पर उस राक्षस ने शक्ति का प्रक्षेप किया उसकी उस सामने चली आ रही शक्ति का चक्र से दो टुकड़े कर डाला।।१३।।

मन्त्र

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्।।१४।।

पदच्छेद

कोप-आ-ध्मातः निशुम्भः अथ शूलम् जग्राह दानवः आयान्तम् मुष्टिपातेन देवी तत् च अपि अचूर्णयत्।।१४।।

अन्वितपदार्थ

अथ=इसके बाद, कोपाध्मातः=क्रोध से हाँफते हुए, निशुम्भः=निशुम्भ, दानवः=राक्षस ने, शूलम्=भाला, जग्राह=लिया, तत् अपि च=उसे भी, आयान्तम्=अपनी ओर आता देख, देवी=भगवती ने, मुष्टिपातेन=मुक्के के प्रहार से, अचूर्णयत्=धूल बना दिया।।१४।।

अन्वितार्थ

इसके बाद क्रोध से हँफाते हुए निशुम्भ राक्षस ने भाला लिया उसे भी अपनी ओर आता देख भगवती ने मुक्के के प्रहार से धूल बना दिया।।१४।।

मन्त्र

आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
सापि देव्यास्त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता॥१५॥

पदच्छेद

आविध्य अथ गदाम् सः अपि चिक्षेप चण्डिकाम् प्रति सा अपि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वम् आगता॥१५॥

अन्वितपदार्थ

अथ=इसके बाद, सः=उसने, अपि=भी, गदाम्=गदा को, आविध्य=घुमाकर, चण्डिकाम्=चण्डिका की ओर, चिक्षेप=फेंका, सा अपि=वह गदा भी, देव्या=भगवती के, त्रिशूलेन=त्रिशूल से, भिन्ना=विखण्डित होकर, भस्मत्वम्=राख, आगता=हो गई॥१५॥

अन्वितार्थ

इसके बाद उसने भी गदा को घुमाकर चण्डिका की ओर फेंका वह गदा भी भगवती के त्रिशूल से विखण्डित होकर राख हो गई॥१५॥

मन्त्र

ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले॥१६॥

पदच्छेद

ततः परशु-हस्तम् तम् आ-यान्तम् दैत्य-पुङ्गवम् आहत्य देवी बाण-ओघैः अपातयत् भूतले॥१६॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, देवी=भगवती ने, परशुहस्तम्=हाथ में परशु लेकर, आयान्तम्=आ रहे, तम्=उस, दैत्यपुङ्गवम्=महादैत्य को, बाणौघैः=बाणों के बौछार से, आहत्य=मारकर, भूतले=भूमि पर, अपातयत्=गिरा दिया॥१६॥

अन्वितार्थ

इसके बाद भगवती ने हाथ में परशु लेकर आ रहे उस महादैत्य को बाणों के बौछार से मार कर भूमि पर गिरा दिया।।१६।।

मन्त्र

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्।।१७।।

पदच्छेद

तस्मिन् नि-पतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे भ्रातरि अति-इव संक्रुद्धः प्रययौ योद्धुम् अम्बिकाम्।।१७।।

अन्वितपदार्थ

भीमविक्रमे=भयानक पराक्रमी, भ्रातरि=भाई, निशुम्भे=निशुम्भ के, तस्मिन्=उस, भूमौ=रणभूमि में, निपतिते=धराशायी हो जाने पर, अतीव=अत्यन्त, संक्रुद्धः=कुपित शुम्भ, अम्बिकाम्=अम्बिका की ओर, योद्धुम्=युद्ध करने के लिए, प्रययौ=चल पड़ा।।१७।।

अन्वितार्थ

भयानक पराक्रमी भाई निशुम्भ के उस रणभूमि में धराशायी हो जाने पर अत्यन्त कुपित शुम्भ अम्बिका की ओर युद्ध करने के लिए चल पड़ा।।१७।।

मन्त्र

स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः।।१८।।

पदच्छेद

सः रथस्थः तथा अति-उच्चैः गृहीत-परम-आयुधैः भुजैः अष्टाभिः अतुलैः व्याप्य अशेषम् बभौ नभः।।१८।।

अन्वितपदार्थ

तथा=युद्ध के लिए प्रस्थान करने पर, सः=वह शुम्भ, अत्युच्चैः=अत्यन्त ऊँचे, रथस्थः=रथ पर सवार, गृहीतपरमायुधैः=परमशक्तिशाली आयुधों

से युक्त, अष्टाभिः=आठ, अतुलैः=अतुलनीय, भुजैः=भुजाओं से, अशेषम्=सम्पूर्ण, नभः=आकाश को, व्याप्त=आच्छादित करके, बभौ=सुशोभित हो रहा था।।१८।।

अन्वितार्थ

युद्ध के लिए प्रस्थान करने पर वह शुम्भ अत्यन्त ऊँचे रथ पर सवार परमशक्तिशाली आयुधों से युक्त आठ अतुलनीय भुजाओं से सम्पूर्ण आकाश को आच्छादित करके सुशोभित हो रहा था।।१८।।

मन्त्र

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्।।१९।।

पदच्छेद

तम् आयान्तम् समालोक्य देवी शङ्खम् अवादयत् ज्या-शब्दम् च अपि धनुषः चकार अतीव दुःसहम्।।१९।।

अन्वितपदार्थ

तम्=उस सुसज्जित शुम्भ को, आयान्तम्=आता हुआ, समालोक्य=देखकर, देवी=भगवती ने, शङ्खम्=शङ्ख, अवादयत्=नाद किया, धनुषः च=तथा धनुष का, अतीव=अत्यन्त, दुःसहम्=कठोर, असहनीय, ज्याशब्दम्=टङ्कार, अपि=भी, चकार=किया।।१९।।

अन्वितार्थ

उस सुसज्जित शुम्भ को आता हुआ देखकर भगवती ने शङ्ख नाद किया तथा धनुष का अत्यन्त कठोर, असहनीय टङ्कार भी किया।।१९।।

मन्त्र

पूरयामाय ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोबधविधायिना।।२०।।

पदच्छेद

पूरयामासः ककुभः निज-घण्टा-स्वनेन च समस्त-दैत्य-सैन्यानाम् तेजः-बध-विधायिना।।२०।।

अन्वितपदार्थ

समस्तदैत्यसैन्यानाम् च=और सम्पूर्ण राक्षस सेना के, तेजसः=मनोबल को, बधविधायिना=समाप्त कर देने वाले, निजघण्टास्वनेन=अपने घण्टा की ध्वनि से, ककुभः=दिशाओं को, पूरयामास=भर डाला।।२०।।

अन्वितार्थ

और सम्पूर्ण राक्षस सेना के मनोबल को समाप्त कर देने वाले अपने घण्टा की ध्वनि से दिशाओं को भर डाला।।२०।।

मन्त्र

ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैवोप दिशो दश।२१।।

पदच्छेद

ततः सिंहः महा-नादैः त्याजित-इभ-महा-मदैः पूरयामास गगनम् गाम् तथा उप दिशः दश।२१।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, सिंहः=सिंह ने, त्याजितेभमहामदैः=मतवाले हाथी के मद को दूर कर देने वाले, महानादैः=महागर्जन से, गगनम्=आकाश, गाम्=पृथिवी, तथा=तथा, दश=दसों, दिशः=दिशाओं को, [1]उपपूरयामास= गुञ्जायमान कर डाला।।२१।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् सिंह ने मतवाले हाथी के मद को दूर कर देने वाले महागर्जन से आकाश, पृथिवी तथा दसों दिशाओं को गुञ्जायमान कर डाला।।२१।।

मन्त्र

ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः।।२२।।

---

1. 'उप' शब्द से शङ्ख, ज्या एवं घण्टा की ध्वनि के सापेक्ष सिंह के गर्जन की अधिकता व्यक्त किया गया है।

पदच्छेद

ततः काली समुत्पत्य गगनम् क्ष्माम् अताडयत् कराभ्याम् तत् निनादेन प्राक् स्वनाः ते तिरोहिताः॥२२॥

अन्वितपदार्थ

ततः=तभी, काली=काली ने, समुत्पत्य=प्रकट होकर, कराभ्याम्=दोनों हाथों से, गगनम्=अन्तरिक्ष एव, क्ष्माम्=भूलोक पर, अताडयत्=आघात किया, तत्=उससे उत्पन्न, निनादेन=भयानक नाद से, ते=वे, प्राक् स्वनाः=पहले की ध्वनियाँ, तिरोहिताः=दब गईं॥२२॥

अन्वितार्थ

तभी काली ने प्रकट होकर दोनों हाथों से अन्तरिक्ष एवं भूलोक पर आघात किया उससे उत्पन्न भयानक नाद से वे पहले की (घण्टा, ज्या, शङ्ख एवं सिंह की)ध्वनियाँ दब गईं॥२२॥

मन्त्र

अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ॥२३॥

पदच्छेद

अट्ट-अट्टहासम् अशिवम् शिवदूती चकार ह तैः शब्दैः असुराः त्रेसुः शुम्भः कोपम् परम् ययौ॥२३॥

अन्वितपदार्थ

शिवदूती=शिवदूती ने, अशिवम्=भयकारक, अट्टाट्टहासम्=महाअट्टहास, ह चकार=किया, तैः=उन, शब्दैः=गर्जनों से, असुराः=समस्त राक्षसगण, त्रेसु=भयग्रस्त हो गये, शुम्भः=शुम्भ, परम् कोपम् ययौ=अत्यधिक क्रोध से बौखला गया॥२३॥

अन्वितार्थ

शिवदूती ने भयकारक महाअट्टहास किया उन गर्जनों से समस्त राक्षसगण भयग्रस्त हो गये शुम्भ अत्यधिक क्रोध से बौखला गया॥२३॥

मन्त्र

दुरात्मँस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः॥२४॥

पदच्छेद

दुरात्मन् तिष्ठ-तिष्ठ इति वि-आजहार अम्बिका यदा तदा जय इति अभिहितम् देवैः आकाश-संस्थितैः॥२४॥

अन्वितपदार्थ

यदा=जब, अम्बिका=भगवती अम्बिका ने, ''दुरात्मन्=''दुष्ट!, तिष्ठ-तिष्ठ''=रुक-रुक'', इति=इस प्रकार, व्याजहार=ललकारा, तदा=तब, आकाशे=आकाश में, संस्थितैः=विराजमान, देवैः=देवताओं द्वारा, 'जय'= 'जय', इति=यह, अभिहितम्=घोष किया गया॥२४॥

अन्वितार्थ

जब भगवती अम्बिका ने ''दुष्ट! रुक-रुक'' इस प्रकार ललकारा तब आकाश में विराजमान् देवताओं द्वारा 'जय' घोष किया गया॥२४॥

मन्त्र

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया॥२५॥

पदच्छेद

शुम्भेन आगत्य या शक्तिः मुक्ता ज्वाला-अति-भीषणा आयान्ती वह्नि-कूटाभा सा निरस्ता महा-उल्कया॥२५॥

अन्वितपदार्थ

आगत्य=आगे आकर, शुम्भेन=शुम्भ द्वारा, मुक्ता=छोड़ी गई, ज्वालातिभीषणा=आग की लपटों के कारण अत्यन्त भयानक, शक्तिः= शक्तिअस्त्र, वह्निकूटाभा=अग्निपुंज के समान दीप्तिमती, या=जो, आयान्ती=चली आ रही थी, सा=वह शक्ति, महोल्कया='महोल्का' नामक प्रतिकारीशस्त्र द्वारा, निरस्ता=व्यर्थ कर दी गई॥२५॥

अन्वितार्थ

आगे आकर शुम्भ द्वारा छोड़ी गई आग की लपटों के कारण अत्यन्त भयानक शक्तिअस्त्र अग्निपुंज के समान दीप्तिमती जो चली आ रही थी वह शक्ति **'महोल्का'** नामक प्रतिकारी शस्त्र द्वारा व्यर्थ कर दी गई।।२५।।

मन्त्र

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते।।२६।।

पदच्छेद

सिंहस्य नादेन शुम्भस्य व्याप्तम् लोक-त्रय-अन्तरम् निर्घात-निःस्वनः घोरः जितवान् अवनी-पते।।२६।।

अन्वितपदार्थ

अवनीपते!=हे राजन् सुरथ!, शुम्भस्य=शुम्भ का, सिंहनादेन=सिंह के समान गर्जन से, लोकत्रयस्य-तीनों लोकों का, अन्तरम्=मध्यभाग या अन्तरिक्ष, व्याप्तम्=व्याप्त था, घोर=प्रचण्ड, निर्घातनिःस्वनः= महोल्का-शक्तिपात की ध्वनि ने, जितवान्=शुम्भ के गर्जना को दबा दिया।।२६।।

अन्वितार्थ

हे राजन् सुरथ! शुम्भ के सिंह के समान गर्जन से तीनों लोकों का मध्यभाग अन्तरिक्ष व्याप्त था। प्रचण्ड महोल्काशक्तिपात की ध्वनि ने शुम्भ के गर्जन को दबा दिया।।२६।।

मन्त्र

शुम्भमुक्ताञ्छरान् देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः।।२७।।

पदच्छेद

शुम्भेन मुक्तान् शरान् देवी शुम्भः तत् प्रहितान् शरान् चिच्छेद स्व-शरैः उग्रैः शतशः अथ सहस्रशः।।२७।।

अन्वितपदार्थ

देवी=भगवती ने, शुम्भेन=शुम्भ द्वारा, मुक्तान्=छोड़े गए, शरान्=बाणों

को, स्वस्य=अपने, उग्रैः=प्रचण्ड, शरैः=बाणों से, शतशः=सैकड़ों, अथ, सहस्रशः=हजारों, चिच्छेद=टुकड़े कर डाला, शुम्भः=एवं शुम्भ ने, तत्=उनके द्वारा, प्रहितान्=छोड़े गए, शरान्=बाणों को उसी प्रकार काट डाला।।२७।।

अन्वितार्थ

भगवती ने शुम्भ द्वारा छोड़े गए बाणों को अपने प्रचण्ड बाणों से सैकड़ों-हजारों टुकड़े कर डाला एवं शुम्भ ने भी उनके द्वारा छोड़े गए बाणों को उसी प्रकार काट डाला।।२७।।

मन्त्र

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह।।२८।।

पदच्छेद

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेन अभि-जघान् तम् सः तदा अभि-हतः भूमौ मूर्छितः निपपात ह।।२८।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इस प्रकार बराबरी का युद्ध करने के कारण, क्रुद्धा=कुपित, सा=उन, चण्डिका=चण्डिका ने, तम्=उसे, शूलेन=शूल से, अभिजघान=कठोरता पूर्वक मारा, तदा=तब, अभिहतः=चोट खा कर, सः=वह दानव, मूर्छितः=मूर्छित होकर, भूमौ ह=भूमि पर, निपपात=गिर गया।।२८।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार बराबरी का युद्ध करने के कारण कुपित उन चण्डिका ने उसे शूल से कठोरता पूर्वक मारा तब चोट खा कर वह दानव मूर्छित होकर भूमि पर गिर गया।।२८।।

मन्त्र

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।।२९।।

पदच्छेद

ततः निशुम्भः सम्-प्राप्य चेतनाम् आत्त-कार्मुकः आ-जघान शरैः देवीम् कालीम् केसरिणम् तथा।।२९।।

अन्वितपदार्थ

ततः=तभी, निशुम्भः=निशुम्भ, चेतनाम्=मूर्छा के बाद चेतना, सम्प्राप्य=प्राप्त करके, आत्तकार्मुकः=धनुष लेकर, देवीम्=भगवती, कालीम्=काली को, तथा, इसी तरह, केसरिणम्=सिंह को, शरैः=बाणों से, अजघान=मारा।।२९।।

अन्वितार्थ

तभी निशुम्भ मूर्छा के बाद चेतना प्राप्त करके धनुष लेकर भगवती काली को इसी तरह सिंह को बाणों से मारा।।२९।।

मन्त्र

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुतेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्।।३०।।

पदच्छेद

पुनः च कृत्वा बाहूनाम् अयुतम् दनुज-ईश्वरः चक्र-अयुतेन दितिजः छादयामास चण्डिकाम्।।३०।।

अन्वितपदार्थ

पुनः च=और फिर, दितिजः=दिति के वंशज, दनुज-ईश्वरः=राक्षसों के राजा निशुम्भ ने, बाहूनाम् अयुतम्=दस हजार भुजाएँ, कृत्वा=मायाबल से करके, चक्राणाम् अयुतेन=दस हजार चक्रों के प्रहार से, चण्डिकाम्=चण्डिका को, छादयामास=आच्छादित कर दिया।।३०।।

अन्वितपदार्थ

और फिर दिति के वंशज राक्षसों के राजा निशुम्भ ने दस हजार भुजाएँ मायाबल से करके दस हजार चक्रों के प्रहार से चण्डिका को आच्छादित कर दिया।३०।।

मन्त्र

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकाँश्च तान्॥३१॥

पदच्छेद

ततः भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्ग-आर्ति-नाशिनी चिच्छेद तानि चक्राणि स्व-शरैः सायकान् च तान्।।३१।।

अन्वितपदार्थ

ततः=तब, दुर्गस्य=कठिन, आर्तेः=दुःख का, नाशिनी=नाश करने वाली, भगवती=भगवती, दुर्गा=दुर्गा ने, क्रुद्धा=कुपित होकर, स्वस्य=अपने, शरैः=बाणों से, तानि=उन, चक्राणि=चक्रों, तान् च=एवं उन, शरान्=बाणों को, चिच्छेद=काट डाला।।३१।।

अन्वितार्थ

तब कठिन दुःख का नाश करने वाली भगवती दुर्गा ने कुपित होकर अपने बाणों से उन चक्रों एवं उन बाणों को काट डाला।।३१।।

मन्त्र

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः॥३२॥

पदच्छेद

ततः निशुम्भः वेगेन गदाम् आदाय चण्डिकाम् अभि-अधावत वै हन्तुम् दैत्य-सैन्य-सम्-आवृतः।।३२।।

अन्वितपदार्थ

ततः=तत्पश्चात्, दैत्य-सैन्य-समावृतः=दैत्यों की सेना से घिरे हुए, निशुम्भः=निशुम्भ, गदाम्=गदा को, आदाय वै=लेकर, चण्डिकाम्=चण्डिका को, हन्तुम्=मारने के लिए, अभ्यधावत=दौड़ा।।३२।।

अन्वितार्थ

तत्पश्चात् दैत्यों की सेना से घिरे हुए निशुम्भ गदा को लेकर चण्डिका को मारने के लिए दौड़ा।।३२।।

मन्त्र

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे।।३३।।

पदच्छेद

तस्य अपतत् एव आशु गदाम् चिच्छेद चण्डिका खड्गेन शित-धारेण सः च शूलम् सम्-आददे।।३३।।

अन्वितपदार्थ

तस्य=उसकी, गदाम्=गदा को, अपतत् एव=गिरते ही, चण्डिका,=चण्डिका ने, शितधारेण=तीखे धार वाले, खड्गेन=खड्ग से, चिच्छेद=काट दिया, सः च=एवं उसने, शूलम्=भाले को, समाददे=उठाया।।३३।।

अन्वितार्थ

उसकी गदा को गिरते ही चण्डिका ने तीखे धार वाले खड्ग से काट दिया एवं उसने भाले को उठाया।।३३।।

मन्त्र

शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका।।३४।।

पदच्छेद

शूल-हस्तम् सम्-आयान्तम् निशुम्भम् अमर-अर्दनम् हृदि विव्याध शूलेन वेग-आविद्धेन चण्डिका।।३४।।

अन्वितपदार्थ

अमराणाम्=देवताओं के, अर्दनम्=हिंसक, शूलहस्तम्=भाला हाथ में लेकर, आयान्तम्=आते हुए, निशुम्भम्=निशुम्भ को, चण्डिका=भगवती चण्डिका ने, वेगाविद्धेन=तीव्रता से प्रहार किए गए, शूलेन=अपने भाले से, हृदि=छाती में, विव्याध=बींध डाला।।३४।।

अन्वितार्थ

देवताओं के हिंसक भाला हाथ में ले कर आते हुए निशुम्भ को भगवती चण्डिका ने तीव्रता से प्रहार किए गए अपने भाले से छाती में बींध डाला।।३४।।

मन्त्र

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥३५॥

पदच्छेद

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयात् निःसृतः अपरः महाबलः महावीर्यः तिष्ठ इति पुरुषः वदन्॥३५॥

अन्वितपदार्थ

शूलेन=भाले से, भिन्नस्य=विदारित, तस्य=उसके, हृदयात्=हृदय से, महाबलः=महाबली एव, महावीर्यः=महापराक्रमी, अपरः=दूसरा, पुरुषः= पुरुष, 'तिष्ठ' इति='ठहर' ऐसा, वदन्=बोलता हुआ, निःसृतः=निकला ॥३५॥

अन्वितार्थ

भाले से विदारित उसके हृदय से महाबली एवं महापराक्रमी दूसरा पुरुष 'ठहर' ऐसा बोलता हुआ निकला॥३५॥

मन्त्र

तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि॥३६॥

पदच्छेद

तस्य निष्क्रामतः देवी प्रहस्य स्वनवत् ततः शिरः चिच्छेद खड्गेन ततः असौ अपतत् भुवि॥३६॥

अन्वितपदार्थ

ततः=तभी, देवी=देवी ने, स्वनवत्=जोर से, प्रहस्य=ठहाका लगाकर, निष्क्रामतः=निकल ही रहे, तस्य=उस राक्षस के, शिरः=शिर को, खड्गेन=खड्ग से, चिच्छेद=काट डाला, ततः=जिससे, असौ=वह, भुवि= धरती पर, अपतत्=गिर गया॥३६॥

अन्वितार्थ

तभी देवी ने जोर से ठहाका लगाकर निकल ही रहे उस राक्षस के शिर को खड्ग से काट डाला जिससे वह धरती पर गिर गया।।३६।।

मन्त्र

ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्रा क्षुण्णशिरोधरान्।
असुराँस्ताँस्तथा काली शिवदूती तथापरान्।।३७।।

पदच्छेद

ततः सिंहः चखाद उग्रम् दंष्ट्रा क्षुण्ण-शिरोधरान् असुरान् तान् तदा काली शिवदूती तथा अपरान्।।३७।।

अन्वितपदार्थ

ततः=निशुम्भ के ढेर होने के बाद, तदा=उसी समय, क्षुण्णशिरोधरान्=कटे हुए सर वाले, तान्=उन, असुरान्=राक्षसों को, सिंहः=सिंह ने तथा, काली=काली ने, तथा अपरान्=बचे हुए दूसरे राक्षसों को, शिवदूती=शिवदूती ने, दंष्ट्रा=डाढ़ से, उग्रम्=कर्कशता पूर्वक नोचते हुए, चखाद=भक्षण कर डाला।।३७।।

अन्वितार्थ

निशुम्भ के ढेर होने के बाद उसी समय कटे हुए सर वाले उन राक्षसों को सिंह ने तथा काली ने बचे हुए दूसरे राक्षसों को शिवदूती ने अपने डाढ़ से कर्कशता पूर्वक नोचते हुए भक्षण कर डाला।।३७।।

मन्त्र

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः।।३८।।

पदच्छेद

कौमारी-शक्ति-निर्-भिन्नाः केचित् नेशुः महा-असुराः ब्रह्माणी-मन्त्र-पूतेन तोयेन अन्ये निर्-आकृताः।।३८।।

अन्वितपदार्थ

केचित्=कुछ, महासुराः=राक्षस, कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः=स्कन्द की शक्ति

के शल्य प्रहार से टुकड़े होकर, नेशुः=नष्ट हुए, अन्ये=दूसरे, ब्रह्माणी-मन्त्र-पूतेन=ब्रह्माणी के, प्रणव से भावित, तोयेन=जल प्रक्षेप से, निराकृताः=ध्वस्त हुए।।३८।।

अन्वितार्थ

कुछ राक्षस स्कन्द की शक्ति के शल्य प्रहार से टुकड़े होकर नष्ट हुए। दूसरे ब्रह्माणी के प्रणव से भावित जल प्रक्षेप से ध्वस्त हुए।।३८।।

मन्त्र

माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि।।३९।।

पदच्छेद

माहेश्वरी-त्रिशूलेन भिन्नाः पेतुः तथा अपरे वाराही-तुण्ड-घातेन केचित् चूर्णीकृताः भुवि।।३९।।

अन्वितपदार्थ

तथा=इसी प्रकार, अपरे=कुछ अन्य, माहेश्वरी-त्रिशूलेन=माहेश्वरी के त्रिशूल से, भिन्नाः=टुकड़े होकर, पेतुः=गिरे, केचित्=कुछ, वाराही-तुण्ड-वाराही-घातेन=के नथुनों के प्रहार से, भुवि=जमीन पर, चूर्णीकृताः=चूर-चूर कर डाले गए।।३९।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार कुछ अन्य माहेश्वरी के त्रिशूल से टुकड़े होकर गिरे कुछ वाराही के नथुनों के प्रहार से जमीन पर चूर-चूर कर डाले गए।।३९।।

मन्त्र

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे।।४०।।

पदच्छेद

खण्डम्-खण्डम् च चक्रेण वैष्णव्याः दानवाः कृताः वज्रेण च ऐन्द्री-हस्ताग्र-विमुक्तेन तथा अपरे।।४०।।

अन्वितपदार्थ

वैष्णव्याः=वैष्णवी के, चक्रेण=चक्र से, दानवाः=दैत्य समूह, खण्डम्-खण्डम्=टुकड़े-टुकड़े, कृताः=कर डाले गए, अपरे च=और दूसरे, ऐन्द्र्या=ऐन्द्री से, हस्ताग्रविमुक्तेन=हाथ के अग्रभाग से छोड़े हुए, वज्रेण=वज्र द्वारा, तथा=उसी प्रकार विखण्डित हुए।।४०।।

अन्वितार्थ

वैष्णवी के चक्र से दैत्य समूह टुकड़े-टुकड़े कर डाले गए और दूसरे ऐन्द्री के हाथ के अग्रभाग से छोड़े हुए वज्र द्वारा उसी प्रकार विखण्डित हुए।।४०।।

मन्त्र

केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः।।४१।।

पदच्छेद

केचित् विनेशुः असुराः केचित् नष्टाः महा-आहवात्, भक्षिताः च अपरे काली-शिवदूती-मृगाधिपैः।।४१।।

अन्वितपदार्थ

महाहवात्=महा संग्राम के कारण, केचित्=कुछ, असुराः=राक्षस, विनेशुः=मर गए, केचित्=कुछ, नष्टाः=भाग गए, अपरे च=और दूसरे, काली-शिवदूती-मृगाधिपैः=काली, शिवदूती एवं सिंह द्वारा, भक्षिताः=भक्षित हो गए।।४१।।

अन्वितार्थ

महासंग्राम के कारण कुछ राक्षस मर गए कुछ भाग गए और दूसरे काली, शिवदूती एवं सिंह द्वारा भक्षित हो गए।।४१।।

।। जय जय श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
निशुम्भमर्दनं नाम नवमः विश्रामः ।।

।। अथ दशमोऽध्यायः

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१ ॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- निशुम्भम् निहतम् दृष्ट्वा भ्रातरम् प्राण-सम्मतम् हन्यमानम् बलम् च एव शुम्भः क्रुद्धः अब्रवीत् वचः॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, प्राणसम्मतम्=प्राणों के समान प्रिय, भ्रातरम्=भाई, निशुम्भम्=निशुम्भ के, निहतम्=समाप्त, बलम् च=तथा सेना को, हन्यमानम् एव=लगभग समाप्त होता हुआ, दृष्ट्वा=देखकर, क्रुद्धः=क्रोधित, शुम्भः=शुम्भ राक्षस, वचः=बड़े बोल, अब्रवीत्=बोला ॥१-२॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- प्राणों के समान प्रिय भाई निशुम्भ के समाप्त तथा सेना को लगभग समाप्त होता हुआ देखकर क्रोधित शुम्भ राक्षस बड़े बोल बोला ॥१-२॥

मन्त्र

बलावलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य युध्यसे यातिमानिनी॥३॥

पदच्छेद

बल-अव-लेपाद् दुष्टे त्वम् मा दुर्गे गर्वम् आ-वह अन्यासाम् बलम् आश्रित्य युध्यसे या अतिमानिनी॥३॥

अन्वितपदार्थ

दुष्टे=हे दुर्विनीते, दुर्गे=दुर्गे, त्वम्=तुम, बलस्य=बल की, अवलेपात्=कलई चढ़ने के कारण, मा=मत, गर्वम्=घमण्ड, आवह=करो, या=जो, अतिमानिनी=तुम अति घमण्डी होकर, अन्यासाम्=दूसरी शक्तियों के, बलम्=बल को, आश्रित्य=सहारा बनाकर, युध्यसे=युद्ध कर रही हो वह तुम्हारा प्रताप नहीं है।।३।।

अन्वितार्थ

हे दुर्विनीते दुर्गे! तुम बल की झूठी कलई चढ़ने के कारण घमण्ड मत करो। तुम जो अति घमण्डी होकर दूसरी शक्तियों के बल को सहारा बनाकर युद्ध कर रही हो। वह तुम्हारा प्रताप नहीं है।।३।।

मन्त्र

देव्युवाच।।४।।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः।।५।।

पदच्छेद

देवी उवाच- एका एव अहम् जगति अत्र द्वितीया का मम अपरा पश्य एताः दुष्ट मयि एव विशन्त्यः मद् विभूतयः।।४-५।।

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती ने कहा, अहम्=मैं, एका=स्वगत, सजातीय, विजातीय भेदविहीन होने के कारण एक, एव=ही हूँ, अत्र=इस, जगति=जगत् में, अपरा=दूसरी, मम=मेरी सहायिका शक्ति, का=कौन द्वितीया=दूसरी है, दुष्ट=रे दुष्ट, एताः=इन सभी, मद्विभूतयः=मेरे कायव्यूह द्वारा विरचित शक्तियों को, मयि एव=मुझमें ही, विशन्त्यः=प्रवेश करती हुई, पश्य=देख।।४-५।।

अन्वितार्थ

भगवती ने कहा- मैं स्वगत, सजातीय और विजातीय भेद विहीन होने के कारण एक ही हूँ। इस जगत में दूसरी मेरी सहायिका शक्ति दूसरी कौन

है। रे दुष्ट! मेरे कायव्यूह द्वारा विरचित इन सभी शक्तियों को मुझ में ही प्रवेश करतीं हुई देख॥४-५॥

मन्त्र

ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका॥६॥

पदच्छेद

ततः समस्ताः ताः देव्यः ब्रह्माणी-प्रमुखाः लयम् तस्याः देव्याः तनौ जग्मुः एका एव आसीत् तदा अम्बिका॥६॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, ब्रह्माणी प्रमुखाः=ब्रह्माणी आदि, ताः=वे, समस्ता=सभी, देव्यः=देवियाँ, तस्या=उन, देव्याः=भगवती के, तनौ=शरीर में, जग्मु=चली गई, तदा=उस समय, अम्बिका=अम्बिका, एका एव=एक ही, आसीत्=थीं॥६॥

अन्वितपदार्थ

इसके बाद ब्रह्माणी आदि वे सभी देवियाँ उन भगवती के शरीर में चली गई उस समय अम्बिका एक ही थीं॥६॥

मन्त्र

देव्युवाच॥७॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता।
तत्संहृतं मयैकेव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव॥८॥

पदच्छेद

देवी उवाच- अहम् वि-भूत्या बहुभिः इह रूपैः यद् आ-स्थिता तत् संहृतम् मया एका एव तिष्ठामि आजौ स्थिरः भव॥७-८॥

अन्वितपदार्थ

अहम्=मै, यत्=जो, इह=यहाँ, विभूत्या=अपने ऐश्वर्य के द्वारा, बहुभिः=अनेक रूपों से, आस्थिता=विद्यमान थीं, तत्=उस अनेकता को, मया=मेरे द्वारा, संहृतम्=सिकोड़ लिया गया है, स्थिरः=स्थिर,

भव=हो जाओ, आजौ=रण में, एका एव=अकेली ही, तिष्ठामि=रहूँगी।।७-८।।

अन्वितार्थ

मैं जो यहाँ अपने ऐश्वर्य के द्वारा अनेक रूपों में विद्यमान थीं। उस अनेकता को मेरे द्वारा सिकोड़ लिया गया है। स्थिर हो जाओ। रण में अकेली ही रहूँगी।।७-८।।

मन्त्र

ऋषिरुवाच।।९।।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम्।।१०।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच=ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य च उभयोः पश्यताम् सर्व-देवानाम् असुराणाम् च दारुणम्।।९-१०।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उचाच=ऋषि बोले-, ततः=भगवती के समस्त शक्तियों को समाहृत करने के ब़ाद, सर्वेषाम्=सभी, देवानाम्=देवताओं, असुराणाम् च=और असुरों के, पश्यताम्=देखते-देखते, देव्याः=देवी, शुम्भस्य च=और शुम्भ, उभयोः=दोनों में, दारुणम्=भयानक, युद्धम्=युद्ध, प्रववृते=आरम्भ हो गया।।९-१०।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- भगवती के समस्त शक्तियों को समाहृत करने के बाद सभी देवताओं और असुरों के देखते-देखते देवी और शुम्भ दोनों में भयानक युद्ध आरम्भ हो गया।।९-१०।।

मन्त्र

शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्च सुदारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद् भूयः सर्वलोकभयङ्करम्।।११।।

पदच्छेद

शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैः तथा अस्त्रैः च सुदारुणैः तयोः युद्धम् अभूद् भूयः सर्व-लोक-भयङ्करम्॥११॥

अन्वितपदार्थ

शितैः=तीखे, शर-वर्षैः=बाणों के बौछारों, सुदारुणैः=भयानक, शस्त्रैः=शस्त्रों, तथा च=और इसी कोटि के, अस्त्रैः=प्रक्षेपास्त्रों के माध्यम से, तयोः=दोनों में, सर्वेषाम्=सभी, लोकानाम्=लोकों को, भूयः=अत्यधिक, भयङ्करम्=भयभीत करने वाला, युद्धम्=युद्ध, अभूत्=हो रहा था॥११॥

अन्वितार्थ

तीखे बाणों के बौछारों, भयानक शस्त्रों और इसी कोटि के प्रक्षेपास्त्रों के माध्यम से दोनों में सभी लोकों को अत्यधिक भयभीत करने वाला युद्ध हो रहा था॥११॥

मन्त्र

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः॥१२॥

पदच्छेद

दिव्यानि यानि अस्त्राणि शतशः मुमुचे यानि अथ अम्बिका, बभञ्ज तानि दैत्य-इन्द्रः तत् प्रतीघात-कर्तृभिः॥१२॥

अन्वितपदार्थ

अथ=युद्धारम्भ के बाद, यानि-यानि=जिन-जिन, शतशः=सैकड़ों, दिव्यानि=दिव्य, अस्त्राणि=प्रक्षेपास्त्रों को, अम्बिका=भगवती ने, मुमुचे=छोड़ा, दैत्येन्द्रः=राक्षसराज शुम्भ ने, तत्प्रतीघातकर्तृभिः=उनका प्रतिकार करने वाले अस्त्रों से, तानि=उन सभी को, बभञ्ज=काट दिया॥१२॥

अन्वितार्थ

युद्ध आरम्भ के बाद जिन-जिन सैकड़ों दिव्य प्रक्षेपास्त्रों को भगवती ने छोड़ा। राक्षसराज शुम्भ ने उनका प्रतिकार करने वाले अस्त्रों से उन सभी को काट डाला॥१२॥

मन्त्र

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः॥१३॥

पदच्छेद

मुक्तानि तेन च अस्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी बभञ्ज लीलया एव उग्र-हुङ्कार-उच्चारण-आदिभिः॥१३॥

अन्वितपदार्थ

परमेश्वरी च=और भगवती ने, तेन मुक्तानि=उसके द्वारा चलाए हुए, दिव्यानि अस्त्राणि=द्योतनशील अस्त्रों को, उग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः=तीव्र हुङ्कार गर्जन आदि के द्वारा, लीलया एव=खेल-खेल में ही, बभञ्ज=काट डाला॥१३॥

अन्वितार्थ

और भगवती ने उसके द्वारा चलाए हुए द्योतनशील अस्त्रों को तीव्र हुङ्कार गर्जन आदि द्वारा खेल-खेल में ही काट डाला॥१३॥

मन्त्र

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः॥१४॥

पदच्छेद

ततः शर-शतैः देवीम् आच्छादयत सः असुरः सा अपि तत् कुपिता देवी धनुः चिच्छेद च इषुभिः॥१४॥

अन्वितपदार्थ

ततः=तब, सः=उस, असुरः=राक्षस ने, शर-शतैः=सैकड़ों बाणों से, देवीम्=भगवती को, आच्छादयत=ढक डाला। तत् कुपिता च=और इससे क्रुद्ध होकर, सा अपि=उन्होंने भी, इषुभिः=बाणों के साथ, धनुः=उसके धनुष को भी, चिच्छेद=काट दिया॥१४॥

अन्वितार्थ

तब उस राक्षस ने सैकड़ों बाणों से भगवती को ढक डाला और इससे क्रुद्ध होकर उन्होंने भी बाणों के साथ उसके धनुष को भी काट दिया।।१४।।

मन्त्र

छिन्ने धनुषि दैन्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम्।।१५।।

पदच्छेद

छिन्ने धनुषि दैत्य-इन्द्रः तथा शक्तिम् अथ आददे चिच्छेद देवी चक्रेण ताम् अपि अस्य करे स्थिताम्।।१५।।

अन्वितपदार्थ

अथ=इसके बाद, तथा=उस प्रकार से, धनुषि=धनुष के, छिन्ने=कट जाने पर, दैत्येन्द्रः=असुरराज ने, शक्तिम्=शक्ति शस्त्र को, आददे= संधान के लिए लिया, ताम् अपि=उसे भी, देवी=भगवती ने, अस्य=उसके, करे स्थिताम्=हाथ में ही, चक्रेण=चक्र से, चिच्छेद=काट डाला।।१५।।

अन्वितार्थ

इसके बाद उस प्रकार से धनुष के कट जाने पर असुर राज ने शक्ति शस्त्र को संधान के लिए लिया। उसे भी भगवती ने उसके हाथ में ही चक्र से काट डाला।।१५।।

मन्त्र

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत्।
अभ्यधावत तां देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः।।१६।।

पदच्छेद

ततः खड्गम् उप-आदाय शत-चन्द्रम् च भानुमत् अभि-अधावत ताम् देवीम् दैत्यानाम् अधिप-ईश्वरः।।१६।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, भानुमत्=तेजस्वी, दैत्यानाम्=राक्षसों के, अधिपानाम्=

राजाओं का, ईश्वरः=स्वामी शुम्भ, खड्गम्=खड्ग, शतचन्द्रम् च=और सौ चन्द्रों वाले फलकशस्त्र को, उपादाय=लेकर, ताम्=उन, देवीम्=भगवती की ओर, अभ्यधावत=दौड़ पड़ा।।१६।।

अन्वितार्थ

इसके बाद तेजस्वी राक्षसों के राजाओं का स्वामी शुम्भ खड्ग और सौ चन्द्रों वाले चर्म शस्त्र को लेकर उन भगवती की ओर दौड़ पड़ा।।१६।।

मन्त्र

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम्।।१७।।

पदच्छेद

तस्य आपततः एव आशु खड्गम् चिच्छेद चण्डिका धनुः-मुक्तैः शितैः बाणैः चर्म च अर्क-कर-अमलम्।।१७।।

अन्वितपदार्थ

चण्डिका=भगवती चण्डी ने, आपतत एव=पास आते ही, धनुषा=अपने धनुष से, आशु मुक्तैः=तुरन्त छोड़े हुए, बाणैः=बाणों से, तस्य=उस दैत्य के, अर्कस्य=सूर्य की, करामलम्=किरणों के समान उज्ज्वल, खड्गम्=खड्ग, चर्म च=कवच और सारथी को भी, चिच्छेद=काट दिया।।१७।।

अन्वितार्थ

भगवती चण्डी ने पास आते ही अपने धनुष से तुरन्त छोड़े हुए बाणों से उस दैत्य के सूर्य की किरणों के समान उज्ज्वल खड्ग, कवच तथा सारथी को भी काट डाला।।१७।।

मन्त्र

अश्वाँश्च पातयामास रथं सारथिना सह।
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः।।१८।।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः।

पदच्छेद

अश्वान् च पातयामास रथम् सारथिना सह हताश्वः सः तदा दैत्यः छिन्नधन्वा विसारथिः जग्राह मुद्गरम् घोरम् अम्बिका-निधन-उद्यतः।।१८।।

अन्वितपदार्थ

सारथिना सह=रथचालक सहित, रथम्=रथ, अश्वान् च=तथा घोड़ों को, पातयामास=मार गिराया, तदा=तब, हताश्वः=मृत अश्व वाले, छिन्न-धन्वा=विदीर्ण धनुष वाले, विसारथिः=सारथीविहीन, अम्बिकानिधनोद्यतः=तथापि भगवती के समापन के लिए प्रयासरत, सः=उस, दैत्यः=दैत्य ने, घोरम्=भयानक, मुद्गरम्=मुद्गर, जग्राह=लिया।।१८।।

अन्वितार्थ

रथ चालक सहित रथ एवं घोड़ों को मार गिराया तब मृत अश्व वाले, विदीर्ण धनुष वाले, सारथीविहीन तथापि भगवती के समापन के लिए प्रयासरत उस दैत्य ने भयानक मुद्गर लिया।।१८।।

मन्त्र

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।।१९।।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान्।

पदच्छेद

चिच्छेद आपततः तस्य मुद्गरम् निशितैः शरैः तथापि सः अभि-अधावत् ताम् मुष्टिम् उद्यम्य वेगवान्।।१९।।

अन्वितपदार्थ

तस्य=उसके, आपततः=गिरते हुए अवस्था में ही, मुद्गरम्=मुद्गर को, निशितैः=तीखे, शरैः=बाणों से, चिच्छेद=काट दिया, वेगवान्=तीव्र गतिशील, सः=वह राक्षस, तथापि=फिर भी, मुष्टिम्=मुट्ठी, उद्यम्य=उठाकर, ताम्=उनकी ओर, अभ्यधावत्=दौड़ पड़ा।।१९।।

अन्वितार्थ

उसके गिरते हुए अवस्था में ही मुद्गर को तीखे बाणों से काट दिया तीव्र

गतिशील वह राक्षस फिर भी मुट्ठी उठाकर उनकी और दौड़ पड़ा।।१९।।

मन्त्र

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुंगवः।।२०।।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत्।

पदच्छेद

सः मुष्टिम् पातयामास हृदये दैत्य-पुंगवः देव्याः तम् च अपि सा देवी तलेन उरसि अताडयत्।।२०।।

अन्वितपदार्थ

सः=उस, दैत्यपुंगवः=दानवप्रवर ने, देव्याः=भगवती के, हृदये=हृदय पर, मुष्टिम्=मुक्के का, पातयामास=प्रहार किया, सा च=उन, देवी=भगवती ने, तम्=उसकी, अपि=भी, उरसि=छाती पर, तलेन=हथेली से सीधा, अताडयत्=वार किया।।२०।।

अन्वितार्थ

उस दानवप्रवर ने भगवती के हृदय पर मुक्के का प्रहार किया उन भगवती ने उसकी भी छाती पर हथेली से सीधा वार किया।।२०।।

मन्त्र

तल प्रहाराभितो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः।।२१।।

पदच्छेद

तल-प्रहार-अभिहतः निपपात महीतले सः दैत्यराजः सहसा पुनः एव तथा उत्थितः।।२१।।

अन्वितपदार्थ

सः=वह, दैत्यराजः=दैत्यराज, तलप्रहाराभिहतः=भगवती के हथेली के सीधे प्रहार से घायल होकर, महीतले=धरती पर, निपपात=पुनः गिर पड़ा फिर, सहसा=तुरन्त, पुनः तथा एव=पूर्ववत्, उत्थितः=उठ खड़ा हुआ।।२१।।

अन्वितार्थ

वह दैत्यराज भगवती के हथेली के सीधे प्रहार से घायल होकर धरती पर पुनः गिर पड़ा फिर तुरन्त पूर्ववत् उठ खड़ा हुआ॥२१॥

मन्त्र

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः॥२२॥
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका॥२३॥

पदच्छेद

उत्पत्य च प्रगृह्य उच्चैः देवीम् गगनम् आस्थितः तत्र अपि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका॥२२-२३॥

अन्वितपदार्थ

उत्पत्य च=और उठकर, देवीम्=भगवती को, उच्चैः=ऊपर से, प्रगृह्य= पकड़ कर, गगनम्=आकाश को, आस्थितः=आश्रय बना लिया, सा चण्डिका=भगवती चण्डिका, निराधारा=आधारहीन स्थिति में, तत्रापि= वहाँ भी, तेन=उसके साथ, युयुधे=युद्ध कर रहीं थीं॥२२-२३॥

अन्वितार्थ

और उठकर भगवती को ऊपर से पकड़ कर आकाश को आश्रय बना लिया भगवती चण्डिका आधारहीन स्थिति में वहाँ भी उसके साथ युद्ध कर रहीं थीं॥२२-२३॥

मन्त्र

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं युद्धं मुनिविस्मयकारकम्॥२४॥

पदच्छेद

नियुद्धम् खे तदा दैत्यः चण्डिका च परस्परम् चक्रतुः प्रथमम् युद्धम् मुनि-विस्मय-कारकम्॥२४॥

अन्वितपदार्थ

तदा=उसी समय, खे=आकाश में, दैत्यः=शुम्भराक्षस, चण्डिका च=तथा चण्डिका ने, परस्परम्=परस्पर, प्रथमभ्=प्रथमबार, मुनीनाम्=मुनियों को,

विस्मयकारकम्=आश्चर्यचकित करने वाला, नियुद्धम्=शस्त्रविहीन करयुद्ध नामक, युद्धम्=युद्ध, चक्रतु:=किया।।२४।।

अन्वितार्थ

उसी समय आकाश में शुम्भ राक्षस तथा चण्डिका ने परस्पर प्रथम बार मुनियों को आश्चर्यचकित करने वाला **'नियुद्ध'** नामक (शस्त्रविहीन-करयुद्ध) युद्ध किया।।२४।।

मन्त्र

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले।।२५।।

पदच्छेद

ततः नियुद्धम् सु-चिरम् कृत्वा तेन अम्बिका सह उत्-पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणी-तले।।२५।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, अम्बिका=अम्बिका ने, तेन सह=उसके साथ, सुचिरम्=दीर्घकाल तक, नियुद्धम्=शस्त्र रहित कर युद्ध, कृत्वा=करके, अन्ततः, उत्पात्य=उठाकर, भ्रामयामास=घुमाया तथा, धरणीतले=धरती पर, चिक्षेप=पटक दिया।।२५।।

अन्वितार्थ

इसके बाद अम्बिका ने उसके साथ दीर्घकाल तक शस्त्ररहित करयुद्ध करके अन्ततः उठाकर घुमाया तथा धरती पर पटक दिया।।२५।।

मन्त्र

स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया।।२६।।

पदच्छेद

सः क्षिप्तः धरणीम् मुष्टिम् उद्यम्य वेगितः अभि-अधावत दुष्टात्मा चण्डिका-निधन-इच्छया।।२६।।

अन्वितपदार्थ

सः दुष्टात्मा=वह दुष्ट राक्षस, क्षिप्तः=पटके जाने पर, धरणीम्=धरती पर, प्राप्य=पहुँच कर, मुष्टिम्=घूँसा, उद्यम्य=उठाकर, चण्डिका-निधन-इच्छया=चण्डिका का प्राण हरण की इच्छा से, वेगितः=तीव्रता से, अभ्यधावत=उनकी ओर दौड़ा॥२६॥

अन्वितार्थ

वह दुष्ट राक्षस पटके जाने पर धरती पर पहुँच कर घूँसा उठाकर चण्डिका का प्राण हरण की इच्छा से तीव्रता से उनकी ओर दौड़ा॥२६॥

मन्त्र

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि॥२७॥

पदच्छेद

तम् आयान्तम् ततः देवी सर्व-दैत्य-जन-ईश्वरम् जगत्याम् पातयामास भित्वा शूलेन वक्षसि॥२७॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, देवी=भगवती ने, तम् उस, सर्वेषाम्=सभी, दैत्यजनानाम्=दैत्यों के, ईश्वरम्=स्वामी शुम्भ को, आयान्तम्=पास आते ही, वक्षसि=छाती में, शूलेन=शूल द्वारा, भित्त्वा=भेदन करके, जगत्याम्=धरती पर, पातयामास=गिरा दिया॥२७॥

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् भगवती ने उस सभी दैत्यों के स्वामी शुम्भ को पास आते ही छाती में शूल द्वारा भेदन करके धरती पर गिरा दिया॥२७॥

मन्त्र

स गतासुः पपातोर्व्यां देवी शूलाग्रविक्षतः।
चालयन्सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्॥२८॥

पदच्छेद

सः गत-असुः पपात उर्व्याम् देवी-शूल-अग्र-वि-क्षतः चालयन् सकलाम् पृथ्वीम् साब्धि-द्वीपाम् सपर्वताम्।।२८।।

अन्वितपदार्थ

देव्याः=भगवती के, शूलाग्रविक्षतः=भाले से विदीर्ण होकर, साब्धिद्वीपाम्=समुद्रों द्वीपों, सपर्वताम्=पर्वतों सहित, पृथ्वीम्=धरती को, चालयन्=कम्पित करते हुए, गतासुः=निष्प्राण, सः=वह शुम्भ, उर्व्याम्=धरती पर, पपात=गिर गया।।२८।।

अन्वितार्थ

भगवती के भाले से विदीर्ण होकर समुद्रों द्वीपों पर्वतों सहित धरती को कम्पित करते हुए निष्प्राण वह शुम्भ धरती पर गिर गया।।२८।।

मन्त्र

ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।।२९।।

पदच्छेद

ततः प्रसन्नम् अखिलम् हते तस्मिन् दुरात्मनि जगत् स्वास्थ्यम् अतीव आप निर्मलम् च अभवत् नभः।।२९।।

अन्वितपदार्थ

तस्मिन्=उस, दुरात्मनि=दुष्ट के, हते=मारे जाने पर, जगत्=संसार, अतीव=अत्यन्त, स्वास्थ्यम्=स्वच्छता, आप=प्राप्त कर चुका था, नभः च=और आकाश, निर्मलम्=अभवत्=हो गया था, तत्=इसके पश्चात्, अखिलम्=सम्पूर्णजगत्, प्रसन्नम्=प्रसादयुक्त हो गया था।।२९।।

अन्वितार्थ

उस दुष्ट के मारे जाने पर संसार अत्यन्त स्वच्छता प्राप्त कर चुका था और आकाश् निर्मल हो गया था इसके पश्चात् सम्पूर्ण जगत् प्रसाद युक्त हो गया था।।२९।।

मन्त्र

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासँस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासँस्तत्र पातिते॥३०॥

पदच्छेद

उत्पात-मेघाः स-उल्काः ये प्राग् आसन् ते शमम् ययुः सरितः मार्ग-वाहिन्यः तथा आसन् तत्र पातिते॥३०॥

अन्वितपदार्थ

पातिते=शुम्भ के मारे जाने पर, ये=जो, सोल्काः=उल्कापिण्डों के साथ, उत्पातमेघाः=प्रलयकारी बादल, प्राक्=युद्ध के पूर्व, आसन्=छाये थे, ते शमम्=वे शान्त, ययुः=हो गए। तथा=इसी प्रकार, तत्र सरितः=वहाँ नदियाँ, मार्गवाहिन्यः=उचित मार्ग पर बहने लगीं=आसन्=थीं॥३०॥

अन्वितार्थ

शुम्भ के मारे जाने पर जो उल्कापिण्डों के साथ प्रलयकारी बादल युद्ध के पूर्व छाये थे, वे शान्त हो गए। इसी प्रकार वहाँ नदियाँ उचित मार्ग पर बहने लगीं थीं॥३०॥

मन्त्र

ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः॥३१॥

पदच्छेद

ततः देव-गणाः सर्वे हर्ष-निर्भर-मानसाः बभूवुः निहते तस्मिन् गन्धर्वाः ललितम् जगुः॥३१॥

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके बाद, सर्वे=सभी, देवगणाः=देवमण्डली, हर्षनिर्भरमानसाः= आनन्द विभोर, बभूवुः=हो गये थे, तस्मिन्=उस राक्षस के, निहते=मारे जाने पर, गन्धर्वाः=गन्धर्व लोग, ललितम्=सुमधुर, जगुः=गान कर रहे थे॥३१॥

अन्वितार्थ

इसके बाद सभी देवमण्डली आनन्दविभोर हो गये थे। उस राक्षस के मारे जाने पर गन्धर्व लोग सुमधुर गान कर रहे थे।।३१।।

मन्त्र

अवादयँस्थैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।।३२।।

पदच्छेद

अवादयन् तथा-एव अन्ये ननृतुः च अप्सरः गणाः ववुः पुण्याः तथा वाताः सु-प्रभः अभूत् दिवाकरः।।३२।।

अन्वितपदार्थ

तथैव=इसी प्रकार, अन्ये=दूसरे गन्धर्व, अवादयन्=वाद्यों को बजा रहे थे, अप्सरोगणाः च=और अप्सराएँ, ननृतुः=नाचने लगीं थी, पुण्याः=सुखद, वाता=वायु, ववुः=बह रही थी, तथा=इसी प्रकार, दिवाकरः=सूर्य, सुप्रभः=सुतेजस्वी, अभूत्=हो चुके थे।।३२।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार दूसरे गन्धर्व वाद्यों को बजा रहे थे और अप्सराएँ नाचने लगीं थी। सुखद वायु बह रही थी। इसी प्रकार सूर्य सुतेजस्वी हो चुके थे।।३२।।

मन्त्र

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः।।३३।।

पदच्छेद

जज्वलुः च अग्नयः शान्ताः शान्ताः दिग्-जनित-स्वनाः।।३३।।

अन्वितपदार्थ

शान्ताः च=और बुझी हुई, अग्नयः=आहवनीय आदि यज्ञ की अग्नियाँ, जज्वलुः=जल उठी, दिग्जनिताः=दिशाओं में प्रतिध्वनित होने वाले, स्वनाः=शब्द, शान्ताः=शान्त हो गए थे।।३३।।

अन्वितार्थ

और बुझी हुई आहवनीय आदि यज्ञ की अग्नियाँ जल उठीं दिशाओं में प्रतिध्वनित होने वाले शब्द शान्त हो गए थे।।३३।।

।। जयजयश्रीमार्कण्डेयपुराणे देवी माहात्म्ये

शुम्भविध्वंसनं नाम दशमः विश्रामः।।

॥अथ एकादशोऽध्यायः॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभा-
द्विकाशिवक्त्राब्ज विकाशिताशाः॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- देव्या हते तत्र महा-असुर-इन्द्रे, स-इन्द्राः सुराः वह्नि-पुरः-गमाः ताम् कात्यायनीम् तुष्टुवुः इष्ट-लाभाद् विकाशि-वक्त्र-अब्ज-विकाशित-आशाः॥१-२॥

अन्विपदार्थ

ऋषिः उवाच=मार्कण्डेय ऋषि बोले, देव्या=भगवती द्वारा, तत्र=उस महासमर में, महासुरेन्द्रे=बड़े-बड़े राक्षसों के राजा शुम्भ-निशुम्भ के, हते=मारे जाने पर, इष्ट-लाभाद्=इच्छित वस्तु की प्राप्ति के कारण प्रसन्नता से, विकाशिवक्त्राब्ज-विकाशिताशाः= चमकते हुए मुख कमलों के द्वारा सभी दिशाओं को जगमागाने वाले;वह्निपुरोगमाः=अग्नि के नेतृत्व में, सेन्द्राः=इन्द्र सहित, सुराः=देवगण ने, ताम्=उन, कात्यायनीम्=कात्यायनी को, तुष्टुवुः=स्तुति से प्रसन्न करने लगे॥१-२॥

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय ऋषि बोले- भगवती द्वारा उस महासमर में बड़े-बड़े राक्षसों के राजा शुम्भ-निशुम्भ के मारे जाने पर इच्छित वस्तु की प्राप्ति के कारण प्रसन्नता से चमकते हुए मुख कमलों के द्वारा सभी दिशाओं को

जगमगाने वाले, अग्नि के नेतृत्व में इन्द्र सहित देवगण, उन कात्यायनी को स्तुति से प्रसन्न करने लगे॥१-२॥

मन्त्र

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम्
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥३॥

पदच्छेद

देवि प्रपन्न-आर्ति-हरे प्रसीद, प्रसीद मातः जगतः अखिलस्य प्रसीद विश्वस्य ईश्वरि पाहि विश्वम् त्वम् ईश्वरी देवि चराचरस्य॥३॥

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि!, प्रपन्न-आर्तिहरे=शरणागत के दुःखों का निवारण करने वाली, प्रसीद=आप प्रसन्न हों, अखिलस्य जगतः=हे समस्त जगत् की, मातः=माता, प्रसीद=आप प्रसन्न हों, विश्वेश्वरि=हे संसार की स्वामिनि! प्रसीद=आप प्रसन्न हों, विश्वम्=विश्व का पाहि=संरक्षण करें, देवि त्वम्=हे अम्बे आप, चराचंरस्य ईश्वरी=जड चेतन की अधीश्वरी हैं॥३॥

अन्वितार्थ

हे देवि! शरणागत के दुःखों का निवारण करने वाली आप प्रसन्न हों, हे समस्त जगत् की माता! आप प्रसन्न हों, हे संसार की स्वामिनि! आप प्रसन्न हों, विश्व का संरक्षण करें, हे अम्बे! आप जड़ चेतन की अधीश्वरी हैं॥३॥

मन्त्र

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये॥४॥

पदच्छेद

आधारभूता जगतः त्वम् एका मही-स्वरूपेण यतः स्थिता असि अपाम् स्वरूप-स्थितया त्वया एतद् आप्यायते कृत्स्नम् अलङ्घ्य-वीर्ये।।४।।

अन्वितपदार्थ

त्वम्=हे माता आप, जगतः=इस जगत् की, एका=एक मात्र, आधारभूता=अधिकरण स्वरूपिणी हैं, यतः=क्योंकि, महीस्वरूपेण=आप ही धरती के रूप में, स्थिता असि=स्थित हैं, अलङ्घ्यवीर्ये=हे अजिते!, अपाम्=जल, स्वरूपस्थितया=स्वरूप में स्थित होने के कारण, एतत् कृत्स्नम्=यह सब कुछ, त्वया=आप के द्वारा, आप्यायते=जलमग्न कर दिया जाता है।।४।।

अन्वितार्थ

हे माता! आप इस जगत् की एक मात्र अधिकरण स्वरूपिणी हैं। क्योंकि आप ही धरती के रूप में स्थित हैं। हे अजिते! जल स्वरूप में स्थित होने के कारण यह सब कुछ आप के द्वारा जलमग्न कर दिया जाता है।।४।।

मन्त्र

त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।५।।

पदच्छेद

त्वम् वैष्णवी शक्तिः अनन्त-वीर्या विश्वस्य बीजम् परमा असि माया सम्-मोहितम् देवि समस्तम् एतत् त्वम् वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः।।५।।

अन्वितपदार्थ

त्वम्=आप, अनन्तवीर्या=अनन्त बलशलिनी, विश्वस्य बीजम्=विश्व का मूल, वैष्णवी-शक्तिः=विष्णु की व्यापनशीला शक्ति, परमा माया=परमा योगमाया, असि=हैं। देवि=हे देवि!, एतत् समस्तम्=या सारा जगत् आप

के द्वारा, सम्मोहितम्=महामोह से त्रस्त है। प्रसन्ना त्वम् वै=प्रसन्न अवस्था में आप ही, भुवि=संसार में, मुक्तिहेतुः=मुक्ति का कारण बनती हैं।।५।।

अन्वितार्थ

आप अनन्त बलशालिनी, विश्व का मूल, विष्णु की व्यापनशीला शक्ति परमा योगमाया हैं। हे देवि! यह सारा जगत् आप के द्वारा महामोह से ग्रस्त हैं। प्रसन्न अवस्था में आप ही संसार में मुक्ति का कारण बनती हैं।।५।।

मन्त्र

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपराऽपरोक्तिः।।६।।

पदच्छेद

विद्याः समस्ता तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकलाः जगत्सु त्वया एकया पूरितम् अम्बया एतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा अपरा उक्तिः।।६।।

अन्वितपदार्थ

देति!=हे भगवति!, जगत्सु=तीनों लोकों में, समस्ताः=सभी, विद्या=विद्याएँ, सकलाः=कलाओं से युक्त, समस्ताः=सभी, स्त्रियः=स्त्रियाँ, तव भेदाः=आपका ही रूप भेद हैं, एकया=एकमात्र, त्वया अम्बया=आप अम्बा की सत्ता से, एतत्=ये सभी लोक, पूरितम्=व्याप्त हैं, ते स्तव्यपरा=आपके स्तवन के योग्य, स्तुतिः=स्तुति के रूप में, अपरा उक्तिः का=दूसरा क्या कहा जा सकता है। सभी कुछ तो आप हैं।।६।।

अन्वितार्थ

हे भगवति! तीनों लोकों में सभी विद्याएँ, कलाओं से युक्त सभी स्त्रियाँ आपका ही रूप भेद हैं। एक मात्र आप अम्बा की सत्ता से ये सभी लोक

व्याप्त हैं। आपके स्तवन के योग्य स्तुति के रूप में दूसरा क्या कहा जा सकता है। सभी कुछ तो आप हैं।।६।।

मन्त्र

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।७।।

पदच्छेद

सर्व-भूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी त्वम् स्तुता, स्तुतये का वा भवन्तु परम-उक्तयः।।७।।

अन्वितपदार्थ

यदा=जब आप, स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी=स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करने वाली, देवी=देदीप्यमती माता, सर्वभूता=आप सब कुछ हैं, त्वं स्तुता=तब आपकी प्रार्थना पूर्ण हो चुकी, स्तुतये=सर्वरूपिणी की स्तुति के लिए, का वा=कौन सी, परमाः उक्तयः=सर्वोत्तम वाणी या पद समूह, भवन्तु=हो सकते हैं।।७।।

अन्वितार्थ

जब आप स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करने वाली देदीप्यमती माता सब कुछ हैं। तब आपकी प्रार्थना तो पूर्ण हो चुकी। सर्वरूपिणी की स्तुति के लिए कौन सी सर्वोत्तम वाणी या पद समूह हो सकते हैं। आप ही सम्पूर्ण वर्णरूपिणी हैं।।७।।

मन्त्र

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।८।।

पदच्छेद

सर्वस्य बुद्धि-रूपेण जनस्य हृदि सम्-स्थिते स्वर्ग-अप-वर्गदे देवि नारायणि नमः अस्तु ते।।८।।

अन्वितपदार्थ

सर्वस्य=सभी, जनस्य=प्रणियों के, हृदि=हृदय में, बुद्धिरूपेण=बुद्धिरूप

में, संस्थिते=स्थित, स्वर्गापवर्गदे=स्वर्ग का सुख तथा मोक्ष का परम लक्ष्य प्रदान करने वाली, देवि नारायणि=हे भगवति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।८।।

अन्वितार्थ

सभी प्राणियों के हृदय में बुद्धिरूप में स्थित, स्वर्ग का सुख तथा मोक्ष का परम लक्ष्य प्रदान करने वाली! हे भगवति नारायणि! आपको प्रणाम है।।८।।

मन्त्र

कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽतु ते।।९।।

पदच्छेद

कला-काष्ठा-आदि-रूपेण परिणाम-प्रदायिनि विश्वस्य उपरतौ शक्ते नारायणि नमः अस्तु ते।।९।।

अन्वितपदार्थ

कला-काष्ठा-आदिरूपेण=हे कला, काष्ठा आदि सूक्ष्म कालखण्डों के माध्यम से, परिणामप्रदायिनि=चय-अपचय रूप में परिणाम प्रदान करने वाली, विश्वस्य=हे विश्व का, उपरतौ=संहार करने में, शक्ते=समर्थ, नारायणि=हे भगवति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।९।।

अन्वितपदार्थ

हे कला, काष्ठा आदि सूक्ष्म कालखण्डों के माध्यम से चय-अपचय रूप में परिणाम प्रदान करने के वाली! हे विश्व का संहार करने में समर्थ! हे भगवति नारायणि! आपको प्रणाम है।।९।।

मन्त्र

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१०।।

पदच्छेद

सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमः अस्तु ते।।१०।।

अन्वितपदार्थ

सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये=हे सभी कल्याणकारक तत्त्वों का भी कल्याण करने वाली!, शिवे=कल्याण रूपिणि, सर्वार्थ=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी प्रकार के प्राप्तव्य पदार्थों को, साधिके=सिद्ध कराने वाली, शरण्ये=सर्वोत्तम शरणस्थली, त्र्यम्बके=त्रिनयने, गौरि=गौरवर्णवाली, नारायणि=हे परात्परशक्ति नारायणि!, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।१०।।

अन्वितार्थ

हे सभी कल्याणकारक तत्त्वों का भी कल्याण करने वाली! कल्याण रूपिणि! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी प्रकार के प्राप्तव्य पदार्थों को सिद्ध कराने वाली! सर्वोत्तम शरणस्थली! त्रिनयने! गौरवर्णवाली! हे परात्पर शक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है।।१०।।

मन्त्र

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।११।।

पदच्छेद

सृष्टिः स्थिति-विनाशानाम् शक्ति-भूते सनातनि गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमः अस्तु ते।।११।।

अन्वितपदार्थ

सृष्टि-स्थिति-विनाशानाम्=निर्मिति, पालन, संहार की, शक्तिभूते=मूल शक्ति, सनातनि=हे भूत, वर्तमान एवं भविष्यत् तीनों कालों में वर्तमान रहने वाली!, गुणाश्रये=सत्त्व, रजस् एवं तमस् गुणों की,अधिष्ठान रूपिणि, गुणमये=त्रिगुणात्मिके, नारायणि=हे परात्परशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।११।।

अन्वितार्थ

हे निर्मिति, पालन एवं संहार की मूल शक्ति! हे भूत वर्तमान एवं भविष्यत् तीनों कालों में वर्तमानरहने वाली! हे सत्त्व, रजस् एवं तमस् गुणों की अधिष्ठानरूपिणि! हे त्रिगुणात्मिके! हे परात्पर शक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है।।११।।

मन्त्र

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१२।।

पदच्छेद

शरण-आगत-दीन-आर्त-परित्राण-परायणे! सर्वस्य आर्तिहरे! देवि! नारायणि! नमः अस्तु ते।।१२।।

अन्वितपदार्थ

शरणागत-दीन-आर्त-परित्राण-परायणे=शरण में आए हुए, अभावों के कारण दीन, दुःखी भक्तों के सरक्षण में सर्वथा संलग्न, सर्वस्य आर्तिहरे=सभी प्राणियों का कष्ट दूर करने वाली, देवी नारायणि=हे भगवती पराशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु प्रणाम है।।१२।।

अन्वितार्थ

शरण में आए हुए अभावों के कारण दीन दुःखी भक्तों के संरक्षण में सर्वथा संलग्न! सभी प्रणियों का कष्ट दूर करने वाली! हे भगवति! पराशक्ति नारायणि! आपको प्राणाम है।।१२।।

मन्त्र

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१३।।

पदच्छेद

हंस-युक्त-विमान-स्थे ब्रह्माणी-रूप-धारिणि कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमः अस्तु।।१३।।

अन्वितपदार्थ

हंसयुक्तविमानस्थे=हे हंस जुते हुए विमान पर विराजमान रहने वाली, ब्रह्माणी-रूप-धारिणि=ब्राह्मी शक्ति का रूप धारण करने वाली, कौशाम्भ:क्षरिके=कुशों से जल को प्रवाहित करने वाली, देवि नारायणि=हे भगवती पराशक्ति नारायणि, ते नम: अस्तु=आपको प्रणाम है।।१३।।

अन्वितार्थ

हे हंस जुते हुए विमान पर विराजमान रहने वाली! ब्राह्मी शक्ति का रूप धारण करने वाली! कुशों से जल को प्रवाहित करने वाली! हे भगवती पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है।।१३।।

मन्त्र

त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तुते।।१४।।

पदच्छेद

त्रिशूल-चन्द्र-अहि-धरे महा-वृषभ-वाहिनि माहेश्वरी-स्वरूपेण नारायणि नम: अस्तु ते।।१४।।

अन्वितपदार्थ

त्रिशूल-चन्द्र-अहि-धरे=हे त्रिशूल चन्द्रमा तथा सर्पों को धारण करने वाली, महावृषभवाहिनि=विशाल बैल पर सवार, माहेश्वरी-स्वरूपेण=महेश्वर शिव की शक्ति स्वरूपिणि!, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि, ते नम: अस्तु=आपको प्रणाम है।।१४।।

अन्वितार्थ

हे त्रिशूल चन्द्रमा तथा सर्पों को धारण करने वाली! विशाल बैल पर सवार, महेश्वर शिव की शक्ति स्वरूपिणि!, हे पराशक्ति नारायणि! आपकी प्रणाम है।।१४।।

मन्त्र

मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तुते।।१५।।

पदच्छेद

मयूर-कुक्कुट-वृते महाशक्ति-धरे अनघे कौमारी-रूप-संस्थाने नारायणि नमः अस्तु ते॥१५॥

अन्वितपदार्थ

मयूर-कुक्कुट-वृते=मोर समूहों के पिच्छों एवं चन्द्रिकाओं से आवृत!, महाशक्तिधरे=विशाल शक्ति आयुध धारण करने वाली!, अनघे= निष्कलङ्क स्वभाव वाली, कौमारीरूपसंस्थाने=कुमार कार्तिकेय की शक्ति का रूप धारण करने वाली!, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि!, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है॥१५॥

अन्वितार्थ

हे मोर समूहों के पिच्छों एवं चन्द्रिकाओं से आवृत, विशाल शक्ति आयुध धारण करने वाली, निष्कलङ्क स्वभाव वाली!, कुमार कार्तिकेय की शक्ति का रूप धारण करने वाली, हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है॥१५॥

मन्त्र

शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते॥१६॥

पदच्छेद

शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-गृहीत-परम-आयुधे प्रसीद वैष्णवी-रूपे नारायणि नमोऽस्तु ते॥१६॥

अन्वितपदार्थ

वैष्णवीरूपे=विष्णु की शक्ति के रूपा!, शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-गृहीत-परमायुधे=पाञ्चजन्य शङ्ख, सुदर्शन चक्र, कौमोदिकी गदा, शार्ङ्ग धनुष के रूप में परम श्रेष्ठ आयुधों को धारण करने वाली!, नारायणि=हे परात्परशक्ति नारायणि!, प्रसीद=आप प्रसन्न हों, नमः अस्तु ते=आपको प्रणाम है॥१६॥

अन्वितार्थ

विष्णु की शक्ति की रूपा, **पाञ्चजन्य शङ्ख**, **सुदर्शन** चक्र, **कौमोदिकी** गदा, **शार्ङ्ग** धनुष के रूप में परम श्रेष्ठ आयुधों को धारण करने वाली, हे परात्पराशक्ति नारायणि! आप प्रसन्न हों। आपको प्रणाम है।।१६।।

मन्त्र

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।१७।।

पदच्छेद

गृहीत-उग्र-महा-चक्रे दंष्ट्रा-उद्-धृत-वसुन्धरे वराह-रूपिणि शिवे नारायणि नमः अस्तु ते।।१७।।

अन्वितपदार्थ

गृहीत-उग्र-महाचक्रे=हे प्रचण्ड एवं उग्रचक्र लिए हुए!, दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे= अपनी दाढ़ से हिरण्याक्ष के बन्धन से धरती का उद्धार करने वाली!, वराहरूपिणि=हे वाराही शक्ति!, शिवे=हे कल्याण रूपिणि! नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि!, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।१७।।

अन्वितार्थ

हे प्रचण्ड एवं उग्रचक्र लिए हुए, अपनी दाढ़ से हिरण्याक्ष के बन्धन से धरती का उद्धार करने वाली हे वाराही शक्ति! हे कल्याण रूपिणि! हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है।।१७।।

मन्त्र

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।१८।।

पदच्छेद

नृ-सिंह-रूपेण उग्रेण हन्तुम् दैत्यान् कृत-उद्यमे त्रैलोक्य-त्राण-सहिते नारायणि नमः अस्तु ते।।१८।।

अन्वितपदार्थ

उग्रेण=प्रचण्ड, नृसिंहरूपेण=नारसिंही शक्ति के रूप में, दैत्यान्=दैत्यों

को, हन्तुम्=मारने का, कृतोद्यमे=सुकर्म करने वाली, त्रैलोक्यत्राणसहिते= तीनों लोकों की रक्षा के लिए सर्वथा हितकारिणी, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।१८।।

अन्वितार्थ

हे प्रचण्ड नारसिंही शक्ति के रूप में दैत्यों को मारने का सुकर्म करने वाली! तीनों लोकों की रक्षा के लिए सर्वथा हितकारिणि! हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है।।१८।।

मन्त्र

किरीटिनि महावज्रे सहस्त्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।१९।।

पदच्छेद

किरीटिनि महा-वज्रे सहस्त्र-नयन-उज्ज्वले वृत्र-प्राण-हरे च ऐन्द्रि नारायणि नमः अस्तु ते।।१९।।

अन्विपदार्थ

किरीटिनि=हे किरीट धारिणि, महावज्रे=विशालवज्र धारिणि, सहस्त्रनयनैः=हजार नेत्रों द्वारा, उज्ज्वले=ज्योतिष्मति, वृत्रप्राणहरे च=और वृत्रासुर की विनाशिका, ऐन्द्रि=हे इन्द्र की शक्ति, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।१९।।

अन्वितार्थ

हे किरीट धारिणी, विशाल वज्र धारिणि! हजार नेत्रों द्वारा ज्योतिष्मति! और वृत्रासुर की विनाशिका! हे इन्द्र की शक्ति! हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है।।१९।।

मन्त्र

शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।२०।।

पदच्छेद

शिव-दूती-स्व-रूपेण हत-दैत्य-महा-बले घोर-रूपे महा-रावे नारायणि नमः अस्तु ते॥२०॥

अन्वितपदार्थ

शिव-दूती-स्वरूपेण=हे चण्डिका के शरीर से प्रकट कल्याण परक सन्देश देने वाली, हत-दैत्य-महाबले=शुम्भादि दैत्यों की विशाल सेना को नष्ट करने वाली, घोररूपे=विकराल स्वरूप वाली, महारावे=भयानक घोष करने वाली, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है॥२०॥

अन्वितार्थ

हे चण्डिका के शरीर से प्रकट कल्याण परक सन्देश देने वाली, शुम्भादि दैत्यों की विशाल सेना को नष्ट करने वाली, विकराल स्वरूप वाली, भयानक घोष करने वाली, हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है॥२०॥

मन्त्र

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते॥२१॥

पदच्छेद

दंष्ट्रा-कराल-वदने शिरः-माला-विभूषणे चामुण्डे मुण्ड-मथने नमः अस्तु ते॥२१॥

अन्विपदार्थ

दंष्ट्राकरालवदने=हे डाढ़ों के कारण भयानक मुख वाली, शिरोमालाविभूषणे=मुण्डों की माला से अलंकृत, मुण्डमथने=मुण्ड नामक दैत्य का विनाश करने वाली, चामुण्डे=हे चामुण्डा भगवति, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है॥२१॥

अन्वितार्थ

हे डाढ़ों के कारण भयानक मुख वाली, मुण्डों की माला से अलंकृत,

मुण्ड नामक दैत्य का विनाश करने वाली, हे चामुण्डा भगवति! हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है॥२१॥

मन्त्र

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे।
महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते॥२२॥

पदच्छेद

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे महा-रात्रि महा-अ-विद्ये नारायणि नमः अस्तु ते॥२२॥

अन्वितपदार्थ

लक्ष्मि=हे समृद्धि रूपिणि, लज्जे=हे जगत् की उत्पत्ति स्थल स्वरूपा, महाविद्ये=हे मुक्ति साधिका पराविद्या, श्रद्धे=हे पवित्र विश्वास स्वरूपा भगवति, पुष्टि=हे विश्वशरीर के विकास एवं पोषण स्वरूपिणि, स्वधे=हे पितरों की तृप्ति रूपिणि, ध्रुवे=हे त्रिकाल में अविकृत रहने वाली, महारात्रि=हे वेदवर्णित महामोहमयी प्रलयकालीन रात्रि, महाऽविद्ये=हे संसार को प्रवर्तित करने वाली महा अज्ञान रूपिणि अविद्या, नारायणि=हे पराशक्ति नारायणि, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है॥२२॥

अन्वितार्थ

हे समृद्धि रूपिणि! हे जगत् की उत्पत्ति-स्थलस्वरूपे! हे मुक्ति साधिका पराविद्या! हे पवित्र विश्वास स्वरूपा भगवति! हे विश्वशरीर के विकास एवं पोषण स्वरूपिणि! हे पितरों की तृप्तिरूपिणी स्वधा ध्वनि! हे त्रिकाल में अविकृत रहने वाली! हे वेद वर्णित महामोहमयी प्रलयकालीन रात्रि! हे संसार को प्रवर्तित करने वाली महाअज्ञानरूपिणी अविद्या! हे पराशक्ति नारायणि! आपको प्रणाम है॥२२॥

मन्त्र

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते॥२३॥

पदच्छेद

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि नियते त्वम् प्रसीद ईशे नारायणि नमः अस्तु ते।।२३।।

अन्वितपदार्थ

मेधे=हे धारणात्मिका-बोध-रूपिणि, सरस्वति=हे वाणी की दिव्यशक्ति, वरे=हे श्रेष्ठतम-तत्त्व-रूपिणि, भूति=सत्त्व-गुण-प्रधान-तत्त्वरूपिणि, बाभ्रवि=हे कपिल-वर्णा रजोगुण-प्रधान-तत्त्व-रूपिणि, तामसि=हे तमोगुण-प्रधान-तत्त्व-रूपिणि, नियते=हे नियति रूपिणि मूलशक्ति, ईशे=हे सब की स्वामिनी, नारायणि=हे नारायणि, त्वं प्रसीद=आप प्रसन्न हों, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।२३।।

अन्वितार्थ

हे धारणात्मिका-बोधरूपिणि! हे वाणी की दिव्यशक्ति! हे श्रेष्ठतम-तत्त्व-रूपिणि! हे सत्त्वगुण प्रधान तत्त्वरूपिणि! हे कपिलवर्णा रजोगुण प्रधान तत्त्वरूपिणि! हे तमोगुणप्रधान तत्त्वरूपिणि! हे नियति रूपिणि मूलशक्ति! हे सब की स्वामिनी! हे नारायणि! आप प्रसन्न हों। आपको प्रणाम है।।२३।।

मन्त्र

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।२४।।

पदच्छेद

सर्व-स्व-रूपे सर्व-ईशे सर्व-शक्ति-समन्विते भयेभ्यः त्राहि नः देवि दुर्गे देवि नमः अस्तु ते।।२४।।

अन्वितपदार्थ

सर्वस्वरूपे=हे विश्व-रूपिणि!, सर्वेषाम्=हे सभी ज्ञात-अज्ञात पदार्थों की, ईशे=स्वामिनि, सर्वशक्तिसमन्विते=हे सभी प्रकार की शक्तियों से युक्त, देवि=हे प्रकाशमान, भयेभ्यः नः=हमें सभी प्रकार के भयों से, त्राहि=सुरक्षित करें, देवि दुर्गे=हे देवि दुर्गे, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।२४।।

अन्वितार्थ

हे विश्वरूपिणि! हे सभी ज्ञात-अज्ञात पदार्थों की स्वामिनि! हे सभी प्रकार की शक्तियों से युक्त! हे प्रकाशमान! हमें सभी प्रकार के भयों से सुरक्षित करें। हे देवि! दुर्गे! आपको प्रणाम है।।२४।।

मन्त्र

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२५।।

पदच्छेद

एतत् ते वदनम् सौम्यम् लोचनत्रय विभूषितम् पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमः अस्तु ते।।२५।।

अन्वितपदार्थ

ते एतत्=आपका यह, लोचनत्रयभूषितम्=सोम, सूर्य एवं अग्निमय तीन नेत्रों से अलंकृत, वदनम्=मुख-मण्डल, सौम्यम्=आल्हादजनक है, कात्यायनि=हे कात्यायन के आश्रम में प्रकट होने वाली, सर्वभूतेभ्यः=सभी पञ्चमहाभूतों में उत्पन्न होने वाले विकारों से, नः पातु=हमारी रक्षा करें, नमः अस्तु ते=आपको प्रणाम है।।२५।।

अन्वितार्थ

आपका यह सोम, सूर्य एवं अग्निमय तीन नेत्रों से अलंकृत मुख-मण्डल आल्हाद जनक है। हे कात्यायन के आश्रम में प्रकट होने वाली भगवति! सभी पञ्चमहाभूतों में उत्पन्न होने वाले विकारों से हमारी रक्षा करें। आपको प्रणाम है।।२५।।

मन्त्र

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।२६।।

पदच्छेद

ज्वाला-करालम् अति-उग्रम् अशेष-असुर-सूदनम् त्रिशूलम् पातु नः भीतेः भद्रकालि नमः अस्तु ते।।२६।।

अन्वितपदार्थ

भद्रकालि=हे भद्रकालि!, ज्वालया=ज्वाला से युक्त होने के कारण, करालम्=भयानक, अति-उग्रम्=प्रचण्ड आक्रामक, अशेषाणाम्=समस्त, असुराणाम्=राक्षसों का, सूदनम्=विनाशक, त्रिशूलम्=आपका त्रिशूल, भीतेः नः पातु=भय से हमारी रक्षा करे, ते नमः अस्तु=आपको प्रणाम है।।२६।।

अन्वितार्थ

हे भद्रकालि! ज्वाला से युक्त होने के कारण भयानक, प्रचण्ड आक्रामक समस्त राक्षसों का विनाशक, आपका त्रिशूल भय से हमारी रक्षा करें। आपको प्रणाम है।।२६।।

मन्त्र

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।२७।।

पदच्छेद

हिनस्ति दैत्य-तेजांसि स्वनेन आ-पूर्य या जगत् सा घण्टा पातु नः देवि पापेभ्यः अनः सुतान् इव।।२७।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे भगवति!, या घण्टा=जो घण्टा, जगत् स्वनेन आपूर्य=संसार को अपने निनाद से गुञ्जायमान करके, दैत्यनाम् तेजांसि=राक्षसों के तेज को, मनोबल को, हिनस्ति=समाप्त कर देती है, सा=वह आपकी घण्टा, अनः सुतान् इव=जैसे माता पुत्र की रक्षा करती है, पापेभ्यः नः पातु=उसी प्रकार दुराचरणों से, कुमार्ग से हमारी रक्षा करें।।२७।।

अन्वितार्थ

हे भगवति! जो घण्टा संसार को अपने निनाद से गुञ्जायमान करके राक्षसों के तेज को, मनोबल को समाप्त कर देती है। आपकी वह घण्टा जैसे माता पुत्र की रक्षा करती है। उसी प्रकार दुराचरणों से, कुमार्ग से हमारी रक्षा करे।।२७।।

मन्त्र

असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥२८॥

पदच्छेद

असुर-असृग्-वसा-पङ्क-चर्चितः ते कर-उज्जवलः शुभाय खड्गः भवतु चण्डिके त्वाम् नताः वयम्॥२८॥

अन्वितपदार्थ

चण्डिके=हे चण्डिके, असुर-असृग्-वसा-पङ्क-चर्चितः=राक्षसों के, रक्त एवं मेदस् के कीचड़ से सना हुआ, ते करोज्जवलः=आपके हाथों की किरणों से चमकता हुआ, खड्गः=यह खड्ग, शुभाय भवतु=हमारा कल्याण करे, त्वाम् वयम् नताः=हम सभी देवमण्डली आपके शरण में विनत हैं॥२८॥

अन्वितार्थ

हे चण्डिके! राक्षसों के रक्त एवं मेदस् के कीचड़ से सना हुआ आपके हाथों की किरणों से चमकता हुआ यह खड्ग हमारा कल्याण करे। हम सभी देवतामण्डली आपके शरण में विनत हैं॥२८॥

मन्त्र

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम्
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥

पदच्छेद

रोगान् अशेषान् अपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान् त्वाम् आश्रितानाम् न विपत्-नराणाम् त्वाम् आश्रिताः हि आश्रयताम् प्रयान्ति॥२९॥

अन्वितपदार्थ

तुष्टा=प्रसन्न होने पर, अशेषान् रोगान्=समस्त दैहिक, भौतिक, दैविक, रोगों को, रुष्टा तु=अप्रसन्न होने पर, सकलान्=सभी, अभीष्टान् कामान्=भोग

एवं मोक्ष रूपी कामनाओं को, अपहंसि=आप विनष्ट कर देतीं हैं। त्वाम्=आपके, आश्रितानाम् नराणाम्=शरण में रहने वाले मुनष्यों को, विपत् न=किसी प्रकार की विपत्ति नहीं होती, त्वमाश्रिता: हि=आपके आश्रित रहने वाले तो, आश्रयताम् प्रयान्ति=स्वयं आश्रय प्रदान करने का सामर्थ्य रखते हैं।।२९।।

अन्वितार्थ

प्रसन्न होने पर समस्त दैहिक, भौतिक, दैविक, रागों को अप्रसन्न होने पर सभी भोग एवं मोक्ष रूपी कामनाओं को आप विनष्ट कर देतीं हैं। आपके शरण में रहने वाले मनुष्यों को किसी प्रकार की विपत्ति नहीं होती, आपके आश्रित रहने वाले तो स्वयं आश्रय प्रदान करने का सामर्थ्य रखते हैं।।२९।।

मन्त्र

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिम्
कृत्वाऽम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।३०।।

पदच्छेद

एतत् कृतम् यत् कदनम् त्वया अद्य धर्मद्विषाम् देवि महासुराणाम् रूपै: अनेकै: बहुधा आत्ममूर्तिम् कृत्वा अम्बिके तत् प्रकरोति का अन्या।।३०।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे देवि, अद्य=अभी-अभी, त्वया=आपके द्वारा, धर्मद्विषाम्=धर्मद्रोही, महासुराणाम्=महाराक्षसों का, बहुधा=अनेक प्रकार से, आत्ममूर्तिम्=अपने विग्रह को, कृत्वा=प्रकट करके, अनेकै:=अनेक, रूपै:=रूपों के माध्यम से, यत्=जो, एतत्=यह, कदनम्=संहार, कृतम्=किया गया है, अम्बिके=हे अम्बिका, का अन्या=कौन दूसरा, तत्=उस तरह से, प्रकरोति=करता है। आप ही समर्थ हैं।।३०।।

अन्वितार्थ

हे देवि! अभी-अभी आपके द्वारा धर्म द्रोही महाराक्षसों का अनेक प्रकार से अपने विग्रह को प्रकट करके अनेक रूपों के माध्यम से जो यह संहार किया गया है। हे अम्बिके! कौन दूसरा उस तरह से कर सकता है। आप ही समर्थ हैं।।३०।।

मन्त्र

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव चित्रम्।।३१।।

पदच्छेद

विद्यासु शास्त्रेषु विवेक-दीपेषु आद्येषु वाक्येषु च का त्वद्-अन्या ममत्व-गर्ते अति-महा-अन्धकारे विभ्रामयति एतत् अति-इव चित्रम्।।३१।।

अन्वितपदार्थ

विद्यासु=आप ही के स्व-रूप सभी प्रकार से बोधात्मक ज्ञान, शास्त्रेषु=ज्ञान के साधन रूप शास्त्रों, विवेकदीपेषु=सत् असत् विवेचन कराने के लिए रूपी उपनिषदों, आद्येषु वाक्येषु च=और प्रथम वाक्य रूप वेदों के होते हुए भी, अतिमहा-अन्धकारे=अत्यन्त महान दुर्गम्य अन्धकाररूप, ममत्व-गर्ते=ममता 'ये मेरा है' 'मैं करता हूँ' आदि मोह के गढ्ढे में, त्वत्तः अन्या=आपके अतिरिक्त, का=कौन, विभ्रामयति= बारम्बार प्रवर्तित करता है। आप ही इसमें कारण है, एतत्=यह, अतीव चित्रम्=अत्यन्त विचित्र तथ्य है।।३१।।

अन्वितार्थ

आप ही के स्व-रूप सभी प्रकार के बोधात्मक ज्ञान, ज्ञान के साधन रूप शास्त्रों, सत् असत् विवेचन कराने के लिए रूप उपनिषदों और प्रथम वाक्यरूप वेदों के होते हुए भी अत्यन्त महान् दुर्गम्य अन्धकाररूप ममता 'यह मेरा है' 'मैं करता हूँ' आदि मोह के गढ्ढे में आपके अतिरिक्त कौन

बारम्बार प्रवर्तित करता है। आप ही इसमें कारण हैं। यह अत्यन्त विचित्र तथ्य है।।३१।।

मन्त्र

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।३२।।

पदच्छेद

रक्षांसि यत्र उग्र-विषाः च नागाः यत्र अरयः दस्यु-बलानि यत्र दाव-अनलः यत्र तथा अब्धि-मध्ये तत्र स्थिता त्वम् परि-पासि विश्वम्।।३२।।

अन्वितपदार्थ

यत्र=जहाँ, रक्षांसि=राक्षस हों, यत्र च=और जहाँ, उग्रविषाः=भयानक विष वाले, नागाः=सर्प हों, यत्र=जहाँ, दस्युबलानि=चोर डाकुओं का झुण्ड हों, यत्र=जहाँ, अरयः=शत्रुसमूह हो, यत्र=जहाँ, दावानलः=जंगली आग हो, तथा=तथा, अब्धिमध्ये=समुद्र के बीच में, तत्र स्थिता=उन सभी स्थानों पर विराजमान होकर, त्वम्=आप, विश्वम्=विश्व की, परिपासि=रक्षा करती हैं।।३२।।

अन्वितार्थ

जहाँ राक्षस हों और जहाँ भयानक विष वाले सर्प हों, जहाँ चोर डाकुओं का झुण्ड हो, जहाँ शत्रु समूह हो, जहाँ जंगली आग हो तथा समुद्र के बीच में उन सभी स्थानों पर विराजमान होकर आप विश्व की रक्षा करती हैं।।३२।।

मन्त्र

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वम्
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।३३।।

पदच्छेद

विश्व-ईश्वरी त्वम् परि-पासि विश्वम् विश्व-आत्मिका धारयसि इति विश्वम् विश्व-ईश-वन्द्या भवती भवन्ति विश्व-आश्रयाः ये त्वयि भक्ति-नम्राः।।३३।।

अन्वितपदार्थ

त्वम्=आप, विश्वेश्वरि=संसार की अधीश्वरी हैं अतः, विश्वम्=संसार का, परिपासि=भली प्रकार से पालन करती हैं, विश्वात्मिका इति=आप विश्वरूपिणी हैं अतः, विश्वम्=संसार को, धारयसि=स्व-रूप में धारण करती हैं, भवती विश्वेश-वन्द्या=आप विश्व पर प्रभुत्व रखने वाले ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के द्वारा पूजित हैं, अतः, ये त्वयि=जो आप के प्रति, भक्त्या=भक्ति भाव के कारण, नम्राः=विनम्र हैं, शरणागत् हैं वे, विश्वाश्रयाः=सबके आश्रय दाता, भवन्ति=हो जाते हैं।।३३।।

अन्वितार्थ

आप संसार की अधीश्वरी हैं, अतः संसार का भली प्रकार से पालन करतीं हैं। आप विश्वरूपिणी हैं, अतः संसार को स्व-रूप में धारण करती है, आप विश्व पर प्रभुत्व रखने वाले ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के द्वारा पूजित हैं। अतः जो आप के प्रति भक्ति भाव के कारण विनम्र हैं। शरणागत हैं। वे सबके आश्रयदाता हो जाते हैं।।३३।।

मन्त्र

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते
र्नित्यं यथाऽसुरबधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनिताँश्च महोपसर्गान्।।३४।।

पदच्छेद

देवि प्रसीद परि-पालय नः अरि-भीतेः नित्यम् यथा असुर-बधाद् अधुना एव सद्यः पापानि सर्व-जगताम् प्रशमम् नय आशु उत्-पात-पाक-जनितान् च महा-उप-सर्गान्।।३४।।

अन्वितपदार्थ

देवि=हे भगवती, प्रसीद=आप प्रसन्न हों, नित्यम्=सदा, अरीणाम्=शत्रुओं के, भीतेः परिपालय नः=भय से हमारी रक्षा करें, अधुना एवं=यथा अभी ही जैसे, असुरबधात्=असुरों के बध से शत्रुभय से आपने हमारी रक्षा की है, सर्वजगताम्=सम्पूर्ण जगत् के, पापानि=पापों को, सद्यः=तुरन्त, प्रशमम्=समाप्ति के प्रति, नय=ले जाएँ, आशु च=और तत्काल ही, उत्पातपाकजनितान्=प्राकृतिक उत्पातों के परिणाम से उत्पन्ना, महोपसर्गान्=महाविनाशों को, प्रशमं नय=समाप्ति की ओर ले जाएँ।।३४।।

अन्वितार्थ

हे भगवती आप प्रसन्न हों सदा शत्रुओं के भय से हमारी रक्षा करें अभी ही जैसे असुरों के वध से शत्रुभय से आपने हमारी रक्षी की है सम्पूर्ण जगत् के पापों को तुरन्त समाप्ति की ओर ले जाएँ और तत्काल ही प्राकृतिक उत्पातों के परिणाम से उत्पन्न महाविनाशों को समाप्ति की ओर ले जाएँ।।३४।।

मन्त्र

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।३५।।

पदच्छेद

प्रणतानाम् प्रसीद त्वम् देवि विश्व-आर्ति-हारिणि त्रैलोक्ये वासिनाम् ईड्ये लोकानाम् वरदा भव।।३५।।

अन्वितपदार्थ

विश्वस्य=हे विश्व के, आर्तिहारिणि=कष्टों को हरण करने वाली, देवि=भगवती, त्वम्=आप, प्रणतानाम्=शरणागत भक्तों के लिए, प्रसीद=प्रसन्न रहें, त्रैलोक्यवासिनामीड्ये=हे तीनों लोकों में रहने वाले सुर, नर, मुनि की आराध्या, लोकानाम्=आप सम्पूर्ण समाज के लिए, वरदा भव=इच्छित वर देने वाली बनी रहें।।३५।।

अन्वितार्थ

हे विश्व के कष्टों को हरण करने वाली भगवती! आप शरणागत भक्तों के लिए प्रसन्न रहें। हे तीनों लोकों में रहने वाले सुर, नर, मुनि की आराध्या! आप सम्पूर्ण समाज के लिए इच्छित वर देने वाली बनी रहें।।३५।।

मन्त्र

देव्युवाच।।३६।।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्।।३७।।

पदच्छेद

देवि-उवाच वरदा अहम् सुरगणाः वरम् यन् मनसा इच्छथ तम् वृणुध्वम् प्रयच्छामि जगताम् उपकारकम्।।३६-३७।।

अन्वितपदार्थ

देवि उवाच=देवी बोलीं-, सुरगणाः=हे देववृन्द, अहम्=मैं, वरदा=वरप्रदात्री हूँ, यत्=जो, मनसा=मन द्वारा, जगताम्=विश्व का, उपकारकम्=कल्याण करने वाले, इच्छथ=इच्छा कर रहे हैं, तम् वरम्=उस वर को, वृणुध्वम्=माँगिए, प्रयच्छामि=मैं प्रदान करूँगी।।३६-३७।।

अन्वितार्थ

देवी बालीं- हे देववृन्द मैं वरप्रदात्री हूँ, आप मन से जिस विश्व का कल्याण करने वाले वर की इच्छा कर रहे हैं, उस वर को माँगिए, मैं प्रदान करूँगी।।३६-३७।।

मन्त्र

देवा ऊचुः।।३८।।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यस्मद्वैरिविनाशनम्।।३९।।

पदच्छेद

देवाः ऊचुः- सर्वासाम् बाधानाम् प्रशमनम् त्रैलोक्यस्य अखिल-ईश्वरि एवम् एव त्वया कार्यम् अस्मद् वैरि-विनाशनम्।।३८-३९।।

अन्वितदार्थ

देवाः ऊचुः=देवतागण बोले-, त्रैलोक्यस्य=हे तीनों लोकों की, अखिलेश्वरि=अधीश्वरी, एवम् एव=इसी प्रकार ही, सर्वासाम्=सभी, बाधानाम्=बाधाओं का, प्रशमनम्=समापन, अस्मत्=हमारे, वैरीणाम्=शत्रुओं का, विनाशनम्=विनाश, त्वया कार्यम्=आपके द्वारा किया जाना चाहिए।।३८-३९।।

अन्वितार्थ

देवतागण बोले- हे तीनों लोकों की अधीश्वरी इसी प्रकार ही सभी बाधाओं का समापन और हमारे शत्रुओं का विनाश आपके द्वारा किया जाना चाहिए।।३८-३९।।

मन्त्र

देव्युवाच।।४०।।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतितमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ।।४१।।

पदच्छेद

देवी उवाच- वैवस्वते अन्तरे प्राप्ते अष्टा-विंशति-तमे युगे शुम्भः निशुम्भः च एव अन्यौ उत्-पत्स्येते महाअसुरौ।।४०-४१।।

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती बोली, वैवस्वत नामक, अन्तरे=मन्वन्तर, प्राप्ते=आने पर, अष्टाविंशतितमे=उसके अट्ठाईसवें, युगे=युगचक्र में, अन्यौ एव=अन्य ही, शुम्भः निशुम्भः च=शुम्भ और निशुम्भ, महासुरौ=नामक महाराक्षस, उत्पत्स्येते=उत्पन्न होंगे।।४०-४१।।

अन्वितार्थ

भगवती बोलीं- वैवस्वत नामक मन्वन्तर आने पर उसके अट्ठाईसवें युगचक्र में अन्य ही शुम्भ और निशुम्भ नामक महाराक्षस उत्पन्न होंगे।।४०-४१।।

मन्त्र

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी।।४२।।

पदच्छेद

नन्दगोप-गृहे जाता यशोदा-गर्भ-संभवा ततः तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल-निवासिनी।।४२।।

अन्वितपदार्थ

ततः=उस समय, नन्दगोप-गृहे=नन्द नामक गोपालक के घर में, जाता=उत्पन्न, यशोदायाः=यशोदा के, गर्भसम्भवाः=गर्भ में जन्मी, विन्ध्याचलनिवासिनी=विन्ध्याचल पर निवास करने वाली आदि शक्ति रूप में, तौ=उन दोनों का, नाशयिष्यामि=विनाश करूँगी।।४२।।

अन्वितार्थ

उस समय नन्द नामक गोपालक के घर में उत्पन्न यशोदा के गर्भ में जन्मी **विन्ध्याचल पर निवास करने वाली** आदि शक्ति मैं उन दोनों का विनाश करूँगी।।४२।।

मन्त्र

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्ताँश्च दानवान्।।४३।।

पदच्छेद

पुनः अपि अति-रौद्रेण रूपेण पृथिवी-तले अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तान् च दानवान्।।४३।।

अन्वितार्थ

पुनः अपि=इसके अतिरिक्त भी, अतिरौद्रेण=अत्यन्त भयानक, रूपेण=रूप से, पृथिवीतले=पृथिवी पर, अवतीर्य=अवतरित होकर, वैप्रचित्तान् च=वैप्रचित्त जाति के, दानवान्=राक्षसों को, हनिष्यामि=मारूँगी।।४३।।

अन्वितार्थ

इसके अतिरिक्त भी मैं अत्यन्त भयानक रूप से पृथिवी पर अवतरित होकर वैप्रचित्त जाति के राक्षसों को मारूँगी।।४३।।

मन्त्र

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः।।४४।।

पदच्छेद

भक्षयन्त्याः च तान् उग्रान् वैप्रचित्तान् महासुरान् रक्ताः दन्ताः भविष्यन्ति दाडिमी-कुसुम-उपमाः।।४४।।

अन्वितपदार्थ

तान् उग्रान् च=और उन भयानक, वैप्रचित्तान्=वैप्रचित्त नामक, महासुरान्=राक्षसों को, भक्षयन्त्याः=भक्षण करती हुई मेरे, दन्ताः=दाँत, दाडिमीकुसुमोपमाः=अनार के फूलों की तरह, रक्ता=लाल, भविष्यन्ति=हो जाएँगे।।४४।।

अन्वितार्थ

और उन भयानक वैप्रचित्त नामक राक्षसों को भक्षण करती हुए मेरे दाँत अनार के फूलों की तरह लाल जाएँगे।।४४।।

मन्त्र

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्।।४५।।

पदच्छेद

ततः माम् देवताः स्वर्गे मर्त्ये लोके च मानवाः स्तुवन्तः व्याहरिष्यन्ति सततम् रक्त-दन्तिकाम्।।४५।।

अन्वितपदार्थ

ततः=इसके पश्चात्, माम्=मेरी, स्वर्गे देवताः=स्वर्ग में देवता, मर्त्ये लोके च=और मृत्युलोक में, मानवाः=मनुष्यगण, सततम्=अनवरत, स्तुवन्तः=स्तुति करते हुए,. रक्तदन्तिकाम्=रक्तदन्तिका नाम से, व्याहरिष्यन्ति=पुकारेंगे।।४५।।

अन्वितार्थ

इसके पश्चात् मेरी स्वर्ग में देवता और मृत्युलोक में मनुष्यगण अनवरत स्तुति करते हुए **रक्तदन्तिका** नाम से पुकारेंगे।।४५।।

मन्त्र

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा।।४६।।

पदच्छेद

भूयः च शतवार्षिक्याम् अन्-आ-वृष्ट्याम् अन्-अम्भसि मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्यामि अ-योनिजा।।४६।।

अन्वितपदार्थ

भूयः च=और पुनः, शतवार्षिक्याम्=सौ वर्षों तक, अनावृष्ट्याम्=वर्षा न होने पर, अनम्भसि=जल विहीन, भूमौ=धरती पर, मुनिभिः संस्तुता =मुनियों द्वारा प्रार्थना किए जाने पर, अयोनिजा=मैं बिना गर्भ में प्रवेश किए स्वतः, सम्भविष्यामि=उत्पन्न होऊँगी।।४६।।

अन्वितार्थ

और पुनः सौ वर्षों तक वर्षा न होने पर जल विहीन धरती पर मुनियों द्वारा प्रार्थित मैं मैं बिना गर्भ में प्रवेश किए स्वतः उत्पन्न होऊँगी।।४६।।

मन्त्र

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्याम्यहं यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः।।४७।।

पदच्छेद

ततः शतेन नेत्राणाम् निरीक्षिष्यामि यत् मुनीन् कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीम् इति माम् ततः।।४७।।

अन्वितपदार्थ

ततः=उस समय, यत् मुनीन्=क्योंकि मुनिजनों को, शतेन नेत्राणाम्=सौ नेत्रों से, निरीक्षिष्यामि=देखूँगी, ततः=इसलिए, मनुजाः= मनुष्यगण, शताक्षीम् इति=शताक्षी इस नाम से, माम्=मेरा, कीर्तयिष्यन्ति=कीर्तन करेंगे।।४७।।

अन्वितार्थ

उस समय क्योंकि मुनिजनों को सौ नेत्रों से देखूँगी। इसलिए मनुष्यगण शताक्षी इस नाम से मेरा कीर्तन करेंगे।।४७।।

मन्त्र

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः।।४८।।

पदच्छेद

ततः अहम् अखिलम् लोकम् आत्मदेहात् समुद्भवैः भरिष्यामि सुराः शाकैः आ-वृष्टेः प्राणधारकैः।।४८।।

अन्वितपदार्थ

सुराः=हे देवगण, ततः=इसके अनन्तर, अहम्=मैं, अखिलम् लोकम्=सम्पूर्ण विश्व का, आत्मदेहात् समुद्भवैः=अपने शरीर से उत्पन्न, प्राणानाम् धारकैः=प्राणरक्षक, शाकैः=शाकों के माध्यम से, आवृष्टेः=जब तक वर्षा नहीं होती तब तक, भरिष्यामि=भरण पोषण करूँगी।।४८।।

अन्वितार्थ

हे देवगण इसके अनन्तर मैं सम्पूर्ण विश्व का अपने शरीर से उत्पन्न प्राणरक्षक शाकों के माध्यम से जब तक वर्षा नहीं होती, तब तक भरण पोषण करूँगी।।४८।।

मन्त्र

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च बधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।।४९।।

पदच्छेद

शाकम्भरी इति विख्यातिम् तदा यास्यामि अहम् भुवि तत्र एव च बधिष्यामि दुर्गम् आख्यम् महासुरम्।।४९।।

अन्वितपदार्थ

तदा=तब, भुवि=धरती पर, अहम्=मैं, शाकम्भरी इति=शाकम्भरी नाम

से, विख्यातिम्=प्रसिद्धि, यास्यामि=प्राप्त करूँगी, तत्र एव च=और उसी स्थान पर, दुर्गम् आख्यम्=दुर्गनामक, महासुरम्=महादानव का, बधिष्यामि=बध करूँगी।।४९।।

अन्वितार्थ

तब धरती पर मैं **शाकम्भरी** नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करूँगी। उसी स्थान पर दुर्ग नामक महादानव का बध करूँगी।।४९।।

मन्त्र

दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले।।५०।।

पदच्छेद

दुर्गादेवी इति विख्यातम् तत् मे नाम भविष्यति पुनः च अहम् यदा भीमम् रूपम् कृत्वा हिमाचले।।५०।।

अन्वितपदार्थ

तत् मे नाम=इससे मेरा नाम, दुर्गादेवी इति=दुर्गादेवी के नाम से, विख्यातम्=प्रसिद्ध, भविष्यति=होगा। पुनः च यदा=और फिर जब, अहम्=मैं, भीमम् रूपम्=विशाल देह, कृत्वा=धारण करके, हिमाचले=हिमालय पर।।५०।।

अन्वितार्थ

इससे मेरा नाम **दुर्गादेवी** के नाम से प्रसिद्ध होगा और फिर जब मैं विशाल देह धारण करके हिमालय पर।।५०।।

मन्त्र

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः।।५१।।

पदच्छेद

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनाम् त्राण-कारणात् तदा माम् मुनयः सर्वे स्तोष्यन्ति आनम्रमूर्तयः।।५१।।

अन्वितपदार्थ

मुनीनाम्=मुनियों की, त्राणकारणात्=प्राण रक्षा के हेतु से, रक्षांसि=राक्षसों का, भक्षयिष्यामि=भक्षण करूँगी, तदा=तब, माम्=मेरा, आनम्रमूर्तयः=पूर्ण नम्रशरीर वाले, सर्वे=सभी, मुनयः=मुनि लोग, स्तोष्यन्ति=स्तुति करेंगे॥५१॥

अन्वितार्थ

मुनियों की प्राण रक्षा के हेतु से राक्षसों का भक्षण करूँगी तब मेरा पूर्ण नम्रशरीर वाले सभी मुनि लोग स्तुति करेंगे॥५१॥

मन्त्र

भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति॥५२॥

पदच्छेद

भीमादेवी इति विख्यातम् तत् मे नाम भविष्यति। यदा अरुणाख्यः त्रैलोक्ये महा-बाधाम् करिष्यति॥५२॥

अन्वितपदार्थ

तत् मे नाम=तब मेरा नाम, भीमादेवी इति=भीमा देवी के नाम से, विख्यातम्=प्रसिद्ध, भविष्यति=होगा, यदा=जब, अरुणाख्यः=अरुण नाम से प्रसिद्ध, त्रैलोक्ये=तीनों लोकों में, महाबाधाम्=अत्यधिक उत्पात, करिष्यति=करेगा॥५२॥

अन्वितार्थ

तब मेरा नाम 'भीमादेवी' नाम से प्रसिद्ध होगा। जब अरुण नाम से प्रसिद्ध दैत्य तीनों लोकों में अत्यधिक उत्पात करेगा॥५२॥

मन्त्र

तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वासंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय बधिष्यामि महासुरम्॥५३॥

पदच्छेद

तदा अहम् भ्रामरम् रूपम् कृत्वा अ-संख्येय-षट्-पदम् त्रैलोक्यस्य हितार्थाय बधिष्यामि महा-असुरम्॥५३॥

अन्वितपदार्थ

तदा अहम्=तब मैं, असंख्येयम् षट्पदम्=छः पैरों वाले असंख्य, भ्रामरम् रूपम्=भ्रमरों के रूप को, कृत्वा=धारण करके, त्रैलोक्यस्य=तीनों लोकों के, हितार्थाय=कल्याण के लिए, महासुरम्=महा दैत्यों का, बधिष्यामि=बध करूँगी।।५३।।

अन्वितार्थ

तब मैं छः पैरों वाले असंख्य भ्रमरों के रूप को धारण करके तीनों लोकों के कल्याण के लिए महा दैत्यों का बध करूँगी।।५३।।

मन्त्र

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।।५४।।

पदच्छेद

भ्रामरी इति च माम् लोकाः तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।।५४।।

अन्वितपदार्थ

तदा=तब लोग, भ्रामरी इति=**भ्रामरी** नाम से, माम्=मेरा, सर्वतः=सभी, लोकाः=लोकों में, स्तोष्यन्ति=स्तुति करेंगे।।५४।।

अन्वितार्थ

तब लोग **भ्रामरी** नाम से मेरा सभी लोकों में स्तुति करेंगे।।५४।।

मन्त्र

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्।।५५।।

पदच्छेद

इत्थम् यदा-यदा बाधाः दानव-उत्थाः भविष्यति। तदा-तदा अव-तीर्य अहम् करिष्यामि अरि-सम्-क्षयम्।।५५।।

अन्वितपदार्थ

इत्थम्=इस प्रकार, यदा-यदा=जब-जब, दानव-उत्थाः=दानवों से उत्पन्न, बाधाः=बाधा, भविष्यति=होगा, तदा-तदा=तब-तब, अहम्=मैं, अवतीर्य=अवतरित होकर, अरीणाम्=शत्रुओं का, संक्षयम्=संहार, करिष्यामि=करूँगी।।५५।।

अन्वितार्थ

इस प्रकार जब-जब दानवों से उत्पन्न बाधा होगा तब-तब मैं अवतरित होकर शत्रुओं का संहार करूँगी।

॥ॐ जय-जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये श्रीनारायणीस्तुतिर्नामैकादशः विश्रामः॥

॥अथ द्वादशोऽध्यायः॥

देव्युवाच॥१॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्॥२॥

पदच्छेद

देवी उवाच- एभिः स्तवैः च माम् नित्यम् स्तोष्यते यः सम्-आहितः तस्य अहम् सकलाम् बाधाम् नाशयिष्यामि अ-संशयम्॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती ने कहा, समाहितः च=और एकाग्रिचत्त से, यः=जो, एभिः=इन, स्तवैः=शब्दसमूहों के माध्यम से, नित्यम्=सदा, माम्=मेरी, स्तोष्यते=स्तुति करेगा, तस्य=उसकी, सकलाम्=सभी, बाधाम्=बाधा को, अहम्=मैं, असंशयम्=निः सन्देह, नाशयिष्यामि=नष्ट करूँगी॥१-२॥

अन्वितार्थ

भगवती ने कहा-और एकाग्रचित्त से जो इन शब्दसमूहों के माध्यम से सदा मेरी स्तुति करेगा उसकी सभी बाधा को मैं निःसन्देह नष्ट करूँगी।

मन्त्र

मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुंभनिशुम्भयोः॥३॥

पदच्छेद

मधु-कैटभ-नाशम् च महिषासुर-घातनम् कीर्तयिष्यन्ति ये तद् वत् बधम् शुम्भ-निशुम्भयोः॥३॥

अन्वितपदार्थ

तद्वत्=ये इसी प्रकार से जो, मधुकैटभनाशम्=मधु-कैटभ के विनाश, महिषासुरघातनम् च=और महिषासुर के संहार, शुम्भनिशुम्भयोः= शुम्भ-निशुम्भ के, बधम्=बध का, कीर्तयिष्यन्ति=कीर्तन कराएँगे।।३।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार से जो मधु-कैटभ के विनाश और महिषासुर के संहार शुम्भ-निशुम्भ के वध का कीर्तन कराएँगे।।३।।

मन्त्र

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्।।४।।

पदच्छेद

अष्टम्याम् च चतुर्दश्याम् नवम्याम् च एक-चेतसः श्रोष्यन्ति च एव ये भक्त्या मम माहात्म्यम् उत्तमम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

अष्टम्याम्=अष्टमी को, चतुर्दश्याम् च=और चतुर्दशी को, नवम्याम् च=तथा नवमी तिथि को, भक्त्या=भक्ति से, एकचेतसः च एव=इसी तरह एकाग्रचित्त होकर, ये=जो, मम=मेरे, उत्तमम्=इस सर्वश्रेष्ठ, माहात्म्यम्= माहात्म्य को, श्रोष्यन्ति=सुनेंगे।।४।।

अन्वितार्थ

अष्टमी को और चतुर्दशी को तथा नवमी तिथि को भक्ति से, इसी तरह एकाग्रचित्त होकर जो मेरे इस सर्वश्रेष्ठ माहात्म्य को सुनेंगे।।४।।

मन्त्र

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्।।५।।

पदच्छेद

न तेषाम् दुष्-कृतम् किञ्चिद् दुष्कृत-उत्थाः न आपदः न भविष्यन्ति न दारिद्र्यम् न च एव इष्ट-वियोजनम्।।५।।

अन्वितपदार्थ

तेषाम्=उनको, किञ्चित्=कुछ भी, दुष्कृतम्=पाप, न=नहीं होता, च दुष्कृत-उत्था:=तथा पाप से उत्पन्न होने वाली, आपद:=आपत्तियाँ, न=नहीं होती, दारिद्र्यम्=दरिद्रता, न भविष्यन्ति=नहीं होंगी, इष्टस्य च एव=तथा इच्छित सामग्री का, वियोजनम्=वियोग, न=नहीं होगा।।५।।

अन्वितार्थ

उनको कुछ भी पाप नहीं होता, पाप से उत्पन्न होने वाली आपत्तियाँ नहीं होतीं, दरिद्रता नहीं होगी तथा इच्छित सामग्री का वियोग नहीं होगा।।५।।

मन्त्र

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति।।६।।

पदच्छेद

शत्रुतः न भयम् तस्य दस्युतः वा न राजतः शस्त्र-अनल-तोय-ओघात् कदा-चित् सम्-भविष्यति।।६।।

अन्वितपदार्थ

तस्य=उस भक्त को, न शत्रुत:=न शत्रु से, दस्युत:=डाकू से, न वा राजत:=न तो राजा से, शस्त्रात्=शस्त्र से, अनलात्=अग्नि से, तोयौघात्=बाढ़ से, कदाचित्=कभी भी, भयम् न=भय नहीं, सम्भविष्यति=होता हो।।६।।

अन्वितार्थ

उस भक्त को न शत्रु से, न डाकू से, न तो राजा से, शस्त्र से, अग्नि से, बाढ़ से कभी भी भय नहीं होता है।।६।।

मन्त्र

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत्।।७।।

पदच्छेद

तस्मात् मम एतत् माहात्म्यम् पठितव्यम् सम्-आहितैः श्रोतव्यम् च सदा भक्त्या परम् स्वस्ति-अयनम् महत्।।७।।

अन्वितपदार्थ

तस्मात्=अतः, मम=मेरे, एतत्=इस, परम्=उत्कृष्ट, स्वस्त्ययनम्=कल्याणकारक, महत्=महान्, माहात्म्यम्=स्तोत्र को, समाहितैः=एकाग्रचित्त साधकों द्वारा, भक्त्या=भक्ति पूर्वक, सदा=सदा, पठितव्यम्=पढ़ना चाहिए, श्रोतव्यम् च=और सुनना चाहिए।।७।।

अन्वितार्थ

अतः मेरे इस उत्कृष्ट कल्याणकारक महान् स्तोत्र को एकाग्रचित्त साधकों द्वारा भक्ति पूर्वक सदा पढ़ना और सुनना चाहिए।।७।।

मन्त्र

उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।।८।।

पदच्छेद

उप-सर्गान् अशेषान् तु महा-मारी-सम्-उद्-भवान् तथा त्रि-विधम् उत्पातम् माहात्म्यम् शमयेत् मम।।८।।

अन्वितपदार्थ

महामारी समुद्भवान् तु=संक्रामक रोगों से उत्पन्न, अशेषान्=सम्पूर्ण, उपसर्गान्=उपद्रव, तथा=इसी प्रकार, त्रिविधम्=दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के, उत्पातम्=विध्वंसों को, मम=मेरा, माहात्म्यम्=माहात्म्य पठन एवं श्रवण, शमयेत्=शान्त कर देता है।।८।।

अन्वितार्थ

संक्रामक रोगों से उत्पन्न सम्पूर्ण उपद्रव इसी प्रकार दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के विध्वंसों को मेरा माहात्म्य पठन एवं श्रवण शान्त कर देता है।।८।।

मन्त्र

यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ् नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम्।।९।।

पदच्छेद

यत्र मम=मेरे जिस, आयतने=मन्दिर में, एतत्=यह महास्तोत्र, नित्यम्=सर्वदा, सम्यक्=समुचित रीति से, पठ्यते=पढ़ा जाता है, तत्र=वहाँ, मे=मेरा, सान्निध्यम्=निवास, सदा=सदा स्थितम्=स्थिर रहता है, न तत्=उसे नहीं, विमोक्ष्यामि=छोड़ूँगी।।९।।

अन्वितार्थ

मेरे जिस मन्दिर में यह महास्तोत्र सर्वदा समुचित रीति से पढ़ा जाता है वहाँ मेरा निवास सदा स्थिर रहता है मैं उसे नहीं छोड़ूँगी।।९।।

मन्त्र

बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च।।१०।।

पदच्छेद

बलि-प्रदाने पूजायाम् अग्नि-कार्ये महोत्सवे सर्वम् मम एतत् चरितम् उच्चार्यम् श्राव्यम् एव च।।।१०।।

अन्विगतपदार्थ

मम एतत्=मेरे इस, सर्वम्=सम्पूर्ण, चरितम्=चरित को, बलिप्रदाने=बलिदान के अवसर पर, पूजायाम्=पूजन के समय, अग्निकार्ये=यज्ञ में, महोत्सवे=पुत्र जन्म, विवाहादि उत्सवों में, उच्चार्यम्=उच्चरित करना चाहिए, श्राव्यम् एव च=सुनाना ही चाहिए।।१०।।

अन्वितार्थ

मेरे इस सम्पूर्ण चरित को बलिदान के अवसर पर पूजन के समय यज्ञ में पुत्र जन्म, विवाहादि उत्सवों में उच्चारित करना और सुनाना ही चाहिए।।१०।।

मन्त्र

जानताऽजानता वापि बलिपूजां यथा कृताम्।
प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम्।।११।।

पदच्छेद

जानता अ-जानता वा अपि बलि-पूजाम् तथा कृताम् प्रतीक्षिष्यामि अहम् प्रीत्या वह्नि-होमम् तथा कृतम्।।११।।

अन्वितपदार्थ

जानता=विधि का ज्ञान रखने वालों द्वारा, अजानता वापि=अथवा विधि का ज्ञान न रखने वालों द्वारा, प्रीत्या=प्रेम वश, तथा=वेद्य या अवेद्य प्रकार से, कृताम्=की गई, बलिपूजाम्=बलिदान युक्त पूजा, तथा कृतम्=पूर्वोक्त रीति से किए गए, वह्निहोमम्=अग्निप्रधान पूजा को, अहम्=मैं, प्रतीक्षिष्यामि=ग्रहण करूँगी।।११।।

अन्वितार्थ

विधि का ज्ञान रखने वालों द्वारा प्रेम वश पूर्वोक्त रीति से किए गए अग्निप्रधान पूजा को मैं ग्रहण करूँगी।।११।।

मन्त्र

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः।।१२।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।१३।।

पदच्छेद

शरत्-काले महा-पूजा क्रियते या च वार्षिकी तस्याम् मम एतत् माहात्म्यम् श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः। सर्वा-बाधा-वि-निर्-मुक्तः धन-धान्य-सुतान्वितः मनुष्यः मत् प्रसादेन भविष्यति न सम्-शयः।।१२-१३।।

अन्वितपदार्थ

या च=और जो, वार्षिकी=सालाना, महापूजा=प्रधानपूजा, शरत्काले=शरद ऋतु में आश्विन माह में, क्रियते=की जाती है, तस्याम्=उसमें, मम=मेरा, एतत्=यह, माहात्म्यम्=माहात्म्य, श्रुत्वा=सुनकर, भक्तिसमन्वितः=भक्तिमान्, मनुष्यः=मनुष्यः, सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तः=सभी बाधाओं से पूर्णतः मुक्त होकर, धन-धान्य-सुतान्वितः=सभी प्रकार की सम्पत्तियों

सभी प्रकार के अन्नों एवं पुत्रों से संयुक्त, भविष्यति=होगा, न संशयः=इसमें कोई संशय नहीं है।।१२-१३।।

अन्वितार्थ

और जो सालाना प्रधान पूजा शरद ऋतु में आश्विन माह में की जाती है। उसमें मेरा यह माहात्म्य सुनकर भक्तिमान् मनुष्य मेरी कृपा से सभी बाधाओं से पूर्णतः मुक्त होकर सभी प्रकार की सम्पत्तियों, सभी प्रकार के अन्नों एवं पुत्रों से संयुक्त होगा इसमें कोई संशय नहीं है।।१२-१३।।

मन्त्र

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।१४।।

पदच्छेद

श्रुत्वा मम एतत् माहात्म्यम् तथा च उत्पत्तयः शुभाः पराक्रमम् च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।१४।।

अन्वितपदार्थ

मम=मेरा, एतत्=यह, माहात्म्यम्=माहात्म्य, तथा च=इसी प्रकार, शुभाः=कल्याणमय, उत्पत्तयः=आविर्भावों, युद्धेषु च=और युद्धों में किए गए, पराक्रमम्=पराक्रम को, श्रुत्वा=सुनकर, पुमान्=मनुष्य, निर्भयः=भय मुक्त, जायते=हो जाता है।

अन्वितार्थ

मेरा यह माहात्म्य इसी प्रकार कल्याणमय आविर्भावों और युद्धों में किए गए पराक्रम को सुनकर मनुष्य भयमुक्त हो जाता है।।१४।।

मन्त्र

रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्।।१५।।

पदच्छेद

रिपवः सम्-क्षयम् यान्ति कल्याणम् च उप-पद्यते नन्दते कुलम् पुंसाम् माहात्म्यम् मम शृण्वताम्।।१५।।

अन्वितपदार्थ

मम=मेरा, माहात्म्यम्=माहात्म्य, शृण्वताम्=सुनने वाले, पुंसाम्=मनुष्यों के, रिपवः=शत्रु, संक्षयम्=नष्ट, यान्ति=हो जाते हैं, कल्याणम् च=और मङ्गल, उपपद्यते=प्राप्त होता है, कुलम् च=तथा परिवार, नन्दते=प्रसन्न रहता है।।१५।।

अन्वितार्थ

मेरा माहात्म्य सुनने वाले मनुष्यों के शत्रु नष्ट हो जाते हैं और मङ्गल प्राप्त होता है तथा परिवार प्रसन्न रहता है।।१५।।

मन्त्र

शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम।।१६।।

पदच्छेद

शान्ति-कर्मणि सर्वत्र तथा दुः-स्वप्नस्य दर्शने ग्रह-पीडासु च उग्रासु माहात्म्यम् श्रृणुयात् मम।।१६।।

अन्वितपदार्थ

शान्ति-कर्मणि=उत्पातों की शान्ति के यज्ञों से, तथा=इसी प्रकार, दुःस्वप्नस्य=अनिष्ट सूचक स्वप्न के, दर्शने=दिखाई देने पर, ग्रहाणाम् च=और ग्रहों के कारण, उग्रासु=प्रचण्ड, पीडासु=उपद्रव होने पर, सर्वत्र=सभी जगह, मम=मेरा, माहात्म्यम्=माहात्म्य श्रृणुयात्=सुनना चाहिए।।१६।।

अन्वितार्थ

उत्पातों की शान्ति के यज्ञों में इसी प्रकार अनिष्ट सूचक स्वप्न के दिखाई देने पर और ग्रहों के कारण प्रचण्ड उपद्रव होने पर सभी जगह मेरा माहात्म्य सुनना चाहिए।।१६।।

मन्त्र

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते।।१७।।

पदच्छेद

उप-सर्गाः शमम् यान्ति ग्रहपीडाः च दारुणाः दुःस्वप्नम् च नृभिः दृष्टम् सुस्वप्नम् उप-जायते।।१७।।

अन्वितपदार्थ

उपसर्गाः=प्राकृतिक उत्पात, दारुणाः च=और कठिन, ग्रहपीडाः=ग्रहबाधा, शमम्=शान्त, यान्ति=हो जाती है, नृभिः=और मनुष्यों द्वारा, दृष्टम्=देखा गया, दुःस्वप्नम्=अनिष्ट स्वप्नफल, सुस्वप्नम्=कल्याण कारक, उपजायते=बन जाता है।।१७।।

अन्वितार्थ

प्राकृतिक उत्पात और कठिन ग्रहबाधा शान्त हो जाती है और मनुष्यों द्वारा देखा गया अनिष्ट स्वप्नफल कल्याण कारक बन जाता है।।१७।।

मन्त्र

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्।।१८।।

पदच्छेद

बाल-ग्रह-अभि-भूतानाम् बालानाम् शान्ति-कारकम् संघातभेदे च नृणाम् मैत्री-करणम् उत्तमम्।।१८।।

अन्वितपदार्थ

बालग्रहाभिभूतानाम्=पूतना आदि बालहिंसक उपद्रव से ग्रस्त, बालानाम्=शिशुओं के रोग को, शान्तिकारकम्=शान्त करने वाला, नृणाम् च=तथा मनुष्यों के, संघातस्य=संगठन में, भेदे=भेद उत्पन्न होने पर, उत्तमम्=सर्वश्रेष्ठ, मैत्रीकरणम्=मित्रता उत्पन्न करने का साधन है।।१८।।

अन्वितार्थ

पूतना आदि बालहिंसक उपद्रव से ग्रस्त शिशुओं के रोग को शान्त करने वाला तथा मनुष्यों के संगठन में भेद उत्पन होने पर सर्वश्रेष्ठ मित्रता उत्पन्न करने का साधन है।।१८।।

मन्त्र

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्॥१९॥

पदच्छेद

दुर्-वृत्तानाम् अ-शेषाणाम् बल-हानि-करम् परम् रक्षः-भूत- पिशाचानाम् पठनाद् एव नाशनम्॥१९॥

अन्वितपदार्थ

पठनात्=पढ़ने मात्र से, एव=ही यह माहात्म्य, अशेषाणाम्=सम्पूर्ण, दुर्वृत्तानाम्=दुष्टों का, परमम्=परम, बलहानिकरम्=शक्तिनाश कारक है, रक्षसाम्=राक्षसों, भूतानाम्=प्रेतों, पिशाचानाम्=पिशाचों का, नाशनम्=नाशक है॥१९॥

अन्वितार्थ

पढ़ने मात्र से ही यह माहात्म्य सम्पूर्ण दुष्टों का परम शक्तिनाश कारक है। राक्षसों, प्रेतों और पिशाचों का नाशक है॥१९॥

मन्त्र

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्॥२०॥
पशुपुष्पार्घधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः।
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्॥२१॥
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या।

पदच्छेद

सर्वम् मम एतत् माहात्म्यम् मम सन्निधि-कारकम् पशु-पुष्प-अर्घ-धूपैः च गन्ध-दीपैः तथा उत्तमैः विप्राणाम् भोजनैः होमैः प्रोक्षणीयैः अहर्निशम् अन्यैः विविधैः भोगैः प्रदानैः वत्सरेण या॥२०-२१॥

अन्वितपदार्थ

एतत्=यह, सर्वम् सम्पूर्ण, मम=मेरा, माहात्म्यम्=माहात्म्य, मम=मेरी, सन्निधिकारकम्=शरण प्रदान करता है, पशुभिः=विभिन्न बलियों, पुष्पैः=फूलों और जल-दूध-कुशाग्र आदि, अर्घैः=अष्टाङ्गअर्घों,

धूपैः=धूपसामग्रियों, गन्धैः=सुगन्ध द्रव्यों, दीपैः=दीपों के माध्यम से, विप्राणाम्=ब्राह्मणों को, भोजनैः= भोजन, होमैः=हवन, प्रोक्षणीयैः=प्रोक्षण योग्य जल, अन्यैः च=तथा अन्य प्रकार के, विविधैः=विविध, भौगैः= माला वस्त्रादि भोगों के, अहर्निशम्=सतत, प्रदानैः=समर्पण के द्वारा, वत्सरेण=एक वर्ष में, या=जो।।२०-२१।।

अनिवतार्थ

यह सम्पूर्ण मेरा माहात्म्य मेरी शरण प्रदान करता है। विभिन्न बलि उपहारों सुगन्धित फलों और जल, दूध, कुशाग्र आदि अष्टांग अर्घों इसी प्रकार श्रेष्ठ प्रकार के धूपसामग्रियों सुगन्ध द्रव्यों दीपों के माध्यम से ब्राह्मणों को भोजन, हवन, प्रोक्षणयोग्य जल तथा अन्य प्रकार के विविध माला वस्त्र आदि भोगों के सतत समर्पण के द्वारा एक वर्ष में जो ।।२०-२१।।

मन्त्र

प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृदुच्चरिते श्रुते।।२२।।
श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति।

पदच्छेद

प्रीतिः में क्रियते सा अस्मिन् सकृद् उच्चरिते श्रुते। श्रुतम् हरति पापानि तथा आरोग्यम् प्रयच्छति।।२२।।

अन्वितपदार्थ

मे=मुझमें, प्रीति, क्रियते=की जाती है, सा=वह प्रीति, अस्मिन्=इस माहात्म्य के, सकृत्=एक बार, उच्चरिते=उच्चारण करने पर या, श्रुते= सुनने पर प्राप्त होती है, श्रुतम्=इसका श्रवण मात्र, पापानि=सभी पापों का, हरति=हरण करता है। तथा=तथा, आरोग्यम्=आरोग्य, प्रयच्छति= प्रदान करता है।।२२।।

अन्वितार्थ

मुझमें प्रीति की जाती है वह प्रीति इस माहात्म्य के एक बार उच्चारण करने पर या सुनने पर प्राप्त होती है इसका श्रवण मात्र सभी पापों का हरण करता है तथा आरोग्य प्रदान करता है।।२२।।

मन्त्र

रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम॥२३॥
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्।

पदच्छेद

रक्षाम् करोति भूतेभ्यः जन्मनाम् कीर्तनम् मम युद्धेषु चरितम् यत् में दुष्ट-दैत्य-निबर्हणम्॥२२॥

अन्वितपदार्थ

मम=मेरे, जन्मनाम् कीर्तनम्=अवतारों का, कीर्तन श्रवण, भूतेभ्य=प्रेत पिशाच शत्रु आदि से, रक्षाम्=रक्षा, करोति=करता है, यत्=जो, मे=मेरे, युद्धेषु=युद्धों में प्रदर्शित, दुष्टानाम्=दुष्ट, दैत्यानाम्=दैत्यों का, निबर्हणम्=विनाशक, चरितम् आचरण है॥२२॥

अन्वितार्थ

मेरे अवतारों का कीर्तन-श्रवण प्रेत, पिशाच, शत्रु आदि से रक्षा करता है जो युद्धों में प्रदर्शित दुष्ट दैत्यों का विनाशक आचरण हैं॥२२॥

मन्त्र

तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते॥२४॥
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः।

पदच्छेद

तस्मिन् श्रुते वैरि-कृतम् भयम् पुंसाम् न जायते युष्माभिः स्तुतयः याः च याः ब्रह्मर्षिभिः कृताः॥२४॥

अन्वितपदार्थ

तस्मिन्=वह, श्रुते=सुनने पढ़ने पर, पुंसाम्=मनुष्यों को, वैरिभिः=शत्रुओं द्वारा, कृतम्=उत्पन्न, भयम्=भय, न=नहीं, जायते=होता, याः च=और जो, स्तुतयः=स्तुतियाँ, युष्माभिः=आप देवगणों द्वारा, याः च=तथा जो, ब्रह्मर्षिभिः=सुमेधा आदि ब्रह्मर्षियों द्वारा, कृताः=की गई है॥२४॥

अन्वितार्थ

वह सुनने पढ़ने पर मनुष्यों को शत्रुओं द्वारा उत्पन्न भय नहीं होता और जो स्तुतियाँ आप देवगणों द्वारा सुमेधा आदि ब्रह्मर्षियों द्वारा की गई है।।२४।।

मन्त्र

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।।२५।।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः।

पदच्छेद

ब्रह्मणा च कृताः ताः तु प्रयच्छन्ति शुभाम् मतिम् अरण्ये प्रान्तरे वा अपि दावाग्नि-परि-वारितः।।२५।।

अन्वितपदार्थ

ब्रह्मणा च=और ब्रह्मा जी द्वारा, कृताः=की गईं, ताः=वे सभी स्तुतियाँ, तु=निश्चय ही, शुभाम्=कल्याण कारिणी, मतिम्=बुद्धि, प्रयच्छन्ति=प्रदान करतीं हैं। अरण्ये=वन में, दावाग्नि-परिवारितः=जंगल की आग से घिरे, वापि=अथवा, प्रान्तरे=दूर एकान्तमार्ग में।।२५।।

अन्वितार्थ

और ब्रह्माजी द्वारा की गईं वे सभी स्तुतियाँ निश्चय ही कल्याण कारिणी बुद्धि प्रदान करतीं हैं। वन में जंगल की आग से घिरे अथवा दूर एकान्त मार्ग में।।२५।।

मन्त्र

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।।२६।।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः।

पदच्छेद

दस्युभिः वा वृतः शून्ये गृहीतः वापि शत्रुभिः सिंह-व्याघ्र-अनु-यातः वा वने वा वन-हस्तिभिः।।२६।।

अन्वितपदार्थ

दस्युभिः=डाकूओं से, वृतः वा=घिरा हुआ, वापि शून्ये=अथवा एकान्त

में, शत्रुभिः=शत्रुओं द्वारा, गृहीतः=पकड़ा हुआ, वने वा=अथवा वन में, सिंहव्याघ्रानुयातः=सिंह या बाघ द्वारा दौड़ाया हुआ, वनहस्तिभिः वा=या जंगली हाथी द्वारा, अनुयातः=दौड़ाया हुआ।।२६।।

अन्वितार्थ

डाकुओं ये घिरा हुआ अथवा एकान्त में शत्रुओं द्वारा पकड़ा हुआ। अथवा वन में सिंह या बाघ द्वारा दौड़ाया हुआ अथवा जंगली हाथी द्वारा दौड़ाया हुआ।।२६।।

मन्त्र

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा।।२७।।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।

पदच्छेद

राज्ञा क्रुद्धेन च आज्ञप्तः बध्यः बन्ध-गतः अपि वा आ-घूर्णितः वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे।।२७।।

अन्वितपदार्थ

क्रुद्धेन=क्रोधित, राज्ञा=राजा द्वारा, बध्यः=मृत्युदण्ड के लिए, आज्ञप्तः=घोषित, अपि वा=अथवा, बन्धगतः=कारागार में निक्षिप्त, महार्णवे वा=या महासमुद्र में, पोते=जहाज पर, स्थितः=होने की अवस्था में, वातेन=चक्रवात द्वारा, आघूर्णितः=नचाया जा रहा हो।।२७।।

अन्वितार्थ

क्रोधित राजा द्वारा मृत्युदण्ड के लिए घोषित अथवा कारागार में निक्षिप्त या महासमुद्र में जहाज पर होने की अवस्था में चक्रवात द्वारा नचाया जा रहा हो।।२७।।

मन्त्र

पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे।।२८।।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा।

पदच्छेद

पतत्सु च अपि शस्त्रेषु संग्रामे भृश-दारुणे सर्वा-बाधासु घोरासु वेदना-अभि-अर्दितः अपि वा।।२८।।

अन्वितपदार्थ

भृशम्=अत्यधिक, दारुणे चापि=भयानक, संग्रामे, संग्राम में भी, शस्त्रेषु=शस्त्रों की, पतत्सु=वर्षा होते रहने की दशा में, घोरासु=कठिनतम, सर्वबाधासु=महाबाधाओं की दशा में, अपि वा=अथवा, वेदनाभ्यर्दितः= पीड़ा से व्याकुल होने पर।।२८।।

अन्वितार्थ

अत्यधिक भयानक संग्राम में भी शस्त्रों की वर्षा होते रहने की दशा में कठिनतम महाबाधाओं की दशा में अथवा पीड़ा से व्याकुल होने पर।।२८।।

मन्त्र

स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।।२९।।
मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।

पदच्छेद

स्मरन् मम एतत् चरितम् नरः मुच्येत सङ्कटात् मम प्रभावात् सिंहाद्याः दस्यवः वैरिणः तथा।।२९।।

अन्वितदार्थ

मम=मेरा, एतत्=यह, चरितम्=चरित, स्मरन्=स्मरण करता हुआ, नरः=मनुष्य, संकटात्=संकट से, मुच्यते=मुक्त हो जाता है, मम=मेरे, प्रभावात्=प्रभाव से, तदा=उस काल में, सिंहाद्याः=सिंह आदि हिंसक जीव, दस्यवः=डाकू मण्डली, शत्रुगण।।२९।।

अन्वितार्थ

मेरा यह चरित स्मरण करता हुआ मनुष्य सङ्कट से मुक्त हो जाता है मेरे प्रभाव से उस काल में सिंह आदि हिंसक जीव, डाकू मण्डली, शत्रुगण-।।२९।।

मन्त्र

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम॥३०॥

पदच्छेद

दूराद् एव पलायन्ते स्मरतः चरितम् मम॥३०॥

अन्वितपदार्थ

मम=मेरा, चरितम्=चरित, स्मरतः=स्मरण करने वाले के लिए, दूरात्=दूर से, एव=ही, पलायन्ते=भाग जाते हैं॥३०॥

अन्वितार्थ

मेरा चरित स्मरण करने वाले के लिए दूर से ही भाग जाते हैं॥३०॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥३१॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा।
पश्यतां सर्वदेवानां तत्रैवान्तरधीयत॥३२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच। इति उक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्ड-विक्रमा पश्यताम् सर्व-देवानाम् तत्र एव अन्तर्-अधीयत॥३१-३२॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच- ऋषि ने कहा=, सा=वह, चण्डविक्रमा=प्रचण्ड पराक्रम शीला, भगवती=भगवती, चण्डिका=चण्डिका, इति=इस प्रकार, उक्त्वा=बोल कर देवानाम्=देवताओं के, पश्यताम्=देखते-देखते, एव=ही, तत्र एव=वहीं पर, अन्तरधीयत=अदृश्य हो गईं॥३१-३२॥

अन्वितार्थ

ऋषि ने कहा- वह प्रचण्ड पराक्रमशीला भगवती चण्डिका इस प्रकार बोलकर देवताओं के देखते-देखते वहीं पर अदृश्य हो गईं॥३१-३२॥

मन्त्र

तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा।
यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः॥३३॥

दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि।

पदच्छेद

ते अपि देवाः निर्-आतङ्काः स्व-अधिकारान् यथा पुरा यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे चक्रुः वि-नि-हत-अरयः दैत्याः च देव्या नि-हते देव-रिपौ युधि।३३।।

अन्वितपदार्थ

ते सर्वे=वे सभी, देवाः=देवगण, अपि=भी, विनिहतारयः=शत्रुहीन होकर, यज्ञेषु=यज्ञों में, निरातङ्काः=भयमुक्त होकर, भागभुजः=भाग गृहीता बने, स्व-अधिकारान्=निर्धारित कर्मों को, यथापुरा=पहले की तरह, चक्रुः=करने लगे देव्या च=और भगवती द्वारा, युधि=युद्ध में, देवरिपौ=देवद्रोही, शुम्भे=शुम्भ के, निहते=मारे जाने पर, दैत्याः=दैत्यगण।।३३।।

अन्वितार्थ

वे सभी देवगण भी शत्रुहीन होकर यज्ञों में भयमुक्त होकर भाग ग्रहीता बन कर अपने=अपने निर्धारित कर्मों को पहले की तरह पूरा करने लगे और भगवती द्वारा युद्ध में देवद्रोही शुम्भ के मारे जाने पर दैत्यगण।।३३।।

मन्त्र

जगद्विध्वंसके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे।।३४।।

निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः।।३५।।

पदच्छेद

जगद्-विध्वंसके तस्मिन् महा-उग्रे अतुल-विक्रमे निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालम् आ-ययुः।।३४-३५।।

अन्वितपदार्थ

जगद्विध्वंसके=संसार के विनाशक, तस्मिन्=उस, महोग्रे=ख़तरनाक, महावीर्ये च=और महाबली, निशुम्भे=निशुम्भ के मारे जाने के बाद, शेषाः=बचे हुए दैत्य गण, पातालम्=पाताल, आययुः=आ गए।।३४-३५।।

अन्वितार्थ

संसार के विनाशक उस ख़तरनाक महापराक्रमी और महाबली निशुम्भ के मारे जाने के बाद बचे हुए दैत्य गण पाताल आ गए।।३४-३५।।

मन्त्र

एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम्॥३६॥
तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।

पदच्छेद

एवम् भगवती देवी सा नित्या अपि पुनः-पुनः सम्-भूय कुरुते भूप जगतः परि-पालनम् तया एतत् मोह्यते विश्वम् सा एव विश्वम् प्रसूयते ॥३६॥

अन्वितपदार्थ

भूप=हे राजन्, एवम्=इस प्रकार, सा=वह, भगवती=ऐश्वर्य मयी, देवी=देवी, नित्या होने पर, अपि=भी, पुनः-पुनः=बार-बार, सम्भूय=प्रकट होकर, जगतः परिपालनम्=संरक्षण, करुते=करतीं हैं एतत्=यह, विश्वम्=विश्व, तया=उन्हीं के द्वारा, मोह्यते=मोहग्रस्त किया जाता है, सा एव=वही, विश्वम्=विश्व की, प्रसूयते=जननी है॥३६॥

अन्वितार्थ

हे राजन् इस प्रकार वह ऐश्वर्यमयी देवी नित्य होने पर भी बार=बार प्रकट होकर जगत का संरक्षण करतीं हैं। यह विश्व उन्हीं के द्वारा मोह ग्रस्त किया जाता है, सा एव=वही विश्व की जननी है॥३६॥

मन्त्र

साऽयाचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति॥३७॥

पदच्छेद

सा अयाचिता च विज्ञानम् तुष्टा ऋद्धिम् प्रयच्छति॥३७॥

अन्वितपदार्थ

सा=वह, तुष्टा=प्रसन्न होने पर, अयाचिता=बिना माँगे ही, विज्ञानम्=आत्मज्ञान, ऋद्धिम् च=और ऐश्वर्य, प्रयच्छति=प्रदान करतीं हैं॥३७॥

अन्वितार्थ

वही विश्व की जननी हैं वह प्रसन्न होने पर बिना माँगे ही आत्मज्ञान और ऐश्वर्य प्रदान करतीं हैं॥३७॥

मन्त्र

व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर।
महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया।।३८।।

पदच्छेद

व्याप्तम् तया एतत् सकलम् ब्रह्माण्डम् मनुज-ईश्वर महाकाल्या महाकाले महामारी स्व-रूपया।।३८।।

अन्वितपदार्थ

मनुजेश्वर=हे राजन्, एतत्=यह सम्पूर्ण, सकलम्=ब्रह्माण्ड, महाकाले=महाप्रलय के समय, तथा=उसी, महामारी=महामृत्यु रूपिणी, महाकाल्या=महाकाली से, व्याप्तम्=व्याप्त होता है।।३८।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड महाप्रलय के समय उसी महामृत्युरूपिणी महाकाली से व्याप्त होता है।।३८।।

मन्त्र

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी।।३९।।

पदच्छेद

सा एव काले महामारी सा एव सृष्टिः भवति अजा स्थितिम् करोति भूतानाम् सा एव काले सनातनी।।३९।।

अन्वितपदार्थ

काले=समय आने पर, सा एव=वही, अजा=अजन्मा भगवती, महामारी=संहारशक्ति, एव=वही, सृष्टिः=सर्गशक्ति, भवति=होती है, सा एव=वही, सनातनी=सदा वर्तमान रहने वाली भगवती, काले=समय पर, भूतानाम्=प्राणियों का, स्थितिम्=पालन, करोति=करतीं हैं।।३९।।

अन्वितार्थ

समय आने पर वही अजन्मा भगवती संहारशक्ति, वही सर्गशक्ति होतीं हैं। वही सदा वर्तमान रहने वाली भगवती समय पर प्राणियों का पालन करतीं हैं।।३९।।

मन्त्र

भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे।
सैवाभावे तथा लक्ष्मीर्विनाशायोपजायते।।४०।।

पदच्छेद

भव-काले नृणाम् सा एव लक्ष्मीः वृद्धि-प्रदा गृहे सा एव अभावे तथा अ-लक्ष्मीः विनाशाय उप-जायते।।४०।।

अन्वितपदार्थ

नृणाम्=मनुष्यों के, भवकाले=उन्नति के समय, सा एव=वही, लक्ष्मीः=श्रीरूपा, गृहे=घर में, वृद्धिप्रदा=सम्पदा प्रदान करतीं हैं, तथा=इसी तरह, तथा=वही, सा एव=वही, अभावे=अवनति के समय, अलक्ष्मीः=दरिद्रा रूपा, विनाय=विनाश के लिए, उपजायते=रास्ता बनती है।।४०।।

अन्वितपदार्थ

मनुष्यों के उन्नति के समय वही श्रीरूपा घर में सम्पदा प्रदान करतीं हैं इसी तरह वही अवनति के समय दरिद्रा रूपा विनाश के लिए रास्ता बनती हैं।।४०।।

मन्त्र

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्धधूपादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्राँश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम्।।४१।।

पदच्छेद

स्तुता सम्-पूजिता पुष्पैः धूप-गन्ध-आदिभिः सदा ददाति वित्तम् पुत्रान् च मतिम् धर्मे गतिम् शुभाम्।।४१।।

अन्वितपदार्थ

स्तुता=इस महास्तोत्र द्वारा स्तुति किए जाने पर, पुष्पैः=फूलों, गन्धादिभिः=सुगन्धद्रव्य आदि द्वारा, सम्पूजिता=भली प्रकार से पूजित होने पर, सदा=हमेशा, वित्तम्=धन, पुत्रान्=और पुत्र, धर्मे=सत्कर्म के प्रति, मतिः=मति, शुभाम्=कल्याणकारी, गतिम्=परिणाम, ददाति=प्रदान करती हैं।।४१।।

अन्वितार्थ

इस महास्तोत्र द्वारा स्तुति किए जाने पर फ़ूलों, सुगन्ध द्रव्य आदि द्वारा भली प्रकार से पूजित होने पर, हमेशा धन, पुत्र और सत्कर्म के प्रति मति तथा कल्याणकारी परिणाम प्रदान करती हैं।।४१।।

॥ जय जय श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देव्याश्चरितमाहात्म्ये भगवतीवरप्रदानं नाम
द्वादशः विश्रामः॥१२॥

॥अथ त्रयोदशोऽध्यायः॥

मन्त्र

ऋषिरुवाच॥१॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्॥२॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- एतत् ते कथितम् भूप देव्याः माहात्म्यम् उत्तमम् एवम् प्रभावा सा देवी यया इदम् धार्यते जगत्॥१-२॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, भूप=हे राजन्, देव्याः=भगवती का, एतत्=यह, उत्तमम्=माहात्म्यः, ते=तुम्हे, कथितम्=बता दिया, सा देवी=वे भगवती, यया=जिनके द्वारा, इदम्=यह, जगत्=जगत्, धार्यते=धारण किया जाता है वे, एवम्=इस प्रकार के, प्रभाव=प्रभाव वाली हैं॥१-२॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- हे राजन् भगवती का यह सर्वश्रेष्ठ माहात्म्य तुम्हें बता दिया। वे भगवती जिनके द्वारा यह जगत् धारण किया जाता है। इस प्रकार के प्रभाव वाली हैं॥१-२॥

मन्त्र

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः॥३॥

पदच्छेद

विद्या तथा एतत् क्रियते भगवतः विष्णोः मायया तया त्वम् एषः वैश्यः च तथा एव अन्ये विवेकिनः॥३॥

अन्वितपदार्थ

तथा=इसी प्रकार, एतत्=यह, विद्या=सप्तशती विद्या का ज्ञान, भगवतः= भगवान्, विष्णोः=विष्णु की, मायया=माया के द्वारा, क्रियते=प्रकट किया जाता है, तया=उनके द्वारा, त्वम्=तुम, एषः च=और वह, वैश्यः=वैश्य, तथैव=इसी प्रकार, अन्ये=दूसरे, विवेकिनः=विवेक सम्पन्न मनुष्य।।३।।

अन्वितार्थ

इसी प्रकार यह सप्तशती का विद्या ज्ञान भगवान् विष्णु की माया के द्वारा प्रकट किया जाता है। उनके द्वारा तुम और यह वणिक् इसी प्रकार दूसरे विवेक सम्पन्न मनुष्य।।३।।

मन्त्र

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।।४।।

पदच्छेद

मोह्यन्ते मोहिताः च एव मोहम् एष्यन्ति च अपरे ताम् उप-एहि महा-राज शरणम् परम-ईश्वरीम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

मोह्यन्ते=मोह ग्रस्त किए जाते हैं, मोहिताः च एव=और मोहग्रस्त हैं, अपरे=तथा दूसरे, मोहम्=मोह की ओर, एष्यन्ति=भेजे जाएँगे, महाराज=हे महाराज सुरथ!, ताम्=उन, परमेश्वरीम्=परम ऐश्वर्य शालिनी के, शरणम्=शरण में, उपैहि=जाओ।।४।।

अन्वितार्थ

मोहग्रस्त किए जाते हैं और मोहग्रस्त हैं तथा दूसरे मोह की ओर भेजे जाएँगे। हे महाराज सुरथ! उन परम ऐश्वर्य शालिनी के शरण में जाओ।।४।।

मन्त्र

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥५॥

पदच्छेद

आ-राधिता सा एव नृणाम् भोग-स्वर्ग-अप-वर्गदा॥५॥

अन्वितपदार्थ

सा एव=वही, आराधिता=उपासित होने पर, नृणाम्=मनुष्यों की, भोगदा=धरती पर भोग प्रदात्री, स्वर्गदा=मरने पर स्वर्गदात्री, अपवर्गदा= समय आने पर मोक्षदात्री होती हैं॥५॥

अन्वितार्थ

वह उपासित होने पर मनुष्यों की धरती पर भोग प्रदात्री, मरने पर स्वर्गदात्री, समय आने पर मोक्षदात्री होती हैं॥५॥

मन्त्र

मार्कण्डेय उवाच॥६॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।

पदच्छेद

मार्कण्डेय उवाच- इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः सः नराधिपः॥६॥

अन्वितपदार्थ

मार्कण्डेयः उवाच=मार्कण्डेय बोले, सः=वह, नराधिपः=राजा, सुरथः= सुरथ, तस्य=उनका, इति वचः=इस प्रकार वचन, श्रुत्वा=सुनकर॥६॥

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय बोले- वह राजा सुरथ उनका इस प्रकार वचन सुनकर॥६॥

मन्त्र

प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम्।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च॥७॥

पदच्छेद

प्रणिपत्य महाभागम् तम् ऋषिम् संशित-व्रतम् निर्-विण्णः अतिममत्वेन राज्यस्य अपहरणेन च॥७॥

अन्वितपदार्थ

तम्=उन, महाभागम्=महात्मा, संशित-व्रतम्=कठोर प्रतिज्ञावाले, ऋषिम्=ऋषि को, प्रणिपत्य=प्रणाम करके, अतिममत्वेन=अतिशय ममता, राज्यस्य च=और राज्य के, अपहरणेन=छिन जाने से, निर्विण्णः=दुःखी होकर।।७।।

अन्वितार्थ

उन महात्मा कठोर प्रतिज्ञा वाले ऋषि को प्रणाम करके अतिशय ममता और राज्य के छिन जाने से दुःखी होकर।।७।।

मन्त्र

जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः।।८।।

पदच्छेद

जगाम सद्यः तपसे सः च वैश्यः महामुने सम्-दर्शनार्थम् अम्बायाः नद्याः पुलिनम् आ-स्थितः।।८।।

अन्वितपदार्थ

सद्यः=तत्काल, तपसे=तपश्चर्या के लिए, जगाम=चला गया, महामुने=हे महामुनि, सः च=और वह, वैश्यः=वैश्य, अम्बाया=जगज्जननी के, संदर्शनार्थम्=साक्षात् दर्शन के लिए, नद्या=नदी के, पुलिनम्=तट पर, आस्थितः=समुचित रूप से अवस्थित हो गया।।८।।

अन्वितार्थ

तत्काल तपश्चर्या के लिए चला गया। हे महामुनि! इसके बाद वह वैश्य जगज्जननी के साक्षात् दर्शन के लिए नदी के तट पर समुचित रूप से अवस्थित हो गया।।८।।

मन्त्र

स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्।।९।।

पदच्छेद

सः च वैश्यः तपः तेपे देवी सूक्तम् परम् जपम् तौ तस्मिन् पुलिने स्थित्वा देव्याः कृत्वा मूर्तिम् मही-मयीम्।।९।।

अन्वितपदार्थ

सः च=और वह, वैश्यः=वैश्य, परम्=श्रेष्ठ, देवी-सूक्तम्=देवीसूक्त का, जपन्=जप करता हुआ, तपः=तप, तेपे=करने लगा, तस्मिन्=उस, पुलिने=तट पर, तौ=दोनों, स्थित्वा=बैठकर, देव्याः=भगवती की, महीमयीम्=मिट्टी की, मूर्तिम्=प्रतिमा, कृत्वा=बनाकर।।९।।

अन्वितार्थ

और वह वैश्य श्रेष्ठ देवीसूक्त का जप करता हुआ तप करने लगा। उस तट पर दोनों बैठकर भगवती की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर।।९।।

मन्त्र

अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।।१०।।
निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।

पदच्छेद

अहर्णाम् चक्रतुः तस्या पुष्पैः धूपैः अग्नि-तर्पणैः निराहारौ यत-आहारौ तन्-मनस्कौ सम्-आहितौ।।१०।।

अन्वितपदार्थ

तस्याः=उस प्रतिमा का, पुष्पैः=फूलों, धूपैः=धूप द्रव्यों, अग्नितर्पणैः=हवनों और तर्पण के द्वारा, अहर्णाम्=अर्चना, चक्रतुः=करने लगे, निराहारौ=दोनों भोजन त्यागकर, यताहारौ=अल्पभोजन करके, तन्मनस्कौ=भगवती में मन रमाकर, समाहितौ=एकाग्र होकर।।१०।।

अन्वितार्थ

उस प्रतिमा का फूलों धूप द्रव्यों हवनों और तर्पण क्रे द्वारा अर्चना करने लगे दोनों भोजन त्यागकर अल्पभोजन करके भगवती में मन रमाकर एकाग्र होकर।।१०।।

मन्त्र

ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्॥११॥
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।

पदच्छेद

ददतुः तौ बलिम् च एव निज-गात्र-असृग्-उक्षितम् एवम् सम्-आराधयतोः त्रिभिः वर्षैः यतात्मनोः॥११॥

अन्वितपदार्थ

चैव=और, तौ=उन दोनों ने, निजगात्रासृगुक्षितम्=अपने शरीर के ही, रक्त से, सिंचित, बलिम्=उपहार, ददतुः=प्रदान किया, एवम्=इस प्रकार, त्रिभिः=तीन, वर्षैः=वर्षों तक, समाराधयतः=आराधना करते हुए, यतात्मनोः=दृढ आत्मा वाले दोनों से॥११॥

अन्वितार्थ

और उन दोनों ने अपने शरीर के ही रक्त से सिंचित उपहार प्रदान किया। इस प्रकार तीन वर्षों तक आराधना करते हुए दृढ़ आत्मा वाले दोनों से॥११॥

मन्त्र

परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका॥१२॥

पदच्छेद

परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षम् प्राह चण्डिका॥१२॥

अन्वितपदार्थ

परितुष्टा=प्रसन्न होकर, जगद्धात्री=जगत् को धारण करने वाली, चण्डिका=चण्डिका, प्रत्यक्षम्=प्रत्यक्ष रूप से, प्राह=बोली॥१२॥

अन्वितार्थ

प्रसन्न होकर जगत् को धारण करने वाली चण्डिका प्रत्यक्ष रूप से बोलीं॥१२॥

मन्त्र

देव्युवाच॥१३॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन।

पदच्छेद

देवी उवाच-यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन॥१३॥

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती ने कहा, भूप=हे राजन्, त्वया=तुम्हारे द्वारा तथा, कुलनन्दन=हे कुलनन्दन, त्वया=तुम्हारे द्वारा, यत्=जो, प्रार्थ्यते=प्रार्थित है॥१३॥

अन्वितार्थ

भगवती ने कहा- हे राजन्! तुम्हारे द्वारा तथा हे कुलनन्दन! तुम्हारे द्वारा जो प्रार्थित है॥१३॥

मन्त्र

मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्॥१४॥

पदच्छेद

मत्तः तत् प्राप्यताम् सर्वम् परि-तुष्टा ददामि तत्॥१४॥

अन्वितपदार्थ

तत्=वह, मत्तः=मुझ से, प्राप्यताम्=प्राप्त करो, परितुष्टा=प्रसन्न होकर में, तत्=वह, सर्वम्=सब, ददामि=दे रही हूँ॥१४॥

अन्वितार्थ

वह मुझसे प्राप्त करो प्रसन्न होकर वह सब दे रही हूँ॥१४॥

मन्त्र

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रापि च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात्॥१५॥

पदच्छेद

मार्कण्डेयः उवाच- ततः वव्रे नृपः राज्यम् अविभ्रंशि-अन्यजन्मनि अत्र अपि च निजम् राज्यम् हत-शत्रु-बलम् बलात्॥१५॥

अन्वितपदार्थ

मार्कण्डेय उवाच=मार्कण्डेय बोले-, ततः=इसके पश्चात्, अन्य-जन्मनि=अगले जन्म में, अविभ्रंशि=न नष्ट होने वाला, राज्यम्=राज्यम्=राज्य को, नृपः=राजा ने, वव्रे=वररूप में माँगा।।१५।।

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय बोले- इसके पश्चात् अगले जन्म में न नष्ट होने वाला राज्य को राजा ने वररूप में माँगा।।१५।।

मन्त्र

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्।।१७।।

पदच्छेद

सः अपि वैश्यः ततः ज्ञानम् वव्रे निर्-विण्ण-मानसः मम इति अहम् इति प्राज्ञः सङ्ग-विच्युति-कारकम्।।१७।।

अन्वितपदार्थ

अत्रापि=इस जन्म में भी, बलात्=अपनी सेना से, हत-शत्रु-बलम्=विनष्टशत्रु सेना वाले (सुरथ ने), निजम्=अपना, राज्यम्=राज्य माँगा, ततः=इसके बाद, सः निर्विण्णमानसः=दुःखी मनवाले, वैश्यः=वैश्य ने, अपि=भी, ज्ञानम्=ज्ञान को, वव्रे=वररूप में माँगा। प्राज्ञः=बुद्धिमान् वैश्य ने, मम इति='मेरा', अहम् इति='मैं' इन भावों के, सङ्गात्=सङ्ग से, विच्युतेः कारकम्=विमुक्त करने वाला ज्ञान माँगा।।१७।।

अन्वितार्थ

इस जन्म में भी अपनी सेना से विनष्ट शत्रुसेना वाले(सुरथ ने) अपना राज्य माँगा इसके बाद उस दुःखी मन वाले वैश्य ने भी ज्ञान को वर रूप में माँगा। बुद्धिमान् वैश्य ने 'मेरा' 'मैं' इन भावों के संग से विमुक्त करने वाला ज्ञान माँगा।।१७।।

मन्त्र

देव्युवाच॥१८॥

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्॥१९॥

पदच्छेद

देवी उवाच- स्वल्पैः अहोभिः नृपते स्वम् राज्यम् प्राप्स्यते भवान् ॥१८-१९॥

अन्वितपदार्थ

देवी उवाच=भगवती ने कहा, नृपते=हे राजन्, स्वल्पैः=कुछ, अहोभिः=दिनों में, भवान्=आप, स्वम्=अपना, राज्यम्=राज्य, प्राप्स्यते=प्राप्त करेंगे ॥१८-१९॥

अन्वितार्थ

भगवती ने कहा- हे राजन् कुछ दिनों में आप अपना राज्य प्राप्त करेंगे ॥१८-१९॥

मन्त्र

हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति॥२०॥
मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः॥२१॥
सावर्णिको मनुर्नाम भवान् भुवि भविष्यति॥२२॥

पदच्छेद

हत्वा रिपून् अ-स्खलितम् तव तत्र भविष्यति मृतः च भूयः संप्राप्य जन्म देवात् विवस्वतः सावर्णिकः नाम मनुः भवान् भुवि भविष्यति॥२०-२२॥

अन्वितपदार्थ

रिपून्=शत्रुओं को, हत्वा=मार कर प्राप्त करेंगे, तव=तुम्हारा, अस्खलितम्=वहाँ, अस्खलितम्=सुदृढ राज्य, भविष्यति=होगा, मृतः च=और मरने पर, भूयः=फिर से, विवस्वतः=सूर्य, देवात्=देव से, जन्म=जन्म, संप्राप्य=लेकर, भवान्=आप, भुति=इस धरती पर, सावर्णिक=सावर्णिक, नाम=नाम, मनुः, भविष्यित=होंगे॥२०-२२॥

अन्वितार्थ

शत्रुओं को मार कर प्राप्त करेंगे तुम्हारा वहाँ सुदृढ राज्य होगा और मरने पर फिर से सूर्यदेव से जन्म लेकर आप इस धरती पर सावर्णिक नाम मनु होंगे॥२०-२२॥

मन्त्र

वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः॥२३॥

पदच्छेद

वैश्यवर्य त्वया यः च वरः अस्मत्तः अभि-वाञ्छितः॥२३॥

अन्वितपदार्थ

वैश्यवर्य=हे वणिक् श्रेष्ठ, यः च=और जो, वरः=वर, त्वया=तुमने, अस्मत्तः=मुझसे, अभिवाञ्छितः=चाहा है॥२३॥

अन्वितार्थ

हे वणिक् श्रेष्ठ और जो वर तुमने मुझसे चाहा है॥२३॥

मन्त्र

तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति॥२४॥

पदच्छेद

तम् प्रयच्छामि सम्-सिद्ध्यै तव ज्ञानम् भविष्यति॥२४॥

अन्वितपदार्थ

तम्=उसको, प्रयच्छामि=प्रदान करती हूँ, तव=तुम्हारा, ज्ञानम्=ज्ञान, संसिद्ध्यै=मुक्ति दाता, भविष्यति=होगा॥२४॥

अन्वितार्थ

उसको प्रदान करती हूँ। तुम्हारा ज्ञान मुक्ति दाता होगा॥२४॥

मन्त्र

मार्कण्डेय उवाच॥२५॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।

पदच्छेद

मार्कण्डेय उवाच- इति दत्त्वा तयोः देवी यथा अभि-लषितम् वरम्॥२५॥

अन्वितपदार्थ

मार्कण्डेयः उवाच=मार्कण्डेय बोले-, देवी=भगवती, इति=इस प्रकार, यथा=जैसा, अभिलषितम्=चाहा वैसा, वरम्=वर, तयोः=उन दोनों को, दत्वा=देकर।।२५।।

अन्वितार्थ

मार्कण्डेय बोले- भगवती इस प्रकार जैसा चाहा वैसा वर उन दोनों को देकर।।२५।।

मन्त्र

बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।।२६।।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः।।२७।।

पदच्छेद

बभूव अन्तर्-हिता सद्यः भक्त्या ताभ्याम् अभि-ष्टुता एवं देव्या वरम् लब्ध्वा सुरथः क्षत्रिय-ऋषभ सूर्यात् जन्म सम्-आ-साद्य सावर्णिः भविता मनुः।।२६-२७।।

अन्वितपदार्थ

भक्त्या=भक्तिपूर्वक, ताभ्याम्=उन दोनों द्वारा, अभिष्टुता=स्तूयमान भगवती, सद्य=तत्काल, अन्तर्हिता=अन्तर्धान, बभूव=हो गई। क्षत्रियर्षभ=हे क्षत्रिय श्रेष्ठ, सुरथः=सुरथ, देव्या=भगवती से, एवं=इस प्रकार, वरम्=वर, लब्ध्वा=प्राप्त करके, सूर्यात्=सूर्य से, जन्म=जन्म, सामासाद्य=लेकर, सावर्णिः=सावर्णि नामक, मनुः=मनु, भविता=होंगे।।२६-२७।।

अन्वितार्थ

भक्ति पूर्वक उन दोनों द्वारा स्तूयमान भगवती तत्काल अन्तर्धान हो गई। हे क्षत्रिय श्रेष्ठ! सुरथ भगवती से इस प्रकार वर प्राप्त करके सूर्य से जन्म लेकर सावर्णि नामक मनु होंगे।।२६-२७।।

।।ॐ जय जय श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे सुरथवैश्ययोः वर प्रदानं नाम त्रयोदशः विश्रामः।।

॥ अथ वैदिक देवी सूक्त ॥

विनियोगः

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः, सर्वगतः परमात्मा देवता, त्रिष्टुप्छन्दः, द्वितीयाया ऋचो जगती, श्रीसप्तशतीपाठाङ्गत्वेन पाठे विनियोगः॥

मन्त्र

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभा विभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥

पदच्छेद

अहम् रुद्रेभिः वसुभिः चरामि अहम् आदित्यैः उत विश्वदेवैः अहम् मित्रावरुणा उभा विभर्मि अहम् इन्द्राग्नी अहम् अश्विना उभा॥१॥

अन्वितपदार्थ

अहम्=मैं परावाणी, रुद्रेभिः=सभी एकादशरुद्रों, वसुभिः=अष्ट वसुओं, अहम्=मैं परावाणी, आदित्यैः=आदित्यों, उत विश्वदेवैः=एवं विश्वेदेवों के साथ, चरामि=सञ्चरण करती हूँ। अहम्=मैं ही, मित्रावरुणा उभा=मित्रावरुण, अहम्=मैं ही, इन्द्राग्नी=इन्द्राग्नी अहम्=मैं ही, अश्विना उभा=एवं अश्विनी कुमारों की जोड़ियों को, विभर्मि=धारण करती हूँ मेरे ही कारण ये युगल रूप में अभिव्यक्त होते हैं॥१॥

अन्वितार्थ

मैं परावाणी सभी एकादश रुद्रों, अष्ट वसुओं, आदित्य एवं विश्वेदेवों के साथ सञ्चरण करती हूँ। मैं ही मित्रावरुण, इन्द्राग्नी एवं अश्विनी कुमारों की जोड़ियों को धारण करती हूँ मेरे ही कारण ये युगल रूप में अभिव्यक्त होते हैं॥१॥

मन्त्र

अहं सोममाहनसं विभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते॥२॥

पदच्छेद

अहम् सोमम् आहनसम् विभर्मि अहम् त्वष्टारम् उत पूषणम् भगम्। अहम् दधामि द्रविणम् हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।।२।।

अन्वितपदार्थ

अहम्=मैं ही, आहनसम्=प्रकाशलोक में विराजमान शत्रुविनाशक, सोमम्=सोम को, विभर्मि=वहन करती हूँ। अहम्=मैं ही, त्वष्टारम्=निर्माता त्वष्टा, उत पूषणम्=पुष्टि दाता पूषा, भगम्=एवं ऐश्वर्य रूप भग को धारण करती हूँ। अहम्= मैं, सुप्राव्ये हविष्मते=उत्तमरीति से हवि प्रदान करने वाले, सुन्वते=तथा सोम का रस निकालने वाले यजमानाय=यजमान को, द्रविणम्=धन, दधामि=प्रदान करती हूँ।।२।।

अन्वितार्थ

मैं ही प्रकाशलोक में विराजमान शत्रुविनाशक सोम को वहन करती हूँ। मैं ही रूप निर्माता त्वष्टा, पुष्टि दाता पूषा एवं ऐश्वर्य रूप भग को धारण करती हूँ। मैं भली प्रकार से, उत्तमरीति से हवि प्रदान करने वाले तथा सोम का रस निकालने वाले यजमान को धन प्रदान करती हूँ।।२।।

मन्त्र

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।३।।

पदच्छेद

अहम् राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ताम् मा देवाः व्यदधुः पुरुत्रा भूरि स्थात्राम् भूरि आवेशयन्तीम्।।३।।

अन्वितपदार्थ

अहम्=मैं ही, राष्ट्री=जगत् की अधीश्वरी हूँ, वसूनाम् सङ्गमनी=अपने उपासकों को ऐश्वर्य युक्त करती हूँ, चिकितुषी=मैंने ही परमतत्त्व को सर्वप्रथम जाना है, यज्ञियानां प्रथमा=अतः याजकों में उत्तम हूँ, तां भूरि स्थात्राम्=उस सर्वत्र व्याप्त, भूरि आवेशयन्तीम्=सभी जीवों को अपने में आविष्ट करने वाली विश्वरूपिणी, मा=मुझे, देवाः=देवताओं

ने, पुरुत्रा=अनेक स्थानों पर, व्यदधुः=प्रतिष्ठित किया है।।३।।

अन्वितार्थ

मैं ही सम्पूर्ण जगत् की अधीश्वरी हूँ तथा अपने उपासकों को ऐश्वर्य युक्त करती हूँ। मैंने ही परमतत्त्व को सर्वप्रथम जाना है अतः याजकों में उत्तम हूँ। उस सर्वत्र व्याप्त एवं सभी जीवों को अपने में आविष्ट करने वाली विश्वरूपिणी मुझे देवताओं ने अनेक स्थानों पर प्रतिष्ठित किया है।।३।।

मन्त्र

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति
यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां तं उप क्षियन्ति
श्रुधि श्रुतं श्रद्धिवं ते वदामि।।४।।

पदच्छेद

मया सः अन्नम् अत्ति यः विपश्यति यः प्राणिति यः ईं शृणोत्युक्तम्। अमन्तवः माम् तम् उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुतम् श्रद्धिवम् ते वदामि।।४।।

अन्वितपदार्थ

मया= मेरे ही कारण सः=वे जीव, अन्नम् अत्ति= यः विपश्यति= यः प्राणिति= य ईं उक्तं शृणोति= माम्=जो मेरे इस अन्तर्यामी स्वरूप को, अमन्तवः=नहीं स्वीकार करते, उप क्षियन्ति=वे नष्ट हो जाते हैं, श्रद्धिवम्=केवल श्रद्धा से जाने जा सकने वाले, तं श्रुतम्=उस ज्ञान का उपदेश, ते वदामि=मैं तुम्हें कर रही हूँ, श्रुधि=सुनो।।४।।

अन्वितार्थ

मेरे ही कारण वे जीव अन्न ग्रहण करते हैं, देखते हैं, श्वास लेते हैं, इन वचनों को सुनते हैं। जो मेरे इस अन्तर्यामी स्वरूप को नहीं स्वीकार करते वे नष्ट हो जाते हैं। केवल श्रद्धा से जाने जा सकने वाले उस ज्ञान का उपदेश मैं तुम्हें कर रही हूँ सुनो।।४।।

मन्त्र

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।५।।

पदच्छेद

अहम् एव स्वयम् इदम् वदामि जुष्टम् देवेभिः उत मानुषेभिः यम् कामये तम् तम् उग्रम् कृणोमि तम् ब्रह्माणम् तमृषिम् तम् सुमेधाम्।।५।।

अन्वितपदार्थ

अहम् एव=मैं ही, स्वयं इदं वदामि=इस ज्ञान का उपदेश कर रही हूँ, देवेभिः=जिसका देवताओं, उत मानुषेभिः=और मनुष्यों के द्वारा, जुष्टम्=आनन्द पूर्वक सेवन किया जाता रहा है, यम् कामये=मैं जिसका परिपालन करना चाहती हूँ, तम् तम्=उन सबको, उग्रम्=सबसे उत्कृष्ट, तम् ब्रह्माणम्=सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, तम् तम् सुमेधाम् ऋषिम्=अत्यन्त तीव्र बुद्धि सम्पन्न क्रान्तदर्शी ऋषि, कृणोमि=बना देती हूँ।।५।।

अन्वितार्थ

मैं ही स्वयं इस ज्ञान का उपदेश कर रही हूँ जिसका देवताओं और मनुष्यों के द्वारा आनन्द पूर्वक सेवन किया जाता रहा है। मैं जिसका परिपालन करना चाहती हूँ उन सबको सबसे उत्कृष्ट, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, अत्यन्त तीव्र बुद्धि सम्पन्न क्रान्तदर्शी ऋषि बना देती हूँ।।५।।

मन्त्र

अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश।।६।।

पदच्छेद

अहम् रुद्राय धनुः आतनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ अहम् जनाय समदम् कृणोमि अहम् द्यावापृथिवी आ विवेश।।६।।

अन्वितपदार्थ

अहम्=मैं ही, ब्रह्मद्विषे=त्रिपुर विजय के समय वेदद्रोही, शरवे=हिंसक,

हन्तवा उ=त्रिपुरासुर को मारने के लिए रुद्राय=रुद्र के, धनुः=धनुष की प्रत्यञ्चा, आतनोमि=खींचती हूँ, अहम्=मैं, जनाय=समाज की रक्षा के लिए, समदम्=महासंग्राम, कृणोमि=करती हूँ, अहम् द्यावापृथिवी=मैं पृथिवी और प्रकाशलोक में, आ विवेश=व्याप्त हूँ।।६।।

अन्वितार्थ

मैं ही त्रिपुर विजय के समय वेदद्रोही, हिंसक त्रिपुरासुर को मारने के लिए रुद्र के धनुष की प्रत्यञ्चा खींचती हूँ। मैं समाज की रक्षा के लिए महासंग्राम करती हूँ। मैं पृथिवी और प्रकाशलोक में व्याप्त हूँ।।६।।

मन्त्र

अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन् मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि।।७।।

पदच्छेद

अहम् सुवे पितरम् अस्य मूर्धन् मम योनिः अप्सु अन्तः समुद्रे ततः वि तिष्ठे भुवनानु विश्वा उत अमूम् द्याम् वर्ष्मणा उपस्पृशामि।।७।।

अन्वितपदार्थ

अहम्=मैं, पितरम्=ब्रह्माण्ड के जनक प्रकाशलोक को, अस्य मूर्धन्=उसके कारण स्थान में, सुवे=उत्पन्न करती हूँ, मम योनिः=मेरी अभिव्यक्ति का स्थान, अप्सु अन्तः समुद्रे=व्यापनशील जल के अन्तर्वर्ती चैतन्य सागर में है, ततः=वहीं से, भुवनानु विश्वा=सम्पूर्ण भुवनों में अनुप्रविष्ट होकर मैं अनेक रूपों में, वि तिष्ठे=प्रतिष्ठित होती हूँ, उत अमूं द्याम्=तथा इस प्रकाशलोक को, वर्ष्मणा=अपने मायात्मक देह से, उपस्पृशामि=व्याप्त करती हूँ।।७।।

अन्वितार्थ

मैं ब्रह्माण्ड के जनक प्रकाशलोक को उसके कारण स्थान में उत्पन्न करती हूँ। मेरी अभिव्यक्ति का स्थान व्यापनशील जल के अन्तर्वर्ती चैतन्य सागर में है। वहीं से सम्पूर्ण भुवनों में अनुप्रविष्ट होकर मैं अनेक रूपों में प्रतिष्ठित होती हूँ तथा इस प्रकाशलोक को अपने मायात्मक देह

से व्याप्त करती हूँ। इस प्रकार मैं कारणरूप में सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करती हूँ।।७।।

मन्त्र

अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव।।८।।

पदच्छेद

अहम् एव वात इव प्र वामि आरभमाणा भुवनानि विश्वा परः दिवा परः एना पृथिवी एतावती महिना सम् बभूव।।८।।

अन्वितपदार्थ

अहम् एव=मैं ही, भुवनानि विश्वा=सम्पूर्ण जगत् की, आरभमाणा=रचना प्रक्रिया के रूप में, वात इव=निर्बाध वायु की तरह, प्र वामि=प्रवाहित होती रहती हूँ, परः दिवा=मैं द्युलोक, परः एना=और इस दृश्यमान धरती से परे हूँ। एतावती पृथिवी=इतनी विशाल धरती, महिना=मेरी महिमा से, सम् बभूव=उत्पन्न हुई है।।८।।

अन्वितार्थ

मैं ही सम्पूर्ण जगत् की रचना प्रक्रिया के रूप में निर्बाध वायु की तरह प्रवाहित होती रहती हूँ। मैं द्युलोक और इस दृश्यमान धरती से परे हूँ। इतनी विशाल धरती मेरी महिमा से उत्पन्न हुई है।

।। इति वैदिकदेवीसूक्त ।।

विशेष-

पञ्चम अध्याय में पठित-

देवा उचुः।।८।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।९।।

से आरम्भ करके,

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
सा च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥८२॥

तक **पौराणिक देवीसूक्त** कहा जाता है। वैदिकदेवी सूक्त का पाठ करने के पश्चात् पौराणिक देवी सूक्त का पाठ करना चाहिए। इसके बाद **रहस्यत्रय** का पाठ करें।

॥ अथ प्राधानिकरहस्यम् ॥

श्लोक

राजोवाच।

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि॥१॥

पदच्छेद

भगवन् अवतारा मे चण्डिकाया: त्वया उदिता: एतेषाम् प्रकृतिम् ब्रह्मन् प्रधानम् वक्तुम् अर्हसि॥१॥

अन्वितपदार्थ

भगवन्=हे पूज्य!, चण्डिकाया:=चिद्रूपिणी भगवती के, अवतारा:=विभिन्न अविर्भाव की कथाएँ, त्वया=आपके द्वारा, मे=मुझे, उदिता:=बताई गई, एतेषाम्=इन अवतारों का, प्रकृतिम्=प्रधान स्वरूप, हे ब्रह्मन्=हे ब्रह्मा जी अब आपको हमें, वक्तुम् अर्हसि=बताना चाहिए॥१॥

अन्वितार्थ

हे पूज्य! चिद् रूपिणी भगवती के विभिन्न अविर्भाव की कथाएँ आपके द्वारा मुझे बताई गई। हे ब्रह्मा जी! अब आपको हमें इन अवतारों का प्रधान स्वरूप बताना चाहिए॥१॥

श्लोक

आराध्यं यन्मया देव्या: स्वरूपं येन च द्विज॥
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे॥२॥

पदच्छेद

आराध्यम् यत् मया देव्या: स्वरूपम् येन च द्विज विधिना ब्रूहि सकलम् यथावत् प्रणतस्य मे॥२॥

अन्वितपदार्थ

द्विज!=हे ब्राह्मण, मया=मेरे द्वारा, यत्=जो कुछ, येन च=जिस भी, विधिना=प्रकार से, देव्याः=भगवती के, स्वरूपम्=स्वरूप की, आराध्यम्=आराधना की जानी है, मे=मुझ, प्रणतस्य=विंनीत को, यथावत्=जैसे का तैसा, सकलम्=संपूर्ण रूप से, ब्रूहि=बताएँ।।२।।

अन्वितार्थ

हे ब्राह्मण! मेरे द्वारा जो कुछ जिस भी प्रकार से भगवती के स्वरूप की आराधना की जानी है वह मुझ विनीत को जैसे का तैसा संपूर्ण रूप से बताएँ।।२।।

श्लोक

ऋषिरुवाच।

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप।।३।।

पदच्छेद

इदम् रहस्यम् परमम् अनाख्येयम् प्रचक्षते भक्तः असि इति न मे किञ्चित् तव अवाच्यम् नराधिप।।३।।

अन्वितपदार्थ

नराधिप!=हे राजन्! इदम्=यह, परमम्=परम, रहस्यम्=रहस्य, अनाख्येयम्=सार्वजनिक रूप से बताने योग्य नहीं है, प्रचक्षते=ऐसा कहा गया है, भक्तः असि=आप भक्त हैं, इति=अतः, तव=आपके लिए, मे किञ्चित्=मेरे पास कुछ भी, अवाच्यं न=गोपनीय नहीं है।।३।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! यह परम रहस्य सार्वजनिक रूप से बताने योग्य नहीं है ऐसा कहा गया है। आप भक्त हैं अतः आपके लिए मेरे पास कुछ भी गोपनीय नहीं है।।३।।

श्लोक

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।।

लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता।।४।।

पदच्छेद

सर्वस्य आद्या महालक्ष्मीः त्रिगुणा परमेश्वरी लक्ष्य-अलक्ष्य-स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नम् व्यवस्थिता।।४।।

अन्वितपदार्थ

सर्वस्य=संपूर्णजगत् की, आद्या=प्रथमावस्था, त्रिगुणा=सत्त्व, रजस् एवं तमो गुणस्वरूपिणी, लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा=विश्व रूप में दृश्य तथा परा रूप में अदृश्य स्वरूप वाली, सा=वह, परमेश्वरी= सर्वोच्च स्वामिनी, महालक्ष्मीः=महालक्ष्मी, कृत्स्नम्=संपूर्ण जगत् को, व्याप्य=व्याप्त करके, व्यवस्थिता=विराजमान है।।४।।

अन्वितार्थ

संपूर्ण जगत् की प्रथमावस्था सत्त्व, रजस् एवं तमो गुणस्वरूपिणी विश्व रूप में दृश्य तथा परारूप में अदृश्य स्वरूप वाली वह सर्वोच्च स्वामिनी महालक्ष्मी संपूर्ण जगत् को व्याप्त करके विराजमान हैं।।४।।

श्लोक

मातुलिंगं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।।
नागं लिंगं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि।।५।।

पदच्छेद

मातुलिंगम् गदाम् खेटम् पानपात्रम् च बिभ्रती नागम् लिंगम् च योनिम् च बिंभ्रती नृप मूर्द्धनि।।५।।

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्, मातुलिंगम्=ये महालक्ष्मी बीजपूर, गदाम्=गदा, खेटम्=खेटशस्त्र, पानपात्रम् च=और चषक या प्याला, बिभ्रती=धारण करती हुई, मूर्द्धनि च=और मस्तक पर, नागम् लिंगम्=नाग, लिंग, योनिम् च=और योनि चिह्न, बिभ्रती=धारण करती हुई विराजमान हैं।।५।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! ये महालक्ष्मी बीजपूर, गदा, खेटशस्त्र और चषक या प्याला

धारण करती हुई और मस्तक पर नाग, लिंग, और योनिचिह्न धारण करती हुई विराजमान हैं।।५।।

श्लोक

तप्तकाञ्चनवर्णभा तत्काञ्चनभूषणा।।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा।६।।

पदच्छेद

तप्तकाञ्चन-वर्णभा तत्काञ्चन-भूषणा शून्यम् तद् अखिलम् स्वेन पूरयामास तेजसा।६।।

अन्वितपदार्थ

तत्काञ्चन-भूषणा=तपाए हुए विशुद्ध सोने के आभूषण धारण करने वाली, तप्तकाञ्चन-वर्णभा=तपाए हुए सोने के समान अरुण कान्ति वाली भगवती ने, तद्=उस, अखिलम्=सम्पूर्ण, शून्यम्=अधिकरण विहीन आकाश को, स्वेन=अपने, तेजसा=प्रकाश से, पूरयामास=भर दिया।६।।

अन्वितार्थ

तपाए हुए विशुद्ध सोने के आभूषण धारण करने वाली, तपाए हुए सोने के समान अरुण कान्ति वाली, भगवती ने उस सम्पूर्ण अधिकरण विहीन आकाश को अपने प्रकाश से भर दिया।६।।

श्लोक

शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि।।७।।

पदच्छेद

शून्यम् तदखिलम् लोकम् विलोक्य परमेश्वरी बभार परमम् रूपम् तमसा केवलेन हि।।७।।

अन्वितपदार्थ

परमेश्वरी=सर्वेश्वरी ने, तदखिलम्=उस सम्पूर्ण, लोकम्=ब्रह्माण्ड को, शून्यम्=अधिकरण विहीन विलोक्य=देखकर, केवलेन=मात्र, तमसा हि=तमो

गुण से, परमम्=अपना सर्वोत्कृष्ट, रूपम्=रूप, बभार=धारण किया।।७।।

अन्वितार्थ

सर्वेश्वरी ने उस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अधिकरण विहीन देखकर मात्र तमो गुण से अपना सर्वोत्कृष्ट रूप धारण किया।।७।।

श्लोक

साभिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा।।८।।
खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृतचतुर्भुजा।
कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम्।।९।।

पदच्छेद

सा अभिन्ना अञ्जन-सङ्काशा दंष्ट्रा-अङ्कित-वरानना विशाल-लोचना नारी बभूव तनु-मध्यमा खड्ग-पात्र-शिरः-खेटैः अलंकृत-चतुर्भुजा कबन्ध-हारम् शिरसा बिभ्राणा हि शिरः-स्रजम्।।८-९।।

अन्वितपदार्थ

सा नारी=वह स्त्री, अभिन्ना=तत्त्वतः महालक्ष्मी से अभिन्न, अञ्जन-सङ्काशा=अंजन के समान काली, दंष्ट्रा-अङ्कित-वरानना=डाढों से अलंकृत सुन्दर मुख वाली, विशाल-लोचना=बड़ी आखों वाली, तनु-मध्यमा=पतली कमर वाली, खड्ग-पात्र-शिरः-खेटैरलंकृत-चतुर्भुजा=खड्ग-पात्र-शिरः एवं खेटशस्त्र से अलंकृत चार भुजाओं वाली, शिरसा हि=सर पर, कबन्ध-हारम्=कबन्धों की माला, शिरः-स्रजम्=शिरो भूषण के रूप में बिभ्राणा=धारण किए हुए बभूव=थीं।।८-९।।

अन्वितार्थ

वह स्त्री, तत्त्वतः महालक्ष्मी से अभिन्न, अंजन के समान काली, डाढों से अलंकृत सुन्दर मुख वाली, बड़ी आखों वाली, पतली कमर वाली, खड्ग-पात्र-शिरः एवं खेटशस्त्र से अलंकृत चार भुजाओं वाली, सर पर कबन्धों की माला शिरो भूषण के रूप में धारण किए हुए थीं।।८-९।।

श्लोक

सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमाम्।।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः।।१०।।

पदच्छेद

सा प्रोवाच महालक्ष्मीम् तामसी प्रमदोत्तमा नाम कर्म च मे मातः देहि तुभ्यम् नमो नमः।।१०।।

अन्वितपदार्थ

सा=वह, तामसी=तमो गुण प्रधान, प्रमदोत्तमा=उत्तम स्त्री, महालक्ष्मीम्=महालक्ष्मी से बोली, प्रोवाच=बोली, मातः=हे माता, तुभ्यम्=आपको, नमो नमः=बार-बार प्रणाम है, मे=मेरा, नाम कर्म च=नाम तथा कर्म, देहि=निर्धारित करें।।१०।।

अन्वितार्थ

वह तमो गुण प्रधान उत्तम स्त्री महालक्ष्मी से बोली, हे माता! आपको बार-बार प्रणाम है। मेरा नाम तथा कर्म निर्धारित करें।।१०।।

श्लोक

तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।।११।।

पदच्छेद

ताम् प्रोवाच महालक्ष्मीः तामसीम् प्रमदोत्तमाम् ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।।११।।

अन्वितपदार्थ

महालक्ष्मीः=आदिशक्ति महालक्ष्मी ने, ताम=उस, तामसीम्=तमोगुण प्रधाना प्रमदोत्तमाम्=उत्तमस्त्री से, प्रोवाच=कहा, तव=आपके, नामानि=सभी नाम, यानि=जो भी, कर्माणि=कर्तव्य हैं, तानि=उन सबको, ते=आपको, ददामि=प्रदान करती हूँ।।११।।

अन्वितार्थ

आदिशक्ति महालक्ष्मी ने उस तमोगुणप्रधाना उत्तमस्त्री से कहा-

आपके सभी नाम, जो भी कर्तव्य है, उन सबको आपको प्रदान करती हूँ।।११।।

श्लोक

महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया।।१२।।

पदच्छेद

महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा निद्रा तृष्णा च एकवीरा कालरात्रिः दुर्-अत्यया।।१२।।

अन्वितपदार्थ

महामाया=ब्रह्मा आदि महादेवों को मोहित करने वाली, महाकाली=ब्रह्मा आदि महादेवों की क्षमताओं की ज्ञाता, महामारी=सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की संहारिका, क्षुधा=समस्त अज्ञान का भक्षण करने की इच्छा वाली, तृषा=समस्त अज्ञान को पीने की इच्छा वाली, निद्रा=समाधिनिद्रा की अधिष्ठात्री, तृष्णा च=और भक्ति की तृष्णा रखने वाली, एकवीरा=त्रैलोक्य में एकमात्र वीर, कालरात्रिः=काल को नष्ट करने वाली, दुर्-अत्यया=अविनाशिनी।।१२।।

अन्वितार्थ

ब्रह्मा आदि महादेवों को मोहित करने वाली, ब्रह्मा आदि महादेवों की क्षमताओं की ज्ञाता, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की संहारिका, समस्त अज्ञान का भक्षण करने की इच्छा वाली, समस्त अज्ञान को पीने की इच्छा वाली, समाधिनिद्रा की अधिष्ठात्री, और भक्ति की तृष्णा रखने वाली, त्रैलोक्य में एकमात्र वीर, काल को नष्ट करने वाली, अविनाशिनी।।१२।।

श्लोक

इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुतेसुखम्।।१३।।

पदच्छेद

इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा यः अधीते सः अश्नुते सुखम्।।१३।।

अन्वितपदार्थ

तव=आपके, इमानि=ये सभी, नामानि=नाम, कर्मभिः=आपके कर्म के आधार पर, प्रतिपाद्यानि=बताए गए हैं, एभिः=इन नामों के द्वारा, ते कर्माणि=आपके कर्मों को, ज्ञात्वा=समझ कर, यः अधीते=जो भक्त जप करता है, सः=वह, सुखम्=सुख, अश्नुते=प्राप्त करता है।।१३।।

अन्वितार्थ

आपके ये सभी नाम आपके कर्म के आधार पर बताए गए हैं। इन नामों के द्वारा आपके कर्मों को समझ कर जो भक्त जप करता है वह सुख प्राप्त करता है।।१३।।

श्लोक

तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ।।१४।।

पदच्छेद

ताम् इति उक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपम् अपरम् नृप सत्त्व-आख्येन अतिशुद्धेन गुणेन-इन्दुप्रभम् दधौ।।१४।।

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्! महालक्ष्मीः=आदिशक्ति महालक्ष्मी ने, ताम्=उनसे, इति उक्त्वा=यह कह कर, अतिशुद्धेन=अपने अतिनिर्मल, सत्त्वाख्येन=सत्त्व नामक, गुणेन=गुण के माध्यम से, इन्दु-प्रभम्=चन्द्रमा के समान धवल, अपरम्=दूसरा, स्वरूपम्=स्वरूप, दधौ=धारण किया।१४।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! आदिशक्ति महालक्ष्मी ने उनसे यह कह कर अपने अतिनिर्मल सत्त्व नामक गुण के माध्यम से चन्द्रमा के समान धवल दूसरा स्वरूप धारण किया।१४।।

श्लोक

अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यापि सा ददौ।।१५।।

पदच्छेद

अक्षमाला-अङ्कुश-धरा वीणा-पुस्तक-धारिणी सा बभूव वरा नारी नामानि अस्यापि सा ददौ।।१५।।

अन्वितपदार्थ

सा=वह, वरा नारी=श्रेष्ठ सुन्दरी, अक्षमाला-अङ्कुश-धरा=अक्षों की माला तथा अंकुश धारण किए हुए, वीणा-पुस्तक-धारिणी=वीणा एवं पुस्तक धारण किए हुए, बभूव=उत्पन्न हुई, सा=भगवती महालक्ष्मी ने, अस्यापि=इनको भी, नामानि=नाम, ददौ=प्रदान किया।१५।।

अन्वितार्थ

वह श्रेष्ठ सुन्दरी अक्षों की माला तथा अंकुश धारण किए हुए वीणा एवं पुस्तक धारण किए हुए उत्पन्न हुई भगवती महालक्ष्मी ने इनको भी नाम प्रदान किया।१५।।

श्लोक

महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्बीजगर्भा च धीश्वरी।।१६।।

पदच्छेद

महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती आर्या ब्राह्मी कामधेनुः बीजगर्भा च धीश्वरी।।१६।।

अन्वितपदार्थ

महाविद्या=परमज्ञान की अधिष्ठात्री, महावाणी=परावाणी भारती= व्यक्तवाणी, वाक्=स्फुटवाणी, सरस्वती=सम्पूर्ण विद्याओं की अधिष्ठात्री, आर्या=श्रेष्ठ, ब्राह्मी=वेद की आत्मा, कामधेनुः=इच्छितफल प्रदान करने वाली, बीजगर्भा=सृष्टि का बीज धारण करने वाली, धीश्वरी च=और बुद्धि की अधिष्ठात्री।।१६।।

अन्वितार्थ

(महासरस्वती के कर्मों के आधार पर उनके नाम इस प्रकार हैं-) परमज्ञान की अधिष्ठात्री, परावाणी, व्यक्तवाणी, स्फुटवाणी, सम्पूर्ण विद्याओं

की अधिष्ठात्री, श्रेष्ठ, वेद की आत्मा, इच्छितफल प्रदान करने वाली, सृष्टि का बीज धारण करने वाली, और बुद्धि की अधिष्ठात्री।।१६।।

श्लोक

अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः।।१७।।

पदच्छेद

अथ उवाच महालक्ष्मीः महाकालीम् सरस्वतीम् युवाम् जनयताम् देव्यौ मिथुने स्व-अनुरूपतः।।१७।।

अन्वितपदार्थ

अथ=इसके बाद महालक्ष्मीः=आदिशक्ति महालक्ष्मी ने, महाकालीम्=तामसी शक्ति महाकाली, सरस्वतीम्=तथा सात्त्विक शक्ति सरस्वती से, उवाच=बोलीं, देव्यौ=हे देवियों, युवाम्=आप दोनों, स्व-अनुरूपतः=अपने गुणों के अनुकूल, मिथुने=पुरुष एवं स्त्री के जोड़े, जनयताम्=बनाइए।।१७।।

अन्वितार्थ

अथ=इसके बाद आदिशक्ति महालक्ष्मी ने तामसी शक्ति महाकाली तथा सात्त्विक शक्ति सरस्वती से बोलीं, हे देवियों! आप दोनों अपने गुणों के अनुकूल पुरुष एवं स्त्री के जोड़े बनाइए।।१७।।

श्लोक

इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ।।१८।।

पदच्छेद

इति उक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनम् स्वयम् हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ।।१८।।

अन्वितपदार्थ

महालक्ष्मीः=महालक्ष्मी ने, ते=उन दोनों से, इति उक्त्वा=ऐसा कह कर, स्वयम्=आत्मशक्ति से, रुचिरौ=अत्यन्त सुन्दर, हिरण्यगर्भौ=हिरण्यगर्भ रूप में, कमलासनौ=एवं कमलासन पर विराजमान, स्त्रीपुंसौ=स्त्री पुरुष का,

मिथुनम्=जोड़ा, ससर्ज=निर्मित किया॥१८॥

अन्वितार्थ

महालक्ष्मी ने उन दोनों से ऐसा कह कर आत्मशक्ति से अत्यन्त सुन्दर हिरण्यगर्भ रूप में एवं कमल पर विराजमान स्त्री पुरुष का जोड़ा निर्मित किया॥१८॥

श्लोक

ब्रह्मन्विधे विरञ्च्येति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्॥१९॥

पदच्छेद

ब्रह्मन् विधे विरञ्चि इति धातः इति-आह तम् नरम्। श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मि इति आह माता च ताम् स्त्रियम्॥१९॥

अन्वितपदार्थ

माता=दोनों की जननी आदिशक्ति ने, तम् नरम्=हिरण्यगर्भ पुरुष को, ब्रह्मन्=ब्रह्मा, विधे=विधि, विरञ्च्येति=रचनाकार, धातः=विधाता, इत्याह=इन नामों से संबोधित किया ताम् स्त्रियम्=हिरण्यगर्भ उस स्त्री को, श्रीः=श्री, पद्मे=पद्मा, कमले=कमला, लक्ष्मि च=और लक्ष्मी, इति आह=इन नामों से संबोधित किया॥१९॥

अन्वितार्थ

दोनों की जननी आदिशक्ति ने, हिरण्यगर्भ पुरुष को, ब्रह्मा, विधि, रचनाकार, विधाता इन नामों से संबोधित किया उस स्त्री को श्री, पद्मा, कमला और लक्ष्मी इन नामों से संबोधित किया॥१९॥

श्लोक

महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते॥२०॥

पदच्छेद

महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह। एतयोः अपि रूपाणि नामानि च वदामि ते॥२०॥

अन्वितपदार्थ

महाकाली=महाकाली, भारती च=और भारती ने, अपि=भी, सह=एक साथ, मिथुने=अपने जोड़े, सृजत:=निर्मित किए। एतयो:=इन दोनों का, नामानि=नाम, रूपाणि च=एवं स्वरूप, ते वदामि=आपको बताता हूँ।।२०।।

अन्वितार्थ

महाकाली और भारती ने भी एक साथ अपने जोड़े निर्मित किए। इन दोनों का नाम एवं स्वरूप आपको बताता हूँ।।२०।।

श्लोक

नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्।।२१।।

पदच्छेद

नीलकण्ठम् रक्तबाहुम् श्वेताङ्गम् चन्द्रशेखरम् जनयामास पुरुषम् महाकाली सिताम् स्त्रियम्।।२१।।

अन्वितपदार्थ

महाकाली=महाकाली ने, नीलकण्ठम्=नीलकण्ठ, रक्तबाहुम्=लाल हाथों वाले, श्वेताङ्गम्=गौर शरीर वाले, चन्द्रशेखरम्=माथे पर चन्द्रमा को सजाने वाले, पुरुषम्=पुरुष को, सिताम्=तथा गोरी, स्त्रियम्=स्त्री को, जनयामास=उत्पन्न किया।२१।।

अन्वितार्थ

महाकाली ने नीलकण्ठ, लाल हाथों वाले, गौर शरीर वाले, माथे पर चन्द्रमा को सजाने वाले पुरुष को तथा गोरी स्त्री को उत्पन्न किया।२१।।

श्लोक

स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा।।२२।।

पदच्छेद

स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा।।२२।।

अन्वितपदार्थ

स रुद्रः=वह पुरुष, शङ्करः=शङ्कर, स्थाणुः=त्रिकाल में वर्तमान स्थाणु, त्रिलोचनः=त्रिलोचन, कपर्दी च=और कपर्दी नामों से, सा स्त्री=वह स्त्री, त्रयी विद्या=वेद त्रयी, कामधेनुः=सब अभीष्ट को सिद्ध करने वाली, भाषाक्षरा=बोलने की शक्ति, स्वरा=षोडश स्वर रूपिणी आदि नामों से बतायी गई।।२२।।

अन्वितार्थ

वह पुरुष रुद्र, शङ्कर, त्रिकाल में वर्तमान स्थाणु, त्रिलोचन, और कपर्दी नामों से, वह स्त्री वेद त्रयी, अज्ञान नाशिनी विद्या, सब अभीष्ट को सिद्ध करने वाली, बोलने की शक्ति, षोडश स्वर रूपिणी आदि नामों से बतायी गई।।२२।।

श्लोक

सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते।।२३।।

पदच्छेद

सरस्वती स्त्रियम् गौरीम् कृष्णम् च पुरुषम् नृप। जनयामास नामानि तयोः अपि वदामि ते।।२३।।

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्!, सरस्वती=सरस्वती ने, गौरीम्=गोरी, स्त्रियम्=स्त्री, कृष्णं च=और काला, पुरुषम्=पुरुष, जनयामास=उत्पन्न किया, तयोः अपि=उन दोनों के भी, नामानि=नाम, ते=आपको, वदामि=बताता हूँ।।२३।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! सरस्वती ने गोरी स्त्री और काला पुरुष उत्पन्न किया उन दोनों के भी नाम आपको बताता हूँ।।२३।।

श्लोक

विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा।।२४।।

पदच्छेद

विष्णुः कृष्णः हृषीकेशः वासुदेवः जनार्दनः। उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा॥२४॥

अन्वितपदार्थ

विष्णुः=प्रलय काल में अधिकरण रूप विष्णु, कृष्णः=सर्व संहारक कृष्ण, हृषीकेशः=अन्तर्यामी हृषीकेश, वासुदेवः=प्राणों के स्वामी वासुदेव, जनार्दनः=सबको प्रसन्न करने वाले जनार्दन, उमा=शिव की अर्धाङ्गिनी उमा, गौरी=श्वेतवर्णा गौरी, सती=सती, चण्डी=सर्वनियन्त्री चण्डी, सुन्दरी=सुन्दरी, सुभगा=सौभाग्यदायिनी सुभगा, शिवा=मङ्गलकरणी शिवा॥२४॥

अन्वितार्थ

प्रलयकाल में अधिकरण रूप विष्णु, सर्वसंहारक कृष्ण, अन्तर्यामी हृषीकेश, प्राणों के स्वामी वासुदेव, सबको प्रसन्न करने वाले जनार्दन, शिव की अर्धाङ्गिनी उमा, श्वेतवर्णा गौरी, सती, सर्वनियन्त्री चण्डी, सुन्दरी, सौभाग्यदायिनी सुभगा, मङ्गलकरणी शिवा (नाम बताए)॥२४॥

श्लोक

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः॥२५॥

पदच्छेद

एवम् युवतयः सद्यः पुरुषत्वम् प्रपेदिरे। चक्षुष्मन्तः नु पश्यन्ति न इतरे अतद्-विदः जनाः॥२५॥

अन्वितपदार्थ

एवम्=इस क्रम से उत्पन्न, युवतयः=तीनों युवतियाँ, सद्यः=तुरन्त, पुरुषत्वं प्रपेदिरे=पुरुष भाव में हो गईं। चक्षुष्मन्तः नु=उनके इस स्वरूप को रहस्यज्ञान की आँखों वाले ही, पश्यन्ति=देखते हैं, इतरे=दूसरे, अतद्विदः=रहस्य को न जानने वाले, जनाः=लोग, न=नहीं देख पाते॥२५॥

अन्वितार्थ

इस क्रम से उत्पन्न तीनों युवतियाँ तुरन्त पुरुष भाव में हो गईं। उनके इस स्वरूप को रहस्यज्ञान की आँखों वाले ही देखते हैं। दूसरे रहस्य को न जानने वाले लोग नहीं देख पाते॥२५॥

श्लोक

ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृपत्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्॥२६॥

पदच्छेद

ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीम् महालक्ष्मीः नृप त्रयीम् रुद्राय गौरीम् वरदाम् वासुदेवाय च श्रियम्॥२६॥

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्! महालक्ष्मीः=महालक्ष्मी ने, त्रयीम्=त्रयी या सरस्वती को, ब्रह्मणे=ब्रह्मा को, वरदाम्=वरदानी, गौरीम्=गौरी को, रुद्राय=शंकर को, श्रियम् च=और श्री को, वासुदेवाय=वासुदेव को पत्नीम्=पत्नी के रूप में, प्रददौ=प्रदान किया॥२६॥

अन्वितार्थ

हे राजन्! महालक्ष्मी ने त्रयी या सरस्वती ब्रह्मा को वरदानी गौरी शंकर को और श्री वासुदेव को पत्नी के रूप में प्रदान किया॥२६॥

श्लोक

स्वरया सह संभूय विरञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद्गौर्या सह वीर्यवान्॥२७॥

पदच्छेद

स्वरया सह संभूय विरञ्चः अण्डम् अजीजनत् बिभेद भगवान् रुद्रः तद् गौर्या सह वीर्यवान्॥२७॥

अन्वितपदार्थ

विरञ्चः=ब्रह्मा ने, स्वरया सह=स्वररूपा सरस्वती के साथ, संभूय=संयुक्त होकर, अण्डम्=प्रथम सृष्टि का अण्डा, अजीजनत्=उत्पन्न किया, तद्=उस अण्डे को, गौर्या सह=गौरी के साथ संयुक्त होकर, वीर्यवान्=बलशाली, भगवान्=भगवान्, रुद्रः=रुद्र ने, बिभेद=विभाजित किया॥२७॥

अन्वितार्थ

ब्रह्मा ने स्वररूपा सरस्वती के साथ संयुक्त होकर प्रथम सृष्टि का अण्डा

उत्पन्न किया उस अण्डे को गौरी के साथ संयुक्त होकर बलशाली भगवान् रुद्र ने विभाजित किया।।२७।।

श्लोक

अण्डमध्ये प्रधानादिकार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।।२८।।

पदच्छेद

अण्ड-मध्ये प्रधानादि-कार्य-जातम् अभूत् नृप महा-भूतात्मकम् सर्वम् जगत् स्थावरजङ्गमम्।।२८।।

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्! अण्ड-मध्ये=रुद्र द्वारा विभाजित अण्डे में, प्रधानादि-कार्य-जातम्=मूलप्रकृति एवं उसका सम्पूर्ण कार्य, महा-भूतात्मकम्=पञ्चमहाभूतों से निर्मित, सर्वम् स्थावरजङ्गमम्=सम्पूर्ण जड़-चेतनात्मक, जगत्=संसार, अभूत्=निर्मित था।।२८।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! रुद्र द्वारा विभाजित अण्डे में मूलप्रकृति एवं उसका सम्पूर्ण कार्य, पञ्चमहाभूतों से निर्मित सम्पूर्ण जड-चेतनात्मक संसार निर्मित था।।२८।।

श्लोक

पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः।।२९।।

पदच्छेद

पुपोष पालयामास तत् लक्ष्म्या सह केशवः संजहार जगत् सर्वम् सह गौर्या महेश्वरः।।२९।।

अन्वितपदार्थ

तत् सर्वम् जगत्=उस सम्पूर्ण जगत् का, लक्ष्म्या सह केशवः=लक्ष्मी से संयुक्त विष्णु ने, पुपोष=पोषण किया, पालयामास=रक्षा की, गौर्या सह महेश्वरः=गौरी से संयुक्त शंकर ने, संजहार=उसका विनाश किया।।२९।।

अन्विताार्थ

उस सम्पूर्ण जगत् का लक्ष्मी से संयुक्त विष्णु ने, पोषण किया, रक्षा की, गौरी से संयुक्त शंकर ने उसका विनाश किया।।२९।।

श्लोक

महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।

निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्।।३०।।

पदच्छेद

महालक्ष्मी: महाराज सर्वसत्त्व-मयी ईश्वरी निराकारा च साकारा सा एव नाना-अभिधानभृत्।।३०।।

अन्वितपदार्थ

महाराज=हे सुरथ! सर्वसत्त्व-मयी=सम्पूर्ण अस्तित्व स्वरूपिणी, ईश्वरी=स्वामिनी, महालक्ष्मी:=महालक्ष्मी, निराकारा=आकार विहीन है, साकारा च=और आकार धारण करने की शक्ति भी रखतीं हैं, सा एव=वह ही, नाना-अभिधानभृत्=विभिन्न प्रकार की संज्ञाओं को धारण करती हैं सारे नाम उन्हीं के हैं।।३०।।

अन्विताार्थ

हे सुरथ! सम्पूर्ण अस्तित्व स्वरूपिणी, स्वामिनी महालक्ष्मी आकार विहीन हैं और आकार धारण करने की शक्ति भी रखतीं हैं। वह ही विभिन्न प्रकार की संज्ञाओं को धारण करती हैं सारे नाम उन्हीं के हैं।।३०।।

श्लोक

नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन कुत्रचित्।।३१।।

पदच्छेद

नामान्तरै: निरूप्या एषा नाम्ना न अन्येन कुत्रचित्।।३१।।

अन्वितपदार्थ

एषा=यह महालक्ष्मी, नामान्तरै:=श्रुति सम्मत सत्य ज्ञान आदि अन्य नामों से, निरूप्या=निरूपित की जा सकतीं हैं। कुत्रचित्=किसी, अन्येन=अन्य,

नाम्ना न=स्वकल्पित नाम से नहीं।।३१।।

अन्वितार्थ

यह महालक्ष्मी श्रुति सम्मत सत्य ज्ञान आदि अन्य नामों से निरूपित की जा सकतीं हैं। किसी अन्य स्वकल्पित नाम से नहीं।।३१।।

।। इति श्रीसप्तशतीप्राधानिकरहस्यम् ।।

।। अथवैकृतिकरहस्यम् ।।

श्लोक

ऋषिरुवाच।

त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते।।१।।

पदच्छेद

ऋषिः उवाच- त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधा उदिता सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवती ईर्यते।।१।।

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच-=ऋषि बोले, या=जो, त्रिगुणा=त्रिगुणमयी मूलशक्ति, तामसी=तामसी, सात्त्विकी=सात्त्विकी देवी=देवी, त्रिधा=तीन प्रकार से, उदिता=बतायी गई हैं, सा=वह, शर्वा=शर्वाणी, चण्डिका=चण्डिका, दुर्गा=दुर्गा, भद्रा=भद्रकाली, भगवती=भगवती, ईर्यते=कही जाती हैं।।१।।

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- जो त्रिगुणमयी मूलशक्ति, तामसी, सात्त्विकी देवी तीन प्रकार से बतायी गई हैं वह शर्वाणी, चण्डिका, दुर्गा, भद्रकाली, भगवती कही जाती हैं।।१।।

श्लोक

योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः।।२।।

पदच्छेद

योगनिद्रा हरेः उक्ता महाकाली तमोगुणां मधुकैटभ-नाशार्थम् याम् तुष्टाव-अम्बुजासनः।।२।।

अन्वितपदार्थ

तमोगुणा=तमोगुण प्रधाना, महाकाली=महाकाली, हरेः=श्री विष्णु की,

योगनिद्रा=योगनिद्रा, उक्ता=कही गई हैं। याम्=जिन्हें, अम्बुजासनः=कमल परविराजमान रहने वाले ब्रह्मा ने, मधुकैटभ-नाशार्थम्=मधुकैटभ के विनाश के लिए, तुष्टाव=प्रसन्न किया था।२।।

अन्वितार्थ

तमोगुण प्रधाना महाकाली श्री विष्णु की योगनिद्रा कही गई हैं। जिन्हें कमल परविराजमान रहने वाले ब्रह्मा ने मधुकैटभ के विनाश के लिए प्रसन्न किया था।२।।

श्लोक

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया।।३।।
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः।।४।।
खड्गबाणगदाशूलचक्रपाशभुशुण्डिभृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ।।५।।
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात्पूजाकर्तुश्चराचरम्।।६।।

पदच्छेद

दशवक्त्रा दशभुजा दशपादा अञ्जन-प्रभा विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचन-मालया स्फुरद्-दशन-दंष्ट्रा सा भीम-रूपा अपि भूमिप रूप-सौभाग्य-कान्तीनाम् सा प्रतिष्ठा महा-श्रियः खड्ग-बाण-गदा-शूल-चक्र-पाश-भुशुण्डिभृत् परिघम् कार्मुकम् शीर्षम् निश्च्योतद्रुधिरम् दधौ। एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया आराधिता वशीकुर्यात् पूजा-कर्तुः चराचरम्।।३-६।।

अन्वितपदार्थ

भूमिप=हे राजन्! सा=वह, दशवक्त्रा=दश मुखों वाली, दशभुजा=दश भुजाओं वाली, दशपादा=दशचरणों वाली, अञ्जन-प्रभा=काजल के समान कान्ति वाली, विशालया=बड़े-बड़े, त्रिंशल्लोचन-मालया=तीस नेत्रों की माला से,

राजमाना=सुशोभित, स्फुरद्-दशन-दंष्ट्रा=फड़कते हुए दातों एवं डाढ़ों वाली, भीम-रूपा=भयानक स्वरूप वाली, अपि सा=फिर भी वह, रूप-सौभाग्य-कान्तीनाम्=सुन्दरता, सौभाग्य एवं तेजस्विता की, महा-श्रियः=महनीय श्री की, प्रतिष्ठा=निवास भूमि, खड्गबाणगदाशूलचक्रपाशभुशुण्डिभृत्=खड्ग, बाण, गदा, शूल, चक्र, पाश, और भुशुण्डि धारण किए हुए हैं, परिघम्=परिघ, कार्मुकम्=धनुष, निश्च्योतद्रुधिरं शीर्षम्=टपकते हुए खून वाला शिर, दधौ=धारण किए हुए हैं। एषा=यह, वैष्णवी=विष्णु की, माया=माया, महाकाली=महाकाली दुरत्यया=अज्ञेय स्वरूप वाली हैं। सा=वह माता, आराधिता=उपासित होने पर, पूजा-कर्तुः=पूजा करने वाले के लिए, चराचरम्=सारें संसार को, वशीकुर्यात्=वशीभूत कर देतीं हैं।।३-६।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! वह दश मुखों वाली, दश भुजाओं वाली, दश चरणों वाली, काजल के समान कान्ति वाली, बड़े-बड़े तीस नेत्रों की माला से सुशोभित, फड़कते हुए दातों एवं डाढ़ों वाली, भयानक स्वरूप वाली, फिर भी वह सुन्दरता, सौभाग्य एवं तेजस्विता की, महनीय श्री की निवास भूमि, खड्ग, बाण, गदा, शूल, चक्र, पाश, और भुशुण्डि धारणी, परिघ, धनुष, टपकते हुए खून वाला शिर को धारण किए हुए हैं। यह विष्णु की माया महाकाली अज्ञेय स्वरूप वाली हैं। वह माता उपासित होने पर पूजा करने वाले के लिए सारे संसार को वशीभूत कर देतीं हैं।।३-६।।

श्लोक

सर्वदेवशरीरेभ्यो याविर्भूताऽमितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी।।७।।

पदच्छेद

सर्वदेव-शरीरेभ्यः या आविर्भूता अमित-प्रभा त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षात् महिषमर्दिनी।।७।।

अन्वितपदार्थ

सर्वदेव-शरीरेभ्यः=सभी देवताओं के शरीर से, या अमित-प्रभा=जो अनन्ततेजोमयी, त्रिगुणा=मूलप्रकृति, आविर्भूता=उत्पन्न हुई, सा साक्षात्=वह साक्षात्, महिषमर्दिनी=महिषासुरविनाशिनी महालक्ष्मीः=महालक्ष्मी हैं।।७।।

अन्वितार्थ

सभी देवताओं के शरीर से जो अनन्ततेजोमयी मूलप्रकृति उत्पन्न हुई, वह साक्षात् महिषासुरविनाशिनी महालक्ष्मी हैं।।७।।

श्लोक

श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा।।८।।
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरुपसौभाग्यशालिनी।।९।।
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्त्रभुजा सती।

पदच्छेद

श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेत-स्तन-मण्डला रक्त-मध्या रक्त-पादा नील-जङ्घोरुः उन्मदा सुचित्र-जघना चित्रमाल्य-अम्बरविभूषणा चित्र-अनुलेपना कान्ति-रुपसौभाग्य-शालिनी अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्त्र-भुजा सती।।८-१०क।।

अन्वितपदार्थ

श्वेतानना=गोरे मुख वाली, नीलभुजा=श्यामवर्ण की भुजाओं वाली, सुश्वेत-स्तन-मण्डला=धवल स्तन मण्डल वाली, रक्त-मध्या=अरुण वर्ण की कटि वाली, रक्त-पादा=अरुण चरणों वाली, नील-जङ्घोरुः=श्यामल जंघा एवं उरू वाली, उन्मदा=अपराजेय युवती, सुचित्र-जघना=सजेहुए जाँघों वाली, चित्रमाल्य-अम्बरविभूषणा=रंगबिरंगी मालाओं और वस्त्रों से अलंकृत, चित्र-अनुलेपना=अनेक प्रकार के अनुलेपनों सें सजी हुई, कान्ति-रुपसौभाग्य-शालिनी=कान्ति, रुप एवं सौभाग्यसंपन्ना, सा=वह महिष मर्दिनी महालक्ष्मी, सहस्त्र-भुजा सती=हजार भुजाओं वाली होने पर भी, अष्टादशभुजा=अठारह भुजा रूप में, पूज्या=पूजनीया हैं।।८-१०क।।

अन्वितार्थ

गोरे मुख वाली, श्यामवर्ण की भुजाओं वाली, धवल स्तन मण्डल वाली, अरुण वर्ण की कटि वाली, अरुण चरणों वाली, श्यामल जंघा एवं उरू वाली, अपराजेय युवती, सजे हुए जाँघों वाली, रंगबिरंगी मालाओं और वस्त्रों से अलंकृत, अनेक प्रकार के अनुलेपनों सें सजी हुई, कान्ति, रुप एवं सौभाग्यसंपन्ना वह महिष मर्दिनी महालक्ष्मी हजार भुजाओं वाली होने पर भी अठारह भुजा रूप में पूजनीया हैं।।८-१०[क]।।

श्लोक

आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात्।।१०।।
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिःकुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः।।११।।
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्।।१२।।
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्।।१३।।

पदच्छेद

आयुधानि अत्र वक्ष्यन्ते दक्षिण-अधः-कर-क्रमात्। अक्षमाला च कमलम् बाणः असिः कुलिशम् गदा चक्रम् त्रिशूलम् परशुः शङ्खः घण्टा च पाशकः शक्तिः दण्डः चर्म चापम् पानपात्रम् कमण्डलुः अलंकृतभुजाम् एभिः आयुधैः कमलासनाम् सर्वदेव-मयीम् ईशाम् महालक्ष्मीम् इमाम् नृप पूजयेत् सर्वलोकानाम् स देवानाम् प्रभुः भवेत्।।१०[ख]-१३।।

अन्वितपदार्थ

नृप!=हे राजन्! अत्र=यहाँ दक्षिण-अधः-कर-क्रमात्=दाहिने से नीचे के क्रम से, आयुधानि=अस्त्र-शस्त्र, वक्ष्यन्ते=बताए जाते हैं- अक्षमाला=अक्षमाला, कमलम्=कमल, बाणः=बाण, असिः=खड्ग, कुलिशम्=अङ्कुश, गदा=गदा, चक्रम्=चक्र, त्रिशूलम्=त्रिशूल, परशुः=परशु शङ्खः=शङ्ख, घण्टा च=और घण्टा, पाशकः=पाश, शक्तिः=कटार, दण्डः=दण्ड, चर्म=चर्म, चापम्=धनुष,

पानपात्रम्=पीने का प्याला, च कमण्डलुः=और कमण्डलु, एभिः=इन सभी, आयुधैः=आयुधों से, अलंकृतभुजाम्=अलंकृत भुजाओं वाली, कमलासनाम्=कमल पर विराज मान, सर्वदेव-मयीम्=सर्वदेवमयी, ईशाम्=ईश्वरी, इमाम्=इन, महालक्ष्मीम्=महालक्ष्मी की, पूजयेत्=उपासना करे जो इनकी उपासना करता है, स=वह, सर्वलोकानाम्=सभी लोकों और देवानाम्=सभी देवताओं का, प्रभुः=स्वामी, भवेत्=हो जाता है।।१०ख-१३।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! यहाँ दाहिने से नीचे के क्रम से अस्त्र-शस्त्र बताए जाते हैं- अक्षमाला, कमल, बाण, खड्ग, अङ्कुश, गदा, चक्र, त्रिशूल, परशु, शङ्ख और घण्टा, पाश, कटार, दण्ड, चर्म, धनुष, पीने का प्याला और कमण्डलु, इन सभी आयुधों से अलंकृत भुजाओं वाली, कमल पर विराज मान, सर्वदेवमयी, ईश्वरी इन महालक्ष्मी की उपासना करना चाहिए। जो इनकी उपासना करता है वहसभी लोकों और सभी देवताओं का स्वामी हो जाता है।।१०ख-१३।।

श्लोक

गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी।।१४।।

पदच्छेद

गौरीदेहात् समुद्भूता या सत्त्वैक-गुणाश्रया साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुर-निबर्हिणी।।१४।।

अन्वितपदार्थ

या=जो, सत्त्वैक-गुणाश्रया=केवल सत्त्वगुण को आधार बनाकर, साक्षात्=साक्षात्, गौरीदेहात्=शिवा के शरीर से, समुद्भूता=उत्पन्न हुई वह, शुम्भासुर-निबर्हिणी=शुम्भनामक राक्षस का विनाश करने वाली, सरस्वती=महासरस्वती, प्रोक्ता=कही गयीं।।१४।।

अन्वितार्थ

जो केवल सत्त्वगुण को आधार बनाकर साक्षात् शिवा के शरीर से उत्पन्न

हुई वह शुम्भनामक राक्षस का विनाश करने वाली महासरस्वती कही गयीं।।१४।।

श्लोक

दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप।।१५।।

पदच्छेद

दधौ च अष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्। शङ्खम् घण्टाम् लाङ्गलम् च कार्मुकम् वसुधाधिप।।१५।।

अन्वितपदार्थ

वसुधाधिप=हे राजन्! अष्टभुजा च=और यह अष्टभुजा, बाणमुसले=बाण, मुसल, शूलचक्रभृत्=शूल चक्र लिए हुए, शङ्खम्=शङ्ख, घण्टाम्=घण्टा, लाङ्गलम् च=हल तथा, कार्मुकम्=धनुष, दधौ=धारण करतीं हैं।।१५।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! और यह अष्टभुजा बाण, मुसल, शूल, चक्र लिए हुए, शङ्ख, घण्टा, हल तथा, धनुष, धारण करतीं हैं।।१५।।

श्लोक

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ।।१६।।

पदच्छेद

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वम् प्रयच्छति निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ।।१६।।

अन्वितपदार्थ

एषा=यह, निशुम्भ-मथिनी=निशुम्भनाशिनी, शुम्भासुर-निबर्हिणी=शुम्भ विदारिणी, देवी=भगवती, भक्त्या सम्पूजिता=भक्तिपूर्वक उपासित होने पर, सर्वज्ञत्वम्=सर्वज्ञता, प्रयच्छति=प्रदान करतीं हैं।।१६।।

अन्वितार्थ

यह निशुम्भनाशिनी, शुम्भ विदारिणी भगवती भक्तिपूर्वक उपासित होने पर

सर्वज्ञता प्रदान करतीं हैं।।१६।।

श्लोक

इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्त्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय।।१७।।

पदच्छेद

इति उक्तानि स्वरूपाणि मूर्त्तीनाम् तव पार्थिव उपासनम् जगन्-मातुः पृथक् आसाम् निशामय।।१७।।

अन्वितपदार्थ

पार्थिव=हे राजन्! इति तव=इस प्रकार आपको, मूर्त्तीनाम्=तीनों मूर्तियो का, स्वरूपाणि=ध्येय रूप, उक्तानि=बताया गया, आसाम्=इन, जगन्-मातुः= जगदम्बाओं की, उपासनम्=उपासना पद्धति, पृथक्=अलग से, निशामय= सुनों।।१७।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! इस प्रकार आपको तीनों मूर्तियों का ध्येय रूप बताया गया इन जगदम्बाओं की उपासना पद्धति अलग से सुनों।।१७।।

श्लोक

महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्।।१८।।

पदच्छेद

महालक्ष्मीः यदा पूज्या महाकाली सरस्वती दक्षिण-उत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतः मिथुन-त्रयम्।।१८।।

अन्वितपदार्थ

यदा=जब, महालक्ष्मीः=महालक्ष्मी की पूज्या=पूजा करना हो तब, दक्षिण-उत्तरयोः=दक्षिण तथा उत्तर दिशाओं में, महाकाली=महाकाली, सरस्वती=महासरस्वती, पूज्ये=की पूजा होगी, मिथुन-त्रयम्=आगे बताए गए तीन जोड़े, पृष्ठतः=महालक्ष्मी के पीछे पूजित होगें।।१८।।

अन्वितार्थ

जब महालक्ष्मी की पूजा करना हो तब, दक्षिण तथा उत्तर दिशाओं में महाकाली एवं महासरस्वती की पूजा होगी, आगे बताए गए तीन जोड़े महालक्ष्मी के पीछे पूजित होगें।।१८।।

श्लोक

विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्।।१९।।

पदच्छेद

विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रः गौर्या च दक्षिणे वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवता-त्रयम्।।१९।।

अन्वितपदार्थ

मध्ये=बीच में विरञ्चिः स्वरया=स्वरा के साथ ब्रह्मा, दक्षिणे=दाहिने, रुद्रः गौर्या च=गौरी के साथ रुद्र, वामे=बाई ओर, लक्ष्म्या हृषीकेशः=लक्ष्मी के साथ हृषीकेश विष्णु, पुरतो=सामने, देवता-त्रयम्=आगे बताए जाने वाले तीन देवताओं की पूजा करना चाहिए।।१९।।

अन्वितार्थ

महालक्ष्मी के पीछे के स्थान पर बीच में- स्वरा के साथ ब्रह्मा, दाहिनी ओर- गौरी के साथ रुद्र, बाई ओर- लक्ष्मी के साथ हृषीकेश विष्णु, सामने- आगे बताए जाने वाले तीन देवताओं की पूजा करना चाहिए।।१९।।

श्लोक

अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्।।२०।।

पदच्छेद

अष्टादशभुजा मध्ये वामे च अस्याः दशानना दक्षिणे अष्टभुजा लक्ष्मीः महती इति समर्चयेत्।।२०।।

अन्वितपदार्थ

मध्ये=बीच में, अष्टादशभुजा=अष्टादशभुजा, अस्याः=इनके, वामे च=बाई

ओर, दशानना=दशानना दक्षिणे=दाहिनी ओर, अष्टभुजा=अष्टभुजा, इति महती लक्ष्मीः=इस प्रकार महा लक्ष्मी का, समर्चयेत्=अर्चन करना चाहिए।।२०।।

अन्वितार्थ

बीच में अष्टादशभुजा इनके बाईं ओर दशानना, दाहिनी ओर अष्टभुजा, इस प्रकार महा लक्ष्मी का, समर्चयेत्=अर्चन करना चाहिए।।२०।।

श्लोक

अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा।२१॥
कालमृत्यू च संपूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।

पदच्छेद

अष्टादशभुजा च एषा यदा पूज्या नराधिप दशानना च अष्टभुजा दक्षिण-उत्तरयोः तदा कालमृत्यू च संपूज्यौ सर्वारिष्ट-प्रशान्तये।।२१-२२क।।

अन्वितपदार्थ

नराधिप!=हे राजन्! यदा=जब, एषा=इन महालक्ष्मी, अष्टादशभुजा च=और अष्टादशभुजा की, दशानना=दशानना, अष्टभुजा च=और अष्टभुजा की, पूज्या=पूजा करनी हो, तदा=तब, सर्वारिष्ट-प्रशान्तये=सब प्रकार के उपद्रवों की शान्ति के लिए, दक्षिण-उत्तरयोः=दक्षिण एवं उत्तर में, कालमृत्यू च=काल और मृत्यु की, संपूज्यौ=पूजा करनी चाहिए।।२१-२२क।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! जब इन महालक्ष्मी और अष्टादशभुजा की, दशानना और अष्टभुजा की पूजा करनी हो, तब दक्षिण एवं उत्तर में काल और मृत्यु की पूजा करनी चाहिए।।२१-२२क।।

श्लोक

यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी।।२२।।
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तथा रुद्रविनायकौ।

पदच्छेद

यदा च अष्टभुजा पूज्या शुम्भासुर-निबर्हिणी नव अस्याः शक्तयः पूज्याः तथा रुद्र-विनायकौ।।२२ख-२३क।।

अन्वितपदार्थ

यदा च=जब, शुम्भासुर-निबर्हिणी=शुम्भनाशिनि, अष्टभुजा=अष्टभुजा की, पूज्या=पूजा करनी हो, अस्याः=इनकी, नवशक्तयः=रक्तबीज बध के समय व्यक्त होने वाली ब्राह्मी से चामुण्डा तक नवशक्तियों की पूज्याः=पूजा तथा रुद्र-विनायकौ=रुद्र एवं विनायक की पूजा करनी चाहिए।।२२ख-२३क।।

अन्वितार्थ

जब शुम्भनाशिनि अष्टभुजा की पूजा करनी हो इनकी रक्तबीज बध के समय व्यक्त होने वाली ब्राह्मी से चामुण्डा तक नवशक्तियों की पूजा तथा रुद्र एवं विनायक की पूजा करनी चाहिए।।२२ख-२३क।।

श्लोक

नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्।।२३।।
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।

पदच्छेद

'नमो देव्यै' इति स्तोत्रैः महालक्ष्मीम् समर्चयेत् अवतार-त्रय-अर्चायाम् स्तोत्र-मन्त्राः तद् आश्रयाः।।२३ख-२४क।।

अन्वितपदार्थ

'नमो देव्यै' इति स्तोत्रैः='नमो देव्यै' इस देवी सूक्त से, महालक्ष्मीम्=महालक्ष्मी की, समर्चयेत्=अर्चना करनी चाहिए। अवतार-त्रय-अर्चायाम्=तीनों चरित्रों में वर्णित अवतारों की पूजा के अवसर पर, तद् आश्रयाः=उन्हीं चरित्रों में आए हुए, स्तोत्र-मन्त्राः= स्तुतिमन्त्र ग्रहण करने चाहिए।।२३ख-२४क।।

अन्वितार्थ

'नमो देव्यै' इस देवीसूक्त से महालक्ष्मी की अर्चना करनी चाहिए। तीनों चरित्रों में वर्णित अवतारों की पूजा के अवसर पर उन्हीं चरित्रों में आए हुए स्तुति मन्त्र ग्रहण करने चाहिए।।२३ख-२४क।।

श्लोक

अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी।।२४।।
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी।।२५।।

पदच्छेद

अष्टादशभुजा च एषा पूज्या महिषमर्दिनी महालक्ष्मीः महाकाली सा एव प्रोक्ता सरस्वती ईश्वरी पुण्य-पापानाम् सर्वलोक-महेश्वरी।।२४ख-२५।।

अन्वितपदार्थ

एषा च=और यह, सर्वलोक-महेश्वरी=सम्पूर्ण लोकों की स्वामिनी, पुण्य-पापानाम्=पुण्य-पाप समस्त कर्मों की, ईश्वरी=स्वामिनी, अष्टादशभुजा=अठारह भुजाओं वाली, महिषमर्दिनी= महिषमर्दिनी, पूज्या=उपासना उपासना योग्य है, सा एव=वह ही, महालक्ष्मीः=महालक्ष्मी महाकाली=महाकाली, सरस्वती=महासरस्वती, प्रोक्ता=कही गई हैं।।२४ख-२५।।

अन्वितार्थ

और यह सम्पूर्ण लोकों की स्वामिनी, पुण्य-पाप समस्त कर्मों की स्वामिनी, अठारह भुजाओं वाली महिषमर्दिनी उपासना योग्य है। वह ही महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती कही गई हैं।।२४ख-२५।।

श्लोक

महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।।२६।।

पदच्छेद

महिष-अन्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः पूजयेत् जगताम् धात्रीम् चण्डिकाम् भक्तवत्सलाम्।।२६।।

अन्वितपदार्थ

येन=जिस भाग्यवान् साधक द्वारा, महिष-अन्तकरी=महिषमर्दिनी, पूजिता=उपासित हैं। स जगत्प्रभुः=वह सारे संसार का स्वामी है। जगताम् धात्रीम्=अतः तीनों लोकों को धारण करने वाली, भक्तवत्सलाम्=भक्त के

प्रति पुत्रभाव रखने वाली, चण्डिकाम्=चण्डिका की, पूजयेत्=पूजा करनी ही चाहिए।।२६।।

अन्वितार्थ

जिस भाग्यवान् साधक द्वारा महिषमर्दिनी उपासित हैं। वह सारे संसार का स्वामी है। अत: तीनों लोकों को धारण करने वाली, भक्त के प्रति पुत्रभाव रखने वाली चण्डिका की पूजा करनी ही चाहिए।।२६।।

श्लोक

अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः।।२७।।

पदच्छेद

अर्घ्यादिभिः अलङ्कारैः गन्ध-पुष्पैः तथा अक्षतैः धूपैः दीपैः च. नैवेद्यैः नाना भक्ष्य-समन्वितैः।।२७।।

अन्वितपदार्थ

अर्घ्यादिभिः=अर्घ्य आदि शास्त्रोक्त उपचारों, अलङ्कारैः=अंग प्रत्यंग के आभूषणों, गन्ध-पुष्पैः=विविध गन्ध एवं पुष्पों, तथा अक्षतैः=इसी प्रकार बिना टूटे चावलों, धूपैः=धूप द्रव्यों, दीपैः=कर्पूर गर्भित वर्तिका वाले दीपों, नाना भक्ष्य-समन्वितैः च=हर प्रकार के खाद्य सामग्री युक्त, नैवेद्यैः=नैवेद्यों के माध्यम से पूजा करनी चाहिए।।२७।।

अन्वितार्थ

अर्घ्य आदि शास्त्रोक्त उपचारों, अंग प्रत्यंग के आभूषणों, विविध गन्ध एवं पुष्पों, इसी प्रकार बिना टूटे चावलों, धूप द्रव्यों, कर्पूर गर्भित वर्तिका वाले दीपों, हर प्रकार के खाद्य सामग्री युक्त नैवेद्यों के माध्यम से पूजा करनी चाहिए।।२७।।

श्लोक

रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना।।२८।।
सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।

पदच्छेद

रुधिर-आक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप। प्रणाम-आचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना सकर्पूरैः च ताम्बूलैः भक्ति-भाव-समन्वितैः।२८-२९[क]।।

अन्वितपदार्थ

नृप=हे राजन्! भक्ति-भाव-समन्वितैः=भक्ति-भाव-समन्वित साधक द्वारा, रुधिर-आक्तेन= रक्तरञ्जित, बलिना=बलि, मांसेन=मांस, सुरया=मदिरा, प्रणाम-आचमनीयेन=प्रणाम-आचमनीय, चन्दनेन=चन्दन, सुगन्धिना=सुगन्धित द्रव्य, सकर्पूरैः=और कर्पूरयुक्त, ताम्बूलैः=ताम्बूल आदि उपचार द्रव्यों के माध्यम से भगवती की पूजा करनी चाहिए।।२८-२९[क]।।

अन्वितार्थ

हे राजन्! भक्ति-भाव-समन्वित साधक द्वारा रक्तरञ्जित बलि, मांस, मदिरा, प्रणाम-आचमनीय, चन्दन, सुगन्धित द्रव्य और कर्पूरयुक्त ताम्बूल आदि उपचार द्रव्यों के माध्यम से भगवती की पूजा करनी चाहिए।।२८-२९[क]।।

श्लोक

वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम्।।२९।।
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।

पदच्छेद

वामभागे अग्रतः देव्याः छिन्न-शीर्षम् महासुरम् पूजयेत् महिषम् येन प्राप्तम् सायुज्यम् ईशया।।२९[ख]-३०[क]।।

अन्वितपदार्थ

देव्याः=भगवती के, अग्रतः=सम्मुख, वामभागे=बाईं ओर, छिन्न-शीर्षम्=कटे सर वाले, महासुरम्=महा दानव, महिषम्=महिषासुर का, पूजयेत्=पूजन करना चाहिए, येन=क्योंकि उसने, ईशया=परमेश्वरी से, सायुज्यमुक्ति प्राप्त की है।।२९[ख]-३०[क]।।

अन्वितार्थ

भगवती के सम्मुख बाईं ओर कटे सर वाले महादानव महिषासुर का पूजन करना चाहिए। क्योंकि उसने परमेश्वरी से सायुज्य मुक्ति प्राप्त की

है।।२९ख-३०क।।

श्लोक

दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम्।।३०।।
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।

पदच्छेद

दक्षिणे पुरतः सिंहम् समग्रम् धर्मम् ईश्वरम् वाहनम् पूजयेद् देव्याः धृतम् येन चराचरम्।।३०ख-३१क।।

अन्वितपदार्थ

पुरतः=सामने, दक्षिणे=दाहिने भाग में, समग्रम्=समस्त, धर्मम्=धर्मरूप, ईश्वरम्=अष्ट-ऐश्वर्यमय, देव्याः=देवी के, वाहनम्=वाहन, सिंहम्=सिंह की, पूजयेद्=पूजा करनी चाहिए, येन चराचरम्=जिन्होंने संसार को, धृतम्=धारण कर रखा है।।३०ख-३१क।।

अन्वितार्थ

सामने दाहिने भाग में समस्त धर्मरूप, अष्ट-ऐश्वर्यमय, देवी के वाहन, सिंह की पूजा करनी चाहिए, जिन्होंने संसार को धारण कर रखा है।।३०ख-३१क।।

श्लोक

कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः।।३१।।
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।

पदच्छेद

कुर्यात् च स्तवनम् धीमान् तस्याः एकाग्र-मानसः ततः कृताञ्जलिः भूत्वा स्तुवीत चरितैः इमैः।।३१ख-३२क।।

अन्वितपदार्थ

एकाग्र-मानसः च=इसके बाद एकाग्र चित्त, धीमान्=समझ दार साधक को, तस्याः=उनकी, स्तवनम्=स्तुति, कुर्यात्=करना चाहिए, ततः=तत्पश्चात्, कृताञ्जलिः भूत्वा=अञ्जलि बाँध कर, इमैः चरितैः=इन्हीं तीनों चरितों के पाठ के माध्यम से, स्तुवीत=स्तव करना चाहिए।।३१ख-३२क।।

अन्वितार्थ

इसके बाद एकाग्र चित्तवाले समझदार साधक को, उनकी स्तुति करना चाहिए तत्पश्चात् अञ्जलि बाध कर इन्हीं तीनों चरितों के पाठ के माध्यम से स्तव करना चाहिए।।३१ख-३२क।।

श्लोक

एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह।।३२।।
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।

पदच्छेद

एकेन वा मध्यमेन न एकेन इतरयोः इह चरितार्धम् तु न जपेत् जपन् छिद्रम् अवाप्नुयात्।।३२ख-३३क।।

अन्वितपदार्थ

एकेन वा=अथवा अकेले, मध्यमेन=मध्यमचरित के द्वारा स्तुति करें, इतरयोः=शेष दोनों चरितों से, एकेन न=अकेले का पाठ नहीं करना चाहिए, इह=इस सप्तशती पाठ के प्रकरण में, चरितार्धम् तु=आधे चरित का, न जपेत्= पाठ नहीं करना चाहिए, जपन् छिद्रम्=आधे चरित का पाठ करने वाला निष्फल, अवाप्नुयात्=होता है।।३२ख-३३क।।

अन्वितार्थ

अथवा अकेले मध्यमचरित के द्वारा स्तुति करें। शेष दोनों चरितों से अकेले का पाठ नहीं करना चाहिए। इस सप्तशती पाठ के प्रकरण में आधे चरित का पाठ नहीं करना चाहिए। आधे चरित का पाठ करने वाला निष्फल होता है।।३२ख-३३क।।

श्लोक

प्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वामूर्ध्निकृताञ्जलिः।।३३।।
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।

पदच्छेद

प्रदक्षिणा-नमस्कारान्, कृत्वा, मूर्ध्नि-कृताञ्जलिः, क्षमापयेत् जगद्धात्रीम्, अतन्द्रितः, मुहुर्मुहुः।।३३ख-३४क।।

अन्वितपदार्थ

प्रदक्षिणा-नमस्कारान्=प्रदक्षिणा और नमस्कार, कृत्वा=कर के, मूर्ध्नि-कृताञ्जलिः=सर पर अञ्जलि बाँधकर, अतन्द्रितः=आलस्य विहीन होकर, जगद्धात्रीम्=जगद्धात्री चण्डिका के प्रति, मुहुर्मुहुः=बार-बार, क्षमापयेत्=क्षमाप्रार्थना करना चाहिए।।३३ख-३४क।।

अन्वितार्थ

प्रदक्षिणा और नमस्कार कर के, सर पर अञ्जलि बाँधकर, आलस्य विहीन होकर जगद्धात्री चण्डिका के प्रति बार-बार क्षमांप्रार्थना करना चाहिए।।३३ख-३४क।।

श्लोक

प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा।।३४।।
जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।

पदच्छेद

प्रतिश्लोकम् च जुहुयात् पायसम् तिल-सर्पिषा जुहुयात् स्तोत्र-मन्त्रैः वा चण्डिकायै शुभम् हविः।।३४ख-३५क।।

अन्वितपदार्थ

तिल-सर्पिषा=तिल एवं गाय का घी मिश्रित, शुभम् हविः=कल्याणकारक हवि, पायसम्=खीर का, चण्डिकायै=चण्डिका के लिए, प्रतिश्लोकम्=सप्तशती के प्रत्येक श्लोक से, जुहुयात्=हवन करना चाहिए। स्तोत्र-मन्त्रैः वा=अथवा प्रत्येक चरित में कहे गए(रक्षामन्त्रों को छोड़ कर) स्तोत्र मन्त्रों से, जुहुयात्=हवन करना चाहिए।।३४ख-३५क।।

अन्वितार्थ

तिल एवं गाय का घी मिश्रित कल्याणकारक हवि खीर का चण्डिका के लिए सप्तशती के प्रत्येक श्लोक से हवन करना चाहिए। अथवा प्रत्येक चरित में कहे गए(रक्षामन्त्रों को छोड़ कर) स्तोत्र मन्त्रों से हवन करना चाहिए।।३४ख-३५क।।

श्लोक

भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः।।३५।।
प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्।।३६।।

पदच्छेद

भूयः नाम-पदैः देवीम् पूजयेत् सु-समाहितः प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्य आरोप्य च आत्मनि। सुचिरम् भावयेद् ईशाम् चण्डिकाम् तन्मयः भवेत्।।३५ख-३६।।

अन्वितपदार्थ

सु-समाहितः=भली प्रकार स्थिर मन से, देवीम्=भगवती के, नाम-पदैः=नामावलियों के द्वारा, भूयः=बार-बार, पूजयेत्=पूजन करना चाहिए। प्रयतः=एकाग्र हो कर, प्राञ्जलिः=अञ्जलि बाँधकर, प्रह्वः=झुक कर, प्रणम्य=नमस्कार करने के बाद, ईशाम्=परमेश्वरी, चण्डिकाम्= चण्डिका को, आत्मनि=अपनी आत्मा में, आरोप्य=समायी हुई मान कर, सुचिरम् भावयेद्=देर तक उसी भाव में रहना चाहिए। तन्मयः च=और भगवतीमय, भवेत्=हो जाना चाहिए।।३५ख-३६।।

अन्वितार्थ

भली प्रकार स्थिर मन से भगवती के नामावलियों के द्वारा बार-बार पूजन करना चाहिए। एकाग्र हो कर, अञ्जलि बाँधकर, झुक कर नमस्कार करने के बाद, परमेश्वरी चण्डिका को अपनी आत्मा में समाई हुई मान कर देर तक उसी भाव में रहना चाहिए और भगवतीमय हो जाना चाहिए।।३५ख-३६।।

श्लोक

एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा कामान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।।३७।।

पदच्छेद

एवम् यः पूजयेद् भक्त्या प्रत्यहम् परमेश्वरीम् भुक्त्वा कामान् यथा-कामम् देवीसायुज्यम् आप्नुयात्।।३७।।

अन्वितपदार्थ

यः=जो साधक, एवम्=इस विधि से, भक्त्या=भक्तिपूर्वक, परमेश्वरीम्=परमेश्वरी की, प्रत्यहम्=प्रतिदिन, पूजयेद्=पूजा करता है, यथा-कामम्=वह स्वेच्छानुसार, कामान्=सारी इच्छित वस्तुओं का, भुक्त्वा=भोग करके, देवी-सायुज्य-माप्नुयात्=भगवती का सायुज्य प्राप्त करता है।।३७।।

अन्वितार्थ

जो साधक इस विधि से भक्तिपूर्वक परमेश्वरी की प्रतिदिन पूजा करता है वह स्वेच्छानुसार सारी इच्छित वस्तुओं का भोग करके भगवती का सायुज्य प्राप्त करता है।।३७।।

श्लोक

यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी।।३८।।

पदच्छेद

यः न पूजयते नित्यम् चण्डिकाम् भक्त-वत्सलाम् भस्मी-कृत्य अस्य पुण्यानि निर्दहेत् परमेश्वरी।।३८।।

अन्वितपदार्थ

भक्त-वत्सलाम्=भक्त को पुत्रवत् स्नेह करने वाली, चण्डिकाम्=चण्डिका की, यः=जो साधक, नित्यम्=नित्यप्रति, न पूजयते=पूजा नहीं करता, परमेश्वरी=परमेश्वरी, अस्य=उसके, पुण्यानि=सत्कर्मों को, भस्मी-कृत्य= तत्त्वहीन बना कर, निर्दहेत्=जला देती हैं।।३८।।

अन्वितार्थ

भक्त को पुत्रवत् स्नेह करने वाली, चण्डिका की, जो साधक नित्यप्रति पूजा नहीं करता परमेश्वरी उसके सत्कर्मों को तत्त्वहीन बना कर जला देती हैं।।३८।।

श्लोक

तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि।।३९।।

पदच्छेद

तस्मात् पूजय भूपाल सर्व-लोक-महेश्वरीम् यथा उक्तेन विधानेन चण्डिकाम् सुखम् आप्स्यसि।।३९।।

अन्वितपदार्थ

भूपाल=हे नरेश! तस्मात्=इसलिए, यथोक्तेन=ऊपर बताए गए, विधानेन=विधि से, सर्व-लोक-महेश्वरीम्=सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की अधीश्वरी, चण्डिकाम्=चण्डिका की, पूजय=उपासना करो। सुखम् आप्स्यसि=(इससे ही)सुख प्राप्त करोगे।।३९।।

अन्वितार्थ

हे नरेश! इसलिए ऊपर बताए गए विधि से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की अधीश्वरी चण्डिका की उपासना करो। (इससे ही) सुख प्राप्त करोगे।।३९।।

।। इतिवैकृतिकरहस्यम् ।।

॥ अथ मूर्त्तिरहस्यम् ॥

श्लोक

ऋषिरुवाच–

नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
सा स्तुता पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥१॥

पदच्छेद

ऋषिः उवाच– नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। सा स्तुता पूजिता भक्त्या वशी-कुर्यात् जगत्-त्रयम्॥१॥

अन्वितपदार्थ

ऋषिः उवाच=ऋषि बोले, या=जो, नन्दा=नन्दा, भगवती=भगवती, नन्दजा नाम=नन्दजा नाम से, भविष्यति=प्रकट होंगी, सा=वह, भक्त्या=भक्तिपूर्वक, स्तुता=प्रार्थित, पूजिता=उपासित होने पर, जगत्-त्रयम्=तीनो लोकों को, वशी-कुर्यात्=साधक के वश में कर देतीं हैं॥१॥

अन्वितार्थ

ऋषि बोले- जो नन्दा भगवती 'नन्दजा' नाम से प्रकट होंगी, वह भक्तिपूर्वक प्रार्थित उपासित होने पर तीनों लोकों को साधक के वश में कर देतीं हैं॥१॥

श्लोक

कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा।
देवी कनकवर्णभा कनकोत्तमभूषणा॥२॥

पदच्छेद

कनकोत्तम-कान्तिः सा सुकान्ति-कनकाम्बरा देवी कनक-वर्णभा कनकोत्तम-भूषणा॥२॥

अन्वितपदार्थ

सा=वह, देवी=देवी, कनकोत्तमकान्तिः=उत्तम सोने के समान कान्ति वाली, सुकान्तिकनकाम्बरा=चमकते हुए सोने के समान वस्त्र धारण करने वाली, कनकवर्णभा=सोने की आभा वाली, कनकोत्तमभूषणा=उत्तम सोने के आभूषण धारण करने वाली हैं।।२।।

अन्वितार्थ

वह देवी उत्तमसोने के समान कान्ति वाली चमकते हुए सोने के समान वस्त्र धारण करने वाली सोने की आभा वाली उत्तम सोने के आभूषण धारण करने वाली हैं।।२।।

श्लोक

कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलङ्कृतचतुर्भुजा।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना।।३।।

पदच्छेद

कमल-अङ्कुश-पाश-अब्जैः अलङ्कृत-चतुर्भुजा इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीः रुक्माम्बुज-आसना।।३।।

अन्वितपदार्थ

कमल-अङ्कुश-पाश-अब्जैः=कमल, अङ्कुश, पाश एवं कमलों से, अलङ्कृत-चतुर्भुजा=चारो भुजाओं को सजाए हुए, सा=वह, इन्दिरा=इन्दिरा, कमला=कमला, लक्ष्मीः=लक्ष्मीः, श्रीः=श्री नामों से संबोधित होने वाली भगवती, रुक्म-अम्बुज-आसना=कमल के आसन पर विराजमान कही जातीं हैं।।३।।

अन्वितार्थ

कमल, अङ्कुश, पाश एवं कमलों से चारों भुजाओं को सजाए हुए वह इन्दिरा, कमला, लक्ष्मीः, श्री नामों से संबोधित होने वाली भगवती कमल के आसन पर विराजमान कही जातीं हैं।।३।।

श्लोक

या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।

तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम्।।४।।

पदच्छेद

या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मया अनघ तस्याः स्वरूपम् वक्ष्यामि शृणु सर्व-भयापहम्।।४।।

अन्वितपदार्थ

अनघ=हे निष्पाप! मया=मेरे द्वारा, या=जो, सर्व-भयापहम्=सारे भय का हरण करने वाली, रक्तदन्तिका नाम=रक्तदन्तिका नामक, देवी=देवी, प्रोक्ता=बताई गई हैं, तस्याः=उनका, स्वरूपम्=स्वरूप, वक्ष्यामि=बताऊँगा, शृणु=सुनो।।४।।

अन्वितार्थ

हे निष्पाप सुरथ! मेरे द्वारा जो सारे भय का हरण करने वाली रक्तदन्तिका नामक देवी बताई गई हैं उनका स्वरूप बताऊँगा। सुनो।।४।।

श्लोक

रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा।।५।।
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्।।६।।

पदच्छेद

रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्ग-भूषणा रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशा अतिभीषणा रक्त-तीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका पतिम् नारीव अनुरक्ता देवी भक्तम् भजेत् जनम्।।५-६।।

अन्वितपदार्थ

रक्ताम्बरा=लाल वस्त्रों को धारण करने वाली, रक्तवर्णा=लाल रंग की, रक्तसर्वाङ्ग-भूषणा=सारे अंगों में लाल आभूषण धारण करने वाली, रक्तायुधा=लालरंग के शस्त्रों को धारण करने वाली, रक्तनेत्रा=लाल आँखों वाली, रक्तकेशा=लाल रंग के केशों वाली, अतिभीषणा=अत्यन्त भयानक, रक्त-तीक्ष्णनखा=लाल और तीखें नखों वाली, रक्तदशना=लाल रंग के

दाँतों वाली, रक्तदन्तिका=रक्तदन्तिका, देवी=भगवती, पतिम् अनुरक्ता नारीव=पति से प्रेम करने वाली नारी की भाँति, भक्तम् जनम्=भक्तों के, भजेत्=निकट रहतीं हैं।।५-६।।

अन्वितार्थ

लाल वस्त्रों को धारण करने वाली, लाल रंग की, सारे अंगों में लाल आभूषण धारण करने वाली, लालरंग के शस्त्रों को धारण करने वाली, लाल आँखों वाली, लाल रंग के केशों वाली, अत्यन्त भयानक, लाल और तीखें नखों वाली, लाल रंग के दाँतों वाली, रक्तदन्तिका भगवती पति से प्रेम करने वाली नारी की भाँति, भक्तों के निकट रहतीं हैं।।५-६।।

श्लोक

वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी।
दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ।।७।।
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी।
भक्तान्संपाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।।८।।

पदच्छेद

वसुधेव विशाला सा सुमेरु-युगलस्तनी दीर्घौ लम्बौ अतिस्थूलौ तौ अतीव मनोहरौ कर्कशौ अतिकान्तौ तौ सर्वानन्द-पयोनिधी भक्तान् सम्पाययेद् देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ।।७-८।।

अन्वितपदार्थ

वसुधेव=धरती के समान, विशाला=विस्तीर्ण, सुमेरु-युगलस्तनी=सुमेरु के समान स्तन युगल वाली, सा=वह देवी, दीर्घौ=बड़े, लम्बौ=लम्बे, अतिस्थूलौ=अत्यन्त मोटे, अतीवमनोहरौ=अतिशय सुन्दर, कर्कशौ=कठोर, अतिकान्तौ=चमकते हुए, तौ=दोनों, सर्वानन्द-पयोनिधी=सम्पूर्ण आनन्द रूपी दुग्ध के आगार, सर्वकामदुघौ=सारी कामनाओं को पूरा करने वाले, तौ स्तनौ= उन दोनों स्तनों को, देवी=देवी, भक्तान्=भक्तों को, सम्पाययेद्=पान करातीं हैं।।७-८।।

अन्वितार्थ

धरती के समान विस्तीर्ण, सुमेरु के समान स्तन युगल वाली वह देवी बड़े, लम्बे, अत्यन्त मोटे, अतिशय सुन्दर, कठोर, चमकते हुए, सम्पूर्ण आनन्द रूपी दुग्ध के आगार, सारी कामनाओं को पूरा करने वाले, उन दोनों स्तनों को, देवी भक्तों को पान करातीं हैं।।७-८।।

श्लोक

खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्त्ति सा।
आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगीश्वरीति च।।९।।

पदच्छेद

खड्गम् पात्रम् च मुसलम् लाङ्गलम् च बिभर्त्ति सा आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगीश्वरी इति च।।९।।

अन्वितपदार्थ

सा देवी=वह प्रसिद्ध रक्तदन्तिका देवी, खड्गम्=दाहिने के ऊपर वाले हाथ में खड्ग, पात्रम् च=बाँए ऊपर वाले हाथ में पानपात्र, मुसलम्=दाहिने के नीचे वाले हाथ में मुसल, लाङ्गलम् च=बाँए नीचे वाले हाथ में हल, बिभर्त्ति=धारण करतीं हैं, रक्तचामुण्डा=वही देवी रक्तचामुण्डा, योगीश्वरी इति च=और योगीश्वरी नामों से, आख्याता=संबोधित होतीं हैं।।९।।

अन्वितार्थ

वह प्रसिद्ध रक्तदन्तिका देवी, दाहिने के ऊपर वाले हाथ में खड्ग, बाँए ऊपर वाले हाथ में पानपात्र, दाहिने के नीचे वाले हाथ में मुसल, बाँए नीचे वाले हाथ में हल धारण करतीं हैं। वही देवी रक्तचामुण्डा और योगीश्वरी नामों से संबोधित होतीं हैं।।९।।

श्लोक

अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्।
इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्।।१०।।

पदच्छेद

अनया व्याप्तम् अखिलम् जगत् स्थावर-जङ्गमम् इमाम् यः पूजयेद् भक्त्या

सः व्याप्नोति चराचरम्।।१०।।

अन्वितपदार्थ

अनया=इन्हीं योगीश्वरी के द्वारा, अखिलम्=सम्पूर्ण, स्थावर-जङ्गमम्=चराचर, जगत्=जगत्, व्याप्तम्=व्याप्त है, यः=जो, इमाम्=इनकी, भक्त्या=भक्ति पूर्वक, पूजयेद्=पूजा करता है, सः=वह साधक भी, चराचरम्=संसार को, व्याप्नोति=व्याप्त करने का सामर्थ्य रखता है।।१०।।

अन्वितार्थ

इन्हीं योगीश्वरी के द्वारा सम्पूर्ण चराचर जगत् व्याप्त है। जो इनकी भक्ति पूर्वक पूजा करता है वह साधक भी संसार को व्याप्त करने का सामर्थ्य रखता है।।१०।।

श्लोक

अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्।
तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना।।११।।

पदच्छेद

अधीते यः इमम् नित्यम् रक्तदन्त्याः वपुः स्तवम् तम् सा परिचरेद् देवी पतिम् प्रियम् इव अङ्गना।।११।।

अन्वितपदार्थ

यः=जो भक्त, रक्तदन्त्याः=रक्तदन्तिका के, वपुः=मूर्ति संबन्धी, इमम्=इस, स्तवम्=स्तोत्र को, नित्यम्=प्रतिदिन, अधीते=जपता है, सा=वह, देवी=देवी, तम्=उस साधक का, प्रियं पतिम्=अनुकूल पति की, अङ्गना इव=प्रिया पत्नी के समान, परिचरेद्=सर्वविध निकट होतीं हैं।।११।।

अन्वितार्थ

जो भक्त रक्तदन्तिका के इस मूर्ति संबन्धी स्तोत्र को प्रतिदिन जपता है वह देवी उस साधक का अनुकूल पति की प्रिया पत्नी के समान सर्वविध निकट होतीं हैं।।११।।

श्लोक

शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना।

गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी॥१२॥
सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी।
मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया॥१३॥
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्।
काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युज्वरापहम्॥१४॥
कार्मुकं च स्फुरत्कान्तिं बिभ्रती परमेश्वरी।

पदच्छेद

शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना गम्भीर-नाभि-त्रिवलीविभूषित-तनूदरी सुकर्कश-समोत्तुङ्ग-वृत्तपीन-घनस्तनी मुष्टिम् शिली-मुखापूर्णम् कमलम् कमल-आलया पुष्प-पल्लव-मूलादि-फलाढ्यम् शाकसञ्चयम् काम्या अनन्तरसैः युक्तम् क्षुत्-तृट्-मृत्यु-ज्वरापहम् कार्मुकम् च स्फुरत्-कान्तिम् बिभ्रती परमेश्वरी॥।१२-१५क॥

अन्वितपदार्थ

परमेश्वरी=परमेश्वरी, शाकम्भरी=शाकम्भरी, कमल-आलया=कमल पर विराज मान, काम्या=सब के द्वारा अभिलषित, नीलवर्णा=नीले वर्ण की, नीलोत्पलविलोचना=नील कमलन के समान नेत्रों वाली, गम्भीर-नाभि-त्रिवली-विभूषित-तनूदरी=गहरी नाभि एवं त्रिवली से सजी हुई पतले उदर भाग वाली, सुकर्कश-समोत्तुङ्ग-वृत्तपीन- घनस्तनी=कठोर, उन्नत, गोल एवं भरे हुए स्तनो वाली, शिलीमुखापूर्णम् मुष्टिम्=दाहिनी ओर निचले हाँथ की मुट्ठी में बाण भरे हुए, कमलम्=दाहिनी ओर ऊपर के हाँथ में कमल, अनन्तरसैः=बाँई ओर ऊपर के हाथ में कभी न समाप्त होने वाले रस से, युक्तम्=युक्त, क्षुत्-तृट्-मृत्यु-ज्वरापहम्=भूख, प्यास, मृत्यु, बुखार आदि रोगों के नाशक, पुष्प-पल्लव-मूलादि-फलाढ्यम्=फूल, पत्ते, जड़, फलों से भरा हुआ, शाकसञ्चयम्=शाकों का समूह, स्फुरत्-कान्तिम् कार्मुकम् च=तथा बाँई ओर नीचे के हाथ में चमकता हुआ धनुष, बिभ्रती=धारण किए हुए हैं॥१२-१५क॥

अन्वितार्थ

परमेश्वरी शाकम्भरी कमल पर विराजमान, सब के द्वारा अभिलषित, नीले वर्ण की, नील कमलन के समान नेत्रों वाली, गहरी नाभि एवं त्रिवली से सजी हुई पतले उदर भाग वाली, कठोर, उन्नत, गोल एवं भरे हुए स्तनों वाली, दाहिनी ओर निचले हाँथ की मुट्ठी में बाण भरे हुए, दाहिनी ओर ऊपर के हाँथ में कमल, बाँई ओर ऊपर के हाथ में कभी न समाप्त होने वाले रस से, युक्त, भूख-प्यास-मृत्यु-बुखार आदि रोगों के नाशक, फूल, पत्ते, जड़, फलों से भरा हुआ, शाकों का समूह तथा बाँई ओर नीचे के हाथ में चमकता हुआ धनुष धारण किए हुए हैं।।१२-१५[क]।।

श्लोक

शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्त्तिता।।१५।।
विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती।।१६।।

पदच्छेद

शाकम्भरी शताक्षी सा सा एव दुर्गा प्रकीर्त्तिता विशोका दुष्ट-दमनी शमनी दुरित-आपदाम् उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा अपि पार्वती।।१५[ख]-१६।।

अन्वितपदार्थ

सा=वह, शाकम्भरी=शाकम्भरी, शताक्षी=सौ आँखों वाली है, सा एव=वही, दुर्गा=दुर्गा, विशोका=शोक नाशिनी, दुष्ट-दमनी=दुष्टों का दमन करने वाली, दुरितापदां शमनी=पाप एवं आपत्तियों का नाश करने वाली, अपि सा=तथा वही, उमा=उमा, गौरी=गौरी, सती=सती, चण्डी=चण्डी, कालिका=कालिका, पार्वती=पार्वती नामों से, प्रकीर्त्तिता= पुकारी जातीं हैं।।१५[ख]-१६।।

अन्वितार्थ

वह शाकम्भरी सौ आँखों वाली हैं। वही दुर्गा शोकनाशिनी, दुष्टों का दमन करने वाली, पाप एवं आपत्तियों का नाश करने वाली तथा वही उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका, पार्वती नामों से पुकारी जातीं हैं।।१५[ख]-१६।।

श्लोक

शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्।।१७।।

पदच्छेद

शाकम्भरीम् स्तुवन् ध्यायन् जपन् सम्पूजयन् नमन् अक्षय्यम् अश्नुते शीघ्रम् अन्न-पान-अमृतम् फलम्।।१७।।

अन्वितपदार्थ

शाकम्भरीम्=भगवती शाकम्भरी की, स्तुवन्=स्तुति करते हुए, ध्यायन्=ध्यान करते हुए, जपन्=जप करते हुए, सम्पूजयन्=पूजन करते हुए, नमन्=प्रणाम करते हुए साधक, शीघ्रम्=तुरन्त, अक्षय्यम्=कभी न नष्ट होने वाला, अन्न-पान-अमृतं फलम्=अन्न, पेय पदार्थ एवं अमृत के समान फल, अश्नुते=प्राप्त करता है।।१७।।

अन्वितार्थ

भगवती शाकम्भरी की स्तुति करते हुए, ध्यान करते हुए, जप करते हुए, पूजन करते हुए, प्रणाम करते हुए साधक तुरन्त कभी न नष्ट होने वाला अन्न-पेयपदार्थ एवं अमृत के समान फल प्राप्त करता है।।१७।।

श्लोक

भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा।
विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा।।१८।।

पदच्छेद

भीमा अपि नीलवर्णा सा दंष्ट्रा-दशन-भासुरा विशाल-लोचना नारी वृत्त-पीन-पयोधरा।।१८।।

अन्वितपदार्थ

सा=वह, भीमा अपि=भीमा देवी भी, नीलवर्णा=कृष्ण वर्ण की, दंष्ट्रा-दशन-भासुरा=डाढ़ों और दाँतों की कान्ति से सुशोभित, विशाल-लोचना=बड़ी-बड़ी आँखों वाली, वृत्त-पीन-पयोधरा=वर्तुल एवं स्थूल स्तनों वाली, नारी=स्त्री हैं।।१८।।

अन्वितार्थ

वह भीमा देवी भी कृष्ण वर्ण की, डाढ़ों और दाँतों की कान्ति से सुशोभित, बड़ी-बड़ी आँखों वाली, वर्तुल एवं स्थूल स्तनों वाली स्त्री हैं।।१८।।

श्लोक

चन्द्रहासं च डमरुं पानपात्रं च बिभ्रती।
एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता।।१९।।

पदच्छेद

चन्द्रहासम् च डमरुम् पानपात्रम् च बिभ्रती एकवीरा कालरात्रिः सा एव उक्ता कामदा स्तुता।।१९।।

अन्वितपदार्थ

सा एव=वह ही, चन्द्रहासम्=दाहिनी ओर ऊपर के हाँथ में खड्ग, च डमरुम्=दाहिनी ओर नीचे के हाँथ में डमरू, पानपात्रम् च=बाई ओर नीचे के हाँथ में कपाल च्रषक और ऊपर के हाँथ में चर्म, बिभ्रती= धारण किए हुए, एकवीरा=एकवीरा, कालरात्रिः=कालरात्रि, कामदा= कामदा नामों से, उक्ता=संबोधित हैं एवं स्तुता=प्रशंसित हैं।।१९।।

अन्वितार्थ

वह ही दाहिनी ओर ऊपर के हाँथ में खड्ग, दाहिनी ओर नीचे के हाँथ में डमरू, बाई ओर नीचे के हाँथ में कपाल का चषक और ऊपर के हाँथ में चर्म धारण किए हुए एकवीरा, कालरात्रि, कामदा नामों से संबोधित हैं एवं प्रशंसित हैं।।१९।।

श्लोक

तेजोमण्डलदुर्दर्शा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता।।२०।।
चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते।

पदच्छेद

तेजोमण्डल-दुर्दर्शा भ्रामरी चित्र-कान्तिभृत् चित्र-अनुलेपना देवी

चित्र-आभरण-भूषिता॥२०॥ चित्र-भ्रमर-पाणिः सा महामारी इति गीयते॥२०-२१[क]॥

अन्वितपदार्थ

तेजोमण्डल-दुर्दर्शा=अपने तेजो मण्डल के कारण कठिनाई से दिखाई देने वाली, भ्रामरी देवी=भ्रामरी देवी, चित्र-कान्तिभृत्=अनेक रंगों की कान्ति से युक्त, चित्र-अनुलेपना=अनेक रंगों का अनुलेपन लगाने वाली, चित्र-आभरण-भूषिता=अनेक रंगों का आभूषण धारण करने वाली, चित्र-भ्रमर-पाणिः=जिनके हाँथों पर अनेक रंगों के भ्रमर रहते हैं, सा महामारी इति=उनका महामारी नाम से, गीयते=वर्णन किया जाता है॥२०-२१[क]॥

अन्वितार्थ

अपने तेजोमण्डल के कारण कठिनाई से दिखाई देने वाली, भ्रामरी देवी अनेक रंगों की कान्ति से युक्त, अनेक रंगों का अनुलेपन लगाने वाली, अनेक रंगों का आभूषण धारण करने वाली, जिनके हाँथों पर अनेक रंगों के भ्रमर रहते हैं उनका महामारी नाम से वर्णन किया जाता है॥२०-२१[क]॥

श्लोक

इत्येता मूर्त्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप॥२१॥
जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्त्तिताः कामधेनवः।

पदच्छेद

इति एताः मूर्त्तयः देव्या याः ख्याताः वसुधाधिप जगन्मातुः चण्डिकायाः कीर्त्तिताः कामधेनवः॥२१[ख]-२२[क]॥

अन्वितपदार्थ

वसुधाधिप=हे राजन्! इत्येताः=इस प्रकार ये, जगन्मातुः=संसार की माता, देव्या=भगवती, चण्डिकायाः=चण्डिका की, मूर्त्तयः=मूर्तियाँ, याः=जो, ख्याताः=वर्णित की गई हैं, कामधेनवः=वे सब अभीष्ट फल देने वाली, कीर्त्तिताः=कही गई हैं॥२१[ख]-२२[क]॥

अन्वितार्थ

हे राजन्! इस प्रकार ये संसार की माता भगवती चण्डिका की मूर्तियाँ जो वर्णित की गई हैं। वे सब अभीष्ट फल देने वाली कही गई हैं।।२१ख-२२क।।

श्लोक

इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया।।२२।।
आख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्।।२३।।
सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि।
पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्विषैः।।२४।।
देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं महत्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्।।२५।।

पदच्छेद

इदम् रहस्यम् परमम् न वाच्यम् कस्यचित् त्वया आख्यानम् दिव्यमूर्तीनाम् अभीष्टफलदायकम् तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीम् जप निरन्तरम् सप्तजन्मार्जितैः घोरैः ब्रह्महत्या-समैः अपि पाठमात्रेण मन्त्राणाम् मुच्यते सर्वकिल्विषैः देव्याः ध्यानम् मया ख्यातम् गुह्याद्-गुह्यतरम् महत् तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम्।।२२ख-२५।।

अन्वितपदार्थ

इदम्=यह, परमम् रहस्यम्=उत्तम रहस्य, त्वया=आपके द्वारा, कस्यचित्=किसी को न वाच्यम्=नहीं बताया जाना चाहिए। दिव्यमूर्तीनाम्=दिव्यस्वरूपों की, आख्यानम्=कथा, अभीष्टफलदायकम्= इच्छित फल प्रदायक है, तस्मात्=इसलिए, सर्वप्रयत्नेन=सारे प्रयास करके, निरन्तरम्=लगातार, देवीम्=देवी को, जप=जपो। सप्तजन्मार्जितैः= सातजन्मों से संचित, घोरैः=भयानक, ब्रह्महत्या-समैः=ब्रह्महत्या के समान पाप, सर्वकिल्विषैः अपि=और सभी प्रकार के पाप, मन्त्राणाम्=इन मन्त्रों के, पाठमात्रेण=पढ़ने मात्र से, मुच्यते=मुक्त हो जाते हैं। मया=मेरे द्वारा, देव्याः=भगवती का, गुह्याद्-गुह्यतरम्=गोपनीयों में गोपनीय, महत् ध्यानम्=महनीय ध्यान,

ख्यातम्=बता दिया गया है। तस्मात्=अतः, सर्वकामफलप्रदम्=सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाले इन ध्यानों का, सर्वप्रयत्नेन=सभी तरह के प्रयास करके अभ्यास करो॥२२ख-२५॥

अन्वितार्थ

यह उत्तम रहस्य आपके द्वारा किसी को नहीं बताया जाना चाहिए। दिव्यस्वरूपों की कथा इच्छित फल प्रदायक है, इसलिए सारे प्रयास करके लगातार देवी को जपो। सातजन्मों से संचित भयानक, ब्रह्महत्या के समान पाप और सभी प्रकार के पाप इन मन्त्रों के पढ़ने मात्र से मुक्त हो जाते हैं। मेरे द्वारा भगवती का गोपनीयों में गोपनीय महनीय ध्यान बता दिया गया है। अतः सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाले इन ध्यानों का सभी तरह के प्रयास करके अभ्यास करो॥२२ख-२५॥

॥ इतिमूर्त्तिरहस्यम् ॥